फ्रांसिस पार्कमैन

यात्रा और शिकार

एस० आर० सुनेजा पब्लिकेशन्ज़, नई दिल्ली।

प्रकाशक
राज सुनेजा
एस० आर० सुनेजा पब्लिकेशन्ज
नई दिल्ली

अनुवादक
डा० सत्यकाम वर्मा

मुद्रक :
नील कमल प्रिंटर्स
(प्रा०) लिमिटेड, दिल्ली ६

विषय-सूची

१ : सीमान्त

सेंट लुई शहर में पिछली बसन्त में बहुत हल-चल रही। सन् १८४६ ई० के इन दिनो मे अपना देश छोड़कर नये इलाको की खोज मे ओरेगन और कैलिफोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासी तो देश के कोने-कोने से वहाँ इकट्ठे हो रहे थे, सान्ता फे की ओर जाने वाले व्यापारी भी अपनी गाडियाँ और दूसरी साज-सज्जा तैयार करने के लिए भारी संख्या में वहाँ जमा हो गये थे। सब होटल खचाखच भरे हुए थे। बन्दूके और घोडो की काठियाँ बनाने वाले लुहार लगातार काम करके यात्रियो के भिन्न-भिन्न दलो को हथियार और साज-सामान देने पर लगे हुए थे। भाफ से चलने वाली नावें घाटो से रवाना हो कर मिसूरी नदी में चलती हुई यात्रियो से पूरी तरह लदी हुई थी और सीमान्त की ओर बढती जा रही थी।

इनमें से ही एक नाव थी 'रैड्नौर'। वह अब टकराकर नष्ट हो चुकी है। परन्तु पिछली २८ अप्रैल को इसी नाव पर मै अपने मित्र और सम्बन्धी क्विन्सी एडम्स शॉ के साथ राकी पर्वतमाला की यात्रा पर रवाना हुआ। हम यह यात्रा कुतूहल और मनोरजन के विचार से कर रहे थे। किश्ती इतनी भर चुकी थी कि वह डोलने लगी और उसके दोनो ओर के खतरे के निशान बारी-बारी से डूबने लगे। उसके सबसे ऊपर के फर्श पर सान्ता फे के व्यापारियो की अनेक प्रकार की और अनेक सामानो से लदी गाडियाँ भरी हुई थी। उसकी माल रखने की जगह पर भी अनेक प्रकार का सामान उसी जगह व्यापार के लिए भरा गया था। वही ओरेगन की ओर जाने वाले लोगो का सामान और उनकी प्रतिदिन की जरूरी चीजें भरी हुई थी। इन चीजो मे खच्चर, घोड़े, काठियाँ, जीनें और दूसरी अनेक प्रकार की चीज़ें भरी हुई थी। मैदानो मे इन चीज़ो की बहुत अधिक जरूरत रहती थी। इन सब चीजो के बीचो-बीच छिपी हुई थी एक फ्रासीसी गाड़ी, जिसे देखते ही लगता था कि यह खच्चरो की मौत लाने वाली है। यहा से भी कुछ दूर परे किनारे पर एक तम्बू था। वही बहुत-सी पेटियाँ और ढोल आदि जमा थे। सारा सामान देखकर यह

नही लगता था, कि यह किसी ख़ास भाव से जमा किया गया है। फिर भी यह सामान एक लम्बी और कठिन यात्रा के लिए इकट्ठा किया गया था। यहाँ से इस कठिन यात्रा पर धीरज वाले पाठक भी हमारे साथ ही बढ़ेंगे।

रैड्नोर के यात्री भी उस पर लदे सामान की ही भाँति अनेक प्रकार के थे। बड़े कमरे मे सान्ता फे के व्यापारी, जुआरी, सटोरिये और अनेक प्रकार के साहसी लोग विद्यमान थे। नीचे के खुले आँगन मे ओरेगन की ओर प्रवास करने वाले, पहाड़ी आदमी, नीग्रो, सेंट लुई की यात्रा से लौटने वाले कन्सास के आदिवासी भरे हुए थे।

इस प्रकार सामान और मनुष्यो से लदी हुई यह नाव सात-आठ दिन मिसूरी नदी की तेज़ धार मे ऊपर की ओर बढ़ती ही गई। अनेक स्थानो पर इसे तले या बीच के टापुओ से बढ़े हुए ठूँठो से सघर्ष करना पड़ा। कुछ स्थानों पर यह दो-तीन घण्टे के लिए रेतीली जगहो मे भी फँस जाती थी। जब हमने मिसूरी मे प्रवेश किया था, तब तेज़ वर्षा हो रही थी। पर बाद मे मौसम बिल्कुल साफ हो गया। अब नदी की चौड़ी और मचलती धारा, इसमे पड़ने वाली भँवरे, रेत के जमाव, उजाड़ और बनावटी टापू और जगलो से लदे किनारे साफ दिखाई दे रहे थे। मिसूरी के बहने का मार्ग निरन्तर बदलता रहता है। एक ओर के किनारो को छोड़ कर यह दूसरी ओर नये किनारे काटती हुई बढ़ती है। इसकी धारा भी अपनी जगह बदलती रहती है। बीच के पुराने टापू मिट जाते है और उनकी जगह नये टापू बन जाते है। एक किनारे के जगल मिटते दीखते है किन्तु दूसरी ओर नये जगल नई मिट्टी पर बनने आरम्भ हो जाते है। इन सब परिवर्तनो के कारण इसके पानी मे कीचड़ और रेत इतने अधिक मिल जाते हैं कि बसन्त जैसी मौसम मे भी इसका पानी एकदम गँदला होता है। उसे गिलास मे भर कर रखने पर कुछ ही क्षण मे एक इच तक मिट्टी तल पर जम जाती है। इस मौसम मे नदी काफी भर कर चल रही थी, किन्तु जब हम सर्दियो मे लौटे तब इस मे पानी काफ़ी उतर गया था। पानी उतरने पर इसके तले पर प्रकट होने वाले सभी खतरे साफ दीखने लगे थे। उस समय इसमे टूट कर गिरे हुए पेड़ो को देख कर बड़ा डर लगता था। कुछ जगह तो ये इतने अधिक जमा थे, जैसे सेना मे अपनी रक्षा के लिये किसी मोर्चे पर इन्हें जमा किया हो। यह रेत मे

गहरे गडे थे। सब का रुख बहाव का ओर था। परिणाम यह कि ऊपर की ओर आने वाले जहाजो के लिए ये मौत की तरह मुँह बाये खडे हुए थे। कोई भी अभागी नाव या स्टीमर ज्वार के समय इनके ऊपर से गुजरे तो ये उसे नदी के पेट मे समा लेने को तैयार रहते थे।

पाच-छ दिन में ही हमे पश्चिम की ओर बढने वाले काफिलो के समूह नज़र आने लगे। इण्डिपेण्डेंस नामक स्थान की ओर, जहाँ सबने इकट्ठे होना था। बढते हुए प्रवासियो के अनेक जत्थे इधर-उधर नदी के किनारे खुले स्थानो पर पडाव डाले पडे थे। जब हम इस इलाके के घाट पर पहुचे, तब वर्षा हो रही थी। साँझ का समय था। यह मिलन-स्थान नदी से कुछ मील दूर था। यह स्थान मिसूरी प्रदेश के परले सिरे पर स्थित था। यहाँ का दृश्य बहुत ही आकर्षक था। यहाँ वे सभी बातें इकट्ठी देखने को मिल जाती थी, जो इस उन्नतिशील जगली इलाके की विशेषताएँ थी। नदी के दलदली तट पर अपने बडे-बडे टोप पहने दास-से दीखने वाले तीस-चालीस स्पेनी लोग खडे हुए हमारी ओर उजड्डो की तरह देख रहे थे। वे सान्ता फे की ओर जाने वाले दलो मे से एक से सम्बद्ध थे। उन दलो की गाडियाँ नदी के किनारे कुछ ऊपर की ओर जमा थी। इनके बीच जलती आग के के चारो ओर एडियो के बल बैठे हुए आदिवासियो का एक समूह था। ये आदिवासी मैक्सिको के आदिवासियो के दूर के सम्बन्धी थे। पहाडो की चोटी पर से ही लम्बे बालो और हरिण की खाल की पोशाको वाले इक्के-दुक्के फ्रांसीसी शिकारी हमारी नाव को देख रहे थे। पास के ही एक तने पर तीन शिकारी बैठे थे। उनकी बन्दूकें उनके घुटनो पर टिकी हुई थी। इनमे से सबसे अगला आदमी बहुत लम्बा-तगडा था। उसकी आँखें नीली और बडी थी। चेहरे से उसकी बुद्धि-मत्ता टपकती थी। निश्चय ही उन लोगो का प्रतिनिधि रहा होगा, जिन्होंने साहस और उद्यम के द्वारा लगातार बढकर पहले-पहल एलेघनी से पश्चिमी मैदानो तक जाने की राह दिखाई थी। इनकी बन्दूकें और कुल्हाडियाँ साथ-साथ काम में जुटी रहती थी। वह भी ओरेगन की ओर जा रहा था। वह प्रदेश उसे इधर के सभी मैदानो से अधिक अनुकूल लगता था।

अगले दिन सुबह ही हम कन्सास पहुँचे। यह जगह मिसूरी नदी के मुहाने से लगभग पाँच सौ मील ऊपर थी। हम यही पर उतरे। हमने अपना

सामान कर्नल चिक के पास ही छोड दिया। लट्ठो से बना उसका घर सराय जैसा ही था। वहा से हम वैस्टपोर्ट की ओर गये। आगे की यात्रा के लिए हमे वहाँ से खच्चर और घोडे मिलने की आशा थी।

मई मास की यह सुबह बहुत ही सुन्दर और ताजगी देने वाली थी। हमारी औघड राह जिन जगलो में से होकर गुज़री थी, उनमें धूप खुलकर आ रही थी और अनेको प्रकार के पक्षी चहचहा रहे थे। रास्ते में हम अपने पूरी तरह सजे-धजे पुराने साथी यात्री आदिवासी 'कन्सास' लोगो से मिले। ये अपने घरो की ओर लौट रहे थे। नाव पर ये कैसे भी लगते रहे हो यहाँ, जगलो में वे बहुत ही आकर्षक और सुन्दर लग रहे थे।

वैस्टपोर्ट मे आदिवासी भरे हुए थे। इनके घरो और बाडो के साथ इनके दर्जनो छोटे-छोटे खच्चर बधे हुए थे। यहाँ सभी जातियो के आदिवासी घूम-फिर रहे थे। इनमें सैक ओर फौक्स लोग थे, जिनके सिर मुडे हुए और चेहरे रगो से पुते हुए थे। इनमें ही शबानू और देलवारे लोग थे, जिन्होंने सूती कमीजें और पगडियाँ पहनी हुई थी। व्यान्दोत लोगो की पोशाक गोरे लोगो जैसी ही थी। कुछ कन्सास लोग भी थे, जिन्होने फटे-पुराने कम्बल ओढे हुए थे। ये सब सडको पर घूम रहे थे अथवा घरो और दूकानो मे आ-जा रहे थे।

मैं सराय के दरवाजे पर खडा हुआ था। उसी समय मुझे दूर से एक आकर्षक आदमी अपनी ओर सडक पर आता ,दिखाई दिया। उसका चेहरा एकदम लाल था। उसकी दाढी-मूँछ भी चमकीली लाल रग की थी। उसके सिर पर एक ओर ऊपर गाँठ लगी एक गोल टोपी थी। ऐसी टोपी प्राय स्कॉटलड के मज़दूर पहना करते हैं। उसका कोट भी अजीब था। यह स्कॉटलैंड की बनी सलेटी रग की शाल से बना हुआ था और इसके चारो ओर उसके खुले धागे लटक रहे थे। उसके पाजामे खड्डी-बुने कपडे से बने हुए थे। उसके जूते के नीचे कीलें ठुकी हुई थी। इन सबके साथ ही था उसके मुँह के एक कोने मे जमा हुआ छोटा-सा काला पाइप। वेशभूषा के इस तरह अजीब होने पर भी मैंने पहचान लिया कि ये ब्रिटिश सेना के कप्तान श्री क—है। उनके साथ के उनके भाई जैक और श्री र—। वे भी अग्रेज ही थे। ये लोग शिकार के लिए इस महाद्वीप के आर-पार यात्रा करने निकले थे। साथियो

समेत इन्हे मैने सेण्ट लुई में देखा था। इस समय वे कई दिन से वेस्टपोर्ट में ठहरे हुए थे। यहाँ रह कर एक ओर वे जाने की तैयारियाँ पूरी कर रहे थे, दूसरी ओर वे कुछ और साथियो के आ मिलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। इस यात्रा के लिए उनके साथियो की सख्या काफी कम थी। इस तरह का अकेला प्रयत्न खतरे से खाली न था। ओरेगन और कैलीफोर्निया की ओर जाने वाले प्रवासियो के दलो में से भी किसी एक के साथ वे मिल सकते थे। पर, वे केन्टुकी के लोगो से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने को तैयार न थे।

कप्तान ने हम पर जोर दिया कि हमे भी उनके साथ मिल कर एक दल के रूप में पहाडो की ओर बढना चाहिए। प्रवासियो के साथ हमारी सहानुभूति भी अधिक न थी। अत हमें इनके साथ जाना अधिक उचित लगा और हमने उसके लिये अपनी मजूरी दे दी। हमारे ये होने वाले साथी लकड़ी के एक घर मे टिके हुए थे। हमने देखा कि उस घर में चारों ओर काठिया, ज़ीनें बन्दूकें, पिस्तौलें, दूरबीनें, चाकू आदि मैदानो के लायक सारा सामान ही—भरा पडा था। र—को प्रकृति-विज्ञान का शौक था। इस समय वे एक कठफोडे की खाल भर रहे थे। कप्तान के भाई आयरलैंड के निवासी थे। इस समय वे फर्श पर बिखरे खोजी रस्से के टुकडो को जोड रहे थे। यह रस्सी राह में काम आनी थी। कप्तान ने बहुत प्रसन्नता के साथ हमे यात्रा की प्रत्येक चीज़ दिखाई। वह बोला, "आप जानते है कि हम पुराने घुमक्कड़ है। मुझे पूरा विश्वास है कि आज तक इन मैदानो की ओर कोई भी दल इससे अधिक तैयारी के साथ नही गया।" जिस खोजी शिकारी को उन्होने नियुक्त किया था, उसका नाम सोरेल था। वह कनाडा का रहने वाला और गुस्सैल-सा लगता था। उनका गाडीवान सेण्ट लुई का रहने वाला एक अक्खड अमरीकी था। ये दोनो ही इस समय घर के बाहर ही टिके हुए थे। पास ही लकडी की एक घुडसाल बनी हुई थी, जिसमे कप्तान द्वारा बहुत ही सूझ-बूझ के साथ चुने हुए घोडे और खच्चर बधे थे।

वे अपने इन्तजाम पूरे करने लगे और हम भी पूरी सुविधा और तेज़ी के साथ अपने प्रबन्ध पूरे करने मे जुट गए। प्रवासी यहा से कुल आठ या दस मील की दूरी पर ही हजार या कुछ अधिक सख्या में मैदानो में डेरा डाले पडे थे। उनके नये दल इसी इण्डिपैन्डेन्स शहर मे से होकर, उनसे मिलने के लिए,

एक के बाद एक गुजर रहे थे। उनके लिए हमारे मित्र बहुत ही घृणा प्रगट करते थे। वे लोग बहुत घबराए हुये थे। उनकी सभाएँ होती, प्रस्ताव पास होते और नए-नए नियम बनाए जाते। किन्तु, वे मैदानो के पार की इस लम्बी यात्रा के लिए अपने नेता के चुनाव मे एकमत न हो सकते। एक दिन कुछ फुर्सत पाकर मैं शहर की ओर निकल गया। शहर मे भीड बहुत अधिक थी। प्रवासियो और सान्ता फे के व्यापारियो के लिए यात्रा की आवश्यक वस्तुएँ जुटाने के लिए यहा एक साथ ही बहुत-सी नई दुकानें खुल गई थी। दूसरी ओर दर्जनो लुहारो की झोपडियो से लगातार हथोडो की चोटें और गूजें सुनाई दे रही थी। वे लोग गाडियो की मरम्मत करने और घोडो और बैलो की नालें ठोकने मे लगे हुए थे। गलियो और सडको पर आदमी, घोडो और खच्चरो की खूब भीड उमड रही थी। अभी मैं शहर मे ही था, जब इलिनोइस के प्रवासियो की गाडियो का एक जत्था नगर मे से गुजरा और मुख्य सडक पर ही रुक गया। ये लोग मैदानी जत्थो से मिलने के लिए बढ रहे थे। गाडियो पर ढके पर्दों मे से झाकते हुए अनेक बच्चो के चेहरे बाहर दीख रहे थे। थोडी-थोडी दूरी पर कोई भारी-भरकम औरतें घोडे पर सवार होकर बढ रही थी। इनमे से किसी ने अपने धूप से तपे चेहरे को बचाने के लिए कोई पुराना छाता ताना हुआ था, तो किसी ने कोई पुरानी छोटी-सी छतरी तानी हुई थी। पुरुष गाव के रहने वाले और सभ्य लगते थे। वे अपने बैलो के पास खडे थे। जब मैं उनके पास से गुजरा तो मैंने तीन बूढो को आपस मे बहुत उत्साह के साथ बार-बार जन्म लेने के सिद्धान्त पर बात-चीत करते सुना। उनके हाथो मे लम्बे चाबुक थे। परन्तु, सभी प्रवासी इस तरह के नही थे। उनमे से कुछ तो अपने इलाको मे जाति से बाहर निकाले हुए थे। वे असभ्य थे। मैं बहुत बार अपना देश छोडकर नया देश खोजने वालो की भावना की और उनके अनेक प्रकार के उद्देश्यो को समझने की कोशिश करता रहा हूँ। मैं किसी निर्णय पर तो नही पहुँचा, पर इतनी बात निश्चित है कि चाहे ये लोग एक अच्छी जिन्दगी की आशा मे बढ रहे हो, समाज के कानूनो के बन्धन को तोडने की इच्छा लेकर चल रहे हो, या फिर इसलिए अपना देश छोड रहे हो कि वे शात जीवन पसन्द नही करते—इनमे से सभी लोग यात्रा की कठिनाइयो को पाकर बहुत अधिक पछताते हैं। पर, यह भी सच है कि जब ये लोग अपनी उम्मीदो

की मजिल पर पहुँच जाते है, तब ये इन कठिनाइयो से छुटकारा पाकर बहुत प्रसन्न भी होते है।

अगले सात या आठ दिनो मे हमारी तैयारियाँ पूरी हो गई। इसी बीच हमारे साथियो ने भी तैयारियाँ पूरी कर ली। वैस्टपोर्ट से वे उक्ता गए थे। इसलिए उन्होने आगे चल पडने का अपना इरादा हमे बताया। उन्होने बताया कि वे हमारी कसास नदी के घाट पर प्रतीक्षा करेंगे। इस निश्चय के अनुसार र—और गाडीवान गाडी और तम्बू आदि लेकर आगे चले गए। उनके कुछ ही पीछे घोडो आदि को साथ लिए हुए कप्तान और उसका भाई भी, सोरेल और साथ आ मिलने वाले बोईसफेर्ड नाम के पशु फसाने वाले के साथ चल पडे। इस यात्रा का आरम्भ ही बुरा हुआ। अपने दल के आगे-आगे घोडे पर चढे हुए कप्तान वैस्टपोर्ट से अभी मील भर भी बाहर न गए होगे कि अचानक ही एक भयकर तूफान ने उन्हे आ घेरा। वे उसमे बुरी तरह भीग गए। कप्तान के पीछे-पीछे रस्सी से बधा हुआ भैंसे के शिकार मे काम आने वाला घोडा भी चल रहा था। तूफान मे ही उन्होने जल्दी-जल्दी चलना शुरू किया, ताकि सात मील दूर र—द्वारा तैयार किए हुए डेरे तक जल्दी पहुँच सकें। परन्तु यह र—भी अजीब ही था। इसने जब तूफान को आते देखा, तो जगल मे ही एक सुरक्षित जगह देखकर अपने तम्बू गाड दिए। उधर वर्षा मे कप्तान उसे मीलो आगे ढूढ रहे थे और इधर यह आराम से बैठे कॉफी पी रहा था। बहुत देर बाद आँधी शान्त हुई। तब पशु फसाने वाले व्यक्ति ने अपनी तेज निगाहो से तम्बू ढूढ निकाला। जब वे पहुँचे तब तक र—कॉफी पी चुका था और भैंसे की खाल से बने गलीचे पर बैठा पाइप पी रहा था। कप्तान बहुत ही सरल स्वभाव का था। उसने अपने दुर्भाग्य को बहुत धीरज के साथ सह लिया और अपने भाई के साथ मिलकर कॉफी के कुछ घूँट पी कर, अपने गीले कपडो मे ही, सोने के लिए लेट गया।

हमारे साथ भी कम बुरी न बीती। हम कन्सास की ओर टट्टुओ का एक जोड़ा लिए बढ रहे थे। उसी समय तूफान टूट पडा। ऐसी भयकर और लगातार चमकने वाली बिजली तथा इतनी बहरा कर देने वाली गरज मैंने जीवन मे कभी न देखी थी। बहुत तेज गरज के साथ सीधी पडने वाली मूसलाधार बारिश के गिरने से कुछ भाफ-सी धरती से उठी और चारो ओर इतना

धुन्ध छा गया कि जगल छिप-सा गया। छोटी-छोटी धाराएँ इतनी भर कर चलने लगी कि उन्हें पार करना कठिन हो गया। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर उस वर्षा मे से ही हमे कर्नल चिक का लट्ठो से बना मकान दिखाई दिया। उसने हमे सदा की भाँति स्वागत के साथ अपने यहाँ ठहराया। उसकी पत्नी यद्यपि लोगो की सभाओ आदि के कारण उकताई रहती थी, और कुछ कठोर स्वभाव की बन गई थी, पर इस समय उसने भी अपनी सहानुभूति कम न दिखाई। उसने हमे अपने भीगे हुए और बिगडे हुए कपडो और सामान को ठीक करने के लिए हर प्रकार की सहूलियत दी। सूरज छिपने के साथ ही तूफान शान्त हुआ। इस समय कर्नल के घर की ड्योढी से नजारा बहुत ही अच्छा दिखाई दे रहा था। कर्नल का यह मकान एक ऊँची पहाडी पर था। फटते हुये बादलो मे से सूरज की किरणें धाराओ के रुप मे तेज बहने वाली मिसूरी नदी और फैले हुए बडे जगलो पर पूरी तरह बिछ गई।

अगले दिन वैस्टपोर्ट लौटने पर हमे कप्तान का एक सन्देश मिला। इसे देने वह स्वय आया था। पर यह जानकर कि हम कसास गए हुए हैं, वह फौजेल नाम के अपने एक परिचित दुकानदार को यह सन्देश हम तक पहुँचाने के लिए दे गया। इस आदमी की शराब और जरूरी खुदरा सामान की दूकान थी। इस नगर मे शराब कुछ अधिक मात्रा मे ही पी जाती है। हरेक आदमी भरी हुई पिस्तौल भी साथ लिए रहता है। ऐसी हालत मे परिणाम बुरे ही होते है। हम ज्यो ही उसकी दूकान के पास से गुजरे हमे फौजेल का चौडा जर्मन चेहरा दरवाज़े से बाहर झाँकता नजर आया। उसने बताया कि हमारे लिए कोई सन्देश है। साथ ही उसने शराब का घूँट भरने के लिए भी हमे निमन्त्रित किया। हमारे लिए उसकी शराब और उसका सन्देश दोनो ही आनन्द देने वाले न रहे। कप्तान हमे यह सूचना देने के लिए लौटा था कि र—ने पहले से निश्चित राह को छोडकर दूसरी राह चुनने का फैसला किया है। उसी ने हमारे दल के आगे-आगे चलने की ज़िम्मेवारी ली हुई थी। अब उसने व्यापारियो की राह छोडकर फोर्टलीवनवर्थ के उत्तर से होते हुए एक नई राह पर बढने का निश्चय किया था। इसी राह पर पिछली गर्मियो मे घुडसवार सेनाएँ बढी थी। हालाकि हमसे बिना पूछे राह बदल देने की बात हमे बहुत अखरी, पर तो भी हम अपनी नाराजगी को छिपा कर फोर्टलीवन-

वर्थ में उनसे मिलने को तैयार हो गए। उन्होंने यहीं हमारी प्रतीक्षा की थी।

अपनी तैयारियाँ पूरी होने के बाद एक सुहावनी सुबह हमने अपनी यात्रा शुरू करने की कोशिश की। हमारा पहला ही कदम दुर्भाग्य से भरा था। अभी घोडो पर काठिया आदि कसी ही थी कि गाडी में जुता एक टट्टू बिदक कर उछलने-कूदने लगा। उसने रस्सिया और चमडे की पेटिया तोड डाली। गाडी नदी मे गिरते-गिरते बची। जब हमने देखा कि वह काबू मे नही रहेगा तो हमने बूने द्वारा दिये गए एक दूसरे टट्टू को उसकी जगह जोत दिया। यह बूने महोदय वैस्टपोर्ट के ही थे और प्रसिद्ध नेता डेनियल बूने के पोते थे। मैदानी-यात्रा का यह पहला अनुभव अभी भूला भी न था कि एक नई मुसीबत आ पडी। अभी हम वैस्टपोर्ट से बहुत दूर न गए थे कि हमारी गाडी एक दलदली धार मे फँस गई। हमे एक-दो घण्टे यही लग गए। बाद में तो ऐसी मुसीबतें रोज की ही बात बन गई।

— ० —

२ : आरम्भ

वैस्टपोर्ट के मिट्टी के घरो मे निकल कर हम कुछ समय तक धूप-छाँह से भरी सँकरी राह से होकर जगल मे से गुज़रे। बहुत देर बाद हम खुली रोशनी मे आये। यहाँ वह जगल पीछे छूट गया था। कभी यह जगल पश्चिमी किनारे से अन्धमहासागर तक—पूरे के पूरे महाद्वीप पर—फैला हुआ होता था। सामने पडने वाली कुछ झाडियो को छोडकर जहाँ तक भी हमारी नजर जाती थी, हरियाली के एक महासागर के रूप मे, मैदान ही फैला हुआ था, जैसे यह आकाश तक मिलने उठ गया हो।

बसन्त का यह दिन बहुत सी सुहावना था। ऐसे दिन काम करने की बजाय मस्ती और मौज मनाने की इच्छा करती है। सारी कोमल भावनाए ऐसे दिन उमड पडती हैं। झाडियो मे गुज़रते हुए मै अपने दल के आगे होकर चलने लगा। एक जगह हरी घास का टुकडा बिछा देखकर मै अपना लोभ न रोक सका और घोडे से उतर कर वही लेट गया। सभी पेड-पौधे फूलो से लदे पडे थे। कुछ नयी पत्तिया फूट रही थी। जगली सेवो और सेवती आदि के रग बिरगे फूलो के गुच्छे लदे पडे थे। इन मैदानो और पहाडो के नज़ारे यद्यपि बहुत निखरे और सुन्दर न थे, फिर भी मुझे शहरी सजे-धजे बगीचो को पीछे छोड आने का अधिक दु ख न हुआ।

इसी समय हमारा दल भी झाडियो से बाहर आता दिखाई दिया। सबसे आगे हमारा शिकारी पथ-प्रदर्शक हेनरी शातिलौं चल रहा था। वह एक अच्छा पहलवान दीखता था और एक मज़बूत व्यान्दोत टट्टू पर सवार था। उसने सफेद कम्बल का बना कोट, ऊन का एक चौडा टोप, मोकास्सिन की खाल के रोएदार जूते और हिरण की खाल का बना पाजामा आदि पहने हुए थे। पाजामे के पहुचे झालरदार थे। उसने अपनी शिकारी छुरी कमर की पेटी मे अटकाई हुई थी। उसने गोलियो और बारूद की थैलिया बग़ल मे लटकाई हुई थी और उसकी राइफल उसके सामने ऊँची काठी पर टिकी हुई थी। उसके सारे सामान की भाँति यह काठी भी उसके बहुत काम आई थी और इसीलिये

काफी घिस चुकी थी। उसके ठीक पीछे शॉ एक लाल भूरे घोड़े पर घोडे पर सवार था। वह एक और बडे घोडे की रास थामे बढ रहा था। उसकी साज-सजावट मुझ से मिलती जुलती थी। यह भेस, साज-सजावट के लिये न होकर काम-काजी ढग से बनाया गया था। काठी स्पेनी ढग की अत्ययन्त सादी और काले रग की थी। उस में भारी पिस्तौलें लटकाने की जेबे भी बनी थी। पीछे की ओर एक कम्बल लिपटा रखा था। लपेटी हुई एक लम्बी खोजी रस्सी घोड़े की गर्दन से बाँधकर उसी के एक ओर लटका दी गई थी। सात सेर से अधिक भारी राइफल मेरे पास थी, किन्तु शॉ के पास दुनाली बन्दूक थी। इस समय की हमारी वेश-भूषा यद्यपि बहुत अच्छी न थी, फिर भी सभ्य ढग की अवश्य थी। किन्तु जब हम यात्रा से लौटकर आये तब की हमारी वेश-भूषा इस के मुकाबिले बहुत ही बिगडी हुई थी। फलालैन की एक लाल कमीज ही हमने पहन रखी थी, जो कमर पर कसी पेटी के कारण फ्रॉक जैसी लग रही थी। बूटो की जगह हमने भी मोकास्सिन की ही खाल पहन ली थी। हमारी बाकी पोशाक किसी आदिवासी स्त्री द्वारा हिरण के सुखाये और तपाये चमडे से बनी हुई थी। हमारी खच्चरो और गाडी को चलाने वाला देस्लारियर पीछे-पीछे अपनी गाडी को हलके कीचड में से होता हुआ बढाता आ रहा था। वह कभी अपना पाइप पीता था और कभी मैदानी भाषा मे एक गाला दुहराता था, "भगवान् के पवित्र बेटे!" ये शब्द वह तब कहता था, जब कोई टट्टू किसी गहरे नाले या खाई मे उतरने से कतराता था। यह गाडी सफेद कपडे से चारो ओर से ढकी हुई थी। इस प्रकार अन्दर की चीजें सुरक्षित कर ली गई थी। ऐसी गाडिया क्वीबेक के इलाके के बाजारो मे दर्जनो की सख्या मे इधर-उधर बंधी हुई मिल जाती थी। इनमे हमारे खाने-पीने का सामान, तम्बू, गोली-बारूद, कम्बल और आदि-वासियो के लिए भेटें आदि पडी थी।

आदमी हम चार थे, पर पशु आठ! मैंने और शॉ ने तो एक-एक घोडा फालतू ले ही रखा था, पर गाडी के साथ भी हम एक फालतू टट्टू लेकर चल रहे थे। मुसीबत या दुर्घटना के समय इसकी आवश्यकता पड सकती थी।

पूरे दल के इस वर्णन के बाद यह भी उचित ही होगा, यदि अपने साथ चलने वाले दोनो साथियो के चरित्र का भी कुछ परिचय दे दूं।

देस्लारियर कनाडा का रहने वाला था। उसमे जीन बैप्तिस्त की सभी

विशेषतायें मौजूद थीं। वह सदा आनन्द, प्रसन्न और अपने स्वामियो के प्रति नम्र रहता था। थकान, ठण्ड या कठिन मेहनत आदि कोई भी बात उसकी इस आदत में फर्क न डाल सकती थी। रात आने पर आग के पास बैठ कर वह पाइप सुलगा लेता और पूरे सन्तोप से भर कर कहानिया सुनाने लगता। इन मैदानो में तो जैसे उसकी जान बसती थी। हेनरी शातिलों इससे भिन्न स्वभाव का था। जब हम अभी सेंट लुई में ही थे, हमें फर कम्पनी के बहुत से आदमियो ने बडी सहानुभूति के साथ हमारे लायक एक पथ-प्रदर्शक और शिकारी ढूँढ देने का वायदा किया। एक दिन दोपहर बाद कम्पनी के दफ्तर में पहुँचने पर हमने एक लम्बा चौडा और मजा-धजा आदमी बैठा देखा। उसका चेहरा बहुत अच्छा और सरल था। उसे देखते ही हम उसकी ओर खिच गये। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब हमें बताया गया कि यही व्यक्ति हमारी पहाडी यात्रा में हमें राह दिखाने का काम करेगा। यह सेंट लुई के पास के ही एक छोटे से नगर में उत्पन्न हुआ था और पन्द्रह वर्ष की आयु से ही रॉकी पर्वतमाला के आस-पास घूमता रहा था। प्राय अधिकाश समय इस कम्पनी ने ही उसे वहा के आने अनेको किलो में भैंसो का मास-मुहैया करने के काम पर लगाये रखा था। शिकार के मामले में उसके मुकाबिले का एक ही आदमी था—सिमोनू। उसके साथ इसकी गहरी मित्रता थी। यह अभी एक दिन पहले ही पहाडो में चार साल बिताकर लौटा था। अगली यात्रा पर निकल पडने से पहले वह एक दिन की छुट्टी लेकर अपनी माँ से मिलने जाना चाहता था। उसकी आयु इस समय लगभग तीस वर्ष की थी। वह छ फुट लम्बा था। उसका शरीर बहुत ही सुन्दर और गठा हुआ था। इन्ही मदानो में उसने सब कुछ सीखा था। लिखने-पढने में वह बिल्कुल कोरा था, किन्तु उसकी सहज बुद्धि और सस्कार स्त्रियो से भी अधिक तेज़ थे। उसके मर्दाने चेहरे से उसकी सचाई, सादगी और नरम दिली साफ-साफ झलकती थी। उसे दूसरो का चरित्र बारीकी से पहिचानने की आदत थी। उसमे कुछ ऐसी विशेषता थी कि वह किसी भी समाज मे कोई गलती करने से अपने को बचा लेता था। वह अग्रेज़—अमरीकनो जैसे अशान्त स्वभाव का न था। वह आँखो के सामने के ससार को ही एक सचाई मान कर सतुष्ट रहता था। उसका सबसे बडा दोप ही यह था कि वह अत्यन्त सीधा-सादा और उदार था। इसी

कारण जीवन में अधिक बढने और पनपने मे उसकी रुचि न थी। इस पर भी उसके विषय में यह प्रसिद्ध था कि वह अपनी चीजो को चाहे कैसे ही बरते, दूसरो का सामान उसके हाथो मे सदा सुरक्षित रहता था। इन पहाडो पर उसकी वीरता और निशानेबाजी दोनो ही गजब की रहती थी। फिर भी यह आश्चर्य की ही बात है कि बात-बात पर बन्दूक का सहारा लेने वाले लोगो के बीच रह कर भी वह कभी किसी के साथ लडाई मे न उलझा था। एकाध बार उसके भोले स्वभाव को गलत समझ कर उसका उलटा अर्थ लिया गया, किन्तु इस नासमझी का परिणाम इतना बुरा रहा कि फिर कभी किसी ने उसे गलत समझने की कोशिश न की। उसके वीरतापूर्ण स्वभाव का परिचय इस बात से ही मिल जाता है कि उसके विषय मे यह प्रसिद्ध है कि उसने तीस से अधिक सलेटी रग के भालू मारे है। वह इस बात का जीता-जागता सबूत है कि बिना किसी मदद के भी कोई कैसे बढ सकता है। शहर मे या जगल में मैं अपने सच्चे मित्र हेनरी से बढकर और किसी अधिक अच्छे मनुष्य से न मिल पाया।

हम शीघ्र ही इन जगलो और झाडियो को पार कर खुले मैदान मे निकल आए। यहाँ कोई न कोई शावानू आदिवासी अपने छोटे से टट्टू पर चढा हुआ गुजरता दीखता। उसने सूती कमीज़ और चमकीला कमरबन्द पहने होते तथा एक रगीन रूमाल अपने लम्बे बालो पर पीछे की ओर लटकता हुआ बाँधा होता। दोपहर के समय हम मेढको और कछुओ से भरी एक छोटी सी धारा के पास ही आराम के लिए रुक गये। यहा पर कभी आदिवासियो ने डेरा डाला था, जिसके निशान अब भी मौजूद थे। इससे हमे धूप से बचने के लिए जगह आसानी से मिल गई। इसके लिए हमे केवल एक-आध चादर या कम्बल ही पुराने खण्डहरो पर तानना पडा। छाया करने के बाद हम अपनी काठिया बिछाकर बैठ गये। शॉ ने पहली बार अपनी मन पसन्द आदिवासियो की चिलम जलाई। देस्लारियर बिछे हुये कोयलो पर ही बैठ गया। उसने अपनी आखो को एक हाथ से ढका हुआ था और दूसरे हाथ मे एक छोटी छडी पकडी हुई थी। इस छडी से ही सामने के बर्तन मे तली जाती हुई चीजो को वह हिलाता जा रहा था। घोडो को पास की ही चरागाह मे, बिखरी हुई झाडियो के बीच में, चरने के लिए छोड दिया गया था। हवा कुछ भारी

और मस्ती भरी थी, जैसे बसन्त छाई हो। पास की धारा और चरागाह में से अचानक ही हजारो मेढक और जन्तु टर-टराने लगे।

अभी हम ठीक से बैठे भी न थे कि एक अतिथि आ पहुँचा। यह कोई बूढा, कन्सास प्रदेश का आदिवासी था। उसकी पोशाक देखने से वह किसी खास हस्ती का आदमी मालूम होता था। उसका सिर मुडा हुआ और लाल रग से रगा हुआ था। सिर के बीचोबीच बचे हुए बालो के गुच्छे से चीलों के कुछ पख और फनियर सापो की दो या तीन पूछें लटक रही थी। उसकी गालो पर सिन्दूर मला हुआ था। उसके कानो मे हरे शीशे के झुमके लटक रहे थे। सलेटी रग के भालू के पजो से बनी एक माला उसने गले मे पहनी हुई थी और शख और सीपी से बने अनेक हार उसकी छाती से लटक रहे थे। प्रणाम करने के लिए तेजी से हाथ मिलाकर उसने कन्धो से लटकना अपना लाल कम्बल नीचे गिरा दिया और स्वय चौकडी मार कर धरती पर बैठ गया। हमने उसे शर्बत का एक गिलास दिया। उसने इसकी प्रशसा की। तब वह हमे अपने बडप्पन की बातें बताने लगा। वह यह भी बता रहा था कि उसने कितने पौनी आदिवासी मारे। तभी अचानक धारा पार करके किनारे से चढता हुआ रग-बिरगे आदिवासियो का एक समूह हमारी ही ओर आता दिखाई दिया। वे सब जल्दी-जल्दी एक-दूसरे के पीछे बढते गए। पहले आदमी थे फिर औरतें और फिर बच्चे। उनमे से कुछ घोडो पर सवार थे और कुछ पैदल चल रहे थे। पर सभी मैले-कुचैले और भद्दी हालत मे थे। कुछ बूढी औरतें छोटे-छोटे खच्चरो पर बैठी हुई थी। उनमे से कुछ के पीछे साँप की सी आखो वाले एक या दो बच्चे भी फटे हुए कम्बलो को पकडे बैठे थे। कुछ लम्बे और पतले नौजवान हाथो मे धनुष-बाण लिए पैदल चल रहे थे। कुछ लडकिया भी साथ थी, जिन्होंने काच के मोती और लाल कपडे पहने हुए थे, पर फिर भी जिनकी बदसूरती छिप न सकी थी। इन्ही में कही-कही कोई ऐसा भी आदमी चल रहा था, जो हमारे ही अतिथि की भाँति अपने समुदाय के किसी खास पद का अधिकारी लगता था। ये लोग कन्सास आदिवासियो में सबसे छोटी जाति के थे। अपने स्वामियो के भैसो के शिकार के लिए चले जाने पर ये लोग वैस्टपोर्ट की ओर भीख माँगने जा रहे थे।

जब यह दरिद्र भीड गुज़र गई तब हमने अपने घोडो पर ज़ीने और

काठिया कसी और अगली यात्रा पर चल पडे। धारा को पार करने के बाद हमे अपने बाईं ओर के जगलो और नालो के परे कुछ नीची-छतों वाले मकान दिखाई दिए। जंगली गुलाबो और बसंती फूलो के बीच से आगे बढने पर हमें शावानू लोगो के मेथोडिस्ट मिशन के लकडी से बने गिरजे और स्कूल दिखाई दिए। यहाँ कुछ आदिवासी किसी धार्मिक मेले के लिए इकट्ठे हो रहे थे। कुछ अच्छी पोशाक पहने पचास-साठ लम्बे-चौड़े पुरुष वहा लकडियो की बैचो पर पडो के नीचे बैठे थे। उनके घोडे आस-पास के जंगले और कोठरियो के पास बधे हुए थे। उनका मुखिया पार्कस था, जो देखने मे पहलवान लगता था। वह वैस्टपोर्ट में स्थित अपनी व्यापार की जगह से अभी-अभी ही आया था। व्यापार की इस जगह को छोडकर उसके पास एक लम्बा-चौडा खेत और काफी सारे दास भी थे। वास्तव मे शावानू लोगो ने मिसूरी के सीमान्त पर रहने वाले किसी भी दूसरे आदिवासी कबीले की अपेक्षा अधिक तरक्की की है। ये लोग हमारे पुराने परिचित कसास आदिवासियो से, शक्ल और चरित्र मे एकदम भिन्न थे।

कुछ ही घण्टे की सवारी के बाद हम कसास नदी के किनारे पहुँच गए। इसके किनारे के जगल में बढते हुए और रेत को पार करते हुए हमने वहा डेरा डाला, जहाँ लोअर देलावारे को रास्ता फटता है। हमारा तम्बू पहली बार जिस जगह गाडा गया, वह जगह जगल के पास की चरागाह मे थी। सब चीजे ठीक-ठिकाने रखने के बाद हमें खाने की चिन्ता लग गई। पास के ही एक लट्ठो के बने मकान की ड्योढी मे देलावारे जाति की एक भारी भरकम बुढिया बैठी थी। पास ही पानी बह रहा था। एक बहुत सुन्दर दोगली लडकी उसी की देख-रेख में दरवाजे के आस-पास उछलते-कूदते तीतरो के झुण्ड को दाना दे रही थी। हमने रुपया और तम्बाकू आदि के बदले तीतर लेने चाहे, पर वह किसी कीमत पर भी देने को तैयार न हुई। इसलिए मैंने अपनी राइफल सम्भाली और जगल अथवा नदी मे कोई शिकार फसाने के लिए निकल पडा। चरागाह में अनेक चिडियाँ शोर करती फुदक रही थीं। परन्तु, निशाना साधने लायक उनमे से कोई भी न थी। केवल तीन गीध दिखाई दिए, जो साइकामोर के सूखे तने पर बैठे हुए थे। यह सूखा तना घनी हरी घास से अलग नदी पर बढ गया था। उन गीधो के सिर कंधो के

बीच छिपे हुए थे। लगता था कि वे पश्चिम से आने वाली हल्की-हल्की धूप को मस्ती से सेक रहे थे। उनमें कोई खास खिचाव मुझे न लगा। इसलिए मैंने भी इनके आनन्द में बाधा न डाली। बल्कि, मैं छिपते सूर्य के प्रकाश में प्रकृति की उस शोभा को देखने मे डूब गया। जगल की गुलाबी छाया मे तेज़ी से बढती हुई नदी का दृश्य जगली, पर बहुत ही शान्ति देने वाला, लग रहा था।

जब मै डेरे पर वापिस आया तो शॉ और एक बूढा आदिवासी ज़मीन पर बैठे कुछ बातें कर रहे थे और बारी-बारी हुक्का पी रहे थे। बूढा आदमी बता रहा था कि वह गोरो से प्यार करता है और उसे तम्बाकू भी बहुत अच्छा लगता है। उधर देसलारियर धरती पर ही टीन के थालो और तश्तरियो को फैला रहा था। क्योकि कोई और चीज़ मिल नही सकी थी, इसलिए उसने नाश्ते के लिए हमारे सामने बिस्कुट और मास सजा दिया। साथ ही काफी का बडा बर्तन भी रख दिया। अपने चाकू निकाल कर हम खाने में जुट गये। अधिक हिस्सा समाप्त करने के बाद, बाकी बचा-खुचा हमने उस आदिवासी को दे दिया। इसी समय हमारा ध्यान घोडो की ओर गया। उनकी अगली टागें बधी हुई थी और वे पेडो के बीच खडे थे। वे इस समय बहुत निराश और उकताए हुए थे। इसीलिए उनकी लगडी चाल ने हमारा ध्यान खीच लिया। लगता था जैसे उन्होंने जगल की इस यात्रा के पहले अनुभव को अच्छा नही समझा। विशेषकर, मेरे घोडे तो इस मैदानी ज़िन्दगी से डर ही गये लगते थे। उनमें से एक का नाम हेन्ड्रिक था। यह बहुत ही बलवान और परिश्रमी था चाबुक को छोडकर वह किसी भी चीज़ के आगे नही झुकता था। इस समय यह भी हमारी ओर बहुत तिरस्कार-भरी नज़र मे देख रहा था, मानो वह अपनी दुलत्तियो से बदला लेने की सोच रहा हो। दूसरे घोडे का नाम पोन्टिक था। यह था तो सादी ही किस्म का पर अपने काम में काफी अच्छा था। इस समय यह भी अपना सिर लटकाए खडा था और इसकी सटाएँ दोनो ओर लटक रही थी। मानो यह भी स्कूल भेजे जाने वाले किसी भारी-भरकम लडके के समान उदास और दु खी हो। उसकी होन-हार की पहचान बिलकुल सही होती थी। मैने जब अन्तिम बार उसके विषय में कुछ सुना तो वह ओजिल्लाला वश के एक बहादुर आदिवासी के आधीन

था और काक-जाति के आदिवासियो के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित हुआ था।

अधेरा बढने पर, जब चिडियो की आवाजो का स्थान झीगुरो की आवाज ने ले लिया, तब हमने भी तम्बू में आकर जमीन पर ही अपने कम्बल बिछाये और अपनी काठियो को सिरहाने रख कर लेट गये। इस मौसम मे हमने पहली बार शहर से बाहर डेरा डाला था। हर आदमी ने तम्बू में अपना वही स्थान चुन लिया, जो उसे सारी यात्रा भर अपनाना था। देस्लारियर को गाडी मिली। वह उसमें बरसात में छिपकर भी सो सकता था और इस प्रकार अपने मालिको से भी अधिक अच्छे बचाव में था।

यहाँ पर कसास नदी शावानू और देलावारे नामक आदिवासियो के प्रदेशो की सीमा बनाती है। अगले दिन हमने यह नदी पार की। बहुत कठिनता से अपने घोडो और सामान को हम पार पहुँचा सके। अपनी गाडी भी हमे खाली करनी पडी ताकि दूसरे किनारे की सीधी चढाई पर उसे चढाया जा सके। इतवार का दिन था। दिन कुछ गर्म, उजला और शान्त था। चारो ओर देलावारे लोगो के छोटे-छोटे घरो और उजाड खेतो पर शान्ति छाई हुई थी। कही-कही छोटे जन्तुओ या कीडो की आवाज सुनाई देती थी। जब तब कोई आदिवासी घोडे पर चढकर उधर से सभा-घर की ओर जाते हुए गुजरता या कोई बुढिया किसी टूटे-फूटे, लट्ठो से बने मकान के टूटे से दरवाजे पर बैठी सुस्ताने का मजा लेती हुई दिखाई दे जाती थी। देलावारो के इस गाव मे कोई घण्टी न थी, क्योकि उनके यहा इसका रिवाज ही नही था। इस पर भी इस एकान्त और बेतरतीब बस्ती मे भी हफ्ते के सातवें दिन की-सी वैसी ही शान्ति छाई हुई थी, जैसी न्यू हैम्पशायर के पर्वतो में बसे न्यू इगलैंड के किसी गाँव में अथवा वेर्मौण्ट के जगलो में पाई जाती है।

यहा से फोर्ट लीवनवर्थ की ओर एक सैनिक-सडक गई है। कुछ मील दूर तक इस सडक के दोनो ओर देलावारे लोगो के मकान थोडी-थोडी दूरी पर बने हुए है। इस इलाके में जंगली राह के किनारे लट्ठों के बने ये छोटे-छोटे झोपड राह को आकर्षक बना रहे थे। यहा प्रकृति के नजारे भी कम सुन्दर न थे। उन्हे सजाने के लिये बाहरी सहायता की जरूरत न थी। बडे-बडे मैदानो और खाइयो का मिला-जुला रूप या अनेक छोटी-मोटी धाराओं के किनारे सुनने वाले उनके हिस्से, सदियो से इन्सान द्वारा सजाये गये, धरती

के टुकडो से कम सुभावने नही थे। उस अधखुले मौसम मे भी यहाँ की ताज़गी पूरे उभार पर थी। जगल मे अजीरो जैसे लाल फूलो के गुच्छे और दूसरे बहुत से, पूरब में अनजाने, फूल भी भरपूर लदे हुए थे। इनके साथ ही मैदान की हरियाली खिले हुए फूलो के रगो से मिलकर रग-बिरगी हो उठी थी।

यह रात हमने एक पहाडी के पास के सोते के किनारे पर बिताई। अगले दिन सुबह हम फिर चल पडे और दोपहर से पहले ही फोर्ट लीवनवर्थ पहुँच गये। यहा सडक एक ऐसी धार के पार गई थी, जिसके दोनो ओर घने पेड लगे हुए थे। यह धार एक जगली खड्ड के गहरे में वह रही थी। हम इसमे उतरने ही लगे थे कि हमें एक उलझनभरा-सा जत्था नीचे पानी पार करके अपनी ओर ऊपर आता दिखाई दिया। हमने रुक कर उन्हे गुज़र जाने दिया। ये लोग देलावारे जाति के ही के थे, जो अभी-अभी लम्बे शिकार से लौट रहे थे। मर्द और औरतें—सभी घोडो पर सवार थे। उनके साथ ही बहुत से, सामान ढोने वाले, टट्टू भी थे। उन पर रोएदार खालें, भैसो की खालें तथा पतीली आदि घर के ज़रूरी सामान तथा कपडे और हथियार लदे हुए थे। ये सभी चीज़ें बहुत ही मैली-कुचैली थी, मानो ये बहुत अधिक काम मे आई हो। इस सारे समूह के पीछे एक बूढा घुडसवार आ रहा था। हमसे बात करने के लिए वह रुक गया। वह एक काले से गठे हुए टट्टू पर चढा हुआ था। उस टट्टू की सटा और पूछ के बाल किन्ही विशेष फलियो मे बाधे हुए थे। उसके मुह में लोहे की जग खाई हुई स्पेनी लगाम पडी थी, जिसके दोनो ओर रास की जगह भैसे की खाल की पेटिया बधी हुई थी। उसकी काठी नगी थी। यह शायद किसी मैक्सिको निवासी से छीनी गई थी और स्पेनी तरीके की यह सूखी काठ की ही थी। इस पर सलेटी रग के भालू की खाल मढी हुई थी और दोनो ओर लकडी की बनी दो रकाबे लटक रही थी। पेटियो के न होने के कारण एक खाल ही इस पर से होती उसके पेट के चारो ओर बधी हुई थी। इस सवार का घना रग और साप की सी तेज़ आँखें साफ बता रही थी कि वह आदिवासी है। उसने हरिण की खाल की कमीज पहनी हुई थी। यह उसके झालरदार पाजामो की ही भाति चर्बी की रगड और घिसने आदि के कारण काली पड चुकी थी। उसके सिर पर एक रूमाल

बधा हुआ था। उसके सामने ही राइफल टिकी हुई थी। इस हथियार के चलाने में देलावारे लोग बहुत सधे हुए माने गये है, जबकि इसके बोझिल होने के कारण दूसरे आदिवासी इसे साथ ले जाने में कतराते है।

उसने तुरन्त ही पूछा, "तुम्हारा सरदार कौन है ?"

हेनरी ने हमारी ओर इशारा किया। उस वृद्ध ने अपनी आँखे एक क्षण के लिए हम पर गडा दी और एकदम ही अपना निर्णय-सा देते हुए कहा, "बहुत बुरा ! अभी बहुत जवान है।" इस टिप्पणी द्वारा हमारे प्रति अपमान दिखाकर वह हमें छोडकर अपने लोगो के पीछे ही चला गया।

ये देलावारे लोग विजेता इरोक्वा के सहायक रहे थे। कभी ये विलियम पैन के भी शान्तिपूर्ण मित्र रहे थे। परन्तु, अब ये ही इन मैदानो के सबसे भयकर योद्धा थे। अब ये बहुत दूर-दूर के उन कबीलो पर भी हमला करते है, जिनका नाम इनके पुरखो ने भी कभी न सुना होगा। इनकी लडाई में अब भी आदिवासियो का सा ही जोश और तरीका था। ये अपने योद्धाओ के दल रॉकी पर्वतमाला और मैक्सिको तक हमले के लिए भेजते है। इनके पडौसी और पुराने साथी शावानू लोग अब खेती पर गुजर करते हैं और अच्छी बढती पर है। पर, देलावारे लोग हर साल घटते चले जाते है, क्योकि इन युद्धो में हर साल आदमी मारे जाते है।

इस दल को छोडकर आगे बढते ही हमने मिसूरी नदी के साथ-साथ बढने वाले दाई ओर फैले विशाल जगलो को देखा। मिसूरी नदी यहाँ इन्ही घने जगलो के बीच से होकर बह रही है। नदी के मोड पर, सामने ही कुछ दूर हमे पेडो में से झाँकते हुए फोर्ट लीवनवर्थ के कुछ ऊँचे निशान दिखाई दिये। हमारे और मिसूरी नदी के बीच एक हरी चरागाह वाला मैदान फैला हुआ था। इसी मैदान मे एक झरने के किनारे के वृक्षो के पास ही कप्तान और उनके साथियो का तम्बू गडा हुआ था। उसके आस-पास ही उनके घोड़े चर रहे थे। पर कप्तान आदि स्वय नही दीख रहे थे। उनकी खच्चरो को संभालने वाला, राइट वही गाडी के जुए पर बैठा गद्दी आदि की मरम्मत कर रहा था। बोइस्फेर्ड तम्बू के दरवाजे के पास ही अपनी राइफल साफ़ कर रहा था। सोरेल भी वही पर सुस्ता रहा था। बहुत ध्यान से देखने पर हमने कप्तान के भाई जैक को भी पहचान लिया। वह तम्बू में बैठा रस्सियां जोडने

के अपने पुराने काम मे जुटा हुआ था। पहुँचने पर उसने अपने आयरिश लहजे मे हमारा स्वागत किया और वताया कि कप्तान मछलियो के शिकार की ओर और र—सेना की ओर गये है। वे दोनो भी सूरज छिपने से पहले ही लौट आये। इसी वीच हमने भी उनके समीप ही अपना तम्बू गाड लिया था। भोजन के वाद एक सभा हुई और यह निश्चय हुआ कि यहा एक दिन और ठहर कर फिर सीमान्त की ओर कूच कर दिया जाय। यहा की भाषा मे ऐसे कूच को "कूद जाना" भी कहते है। हमारी यह विचार-सभा एक हलके से प्रकाश मे हुई। यह प्रकाश वहुत दूर पर मैदान मे जलने वाली पिछली गर्मियो की सूखी घास की लपटो के कारण हो रहा था।

— ० —

३ : फोर्ट लीवनवर्थ

अगली सुवह हम फोर्ट लीवनवर्थ की ओर चले। कर्नल कीर्नी अभी पहुँचे ही थे। इनसे मै पहले सेण्ट लुई मे भी परिचित हो चुका था। अब ये जनरल वन चुके है। इन्होने अपने स्वभाव के अनुसार आगे वढकर हमारा आदर-सत्कार किया। यह स्थान कोई किला नही है। इसके चारो ओर सुरक्षा की दीवारें भी वनी हुई नही है। केवल दो वडे मकान वने हुए है। यहाँ शान्ति विद्यमान है। इधर युद्ध की कोई अफवाह नही पहुँची है। घास का एक चौकोर मैदान है। उसके चारो ओर वैरकें और अधिकारियो के मकान वने हुए है। कुछ आदमी इसी जगह पर आ-जा रहे थे और कुछ वृक्षो के नीचे सुस्ता रहे थे। अव से कुछ सप्ताह बाद यहाँ की हालत पलटी हुई थी। उस समय यहाँ सान्ता फे की चढाई पर जाने वाले सीमान्त के अनेको खोजी जमा हुए थे।

सेना के पडाव से गुजरते हुए हम किक्कापू गाँव की ओर गये। यह यहाँ से ५-६ मील परे होगा। राह वडी अनिश्चित और सन्देह भरी थी। यह हमे मिसूरी के सीमान्त पर उठने वाली दोनो ओर से ढलवाँ पहाडियो तक ले गई। यहाँ से दाईं और बाईं ओर देखकर हम दो किस्म के विरोधी नजारो का मजा ले सकते थे। बाईं ओर मीलो दूर तक मैदान फैला हुआ था। इसमें टीले और खड्ड दूर से ही दीख रहे थे। अनेक खाइयाँ भी दीख रही थी। या फिर दूर-दूर तक घास ही फैली नजर आती थी। दूर सीमा पर उठने वाली पहाडियो पर वृक्षो की पक्तिया भी धूप मे चमकती नजर आ रही थी। इस सुन्दर दृश्य में खिचाव, मौसम की ताजगी और जलवायु की अनुकूलता के कारण, और भी वढ गया था। हमारे नीचे, दाईं ओर टूटे और उजाड जगलो का ही फैलाव था। हम हरे और सूखे पेडो की चोटियाँ साफ-साफ देख सकते थे। इनमे कुछ तने खडे थे, कुछ झुके हुए थे और ववण्डर मे गिर कर ढेरो के रूप मे जमा हो गये थे। उनसे परे, उनकी शाखा मे से झाकने पर, मिसूरी का मचलता हुआ गदला पानी साफ पहचाना जा सकता था। परले किनारे की ओर इसकी धार अधिक तेज थी।

यहाँ से रास्ता अदर की ओर मुड गया था। एक खुली चरागाह मे आते ही हमने एक ऊँची जमीन पर कुछ मकान देखे। बहुत से आदमी इन के चारो ओर खडे थे। किक्कापू गाँव के व्यापारी की ये दुकानें, मकान और घुडसाल थे। इस समय वह उस बस्ती के आधे से अधिक लोगो से घिरा हुआ था। उन लोगो ने अपने दर्जनो छोटे, कमजोर और उपेक्षित टट्टू वाड के जगले और बाहरी कोठरियो के पास बाधे हुए थे और वे स्वय दूकान मे या आस-पास जमा थे। इनमे सभी रग के चेहरे मौजूद थे—लाल, हरे, सफेद और काले। सभी के चेहरे अजब तरह से घुले-मिले और अनेक प्रकार के थे। सूती कमीजें, लाल-नीले कम्बल, पीतल के बुन्दे और विशेष दानो वाले हार आदि उन लोगो के शरीर पर काफी सख्या मे दिखाई दे रहे थे। व्यापारी की आँखें नीली और चेहरा चौडा था। उसका वेश और उसका व्यवहार उसे ठेठ सीमान्त का ही बता रहे थे। इस समय उसके चारो ओर आदमी और स्त्रियाँ ग्राहको के रूप मे जमा थे और पेटियो आदि पर बैठे थे। इस समय उसकी आँखें बिल्ली की सी लग रही थी।

गाँव यहा से अधिक दूर न था। उसे देखते ही उसके निवासियो की दुर्भाग्य और उदासी से भरी हालत का साफ-साफ पता चल जाता था। उसका अनुमान करने के लिए जगल की घाटी मे से बहनेवाली किसी पतली सी तेज धारा की कल्पना कीजिए जो कभी गिरे हुए पेडो या लट्ठो के नीचे छिपती चल रही हो और कभी खुले मैदान मे बहने लगती हो, या एक छोटी झील के रूप मे बदल जाती हो। इस धारा के किनारे पर ही पेडो के बीच मे जगह साफ करके बनाये हुए छोटे-छोटे लट्ठो के घरो की कल्पना भी कीजिए, जो बिल्कुल ही टूटे-फूटे और लापरवाही से रखे हुए हो। इन मकानो को आपस मे पतली-सी पगडण्डियाँ ही एक दूसरे से मिलाती थी। यहा हमे कभी कोई छुटा हुआ बछडा या कोई पालतू सूअर अथवा टट्टू मिल जाता था, जिसका स्वामी अपने ही घर के आगे लेटा हुआ धूप सेक रहा होता था। ऐसे लोग पास जाने पर हमे लापरवाही और सन्देह की निगाह से देखते थे। कुछ आगे बढने पर हमे इन लोगो के पडौसी पोत्तावत्तामी जाति के लोगो के घर मिले। उनके घरो को 'पुक्वी' कहते है। उनके घर इन लोगो के घरो से अधिक अच्छी दशा मे थे।

अन्त में तेज गर्मी और उमस से परेशान होकर और थक कर हम अपने मित्र-व्यापारी के ही पास लौट आये। इस समय तक उसके चारो ओर की भीड कम हो गई थी। अब वह आराम कर रहा था। उसने हमे पुराने फ्राँसीसी तरीके के अपने सफेद और हरे रग के मकान में अन्दर बुलाया और एक सजे-धजे कमरे में ले गया। खिडकियो के परदे गिराकर धूप से बचाव कर दिया गया। किसी घाटी की ही भाँति कमरा भी ठण्डा था। इसके फर्श पर गलीचा बिछा हुआ था। इसकी सी सजावट इस इलाके मे पाने की आशा नही की जा सकती। सोफे, कुर्सियाँ, मेजें और किताबो की छोटी अलमारी आदि सभी चीजे पूरबी इलाके के सभ्य घरो की ही भाँति थी। एक-दो चीजें ऐसी भी पड़ी थी, जिनसे इस इलाके की सभ्यता की झलक भी मिल जाती थी। एक भरी हुई बन्द पिस्तौल सामने अगीठी पर पडी थी। इसी तरह, किताबो की अलमारी के शीशे मे से दीख रहा था कि मिल्टन की पुस्तको के ऊपर ही एक बहुत खतरनाक चमकती छुरी रखी थी।

हमारा मेज़बान कुछ देर के लिये बाहर गया और जब लौटा तो वह ठण्डा पानी, गिलास और शराब की एक बोतल साथ लेता आया था। इस भयकर गर्मी मे ये चीजें निश्चय ही सबसे अधिक अच्छी थी। इसके कुछ ही देर बाद एक बहुत ही भली और हँसती हुई औरत आई वह यूरोपीय और अमरीकी खून की मिली जुली निशानी थी। निश्चय ही वह आज से एक-दो साल पहले बहुत सुन्दर रही होगी। उसने हमे बताया कि हमारे लिये साथ के कमरे में भोजन तैयार था। हमारा स्वागत करने वाली यह गृह-स्वामिनी जीवन के आनन्द से ही परिचित थी। उसे किसी भी चिन्ता से मतलब न था। हम भोजन के समय मछलियो के शिकार एव किले के अधिकारियो के जीवन की घटनाएँ सुनने मे लगे हुए थे और वह वही बैठ कर हमारा सत्कार कर रही थी। काफी देर बाद इस सत्कार-प्रेमी व्यापारी और उसकी मित्र से विदाई लेकर हम फिर से छावनी लौट आये।

शॉ अपने डेरे की ओर चला गया, पर मैं जनरल कीर्नी से मिलने के लिये रुक गया। वह अब भी मेज़ पर बैठा था। उसके साथ ही हमारा साथी कप्तान भी बैठा था। उसकी वेशभूषा इस समय वैसी ही थी, जैसी हमने वैस्टपोर्ट में देखी थी। हाँ, काला पाइप इस समय जरूर एक ओर रखा

हुआ था। वह अपनी टोपी हाथ मे घुमा रहा था और यात्रा में अपनी घुडसवारी और कभी-कभी होने वाले भैंसे के शिकार की बात सुनाता जा रहा था। वहा र—भी बैठा था। उसकी पोशाक अधिक अच्छी थी। इस समय हमने अंतिम बार सभ्यता के आनन्द चखे और इसी खुशी मे, अपनी विदाई के गम को भुलाने के लिये शराब पी। तब फिर से घोडो पर चढकर अपने डेरो पर वापिस लौट आये। यहाँ अगले दिन के कूच की तैयारी पूरी हो चुकी थी।

— ० —
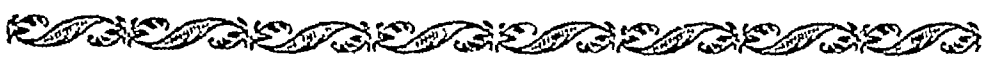
४ : कूच

समुद्र पार के हमारे साथी यात्री इस यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार थे। उनकी गाडी मे छह टट्टू जुते हुए थे। उसमे कम से कम छह महीने के लिए सामान भरा हुआ था। इनके अलावा गोली-बारूद भी काफी मात्रा मे था। कुछ राइफले, छोटी शिकारी बन्दूकें, रस्सिया, काठियाँ, निजू सामान और अन्य कई प्रकार की छोटी-मोटी चीजें भी लदी हुईं थी। इतनी अधिक चीजो के कारण कठिनाई भी होती है। उनमे से हर एक के पास दूरबीन और दिशा देखने वाला यन्त्र भी था। साथ ही, हर-एक ने एक-एक बडी अग्रेजी दुनाली बन्दूक भी जीन मे, सैनिको के समान ही, लटका रखी थी।

तेईस मई की पौ फटने तक हम नाश्ते से निबट चुके थे। तम्बू उखाड कर घोडो को कसा जा चुका था और यात्रा की सब तैयारी पूरी हो चुकी थी। देस्लारियर ने टट्टुओ को उठकर आगे चलने के लिए आवाज़ दी। हमारे मित्रो का गाडीवान राइट बहुत कोशिश के बाद अपने पशुओ को चलाने मे सफल हुआ। गाडियो के चलते ही और सब यात्री भी पीछे-पीछे चल पडे। इस प्रकार हमने बहुत बडे अरसे के लिये बिस्तरो और घर के सुख आदि को छोड दिया। यह दिन बहुत ही अच्छा और महत्वपूर्ण था, पर मुझे और शॉ को कुछ सन्देह थे, जो बाद मे चल कर सच्चे सिद्ध हुए। हमे उसी समय पता चला कि यद्यपि र—ने इस रास्ते को हमसे बिना पूछे खुद ही चुना था, पर सारे दल में से एक भी व्यक्ति इस रास्ते से परिचित न था। इस प्रकार मे बढने का परिणाम एक-दम ही सामने आ गया। उसकी योजना के अनुसार हमे पिछले वर्ष जनरल कीर्नी के नेतृत्व में फोर्ट लारामी जाने वाली कुछ सैनिक टुकडियो की राह पर चलना था। इस तरह वह ओरेगन की ओर जाने वाले यात्रियो की प्लाट् नदी के पास से जाने वाली बडी सडक तक पहुँचना चाहता था। हम एक-दो घण्टे तक इसी तरह चलते रहे। इसी समय सामने परिचित मकानो का एक समूह दिखाई दिया। अपनी बाड के ऊपर से ही किक्कापू के व्यापारी ने हमे सम्बोधन करके पूछा, "कहो किधर जा रहे हो ?" जब हमने

देखा कि हम रॉकी पर्वत-माला के रास्ते से विपरीत दिशा मे मीलो दूर निकल गए है, और अपनी मजिल की ओर एक इच भी नही बढे, तो हममे से बहुतो ने उल्टी-सीधी बातें कही। इस व्यापारी ने हमे सीधा रास्ता बताया और सूर्य की ओर मुख करके हम मैदानो की ओर रास्ता खोजते बढने लगे। हमे छोटे और बडे पेडो मे से राह खोजनी पडी, झरने और जोहड पार करने पडे, और मीलो तक फैले हुए हरे-भरे मैदानो मे से गुज़रना पडा। ये मैदान बहुत अधिक जगली थे। शायद मातूसेप्पा को भी इतने जगली मैदानो मे से गुज़रना न पडा होगा।

"न मनुष्य और न पशु,
न खुर के निशान और न पद-चिन्ह,
उस फैली जगली धरती पर दीखते थे,
न कोई यात्रा का चिन्ह था, न किसी मेहनत का,
जैसे हवा भी गूगी हो उठी हो।"

आगे-आगे बढते हुए जब हम इन बडे मैदानो मे से एक से पार हुए। पीछे की ओर मुडकर देखने पर हमे मील भर से भी अधिक दूर तक बिखरे हुए घुडसवार आते दिखाई दिए। इस सारे समूह के अन्त मे सफेद छत वाली बैलगाड़िया आ रही थी। कप्तान ने खुशी मे चिल्लाकर कहा, "आखिर हम यहाँ आ ही पहुचे है।" सच यह था कि यहाँ आकर हमे घुडसवारों की एक बहुत बडी राह मिल गई थी। हम बडी प्रसन्नता के साथ इस राह पर बढ गये। इस समय हमारे भाव पहले से काफी ठीक हो गये थे। साझ के समय हमने एक ऊँचे टीले पर अपना डेरा जमाया। इससे नीचे की ओर एक धारा लम्बी घास मे से होती हुई बह रही थी। अधेरा बढने लगा। हमने घोडो को चरने के लिए छोड दिया। हेनरी ने चेतावनी देते हुए कहा, "आंधी चलने वाली है, इसलिये तम्बू गहरे करके गाडो।" हमने उसका कहना मानकर तम्बू को अधिक से अधिक सुरक्षित कर लिया। इस समय तक आकाश बिल्कुल पलट गया था हवा मे सिलाव की गन्ध से हमे यह पता चल गया था कि दिन के साफ आकाश और सूर्य की गर्मी के बाद आने वाली रात बहुत ही तूफानी बन कर आयेगी। इस समय मैदान भी नया रूप धारण कर उठा था। इसके टीले बादलो की छाया मे अधिक काले और गहरे रग के हो

उठे थे। जल्दी ही कुछ दूरी पर बादलो की गरज सुनाई देने लगी। अपने शिविर के पास की ढलान के नीचे, घास के एक मैदान मे हमने घोडो की अगली टागें जकड कर उन्हें बाध दिया। अभी हम तम्बू मे पहुंच भी न पाये थे कि वर्षा शुरू हो गई। तम्बू के दरवाजे पर बैठ कर हम कप्तान को देखने लगे। वह अपना लम्बा चोगा पहने, इस वर्षा मे भी, घोडो के बीच घूम रहा था। उसे यह भय सता रहा था कि कही उसका कोई प्रिय घोडा भाग न जाय या उसके साथ कोई और दुर्घटना न हो जाय ! उसकी निगाह दूर मैदान में दिखाई देने वाले तीन भेडियो की ओर लगी हुई थी, जैसे उसे उनकी ओर से कोई भय था !

अगली सुबह हम एक-दो मील भी न गये होगे कि अत्यन्त फैले हुए जगल दिखाई दिये। इनके बीच मे से एक चौडी और गहरी धारा बह रही थी। इसमे कीचड मिला पानी अधिक था, इसीलिये धोखे का डर भी अधिक था। देस्लारियर गाडी को लिए आगे-आगे चल रहा था। उसने अपना पाइप झटकाया और टट्टुओ पर चाबुक और गालियो की बौछार करने लगा। उसने गाडी नदी मे घसा दी, पर वह बीच में ही फँस कर रह गई। वह स्वयं घुटनो गहरे पानी मे उतर पडा। चाबुको की मार और भगवान् की दया से वह टट्टुओ को उस दलदल मे से बाहर निकालने में समर्थ हो गया। तभी हमारे साथियो की गाडी भी किनारे पर आ पहुँची। पर यह रुक गई।

कप्तान का ध्यान धारा की ओर था। वह बोला, "मेरी राय में—"

उसकी बात काट कर र—चिल्ला पडा, "बढते चलो !"

परन्तु गाडीवान राइट अभी तक अपना मत स्थिर न कर सका था। वह अब भी एक जुते हुए टट्टू पर ही बैठा हुआ कुछ सोच रहा था और उसी दशा मे सीटी बजा रहा था।

कप्तान ने अपनी बात फिर पूरी की, "मेरी राय में हमें सामान उतार कर गाडी को हलका कर देना चाहिए। मै शर्त लगाकर कह सकता हूँ कि अगर हमने ऐसे ही धारा पार करने की कोशिश की तो हम फँस जायेंगे।"

उसके छोटे भाई जैक ने भी तुरन्त हामी भरी, "हाँ, हम फँस जायेंगे !" और पूर्ण निश्चय के साथ उसने अपना सर हिला दिया।

विरोध करते हुए जिद्दी र—फिर चिल्ला पडा, "आगे बढ़ो ! बढ़ते

चलो !"

अपने साथियो की इस हरकत को देखते हुए हम प्रसन्न से बैठे थे । हमारी ओर देख कर कप्तान ने कहा, "अच्छा ! मै तो केवल सलाह ही दे सकता हूँ । अगर किसी को नही माननी तो न माने ।"

इस बीच राइट अपना इरादा बना चुका था । उसने तुरन्त ही गालियो की बौछार शुरू कर दी । देस्लारियर ने फ्रैंच भाषा मे जो कुछ कहा था, राइट की गालिया भी उससे मिलती जुलती ही थी । पर ऐसा लगता था कि छोटे मोटे पटाको के बाद अब जैसे कोई तोप गोले उगलने लगी हो । इसके साथ ही उसने अपने खच्चरो को मुक्के भी मारने शुरू किये और वे बहुत जल्दी ही कीचड मे धँस पडे । गाडी उनके पीछे घिसटती रही । कुछ देर को लगा कि शायद गाडी पार न हो पाएगी । परन्तु, तभी राइट अपनी काठी पर जमकर एक पागल की भाँति गालियो और चाबुक की बौछार करने लगा । इन छोटे-छोटे खच्चरो पर नदी पार जाने का भरोसा ही और कौन कर सकता था ? इस कठिन मौके पर इन सब खच्चरो को मिलकर काम करना चाहिये था, पर इसी समय ये एक दूसरे को धक्का देकर गाडी से अलग हो गये और धारा के दूसरे किनारे पर फिर से इकट्ठे हो गए । गाडी धुरी तक कीचड मे धँस गई थी और हर क्षण अधिक धँसती जा रही थी । इसे खाली करने के अलावा और कोई चारा नही रह गया था । तब इसके नीचे से कीचड खाली करके तथा झाडियें और शाखें आदि बिछाकर गाडी को निकालने का रास्ता तैयार करना जरूरी था । यह सब मेहनत करने पर बहुत देर बाद ही गाडी बाहर आ सकी । अगले पखवाडे मे इस तरह की कोई न कोई रुकावट दिन मे चार पाच बार आ ही जाती थी । इसीलिए प्लाट् नदी की ओर हमारी चाल बहुत धीमी रही ।

छ-सात मील और आगे जाकर हमने दोपहर बिताने के लिए पडाव डाला । यात्रा फिर शुरू करने से पहले जब सब घोडो को खोल कर पानी पीने भेजा गया, तो मेरा घर लौटने के लिए उतावला घोडा—पौन्टियक—एक दम ही उछल कर धारा के पार चला गया और पुराने इलाको की ओर तेज़ी से दौडने लगा । मै अपने दूसरे घोडे पर चढकर उसके पीछे-पीछे भागा । एक छोटा चक्कर काटकर मै उसके आगे निकल गया और उसे लौटा लाने की

आशा करने लगा । पर वह तभी बहुत लम्बी छुलाँगें मारता हुआ मैदान में बहुत दूर तक निकल गया और थोडी देर बाद फिर से मेरे पास लौट आया । मैंने बार-बार उसे पकडना चाहा पर नतीजा वही रहा । पौन्टियक इस मैदान से उकता गया था । इसलिए मैंने एक और उपाय बरतने का निश्चय किया । मै उसके पीछे धीरे-धीरे चलने लगा । मुझे आशा थी कि मैं उसकी गर्दन से लटकने वाली खोजी रस्सी को उसके काफी दूर से ही पकड़ लूँगा । मेरा यह पीछा मजेदार होता गया, क्योंकि मीलो तक मै उस दुष्ट को बिना चौकन्ना किए उसके पीछे चलता गया और धीरे-धीरे उसके नज़दीक आता गया । अन्त में मेरा घोडा उसके इतने पास पहुँच गया कि उसकी पूँछ हिलने से उसकी नाक को छूने लगी । मै लगाम खीचने की अपेक्षा धीरे से धरती पर उतर गया । उतरते समय मेरी बन्दूक काठी से टकरा गई और इसकी आवाज़ से चौंक कर वह भाग खडा हुआ । घोडे पर फिर से चढ कर मैंने मन ही मन कहा,—"मेरे मित्र, अब अगर ऐसा किया तो मै तुम्हे गोली मार दूँगा ।"

यहा से लीवनवर्थ का किला चालीस मील दूर था । मैंने वहाँ तक उसका पीछा करने का फैसला किया । मैंने अकेले ही बिना भोजन किए रात बिताने का निश्चय किया और सुबह होते ही फिर आगे बढने का इरादा बनाया । अब भी एक आशा बाकी थी । जहाँ हमारी गाडी कीचड़ मे धँस गई थी वह जगह सामने ही थी । हो सकता है इस दौड के कारण पौन्टियक प्यासा हो उठा हो और वह पानी पीने के लिए रुक गया हो । जितना हो सकता था, मै उतना उसके पास होकर चल रहा था । पर साथ ही मै उसे किसी प्रकार चौकाना नही चाहता था । परिणाम मेरी आशा के अनुकूल ही हुआ, क्योंकि वह पेड़ो मे छिपकर बढ़ता हुआ पानी के पास तक जाकर रुक गया था । उतरकर अपने घोड़े हेन्ड्रिक को थामे-थामे कीचड़ मे से पार जाकर मैंने बहुत संतोष के साथ पौन्टियक की खोजी रस्सी उठाली और उसे बाँह पर तीन चार लपेट कर कस लिया । दूसरे घोड़े पर चढ़ते हुए मैंने मन ही मन कहा,—"अब तुम जरा भाग कर देखो ।" पर पौन्टियक लौटने पर तुरन्त राजी न हुआ । हेन्ड्रिक भी लौटने के लिए राजी न था । उसे मेरा विवश करना अच्छा न लगा । वह यह समझ कर प्रसन्न था कि हम घर की ओर लौट रहे हैं । अब उसे थाकुन सामने ही दीख आ गई । वह फिर से खुशी-खुशी डेरे की ओर, पौन्टियक

को पीछे-पीछे घसीटते हुए बढने लगा। एक-दो घण्टे बाद सूरज के छिपते समय मैने मैदान के एक टीले पर गढे तम्बुग्रो को देखा। यह एक जगल के पीछे दिखाई दे रहे थे। इनके पास ही एक चरागाह मे घोडे चर रहे थे। वहाँ जैक चौकडी मार कर बैठा हुग्रा रस्सियाँ जोड रहा था ग्रौर बाकी सब घास पर लेटे हुए तम्बाकू पी रहे या कहानिया सुन-सुना रहे थे। उस रात हमने भेडियो के समूह का एक सगीत सुना, जो ग्रब तक के ऐसे सब सगीतो से ग्रच्छा था। सुबह हमने उन भेडियो मे से एक को तम्बुग्रो के पास ही घोडो के बीचो-बीच बैठे देखा। वह ग्रपनी सलेटी रग की ग्राँखो से हमारी ग्रोर देख रहा था। पर, ग्रपनी ग्रोर बन्दूक तानी जाती देख कर वह तेजी से उछला ग्रौर एक दम भाग निकला।

ग्रगले एक या दो दिन का वर्णन मै छोड रहा हूँ, क्योकि उन दिनो कोई खास बात नही घटी। ग्रगर कभी मेरे किसी पाठक का दिल इन मैदानो को देखने का करे, ग्रौर वह प्लाट् का यही "सबसे बढिया" रास्ता ग्रपने लिए चुने, तो मै विश्वास दिलाते हुए उसे कहूँगा कि वह तुरन्त ही ग्रपनी कल्पना के लोक मे पहुँचने की उम्मीद न रखे। उसे ग्रपनी कल्पना के 'महान ग्रमरीकी रेगिस्तान' मे पहुँचने से पहले कुछ नीरस और भयावह भाग भी पार करना होगा। यह रेगिस्तान एक उजाड-बियावान प्रदेश है। यहाँ भैसो ग्रौर ग्रादि-वासियो का पीछा किया जा सकता है। सभ्यता यहाँ के ग्रादिवासियो से कोसो दूर रहती है। इससे पहले का इलाका कुछ ग्रधिक फैला हुग्रा ग्रौर उपजाऊ है, ग्रौर दूर सीमान्त तक सैकडो मील मे फैला हुग्रा है। यह इलाका ही इस मैदान के ग्राकर्षक रूप को बताता है। इसी इलाके ने ही ग्रनेको यात्रियो, चित्रकारो, कवियो ग्रौर उपन्यासकारो की कल्पनाग्रो को रगीनी दी है। वे लोग कभी इससे ग्रागे न बढे होगे। ग्रगर कोई दर्शक चित्रकार की सी नजर रखता हो तो वह यहा पर ग्रपनी साधना का समय बहुत चाव के साथ बिता सकता है। यहाँ के नजारे बहुत ग्रच्छे तो नही है, पर तो भी उनमे सुन्दरता ग्रौर ग्रानन्द जरूर है। यहा समतल मैदान इतने फैले हुए है कि उन्हें एक नजर मे पूरा ग्राँका भी नही जा सकता। ऊँची-नीची हरियाली ऐसी लगती है जैसे समुद्र मे कुछ स्थिर टीले उठे हुए हो। यहा नदियो की धारें, जगलो से घिरी हुई ग्रौर बिखरी हुई ग्रमराइयो मे से बहती हुई, बहुत बडी सख्या मे

मिलती है। ऐसा यात्री भले ही कितना ही उत्साही हो, पर कुछ जगह उसका उत्साह भी बुरी तरह टूट जायगा। उसकी गाडियाँ कीचड मे धँस जायँगी। उसके घोडे बन्धन तुडाकर भाग जायेंगे। जुआ टूट जायेगा और धुरी की लकडी कमजोर साबित हो जाएगी। प्राय. उसे बहुत घने काले कीचड पर ही सोना मिलेगा। भोजन के रूप में उसे बिस्कुटो और नमकीन चीजो पर ही सन्तोष करना होगा। क्योकि चाहे यह बात अजीब ही लगे, इस इलाके मे शिकार बहुत कम मिलता है। आगे बढने पर, ऐसा यात्री, अपनी राह की घास मे से चमकते हुए बारहसिंगे के बडे-बडे सीगो को भी चमकता हुआ देखेगा। और कुछ आगे चलकर उसे भैंसो की बडी-बडी सफेद खोपडियाँ भी पडी हुई मिलेंगी। ये भैंसे कभी इसी उजाड प्रदेश में अनेको की सख्या मे घूमा करते थे। हो सकता है कि ऐसा यात्री हमारे ही समान यहा पूरे पन्द्रह दिन तक घूमता रहे और हिरण के खुर बराबर भी कोई चीज उसे देखने को न मिले। बसन्त के दिनो मे यहाँ मैदानी मुर्गी तक भी मिलनी कठिन होती है। परन्तु इन सब कमियो को पूरा करने के लिए उसे यहाँ दूसरे असख्य जन्तु घेरते हुए मिलेंगे। रात के समय भेडिये उसे अपने सगीत से मुग्ध करेगे और दिन के समय वे उसके आस-पास, बन्दूक के निशाने की पहुँच मे ही, मँडराते हुए दिखाई देंगे। उसका घोडा कभी-कभी अचानक ही बैजर नामक जन्तु की माँद में खुर फसा बैठेगा। उसे चारो तरफ दलदल और कीचड मे से टर्राते हुये हजारो मेढको की आवाजें आएगी। ये मेढक हर रग, आकार और लम्बाई चौडाई के मिलेंगे। यहा घोडे के पाँवो के नीचे से चुपचाप निकलते हुए या फिर रात के समय तम्बू मे सरकते हुये सैकड़ो साँप मिलेंगे। इसके साथ ही मडराते और भिनभिनाते असख्यो मच्छर उसकी पलको से नीद को भगा देंगे। जब कभी वह तपती धूप मे फैले हुये मैदान की लम्बी यात्रा के बाद बहुत प्यासा होकर किसी जोहड के किनारे पानी पीने के लिए उतरेगा तो वह देखेगा कि उसके प्याले के तले पर अनेको मेढ़को के अण्डे या छोटे बच्चे हरकत कर रहे हैं। इस सबके साथ ही वह यह भी पायेगा कि प्रतिदिन सुबह एक तेज काटती हुई धूप उसे सताया करेगी और हर शाम को चार बजे के लगभग उसे लगातार एक तूफान उठता और बरसता मिलेगा।

एक दिन सुबह की थका देने वाली यात्रा के बाद दोपहर को सुस्ताने के

लिए हम खुले मैदान मे ही रुक गये। कोई भी पेड दिखाई नही दे रहा था। पर पास ही के एक खड्ड मे एक चश्मा अवश्य वह रहा था। वह बल खाता हुआ और कही-कही रुके हुए पानी के गड्ढे बनाता हुआ बढ रहा था। कही उसके तल मे कीचड जमा हुआ था। इस प्रकार वह एक वडी हलकी सी धार के रूप मे छोटी-छोटी झाडियो के बीच से होता हुआ और लम्बी घास की जडो को छूता हुआ आगे बढ रहा था। दिन बहुत ही गर्मी भरा और कठोर था। घोडे और खच्चर मैदान मे ही अपनी सुस्ती मिटाने के लिए लोट-पोट हो रहे थे। या फिर नीचे की झाडियो मे चर रहे थे। हम भोजन कर चुके थे। देस्लारियर अपना पाइप पीता हुआ घास पर ही घुटनो के बल बैठा हुआ था और बर्तनो को साफ कर रहा था। आगे बढने का इशारा मिलने से पहले कुछ आराम कर लेने की नीयत से शॉ वही गाडी की छाया मे लेटा आराम कर रहा था। हेनरी सोने से पहले सापो के निशान देख कर निश्चिन्त हो जाना चाहता था, क्योकि उसे इनसे ही सब से अधिक डर लगता था। उसने गाडी के पास जब कुछ सन्देह पैदा करने वाले बिल देखे तो उसके मुख से अनेको गालिया निकलने लगी। मै गाडी के पहिये के पास ही पडने वाली एक हल्की-सी छाया मे बैठा घोडे के पाँवो मे बाधने वाली रस्सियो को ठीक कर रहा था, ताकि पौन्टियक की पिछली रात को तोडी हुई रस्सियो को उनसे बदल सकूँ। हमारे मित्रो का डेरा हमसे कुछ ही दूरी पर था। वहाँ भी इसी प्रकार की सुस्ती छायी हुई थी।

सांप के बिलो को देखना छोडकर ऊपर को सिर उठाते हुए हेनरी ने पुकारा—"अरे! यह तो हमारे कप्तान आ रहे है।"

कप्तान हमारे पास आकर चुपचाप खडा हो गया और हमे देखने लगा।

अन्त मे वह बोला, "पार्कमैन! जरा उधर शॉ को देखो। वह गाडी के नीचे सो रहा है। उसके कधे पर गाडी की धुरी से लगातार मैला तेल टपक रहा है।"

यह सुन कर शॉ उठ पडा। उसकी आँखें अधखुली थी। इशारे के स्थान को छूकर उसने देखा कि उसकी लाल कमीज चिकनाई से भर गई है।

कप्तान ने हसते हुए कहा, 'जब वह आदिवासी औरतो के बीच जायेगा, तब अच्छा न लगेगा। क्यो, यह बात ठीक है न ?

तब वह भी गाड़ी के नीचे सरक आया और कहानियाँ सुनाने लगा। उसके पास कहानियो का अटूट भंडार था। रह-रह कर वह घोडो की ओर देखता रहता था। अन्त मे वह बहुत तेज़ी से उछल पडा और बोला, "देखो, वह घोडा उधर पहाडो की ओर भागा जा रहा है। अरे, वह भाग निकला शॉ! यह तुम्हारा ही बडा घोडा है। नही, नही, यह तुम्हारा नही है। यह जैक का घोडा है। जैक! जैक!" यह सुन कर जैक उछला और हमें खोई-खोई नज़रो से देखने लगा।

कप्तान गरजा, "जाओ, अपना घोडा पकड लाओ, नही तो वह खो जाएगा।"

जैक तुरन्त ही घास पर भाग निकला। पाजामे उसके पैरो मे अटकने लगे। कप्तान बहुत उत्सुकता से उसे देखता रहा। अन्त मे, घोडा पकडे जाने के बाद वह चैन से बैठ गया। अब उसके चेहरे पर चिन्ता और गम्भीरता छा चुकी थी।

वह बोला, "मै तुम्हें समझा दूँ कि ऐसी बात हमे बहुत महगी पडेगी। एक दिन इसी तरह हम हर घोडे को गायब पायेंगे और तब हमारी हालत बहुत बुरी हो जाएगी। मुझे अब भरोसा हो गया है कि हमे बारी बारी से घोडो पर पहरा देना होगा, खास कर जब भी हम डेरा डाले! मान लो, अगर सौ पौनी एक साथ ही हल्ला बोल दें, और इन घाटियो मे से उछल कर अपने कपडे फहराते हुए सामने आ जाए, तब क्या होगा? दो, मिनट मे ही ये सारे घोडे आखो से ओझल हो जाएगे।" हमने कप्तान को सुझाया कि अगर सौ पौनी आ गये, तो निगरानी करने वाले के साथ हम सब को भी वे कुछ ही देर मे मिटा देगे।

कप्तान बात बचा कर फिर बोला, "खैर, कुछ भी हो! हमारा सारा ढाँचा ही गडबड है। मुझे इस बात पर पूरा विश्वास है। हमारा सारा रग ढग सैनिक तरीके का कतई नही है। जिस तरह से थोडी-थोडी दूर पर बिखरे हुए हम चलते हैं, उस तरह चलने से कोई भी शत्रु आगे चलने वाले को समाप्त भी कर दे, तो वह हमारे आने से पहले ही भाग जाएगा।"

शॉ बोला, "अभी हम दुश्मनो के इलाके में नही पहुँचे। जब हम उधर पहुँचेंगे, तब साथ-साथ यात्रा करनी आरम्भ कर देंगे।"

कप्तान बोला, "फिर डेरे मे ही पडे-पडे हम पर हमले की सम्भावना है। अगर हमारे पहरेदार न हो, और हम बेतरतीब ढग से डेरा डाला करे, तो हमे कभी भी अचानक खतरे का सामना करना पड सकता है। मेरे मत मे हमे डेरा एक गोलाई मे डालना चाहिए और बीच मे आग सुलगानी चाहिए। हमे पहरेदार खडे करने चाहिए और उनके बीच पहचान का रोज ही कोई नया शब्द चुन लेना चाहिए। इसके साथ ही हमारे एक दो आदमी दल के आगे-आगे चलने चाहिए, ताकि वे कुछ आगे बढ कर डेरे की जगह चुन लिया करे और दुश्मन के पास होने पर खतरे की सूचना दे दिया करें। यह मेरा निजी राय है। मै जबरदस्ती मनवाना नही चाहता। मैंने तो सलाह देना उचित समझा। अब आप जानो, जैसी आपकी मर्जी हो।"

लगता था कि उसे यह सबसे ज्यादा पसन्द था कि दो आदमी दल के आगे-आगे चलते रहें। इस बात पर कोई भी आदमी उसका साथ देने को तैयार न था। इसलिए उस दोपहर बाद उसने अकेले ही आगे-आगे चलने की ठान ली। चलते हुए उसने मुझे भी अपने साथ चलने को पुकारा। हम दोनो ही साथ साथ निकल पडे और एक या दो मील आगे तक निकल गये। कप्तान पिछले बीस साल की सैनिक सेवा मे बहुत कुछ सीख चुका था। वह स्वभाव से आनन्दी-जीव था। इसलिए उसके साथ चलने का अपना ही मजा था। वह एक या दो घण्टे तक लगातार कहानियाँ सुनाता रहा और मजाकें करता रहा। हमने जब पीछे की ओर देखा, तो मैदान फैला हुआ नजर आया। कोई भी घुडसवार या गाडी दिखाई न दी।

कप्तान बोला, 'मेरे विचार मे हम दोनो को तब तक रुक जाना चाहिए, जब तक सब लोग हम से न आ मिलें।"

मेरी भी यही राय थी। सामने काफी घने जँगल थे। उनके बीच मे से होती हुई एक छोटी नदी बह रही थी। इसे पार करके हम लोग दूसरी ओर की एक समतल चरागाह पर आ निकले। यह एक ओर पेडो से घिरी हुई थी। हमने अपने घोडे झाडियो के साथ बाँध दिये और वही घास पर बैठ गये। यहाँ बैठ कर मैं अपनी नई बदूक की खासियत कप्तान को समझाने लगा। बहुत देर बाद कुछ दूरी पर, पेडो के पीछे से, आने वाले लोगो की आवाज़ सुनाई देने लगी।

कप्तान बोला, "उधर वे आ रहे है। आओ चल कर देखें कि वे लोग धारा किस तरह पार करते है ?"

हम घोड़ो पर चढ कर धारा तक आये। यहाँ से पगडडी इस धारा के पार गई थी। धारा पेडो से भरे गहरे खड्ड से हो कर बह रही थी। जब हम ने नीचे की ओर देखा तो कुछ घबराये हुए घुडसवार नदी पार कर रहे थे। इन सब हमारे साथियो के साथ ही चार सैनिक भी चले आ रहे थे।

शॉ सब से पहले अपने घोडे को चाबुक मारता हुआ किनारे पर चढ़ आया। उसका चेहरा गुस्से से भरा था। सबसे पहले उसने र—के लिए गाली निकाली, जो सबसे पीछे-पीछे चलता आ रहा था। इसकी बेवकूफी के कारण ही हम लोग रास्ता बिल्कुल भूल गये थे। हम प्लाट नदी की ओर न बढ कर, इयोवा आदिवासियो की ओर चल पडे थे। यह बात हमे उन सैनिको से पता चली। यह लोग बहुत दिन पहले लीवनवर्थ किले से निकल भागे थे। इन्होने हमे बताया कि अच्छा होगा यदि हम उत्तर की ओर तब तक बढते रहे जब तक ओरेगन के प्रवासियो द्वारा बनाई हुई राह तक न पहुँच जाएं। वे लोग इसी साल इस राह से गुज़रे थे।

इस प्रकार बहुत बुरी मानसिक हालत मे हम यहा डेरा डाल कर रुके। सेना के भगोडे अधिक देर नही रुक सकते थे। इसलिए वे लोग तुरन्त ही आगे बढ गए। अगले दिन सेंट जोसफ की राह पकड कर हमने अपने घोडो का रुख लारामी किले की ओर मोड दिया। यह किला यहा से, सात सौ मील के लगभग, पश्चिम की ओर था।

—·○—
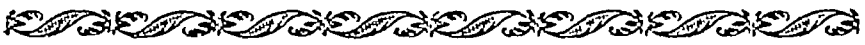
५ : महानील
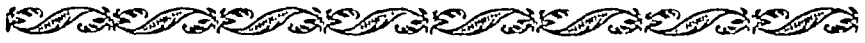
ओरेगन और कैलीफोर्निया के प्रवासियो ने इडिपेंडेन्स के पास के अपने डेरो मे ही यह खबर सुनी कि सेंट जोसफ से और भी कई दल उत्तर की ओर चलने वाले है। उनका ख्याल था कि ये लोग मोर्मन जाति के थे। इनकी सख्या तेईस सौ के लगभग थी। यह बात सुनते ही सब मे चिन्ता की एक लहर-सी दौड गई। इलिनोइस और मिसूरी के लोग इन प्रवासियो मे सब से अधिक थे। उनका इन लोगो से कभी अच्छा सम्बन्ध न रहा था। ये लोग सारे देश मे अपने झगडो और खून खराबी के कारण बदनाम थे। अपने इलाको मे भी ये इसी प्रकार बदनाम थे। कोई भी नही कह सकता था कि जब इस प्रकार के दो शत्रु दल इन मैदानो मे एक दूसरे के मुकाबले मे लडेंगे तब क्या परिणाम होगा ? ऐसे खू खार और भयकर दलो पर न सेना का वश चलता है और न कानून का ! औरतो और बच्चो ने चिल्लाना शुरू कर दिया। आदमी भी कम घबराये हुए नही थे। मुझे बाद में पता चला कि उन्होने जनरल कीर्नी से अपने कुछ सैनिक प्लाट नदी तक भेजने के लिए प्रार्थना की थी। यह प्रार्थना नही मानी गई। बाद मे साबित हुआ कि इसके माने जाने का कोई कारण भी न था। सेंट जोसफ से आने वाले प्रवासी भी भले ईसाई थे और वे स्वय मोर्मन लोगो से घृणा करथे थे। मोर्मन सतो के कुछ परिवार इस मौसम मे इसी राह से बढे अवश्य, किन्तु वे इन प्रवासियो के जाने की प्रतीक्षा बहुत दिन तक करने के बाद ही गये। उन्हें भी इन सभ्य कहलाने वाले लोगो से डर था।

अब हम सेंट जोसफ की राह पर चल रहे थे। यह साफ हो गया कि ये बडे दल हम से कुछ ही दिन के सफर के फासले पर, आगे-आगे, चल रहे थे। हम ने भी उन्हे मोर्मन ही समझा और हमे भी उनसे भय लगता रहा। यात्रा बहुत उकता देने वाली थी। एक दिन हम लगातार चार घण्टे, बिना एक भी झाडी या वृक्ष देखे, चलते रहे। चारो ओर जिधर भी देखते थे नई फूटती हुई घास का हरा मैदान और छोटे-छोटे टीले ही दिखाई देते थे। कही-

कही कौआ, गीध आदि अवश्य दिखाई दे जाते थे ।

हम एक दूसरे से पूछने लगे, "आज की रात भोजन और पानी का प्रबन्ध कैसे होगा।" दिन छिपने ही वाला था और पानी पास मे न था। कुछ देर बाद दाहिनी ओर, काफी दूर पर, एक हरी सी चोटी दिखाई दी। यह एक पेड की चोटी थी, जो कि मैदान के एक टीले के पीछे से दीख रही थी। रास्ता छोड कर हम इस की ओर जल्दी-जल्दी बढे। यहाँ पहुँच कर हमने जाना कि यहां बहुत से पेडो और झाडियो से घिरे हुए कुछ जोहड एक खड्ड मे थे। हम ने इस पास के एक टीले पर डेरा डाल दिया।

शॉ और मैं तम्बू मे बैठे थे। तभी देस्लारियर ने आकर अपना चेहरा दरवाजे से अन्दर झुका कर और अपनी आखें फैला कर हमे शाम का भोजन तैयार होने की सूचना दी। भोजन के लिए टीन के प्याले, रकाबियां और चम्मच रखे गये थे और इन सब के बीच मे, घास पर ही, कॉफी का बर्तन भी रख दिया गया था। भोजन जल्दी ही समाप्त हो गया। परन्तु, हैनरी बहुत देर तक उसी तरह चौकडी मारे कॉफी पीता रहा। इन मैदानो मे कॉफी का प्रयोग बहुत अधिक होता है और हेनरी को यह अधिक प्यारी लगती थी। वह इसे मीठे या दूध के विना ही पीना पसन्द करता था। इस मौके पर यह उसे बहुत अधिक पसन्द आई, क्यो कि यह बहुत गाढी और काले रग की थी।

छिपता हुआ सूरज बहुत ही लुभावना था। नीचे की चरागाह मे छोटे-छोटे वृक्षो के बीच फैले हुए जोहडो का पानी इस की लाली से लाल हो उठा था।

शॉ बोला, "मुझे आज रात नहाना है। देस्लारियर, क्या नीचे कोई तैरने का प्रवन्ध हो सकता है?"

देस्लारियर ने कन्धे हिलाते हुए टूटी-फूटी अग्रेजी मे, अपने मालिक की इच्छा को पूरा करने की भावना से, कहा, "मुझे पता नही। फिर भी, आपकी जैसी इच्छा हो।"

मैंने उसके पाव की ओर इशारा करते हुए कहा, "इसके जूते की ओर देखो।" जूते पानी में डूबकर काले कीचड से लिपट गए थे।

शॉ ने कहा, "आओ हम खुद चल कर देखेंगे।"

हम साथ-साथ चल पडे। झाडियो के पास पहुँचते ही कुछ दूरी पर हमे धरती धोखा देती लगी। जगह-जगह कीचड भरा हुआ था। बडी कठिनता से लम्बी घास की जडो पर पाव रखते हम बढे। लगता था जैसे कीचड के समुद्र मे छोटे-छोटे टापुओ पर चल रहे हो। एक भी गलत कदम हमारे जूतो का भी वही हाल कर सकता था, जो देस्लारियर के जूतो का हुआ था। बात कुछ कठिन दिखाई दी। हम अलग-अलग दिशाओ मे बट कर चलने लगे। शॉ दाहिनी ओर से बढा और मै बाई ओर से। अन्त मे मै झाडियो के किनारे तक आ गया। ये झाडियाँ पानी मे पैदा होने वाली किस्म की थीं और इनके फूल भी गुच्छो मे खिले हुए थे। इनके बीच बीच मे घास की कोई एक-आध जड भी दिखाई दे जाती थी। यहा कीचड एक दम काला और गहरा था। मैने कठिनता से, कूद कर ही, इसे पार किया। तब मै इन झाडियो मे से जैसे-तैसे पूरी ताकत के साथ आगे बढने लगा। अब मैं एक धारा के किनारे पहुँच गया था। यह धारा कीचड मे से होकर बह रही थी और कुल चार उगल गहरी थी। मेरे यहा पहुँचते ही यहाँ की शान्ति टूट गई। एक बहुत बडा हरा मेढक अजीब आवाज़ मे टर्राया और बहुत तेज़ी के साथ किनारे से उछला। उस के फैले हुए पजे पानी के ऊपर चमके और ज्यो ही उसने उन्हें ऊपर को उठा कर झटका दिया, मैंने उसे बहुत तेज़ी से पानी की गहराई मे जाते देखा। वहाँ से कुछ बुलबुले उठते दिखाई दिये। अपने बुजुर्ग का अनुकरण करते हुए कुछ छोटे-छोटे चित्तीदार मेढक भी उछल कर पानी मे कूद गए। तभी तीन छोटे-छोटे केकडे भी पास के पौधो की जडो से उतर कर पानी मे घुस गए। इसी समय काली और पीली धारी वाला एक साप भी किनारे से सरका और दूसरी ओर निकल गया। यही, जमा हुए पानी मे, पडे एक पत्थर को मैंने गलती से हिला दिया और उसके नीचे से सैंकडो छोटे-छोटे मेढक-बच्चे निकल पडे।

शॉ दूर से ही पूछने लगा, "क्या जहाँ तुम खडे हो, वहा नहाने का कोई मौका है ?"

मेरा उत्तर बहुत उत्साहजनक नही था। अब मैं लौट कर अपने साथी के साथ-साथ नई खोज मे बढने लगा। दाई ओर कुछ दूरी पर ही पेडो और झाडियो से घिरी एक ऊँची जगह थी, जहा से ढलान एक दम ही पानी की

ओर झुक गई थी । वहाँ हमें सफलता की अधिक आशा थी । इस लिए हम उधर ही चल दिए । जब हम वहाँ पहुँचे तो हमें पानी और पहाडी के बीच मे राह खोजनी कठिन दिखाई दी । यहा कुछ छोटे-छोटे पेड अगूरो की बेलो मे उलझ कर छाये हुए थे । हल्की-हल्की रोशनी में बढते हुए हम जब-तब किसी पुरानी मीठे फलो वाली झाडी को पकड बैठते । इस प्रकार सहारा ढूढते हुए शॉ कुछ आगे चल रहा था । अचानक मुझे उसकी चीख सुनाई दी । मैंने देखा वह एक हाथ से एक शाखा थामे पानी मे धन्स गया था । उसका ध्यान पानी मे तैरते हुए पाच फुट लम्बे एक साप पर लगा हुआ था । यह साप काले और हरे रग की चित्तियो मे भरा हुआ था और पानी के पार जा रहा था । उसे देखते हुए शॉ को अपना पाव खीचना याद न रहा । हमारे हाथ मे न कोई छडी थी और न कोई पत्थर । हम उसे यू ही चुप-चाप देखते रहे और कुछ देर बाद फिर आगे बढने लगे । हमे अपने धीरज का नतीजा भी जल्दी मिल गया । कुछ ही दूर जाकर हमे घास का एक छोटा सा टापू मिला, जो झाडियो से घिरा हुआ था । यह और भी किस्मत की बात थी कि यहा काई, घास, या झाडियो की शाखा आदि पानी पर छाई हुई नही थी । कुछ गज तक पानी बिल्कुल साफ और उजला था । हमने एक छडी के सहारे देखा कि यह चार फुट गहरा था । हम ने कुछ पानी हाथ मे लेकर देखा । यह काफी साफ था । हम इस मे नहा सकते थे । इस लिए हमने नहाने का निश्चय किया । परन्तु, नहाते समय अचानक ही हजारो बडे-बडे मच्छर चारो ओर कीचड में से उड कर मडराने लगे और अपने हजारो डकों से सताने लगे । जैसे-तैसे हम वहा से पूरी ताकत और तेजी से भाग निकले ।

हम अपने तम्बुओं की ओर लौटे । नहा कर हम ताज़ा हो चुके थे । पिछले दिनो की गरमी के कारण यह नहाना जरूरी भी हो गया था ।

शॉ बोला, "फरहान की ओर देखो ! उसे क्या हो गया है ?" फरहान मैदान में कुछ दूरी पर अपनी जगह पर ही खडे-खडे अपने टोप को बहुत तेजी से अपने सिर के चारो ओर घुमा रहा था । कभी वह एक पाव उठाता था, तो कभी दूसरा । पहले वह बहुत ही घबरा कर जमीन की ओर देख रहा था । और अब, बहुत ही परेशान-हाल नज़र और घबराते हुए चेहरे से कस्बे की ओर भागने लगा जैसे किसी न दिखाई देने वाले दुश्मन ने पीछा किया हो ।

हम ने उसे आवाज़ देकर बात पूछनी चाही। पर उसने उस न दिखाई देने वाले दुश्मन की ओर गालियो की बौछार के रूप मे ही हमे उत्तर दिया। जब हम उसके पास पहुँचे तो ऐसा लगा, जैसे एक साथ ही मधुमक्खियो के बीसियो छत्तो ने हमला बोल दिया हो। हमे कानो मे एक भयकर गूज सुनाई दी। छोटे-छोटे काले कीडे ऊपर आकाश मे भरे पडे थे और उनमे से हज़ारो कीडे बहुत नीचे होकर उड रहे थे।

कप्तान हमे घबराता हुआ देखकर बोला, "घबराओ नही, ये कीडे डसते नही।"

यह सुनते ही मैने अपने टोप के सहारे एक कीडे को नीचे गिरा लिया और देखा कि यह टिड्डी ही थी, कुछ और नही। बहुत झुक कर देखने पर पता चला कि सारी धरती ही जैसे इन के छेदो से भरी पडी थी।

हम इस जगह से जल्दी ही विदा हुए और ऊँचे टीले से होकर अपने तम्बुओ तक आए। हमने यहाँ देखा कि देस्लारियर की जलाई आग अब तक भी बुझी न थी। हम इस के चारो ओर बैठ गए और शॉ ने सब को यह बताया कि हमारे नहाने के लिए कैसी सहूलियत मौजूद है ? उसने कप्तान को सुबह नाश्ते से पहले हर हालत मे वहा जाने की सलाह दी। कप्तान उन कीडो से अब तक परेशान था। उसने फिर हाथ मार कर एक कीडे से अपने को छुडाया। उसने कहा कि वह ऐसी बात को सम्भव नही मानता। इस समय तक हमे भी अपने सिरो के ऊपर ऐसी आवाज़ सुनाई देने लगी, जैसे सैकडो गोलियाँ सरसराती और भिन-भिनाती हुई हमारे सिरो पर से गुज़र रही हो। अचानक ही पहले मेरे माथे पर किसी कीडे का डक चुभा, फिर गर्दन पर, और तब सभी दिशाओ से जैसे बहुत-से पजे मुझ पर गढने शुरू हो गए। मानो पजो वाला कोई जानवर मेरे सारे बदन पर ही अपने हाथ फेर कर कुछ खोज रहा हो। मैने कीडा पकडा और आग मे डाल दिया। हमारे दल के सभी लोग अपने-अपने डेरो मे खिसक गए और अपने तम्बुओ के दरवाज़े बन्द करके इस हमले से बचने की आशा करने लगे। पर यह सब व्यर्थ साबित हुआ। सुबह होने तक यह कीडे तम्बू मे घुस कर हमे सताते ही रहे। सुबह हमने अपने कम्बल उतारकर देखा कि उनमे सैकडो कीडे चिपटे हुए थे। उठते ही हमारी निगाह मे पहली बात यह आई कि देस्लारियर

तलने की बाटी को खाली कर रहा था। इसे उसने हत्थे से पकड कर बहुत दूर पर थामा हुआ था। लगता था कि उसने इसे रात भर आग पर रख दिया था और बहुत-से कीडे जल कर इसमे जमा हो गए थे। आग के कारण और भी सैंकडो कीडे जल कर राख मे गिर पड़े थे।

घोडो और टट्टुओ को चरने के लिए खुला छोड दिया गया था। हम अभी नाश्ते के लिए आराम से बैठे ही थे कि हेनरी और कप्तान ने हमे चौंका दिया। उन्होने हमे किसी खतरे की चेतावनी दी। देखने पर पता चला कि सारे-के-सारे—तेईस—पशु गायब थे। ये सभी हमारे पुराने इलाकों की ओर लौट चले थे। इनके आगे-आगे मेरा घोडा पौंटियक चल रहा था, जो कि स्वय सुधारा नही जा सकता था। वह अपने बँधे हुए अगले पांवो के साथ ही उछल-उछल कर बहुत तेज भागता हुआ जा रहा था। हम मे से तीन या चार आदमी उनका रास्ता काटने के लिए ओस से भरी घास मे से होकर तेज़ी से उनका पीछा करने लगे। एक मील से भी अधिक दौडने के बाद शॉ ने एक घोडे को पकड लिया। उसने उसकी लटकने वाली रस्सी को उसकी लगाम से ही बाँध दिया और खुद उसकी पीठ पर जा चढा। उसे लेकर वह सब घोडो से आगे जा निकला। अब हम उन सब को इकट्ठा करके अपने डेरो तक वापिस लाए। तब सबने अपने-अपने घोडो को कस कर तयारी की। कुछ घोडो ने अपनी अगली टाँगो की रस्सियाँ तोड दी थी, इसलिए कुछ लोगो की गालियाँ भी सुनाई दी। इस प्रकार वन्धनो मे ही भाग जाने से कुछ की रस्सिया बहुत अधिक घिस गई थी।

चलने मे हमे कुछ देर हो गई। दोपहर बाद बहुत जल्दी ही हमे डेरे भी डालने पडे, क्योकि आँधी और वर्षा का एक बहुत ज़ोरदार झोका आ गया था। इस तूफान में ही हमने बहुत कठिनता से अपने तम्बू गाडे। सारी रात यह तूफान गरजता और बरसता रहा। सुबह के उजाले मे हमने यह देखा कि मूसलाधार बारिश का स्थान हल्की-छल्की बूँदा-बाँदी ने ले लिया था। दोपहर के लगभग मौसम अच्छा होने के आसार बहुत कम थे, लेकिन हमने आगे बढ़ना शुरू कर दिया।

इस खुले मैदान मे हवा बिल्कुल गुमसुम थी। बादल ऐसे दीखते थे, जैसे रूई के अम्बार हो जहां भी नीला आकाश दीखता था, वही कुछ न कुछ धुंध

और गीलापन सा भी नजर आता था। सूरज की धूप इतनी तेज़ और गरम थी कि उसे बर्दाश्त करना कठिन था। हमारा दल धीरे-धीरे इस समाप्त न होने वाली मैदानी सतह पर बढता जा रहा था। घोडे कीचड मे धसते हुए अपने सिर नीचे लटकाए बढ रहे थे। सभी आदमी काठियो पर आराम से बैठे थे। आखिर, शाम होते-होते फिर से वही पुराने परिचित बरसने वाले घने काले बादल चारो ओर आसमान मे जमा होगए और दूर पर उनके गरजने की आवाज़ चारो ओर मैदान मे फैलती हुई सुनाई दी। दोपहर बाद की यात्रा मे ऐसी आवाज़ एक परिचित बात ही बन गई थी। कुछ ही मिनटो मे सारा आकाश इन बादलो से बुरी तरह घिर गया और सामने का मैदान तथा कही-कही दीखने वाले पेडो के समूह इस काले अधेरे मे गाढे रगो मे बदलते दिखाई दिए। तभी सबसे घने बादल मे से ज़ोर की बिजली चमकी। मैदान एक कोने से दूसरे कोने तक जैसे काँप उठा। इसके साथ ही एक लम्बी गरज की आवाज़ सुनाई दी। तभी वर्षा की गन्ध लिए वायु का एक तेज झोका आया और उसने हमारे आसपास की घास को झुका दिया।

शॉ बहुत तेज़ी से अपने दूसरे घोडे को साथ लेता हुआ आगे बढा और चिल्लाया, "आगे बढो! हमे इसी समय बढ चलना चाहिए।" सारा दल ही तेज़ी से बढ चला और सामने के वृक्षो तक आ गया। यहाँ आकर हमने देखा कि इनके परे एक बडी चरागाह मौजूद थी: हम बहुत जल्दी जमीन पर उतर पडे। इस घबराहट मे हमारी काठियो को भी नुकसान पहुचा। सबने ही नीचे उतर कर घोडो के पाँव जाँचे और उनकी रस्सियाँ फिर से ठीक से बाँधी। अब उन्हें चरने के लिए खुला छोड दिया गया। ज्यो ही गाडियाँ इस जगह पर पहुँची हमने तम्बुओ के बाँस लेकर उन्हें गाडना शुरू किया। आधी आने से पहले हम उसके स्वागत की तैयारी कर चुके थे। रात के अधेरे जैसी आधी घिर आयी। हमारे पास के वृक्षो मे वर्षा की तेज़ आवाज सुनाई देने लगी।

हम अपने तम्बू मे ही बैठे थे। अपना चौडा टोप कानो तक लटकाये और वर्षा से चमकते अपने कधे आगे बढाते हुए देस्लारियर ने अपना सिर झुका कर पूछा, "क्या आप अभी तुरन्त खाना चाहेंगे ? मुझे विश्वास है कि मैं आग जला लू गा। मैं कोशिश कर देखता हू।"

"तुम खाने की परवाह मत करो। आओ, तुम भी अन्दर आ जाओ।"

यह सुनकर वह दरवाज़े से कुछ अन्दर आकर बैठ गया, क्योकि उसकी दृष्टि मे अधिक आगे आना उचित न होता। हमारा तम्बू ऐसी मूसलाधार बारिश के मुकाबले के लिए कोई बहुत अच्छी जगह न थी। वर्षा इसमें सीधी तो नही घुस सकती थी, पर कपडे से छन-छन कर हमे यह अच्छी तरह गीला अवश्य कर रही थी। हम अपनी-अपनी काठियो पर उदास चेहरो के साथ बैठे रहे और हमारे टोपो पर से गिरता हुआ पानी हमारी गालो से होकर बहता रहा। मेरा रबड का बना बरसाती कोट बारिश से भीग कर बीसियो बारें बहा रहा था। शॉ का कम्बल से बना कोट स्पज की तरह पानी से भर गया था। इससे भी अधिक बुरा तो तब लगा, जब हमने देखा कि तम्बू में अनेक छोटे-छोटे गड्डो मे पानी भरना शुरू हो गया था। एक बाँस के पास तो इतना पानी भर गया था कि उससे सारे तम्बू को ही खतरा होने लगा था। हमे लगा कि रात आराम से बितानी कठिन होगी। सूरज छिपने के बाद यह तूफान अचानक वैसे ही रुक गया, जैसे शुरू हुआ था। अचानक ही लाल आकाश का एक कोना साफ हो गया। मैदान के पश्चिम की ओर से उजली किरणे चारो ओर फैल गईं। सूर्य की ये लाल-लाल किरणें पानी पर बिखर गईं और गिरती हुई बू दो मे से झाकती हुई सतरगी-सी दिखाई देने लगी। तम्बू के अन्दर का पानी भी धरती ने सोख लिया।

परन्तु हमारी आशा धोखा दे गई। अभी रात पूरी न उतरी थी कि फिर से वही तूफान फूट पड़ा। पूरबी किनारे जैसा तूफान यहाँ नही होता। यहा यह अधिक भयकर होता है। हमारे ही सिरो पर बहुत तेज गरज के साथ यह फूट पडा और सारे मैदान पर गरजने लगा, मानो चारो ओर ही यह अजीब कड़क के साथ घूम गया हो। सारी रात बिजली कडकती रही और सामने के पेड़ उसके प्रकाश में चमकते रहे। इसकी चमक मे चारो ओर का फैला हुआ मैदान साफ दिखाई दे जाता था। इसके मिटते ही ऐसा लगता था जैसे हम अधेरे की किसी दीवार से घेर लिए गये हो।

इसने हमे अधिक परेशान न किया। कभी-कभी हमे एक बहुत तेज़ आवाज़ चौंका देती थी। इससे हमें बिजली की गडगडाहट और वर्षा की घिरती हुई तेज़ बाढ का ध्यान हो जाता था। जमीन पर रबड के कपडे बिछाकर और कंबल

ओढ कर हम सो रहे थे। बहुत देर तक तो हम पानी से बचे रहे। पर जब पानी बहुत अधिक इकट्ठा हो गया, तब वह बाहर भी न निकल सका। इस लिए रात खतम होने पर हम अनजाने ही वर्षा के बनाए एक छोटे से जोहड मे लेटे हुए थे।

सुबह जगने पर हमने देखा कि आसार कुछ अच्छे न थे। वर्षा बहुत तेज़ तो न थी, पर फिर भी लगातार हमारे तम्बू पर गिर ही रही थी। हमने अपने कम्बल उतारे। उनका हर रेशा पानी की बूदो से भरा हुआ था। हम अच्छे मौसम की इन्तज़ार करने लगे। मैदान पर बादल अब भी काले और गहरे रग के होकर छाए हुए थे। धरती की हालत भी आसमान से अधिक अच्छी न थी। चारो ओर पानी के जोहड ही जोहड दिखाई देते थे। घास तो जैसे समाप्त ही हो गई थी। हमारे घोडो और टट्टूओ ने चारो ओर कीचड ही कीचड बना दिया था। हम से कुछ दूर ही अकेला और सुनसान सा एक तम्बू, हमारे साथियो का खडा था, जैसे वह मातम से भरा हुआ हो। उनकी गाडियां भी उसी तरह भीगी खडी थी। कप्तान घोडो की देख भाल करके लौट रहा था। कोहरे और वर्षा मे से होकर वह अपने लबादे को कधे पर डाले, पाईप सुलगाए हुए, अपने भाई जैक के साथ-साथ चल रहा था। उसका पाईप उसकी मूछो के नीचे ऐसा चमक रहा था, मानो खुदाई से निकली कोई पुरानी चीज़ हो।

दोपहर को आकाश साफ हुआ। हम आधा फुट गहरे कीचड मे से होते हुए बढने लगे। उस रात हम पर वर्षा की कृपा ही रही।

अगले दिन, दोपहर बाद, हम धीरे-धीरे बढ रहे थे। हमारे दाईं ओर एक छोटा सा जगल था। जैक कुछ आगे-आगे चल रहा था। वह चुप था, मानो वह जीवन भर बोला ही न हो। तभी अचानक वह मुडा और जगल की ओर इशारा करके अपने भाई की ओर गरज कर बोला, "अरे बिल! सामने गाय दिखाई दे रही है।"

तुरन्त ही कप्तान अपने भाई को साथ लेकर आगे बढ गया और गाय को पकडने की कोशिश करने लगा। पर गाय जैसे उनके इरादे को पहचान गई थी। वह पास के वृक्षो मे जा छिपी। र—भी उनसे जा मिला। उन तीनो ने उसे खदेड कर बाहर निकाला। हम देखते रहे कि किस तरह

उन तीनों ने उसे घेरने और उसकी नाक मे नथ फसाने का यत्न किया। यह काम वे खोजी रस्सियो से ही कर रहे थे। इसके बाद थक-हार कर उन्होने हल्के तरीके बरते और प्यार से गाय को दल मे वापिस ले आए। इसके तुरन्त बाद ही फिर, हर रोज के सामान, आँधी आ गई। हवा इतनी तेज चल रही थी कि मैदान पर धारें भी, उसी दिशा मे, सीधी पडने लगी। घोडो ने अपनी पूछें आधी की ओर करली और सिर झुका कर खडे हो गए। वे इस हमले को चुप्पी और सहनशीलता के साथ सहने लगे। हमने भी अपने सिर अपने कधो के बीच झुका लिए और सामने की ओर झुक गए, ताकि हमारी पीठें बारिश के बोझ को सहले और हमारी रक्षा हो सके। इसी बीच इस गडबड का लाभ उठाकर वह गाय भाग निकली। कप्तान को दु ख हुआ वह भी आधी और तूफान की परवाह न करके, अपनी टोपी को थोडा आगे की ओर झुकाकर एक बडी पिस्तौल लेकर उसके पीछे-पीछे पूरी तेज़ी से निकल गया। कुछ देर के लिए हमे वे दोनो ही दिखाई न दिए। धु ध और वर्षा ने एक परदा सा खडा कर दिया था। बहुत देर बाद हमे कप्तान की आवाज सुनाई दी और हमने उसे तूफान मे से उछलते आते देखा। वह बहुत सधा हुआ घुड सवार लग रहा था। अपने बचाने के लिए उसने हाथ ऊँचा उठाकर पिस्तौल पकडी हुई थी। उसके चेहरे पर चिन्ता और उत्तेजना छाई हुई थी। गाय उसके आगे-आगे चल रही थी। साफ लगता था कि अब भी मौका मिलते ही वह भाग जाएगी। कप्तान हमे आगे बढ़कर उसे सम्भालने को कह रहा था। पर, वर्षा की धार हमारी पीठ पर इतनी तेज़ी से गिर रही थी, कि हमे अपने सिर उठाने मे भी डर लगता था। हमे डर था कि कही और पानी हमे तग न करे। इसीलिए हम बिना हिले-डुले वैसे ही बैठे रहे और कप्तान की ओर देखते हुए उसकी उतावली हरकतो पर हंसते रहे। इसी समय गाय फिर एक बार उछली और भाग निकली। कप्तान ने भी अपनी पिस्तौल फिर मज़बूती से पकडी, घोडे को ऐड लगाई और उसके पीछे भाग निकला। इस बार उसका इरादा कुछ अधिक बुरा था। कुछ ही देर मे हमे वर्षा के कारण हल्की पडी हुई गोली चलने की एक आवाज़ सुनाई दी और तभी शिकारी अपने शिकार के साथ आता हुआ दिखाई दिया। गाय घायल हो चुकी थी और इसीलिए लाचार थी। थोडी ही देर बाद आँधी का

ज़ोर कम हुआ और हम आगे बढ चले। गाय जैक के पीछे-पीछे बहुत पीडा के साथ चल रही थी। कप्तान ने उसे जैक के सपुर्द किया था। वह स्वयं आगे-आगे खोजी के रूप मे चल रहा था। हम एक धारा के बाद आने वाली सामने के पेडो की एक लम्बी कतार के पास से गुज़र रहे थे। उसी समय कप्तान हमारी ओर दौडता हुआ आया। वह बहुत उत्तेजित था। पर फिर भी हस रहा था।

वह हम से बोला, "गाय को वही छोड दो। सामने उसके मालिक आ रहे दीखते है।"

सच ही, पेडो के पास पहु चते ही, हमने उनके पीछे एक सफेद बडे तम्बू जैसी कोई चीज़ देखी। पास जाने पर हमे पता चला कि वह, मोर्मन लोगो का डेरा न होकर, एक सफेद चट्टान थी, जो राह के बीच ही खुले मदान मे खडी हुई थी। अब फिर से गाय को अपनी जगह पर लाया गया। वह डेरा पडने तक हमारे साथ-साथ चलती रही। तब र—ने उसके दिल के पास अपनी दोनाली बन्दूक तान कर एक-एक करके दोनो गोलिया दाग दी। तब उस गाय को काटा गया और यात्रा के सामान मे उसके मास को भी जोड लिया गया।

अगले एक दो दिन मे ही हम 'महा-नील' (बिग ब्लू) नदी तक पहु च गए। इस इलाके की सभी नदिया ऐसे बडे नामो से ही पुकारी जाती है। यू तो हमने सारे दिन भर ही छोटी-मोटी धाराए और गड्डे पार किए थे, परन्तु इस नदी के किनारे के जगलो को पार करते हुए हम ने जाना कि हमारे सामने अभी बहुत कठिन मौके आने थे। यह धारा वर्षा के कारण भर कर चौडी गहरी और तेज़ होकर वह रही थी।

अभी हम यहा पहुँचे ही थे कि र—ने अपने कपडे उतारे और पानी में कूद गया। रस्सी को दाँतो मे दबाए, तैर कर या चल कर, वह पानी मे बढने लगा। हम उसकी ओर उत्सुकता से देखने लगे कि आखिर उसका उद्देश्य क्या है ? तभी हमने उसे चिल्लाते सुना, "इस रस्सी को उस ठूँठ पर लपेट दो। सोरेल, तुम सुन रहे हो। बोईस्फोर्ड, ज़रा इधर ध्यान दो। तुम कुछ लोग इधर आ जाओ और मुझे सहायता दो।" जिन आदमियो को ये हुक्म दिए गए, उन मे से किसी ने भी इन पर ध्यान नही दिया, यद्यपि इन्हें बिना रुके लगातार दिया गया था। हेनरी ने काम समझाना शुरू किया और सब काम तरीके से

होने लगा। अब भी र—की तेज आवाज लगातार सुनाई दे रही थी और वह बहुत अधिक हलचल मे लगा हुआ था। उसके हुक्म कोई ताल-मेल न रखते थे और सब की हँसी का कारण बन रहे थे। जब उसने देखा कि कोई भी उसकी बात नही सुन रहा, तब उसने भी अपना रुख बदल लिया। जो आदमी जिस काम पर लगा हुआ था, उस ने उसे ठीक वही काम करने के लिए कहना शुरू किया। उसे मुहम्मद और पहाड की कहानी शायद याद थी। शॉ हँस पडा। र—ने जब यह देखा तो घृणा से भरकर वह कुछ बोलने लगा, पर तभी वह चुप पड गया।

आखिर फट्टो की नाव तैयार हो गई। हमने अपना सारा सामान उस पर लाद दिया। हर-एक ने अपनी बन्दूकें अपने-अपने पास रखी। सोरेल, राइट्, आदि चारो सहायको ने चारो कोनो को सम्हाल लिया, ताकि फट्टे अलग न हो जाए और वे इसके साथ ही तैरने लगे। कुछ ही देर मे हमारा सारा सामान इस मचलते पानी पर तैरने लगा। किनारे पर बैठे हम परिणाम की इतजार कर रहे थे। तभी हमने देखा कि दूसरे किनारे यह नाव बहुत आसानी से लग गई। खाली गाड़ी भी आसानी से पार हो गई। घोडो पर चढकर हम भी पार आ गए। दूसरे पशुओ को तैर कर पार होने के लिए खुला छोड दिया गया।

— o —

६ : प्लाट् नदी और रेगिस्तान
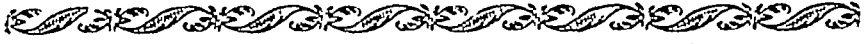
अब सेंट जोसफ की बनायी राह अन्त पर ही थी। हमारी यह यात्रा बहुत एकान्तपूर्ण रही थी पर, तेईस मई को हम उस चौराहे पर आ पहुचे, जहा हमारी राह ओरेगन को जाने वाले अन्य यात्रियो की राह से मिलकर एक हो गई थी। यहा से हमारा एकान्त समाप्त हुआ। उस दिन बहुत देर तक लकडी और पानी को ढूढ़ने के लिए हम निरर्थक ही बढते रहे। अन्त मे, साँझ के समय हमे किरणो से चमकता हुआ एक छोटा-सा जोहड, पेडो और झाडियो से घिरा हुआ, दिखाई दिया। पानी एक खड्ड की तह मे था और चारो ओर मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था। हमने इसके पास ही अपने तम्बू गाड दिये। इससे पहले ही हेनरी ने बहुत दूर एक टीले पर कुछ खास चीज़ देख ली थी। परन्तु, साझ के धुधलके मे कुछ भी साफ देखा नही जा सकता था। खाने के बाद हम आग के चारो ओर लेट गए। तभी हमारे कानो मे बहुत दूर से हँसी-ठठ्ठे की एक विचित्र सी आवाज़ आई। बहुत सी औरतें और मर्द हँस रहे थे। पिछले आठ दिनो से हमने एक भी मनुष्य नही देखा था। इस लिए किसी भी ऐसी आवाज़ को समीप पा कर हमारे मन मे बहुत अधिक उत्सुकता जगनी स्वाभाविक थी।

अधेरा होने पर सामने की पहाडी से एक पीले से चेहरे वाला घुडसवार उतरा और जोहड पार करता हुआ हम तक आया। उस ने एक बडा लबादा पहना हुआ था और उस के चौडे टोप से कानो के पास ओस की कुछ बूँदें जमा होकर टपक रही थी। इसके पीछे ही मजबूत और अच्छे ढाँचे वाला बुद्धिमान् दिखाई देने वाला पुरुष आया। उसने बताया कि वह प्रवासियो के एक दल का एक अन्य नेता था। उनका दल यहा से एक मील आगे पडाव डाले पडा था। उनके साथ बीस गाडिया थी। उनके बाकी बचे हुए दल ने अभी महानील नदी पार नही की थी। वे लोग एक स्त्री के बच्चा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और इसी बीच आपसी झगडो मे उलझ रहे थे। यही वे पहले यात्री थे, जिन्हें हमने पहली बार पीछे छोडा, हालाकि हमे सारी यात्रा

भर बहुत से यात्रियो के निशान दिखाई देते रहे थे। कभी-कभी हमें राह में एक ऐसी कब्र दीख जाती, जो किसी व्यक्ति के बीमारी या किसी और रूप में मरने पर खडी की गई होती थी। धरती अधिकतर फटी हुई और भेड़ियो के निशानो से भरी हुई थी। कुछ लोग इन के हमलो से बच गए थे। एक सुबह हमे एक छोटी-सी पहाडी की चोटी पर एक लकड़ी की तख्ती दिखाई दी। ऊपर चढ कर हमने इस पर लोहे से दागे हुए ये शब्द पढे :

मेरी ऐलिस, ७ मई १८४५ को मरी, आयु दो मास" !

इस प्रकार के निशान उस राह मे मिलने एक आम बात थे।

सुबह डेरा उठाने मे हमे कुछ देर हो गई। अभी हम कुछ ही दूर गए होगे जब हमने अपने सामने क्षितिज के पास बहुत सी चीज़ो को बराबर फासले पर, कुछ कुछ दूरी पर, मैदान की सतह पर ही चलते हुए पाया। इसी समय बीच में एक टीला आ गया और सामने का नज़ारा दीखना बद हो गया। हम इसी टीले पर चढे। अब हमें अपने बिल्कुल सामने ही यात्रियो का एक लम्बा काफिला दिखाई दिया। उनकी सफेद और भारी गाड़ियाँ बहुत हल्के-हल्के चल रही थी और पीछे पशुओ का समूह चल रहा था। पाच-छह पीले चेहरे वाले मिसूरी-निवासी घोडो पर चढे हुए आपस में गाली-गलौच कर रहे थे। उनके शरीर बड़े नपे-तुले और सधे हुए थे। उन्होने किसी घरेलू दर्जी के बने हुए कपडे पहन रखे थे। हमारे पास पहुँचने पर उन्होने हमसे पूछा, "तुम्हारा क्या हाल है ? तुम ओरेगन जा रहे हो या कैलिफोर्निया ?"

हम ज्यो ही उनकी गाडियो के पास से होकर गुज़रे, कुछ बच्चे पर्दा हटा कर हमें झांकने लगे। सामने की ओर बैठी, चिन्ताओ से दबी और पतली-दुबली मातायें या भारी-भरकम लड़कियां अपना-अपना काम छोड कर, हमें उत्सुकता से देखने लगी। हर गाडी के साथ ही उसका स्वामी चल रहा था। वह अपने, भारी बोझे से लदे बैलो को इस लम्बी यात्रा के लिए हौसला दे रहा था। इन सब लोगो मे बहुत घबराहट और बेचैनी फैली हुई थी। इनमें कुछ लोग अविवाहित भी थे। वे हमे बढता हुआ देखते और फिर अपनी धीमी चाल से बढती गाड़ियो को देखते। कुछ ऐसे भी थे जो बिल्कुल ही बढना नही चाहते थे, क्यो कि पिछले साथी अभी आकर साथ नही मिले थे। कुछ ऐसे भी लोग थे, जो अपने चुने नेता के विरुद्ध आवाज़ उठा रहे थे

और उसे हटाना चाहत थे। यह बात वडी उम्मीदें रखने वाले कुछ लोगो के कारण अधिक बढ गई थी, क्योकि वे स्वय नेता बनना चाहते थे। औरतो का दिल कभी-कभी घर जाने की ओर हो उठता था, क्योकि वह सामने के रेगिस्तान और असभ्य इलाके से डरने लगी थी।

हमने इस दल को भी बहुत पीछे छोडा और यह आशा की कि अब इनसे फिर न मिलना होगा। तभी हमारे साथियो की गाडी कीचड भरे एक गड्ढे मे इस तरह धँस गई कि उसे निकलने मे घटो लग गए। तब तक पिछले साथी भी हमारे बहुत पास तक आ पहुँचे। आने वाली हर गाडी उस कीचड मे से धँस कर निकलती रही। इस समय दोपहर हो चुकी थी। इस स्थान पर छाया और पानी मौजूद थे। हमने बहुत सन्तोष के साथ देखा कि वे लोग यही डेरा डालना चाहते थे। जल्दी ही उनकी गाडियाँ एक घेरे के रूप मे खडी हो गयी। पशुओ को चरागाह मे खुला छोड दिया गया और अपने उदास और दु खी चेहरे लिए आदमी लकडी और पानी की चिन्ता मे इधर उधर घूमने लगे। उन्हें इसमे बहुत कम सफलता मिली। जब हम कुछ आगे बढ आए तो मैनें एक बहुत लम्बे आदमी को लडखडाती चाल मे आते देखा। वह अपने प्याले मे पडे पानी को बडे सन्तोष से देख रहा था। उस की आवाज मे नाक का स्वर भी मिला हुआ था।

उसने कहा, "इधर देखो ! इसमे जानवर ही जानवर भरे हुए हैं।"

जब उसने हाथ फैलाकर दिखाया तो प्याले मे काई और कीडे बहुत अधिक भरे हुए थे।

सामने की छोटी-सी पहाडी मे चढ कर हम पीछे की चरागाह मे साफ देख सकते थे कि प्रवासियो के पिछले डेरे मे कुछ गड-वड मच रही थी। आदमी एक तरफ इकट्ठे होकर कुछ बहस कर रहे थे। हम लोगो मे से र— अपनी जगह से गायब था। कप्तान ने बताया कि वह अपने घोडे की नाल ठीक कराने के लिए पीछे रुक गया है। हमे अनुभव हुआ कि कुछ न कुछ गडवड जरूर है। फिर भी हम बढते रहे और अच्छे पानी की एक धारा के पास आकर भोजन और आराम के लिए रुक गए। अब तक भी र— न लौटा था। अन्त मे बहुत दूरी पर अपने घोडे समेत वह आता दिखाई दिया। उसके पीछे ही पीछे एक बहुत बडी कोई सफेद-सी चीज भी आती दिखाई दी।

"वह यह सफेद-सा सामान क्या साथ ला रहा है ?"

कुछ ही देर बाद यह भेद खुल गया। एक के पीछे एक चार गाडियाँ और उनके बैल पहाडी पर से धीमे-धीमे उतरते हुए साफ दिखाई देने लगे। सबसे आगे र— शाही सवारी की भाँति चल रहा था। लगता है घोड़े की नाल ठुकवाते हुए प्रवासियो का झगडा कुछ अधिक तेज़ हो गया था। कुछ लोग आगे बढना चाहते थे और कुछ रुक जाना चाहते थे। कुछ ऐसे भी थे जो लौटना अधिक अच्छा समझते थे। उनके कप्तान कीर्सले ने हिम्मत हार दी और वह बोला, "अच्छा अगर तुम मे से मेरे साथ कोई आगे चलना चाहे तो वह चल सकता है।"

दस आदमियो, एक स्त्री और एक बच्चे के अलावा चार गाडियाँ इस दल में थी। र— ने अपनी शरारती आदत के कारण इन सब को हमारे साथ चलने के लिए निमत्रण दे दिया। लगता है उसके सामने इन को साथ लेने का एक बडा कारण यह था कि उसे आदिवासियो के हमले का खतरा था; नही तो वह ऐसे बोझ को साथ न लेता। हर तरह से हमारा शान्ति के साथ आगे बढना जारी रहा। हमारे नये साथी बहुत ही खुले दिल वाले और बुद्धिमान् थे। वे कुछ असभ्य जरूर थे। पर तो भी उनमे कोई और बुराई न थी। उनसे साथ न चलने की बात कहने का प्रश्न ही नही था। मैने कीर्सले से केवल इतना ही कहा कि अगर उनके बैल हमारे खच्चरो के साथ-साथ न चल सकें, तो उन्हें पीछे छूट जाना पडेगा, क्योकि अब हम अधिक देरी सहने को तैयार न थे। उसने तुरन्त ही विश्वास दिलाया कि वह ऐसा कोई अन्तर नही पडने देगा और उसके बैल सदा साथ-साथ ही चलेंगे।

अगले दिन हमारे साथियो की गाडी की धुरी टूट गई और एक चश्मे में फँसकर उसका सारा सामान नीचे आ गिरा। इसके कारण हमारा पूरा दिन बरबाद हो गया। इस बीच हमारे नये साथी अपनी राह पर बढते रहे और वे इतनी तेज़ी से चले कि हमे उनसे मिलने मे पूरा एक सप्ताह लग गया। तब हमने उन्हे प्लाट् नदी के किनारे-किनारे बढते हुए एक दिन पा लिया। पर, इस बीच बहुत-सी और भी बातें हमारे साथ बीत चुकी थी।

यह डर था कि यात्रा की ऐसी मजिल पर कही पौनी आदिवासी हम पर हमला करके हमे लूट न ले। इस लिए हमने बारी-बारी से रात मे पहरा

लगाना शुरू किया। पहरे को तीन हिस्सो मे बाँटा गया और रात के हर हिस्से के लिए दो आदमी तैनात किए गए। देस्लारियर और मेरी बारी साथ-साथ थी। हम सैनिको जैसे इधर उधर घूम कर परेड नही करते थे। फिर भी, हमारे नियम बहुत कठिन थे। हम दोनो कम्बल ओढ कर आग के पास बैठ जाते और देस्लारियर पहरे के साथ-साथ रसोई का काम भी करता रहता था। वह किसी हिरण का सिर उबालकर नाश्ते की तैयारी करने की चिन्ता मे रहता था। इस पर भी हम बहुत सावधान रहते थे और दूसरो से अधिक चौकन्ने गिने जाते थे। और लोग अक्सर अपनी बन्दूक जमीन पर रखकर, कम्बल मे लिपट कर, अपने घर या किसी और बात के ख्याल मे उलझकर, बेखबर हो जाते थे। यह बात इस इलाके के लिए ठीक भी मानी जा सकती थी। क्योकि यहाँ के आदिवासी केवल घोडे और टट्टुओ को छोडकर और कुछ नही लूटते थे। हालाँकि पौनी लोगो का अधिक विश्वास नही किया जा सकता था। यहाँ से आगे पश्चिम की ओर पहरा कुछ अधिक चौकन्ना होना चाहिए। पहरेदार को आग के पास बैठकर अपने को प्रकाश मे नही लाना चाहिए, क्योकि वहाँ के निशानेबाज़ आदिवासी ऐसे समय अँधेरे से ही तीर या गोली निशाना साधकर दाग देते हैं।

अपने डेरे के इन पहरो मे जो कहानिया सुनने को मिलती थी, उनमे से बोईसफर्ड की कहानी अधिक अच्छी थी। उसने बताया कि एक बार वह ब्लैकफुट लोगो के प्रदेश मे अपने कुछ साथियो के साथ पशु फँसा रहा था। पहरेदार ने सब बात समझकर अपने को आग से कुछ दूर छिपा रखा था। वह चारो ओर ध्यान से देखता रहा। बहुत देर बाद उसने एक शक्ल चुपके से आग की ओर आती देखी। उसने तुरन्त गोली दाग दी। परन्तु, राइफल के घोडे की तेज़ आवाज़ ने उस ब्लैकफुट आदिवासी को और भी अधिक चौकन्ना कर दिया। उसने अपना बाण आवाज़ की दिशा मे ही छोड दिया। उसका निशाना इतना सही था कि उसका तीर पहरेदार के गले मे से होता हुआ निकल गया। और तब, एक ऊँची आवाज़ के साथ वह आदिवासी भाग गया।

मैंने अपने पहरे के साथी की ओर देखा। वह आग पर झुककर फूँक मार रहा था। मुझे लगा कि कठिनाई के समय शायद वह अच्छा सहायक साबित नही होगा।

मैने कहा, "देस्लारियर। अगर पौनी लोगो ने हम पर हमेला किया तो क्या तुम भाग जाओगे!"

उसने वडे निश्चय के साथ जवाव दिया, "हाँ जी, ज़रूर!"

इसी समय भौकने, गुर्राने, चीखने और चिल्लाने की सैकडो मिल-जुली आवाज़े चारो ओर से आने लगी। ये आवाज़ें वहुत पास से ही आ रही थी, मानो वहुत से भेडिये, उनकी स्त्रियें, और उनके बच्चे आदि एक साथ ही इकट्ठे हो गए हो। मेरे साथी ने वही से देखकर हँसना शुरू किया। वह उनकी आवाज़ो की नकल उतारने लगा। इसके मुकावले में भेडियो की आवाज़ें और तेज़ हो गईं। लगता था उनका वडा गवैया हमारे साथी की आवाज़ से नाराज़ हो गया था। ऐसा लगता था जैसे सवसे पहले कुछ दूर पर वैठा हुआ वह गवैया गाता था और तव उसके ये साथी गाने लगते थे। वह एक छोटा और किसी को नुकसान न पहुँचाने वाला जानवर था। उसकी जाति की यह आदत है कि वे घोडो के वीच मे घुसकर उनकी भैसो की खालो की वनी रस्सियो को चवा जाते है। इस मैदान मे दूसरे जानवर कुछ अधिक खूँखार होते है, खासकर सलेटी रग के भेडिये, जिनकी तेज़ चीख थोडी-थोडी देर वाद पास या दूर से सुनाई दे जाती थी।

अन्त मे मुझे नीद आ गई। जव जागा तो देखा कि मेरा साथी भी सो रहा था। इस नियम के टूटने से मुझे डर हुआ और इच्छा हुई कि उसे चौकन्ना करने के लिए उठाकर जगाऊँ। पर, मैने उसे कुछ देर सोने दिया, ताकि वाद में मैं उसे डाँट सकूँ। जव-तव मै घोडो मे जाकर देख आता था कि सव ठीक है या नही? रात वहुत ठडी, अधियारी और गीली थी। घास पर ओस की बूँदें पडी हुई थी। यहाँ से कुछ ही गज़ की दूरी पर तम्वू दिखाई दे रहे थे। घोडो के अलावा यहाँ कुछ और न दिखाई देता था। वे भी सोते हुए तेज साँस ले रहे थे, करवट वदल रहे थे, या घास चर रहे थे। वहुत दूर अंधियारे मैदान मे एक जगह कुछ लाल-सी रोशनी धीरे-धीरे वढती दिखाई दी, जैसे कही आग जल उठी हो। कुछ देर वाद चाँद एक वडी लाल थाली के रूप में ऊपर उठ आया। कुहरे मे से वह और भी वडा दिखाई देता था। यह धीरे-धीरे ऊपर उठता गया। कुछ छोटे-छोटे वादल इसकी राह मे आए और हट गए। ज्यों-ज्यो इसकी रोशनी वढती गई, पशुओं की पास मे उठने वाली चिल्लाहट भी

बढती गई। मानो पशुओ को इस नए घुस आने वाले चाँद से कुछ भय था। इस स्थान पर इस समय कुछ ऐसा खिचाव और डर मिला-जुला था जो स्वय मे अद्भुत था। मीलो दूर तक या तो मै जग हुआ था या ये चिल्लाने वाले पशु!

कुछ दिन बाद हम प्लाट् नामक नदी के पास पहुँचे। सुबह ही हमारे पास दो घुडसवार पहुँचे। हम उन्हे उत्सुकता और चाव से देखने लगे। ऐसे एकान्त मे इस प्रकार का अचानक सामना सदा ही अजीब उत्तेजना भर देता है। वे गोरे ही थे, हालांकि वहाँ के रिवाज के अनुसार उनके पास राईफल नही थी।

हैनरी ने उन्हें देखकर कहा, "मूर्ख! मैदानो मे कही इस तरह भी बढा जाता है। अगर कही पौनी तुम्हें ऐसे देख लें तो यूँ ही समाप्त कर दें।"

पौनियो ने उन्हें लगभग पकड ही लिया था, अगर हम ही पहुँच न जाते। मै और शॉ उनमे से टर्नर नाम के एक आदमी को जानते थे। उसे हमने वेस्ट पोर्ट मे देखा था। वे दोनो एक प्रवासी दल के सदस्य थे, जो हमसे कुछ आगे चल रहा था। अपनी बन्दूकें छोडकर वे कुछ बिछडे हुए बैलो को देखने निकले थे। यह उनके अनजानपन और जल्दबाज़ी को सूचित करता था। उनकी यह लापरवाही उन्हें बहुत महँगी पडी। हमारे आने से कुछ ही देर पहले उन्हें पाँच छह आदिवासियो ने घेर लिया और उन्हें निहत्था पाकर उनमे से एक ने टर्नर के घोडे की लगाम पकडकर उसे उतरने पर लाचार किया। उसके पास एक भी हथियार न था, पर उसके साथी ने अचानक ही जेब से पिस्तौल निकाली और तान दी। इस पर पौनी कुछ सहम गए। तभी उन्हें कुछ दूर पर हम पहुँचते हुए दिखाई दिए। हमे देखते ही उनका सारा दल भाग गया। अब भी टर्नर की यह ज़िद थी कि वह आगे ही जाएगा। उसे छोडने के काफी देर बाद साँझ के समय उस उजाड और ऊसर मैदान मे हम अचानक ही पौनियो की एक बडी राह को पा गए। वे इस राह से अपने गाँवो से दक्षिण की ओर शिकार की जगहो तक जाया करते थे। हर गर्मी के मौसम मे यहाँ से उनके असभ्य मर्द, औरत, बच्चो और घोडो, खच्चर आदि का समूह हज़ारो की सख्या मे अपने हथियारो और साज-सामान के साथ गुज़रता है। उनके पास सैकडो भयकर कुत्ते भी होते है, जिन्हें ठीक से भौंकना भी नही आता और जो भेडियो की तरह ही चिल्लाते हैं। पौनी लोगो के स्थायी गाँव प्लाट् के निचले

हिस्से मे बसे हुए है। गर्मियो की मौसम में इनके बहुत से निवासी शिकार और लूटमार के लिए मैदानो मे निकल जाते हैं। इनके कत्ल और डाके के काम इतने भयकर होते हैं कि सरकार को इन्हें पूरी तरह दण्ड देना चाहिए। पिछले साल डाकोटा जाति के एक वीर ने इन गाँवो मे अकेले ही तूफान मचा दिया था। वह एक अन्धेरी रात में अकेला ही इन गाँवो में घुस आया और एक घर की छत पर, बाहर की ओर से, चढ गया। सब सो रहे थे और वह चिमनी की राह से धीरे से अन्दर कूद पडा। उसने अपनी कृपाण निकाली और आग तेज़ करके अपने शिकारो को चुन-चुनकर, एक-एक कर, उन्हें मारने और उनका सिर उतारने लगा। इसी समय एक बच्चा अचानक ही चीख पडा। वह वीर इस घर से भागा और उसने सियू लोगो की तरह युद्ध के समय की आवाज की। उसने अपना नाम लेकर अपनी जीत की घोषणा की और अधेरे में ही मैदान की ओर भाग निकला। उसके जाने पर सारे गाँव मे भगदड मच गई। कुत्ते भौंकने और चीखने लगे, औरतें रोने लगी और गुस्से से भरे वीर हुंकार भरने लगे।

हमे वाद मे पता चला कि हमारे मित्र कीर्संले को भी एक ऐसी ही छोटी घटना में सफलता मिली। वह और उसके साथी जंगल से अच्छा परिचय रखते थे और बन्दूक चलाने मे भी चतुर थे। परन्तु, इस मैदान पर जैसे वह सव कुछ भूल-सा गए थे। उनमे से कभी किसी ने यहाँ के जगली भैंसो को न देखा था। उन्हे उसकी आदत और शक्ल के वारे मे वहुत कम मालूम था। प्लाट् पर पहुँचने के अगले दिन जव उन्होने कुछ दूरी के एक टीले पर कुछ शाखें हिलती देखी, तो सावधान हो गए। कीर्संले ने उनसे कहा, "सब अपनी रायफलें निकाल लो। हमें शाम के भोजन के लिए ताज़ा मास मिलने वाला है।"

यह लोभ काफी वडा था। लगभग दस आदमी अपनी गडियाँ छोड़कर तेज़ी से निकल पड़े। कुछ घोडो पर और कुछ पैदल ही इन ख्याली भैंसो की ओर वढ गए। इसी वीच एक छोटे टीले ने वीच में आकर परला नजारा आँखो से छिपा दिया। आध घण्टा दौडने और पीछा करने के वाद उन्होने खुद को लगभग तीस पौनियो से घिरा हुआ पाया। वे घवराहट और अचरज में डूव गये। पौनी लोगो के पास धनुष-वाण ही थे इसलिए वे अपनी अन्तिम घड़ी

पास समझकर घबरा गए, क्योकि उन्हें पता था कि ऐसे मौके पर उनकी क्या हालत होती ? उन्होने बहुत ही दोस्ती भरे वचन बोलने शुरू किए और बहुत प्रेम से हाथ मिलाने के लिये आगे बढे। मिसूरी के हमारे ये दोस्त भी झगडा बच जाने के कारण बहुत खुश थे।

अब हमारे सामने छोटी-छोटी रेतीली पहाडियाँ क्षितिज पर फैली हुई दीखने लगी। उस दिन हम दस घटे तक घोडो पर चढकर बढते रहे। उन छोटी-छोटी पहाडियो के बीच खड्डो तक पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो गया था। आखिर हम एक चोटी पर पहुँच गए। यहाँ से हमे सामने ही प्लाट् की घाटी दिखाई दे रही थी। हमने घोडो की लगामे खीची और खुशी से सामने के नज़ारे को देखने लगे। यह बहुत ही अच्छी बात थी। हमारी उम्मीदो और कल्पना को इसने जगा दिया, हालाँकि कोई खास बात अब भी सामने न थी। कोई भी सुन्दर या महत्त्व की चीज हमारे सामने न थी। केवल एक लम्बा चौडा मैदान, उसका एकान्त और जगली वातावरण ही हमारे सामने फैला था। मीलो तक एक बडी झील के समान फैला हुआ मैदान हमारे सामने था। प्लाट् नदी छोटी-मोटी धारो मे बट कर इसमे से गुज़र रही थी, या फिर कही-कहीं छोटे-से छायादार टापुओ के रूप मे पेडो का छोटा सा जगल दिखाई दे जाता था। इस उजाड मैदान मे यही कुछ अच्छे नजारे थे। सामने कोई भी जिन्दा चीज नहीं दिखाई दे रही थी। कही कुछ छिपकलियो जैसे छोटे जन्तु इधर-उधर दौडते अवश्य दिखाई दे जाते थे।

यात्रा का कठिन भाग हमने पार कर लिया था। पर अब भी हम लारामी के किले से चार सौ मील दूर थे और हमारा तीन सप्ताह से अधिक का रास्ता बाकी था। इस सारे समय हम एक लम्बे सँकरे और रेतीले मैदान मे से गुज़-रते हुए राकी पर्वतमाला तक पहुँचे। हमारे दोनो ओर छोटी-छोटी रेतीली पहाडियाँ कही-कही बहुत जगली रूप धारण कर गई थी और काफी दूर तक फैली चली गई थी। इनके परे सैकडो मील का एक उजाड और अनगाहा मैदान एक ओर अरकसास तक और दूसरी ओर मिसूरी नदी तक फैला हुआ चला गया था। हमारे आगे और पीछे इस उजाड मैदान मे दूर-दूर तक कोई भी फर्क न दीखता था। कभी यह धूप मे चमकता हुआ तपी हुई रेत का समुद्र जाता, तो कभी लम्बी खुरदरी घास से ढका हुआ मैदान। इधर उधर

भैंसो की खोपड़ियाँ और हड्डियाँ बहुत अधिक बिखरी पडी थी। यह मैदान हज़ारों भैंसो ने एक साथ ही गाहा था। प्राय इसमे कही-कही गोल गड्ढे पडे हुए थे। यहाँ भैंसो ने गरमी मे लोट लगाई थी। हर घाटी और नाले मे अच्छी बनी हुई पगडडियाँ उतर रही थी, जो कि पास की पहाडियों से आई थी। यहाँ ही दिन मे दो बार नियम से भैंसो के जत्थे प्लाट् नदी मे पानी पीने आते थे। नदी बहुत फैली हुई थी, पर इसमे पानी एक पतली चादर के रूप मे फैला था। यह आधा मील चौडी और डेढ-दो फुट गहरी थी। इसके किनारे नीचे तथा झाडी और पेडो से रहित थे। रेत बहुत गीली और पानी मे बहुत अधिक मिली हुई थी। चुल्लू भर पानी पीने पर भी दाँतो मे रेत की किरकिरी अनुभव होती थी। हालाँकि यह खुला और नगा मैदान उकता देने वाला और भयकर लगता है, तो भी यहाँ के जगली जानवर, असभ्य आदमी और दूसरे जगली दृश्य इस घाटी को किसी भी यात्री के लिए लुभावना और चाव भरा बना देते हैं। इन मैदानो का शायद ही कोई यात्री यहाँ के अपने घोडे और राइफल के आनन्द को भूल पाता होगा।

सुबह जल्दी ही हम प्लाट् नदी के किनारे पहुँच गए। बहुत से असभ्य लोगो का एक जत्था हम तक आया। इनमे से हर कोई नगे पाँव था और हर एक अपने घोडे को रस्सी से थाम कर चल रहा था। उनकी वेशभूषा बहुत ही थोडी चीजो की थी: एक छोटी कमर-पेटी और घिसा हुआ चिथडे जैसा भैंसे की खाल का कधे पर पडा एक कपडा ही उनके शरीर पर था। हरएक का सिर मुंडा हुआ था। केवल माथे से चोटी की जगह तक ही थोडे से बाल बचे हुए थे, जैसे किसी मादा भेडिये की पीठ के बाल हो। हरएक के हाथ मे धनुष-बाण था और हरएक के घोडे पर शिकार से प्राप्त भैंसो का सुखाया हुआ मास लदा हुआ था। मैदान के अर्धसभ्य आदिवासियो के बाद ये ही आदिवासी हमे पहले-पहल दिखाई दिए। ये उनसे एकदम भिन्न थे।

ये वे ही पौनी थे, जिन्हें कीर्सले पहले ही मिल चुका था। ये लोग पास के मैदान मे ही शिकार खेलने वाले एक बडे दल मे से थे। यह बहुत तेज़ी से हमारे तम्बुओ से एक फर्लाग के अन्दर ही अन्दर होकर गुज़रे। पर इन्होंने अपनी शरारत भरी आदत को भुलाकर, इस मौके पर, न हमारी ओर देखा, न रुके। मै कुछ दूर बढ़कर उनसे मिलने गया और उनके सरदार से कुछ बातें

की। उसे मैने पावभर तम्बाकू भेंट दिया। इस अचानक मिलने वाली भेंट के लिए उसने बहुत धन्यवाद दिया। हमसे कुछ आगे चलने वाले प्रवासियो के एक दल पर इन्होने या इनके कुछ साथियो ने भयकर हमला किया था। उनमे से कुछ दूरी पर पिछडे हुए दो आदमियो को इन्होने घेर लिया। वे लोग घोडो को एड लगाकर भाग निकले। इस पर पौनियो ने आवजें कसनी शुरू की और उनमे से पिछले की पीठ अपने बानो से छेद दी। अगला साथी भागकर अपने दल के पास इस खबर को ले गया। डरे हुए उन प्रवासियो ने बहुत दिन तक वही डेरा डाले रखा और अपने मरे हुए साथी को खोजने भी कोई न निकला।

हमारे न्यू इग्लैंड का जलवायु यहाँ से कुछ मिलता-जुलता था। जैसे, इसी सुबह धूप कुछ तेज और हवा घुटी-घुटी सी थी। सूर्य चढ रहा था पर उसकी धूप सताने वाली न थी। इसी समय अचानक ही पश्चिम की ओर बादलो का एक काला अम्बार उठा और एकदम ही हम पर ओले और वर्षा गिराने लगा। ऐसे लगा जैसे सुइयो भरी आँधी आई हो। इस समय घोडो की हालत देखने लायक थी। वे बहुत ही नाराज़-से होकर अपनी छोटी छोटी पूँछें दबाए काँप रहे थे। छोटे भेडियो की-सी आवज़ करता हुआ वह तूफान हम पर से गुज़रता रहा। राइट् के टट्टुओ की लम्बी कतार पर इस आँधी की बुरी मार पडी। वे एक घेरे मे बँध गए, जैसे सर्दियो के तूफान मे बर्फ के इलाके के पक्षी इकट्ठे हो जाते है। इस तरह कुछ देर तक, अपने घोडो की पीठ पर झुके हुए हम लोग वैसे ही खडे रहे। हम बोल तक न सकते थे। हालांकि, इस हालत मे भी कप्तान ने एक बार हमारी ओर देखना चाहा। उसका चेहरा एक दम लाल था और उसकी पेशियाँ बडी खिची हुई थी। लगता था जैसे उसने बुरी साईत मे घर छोडने के अपने इरादे को ही गालियाँ दी हो। वह ऐसे ही कुछ फुस-फुसाया। यह सिलसिला बहुत देर तक जारी न रहा। इसके दबते ही हमने अपने तम्बू गाड दिए और बादलो से घिरा बाकी दिन उन्ही तम्बुओ मे बिताया। हमारे प्रवासी साथी भी पास मे ही अपना तम्बू डाले पडे थे। अपना काम पहले सम्हाल लेने के कारण हमने आस-पास मिलने वाली तमाम लकडी जमा कर ली थी और, इसलिए केवल हमारे ही डेरे की आग तेज़ी से जल रही थी। इसी बीच इस आग के चारो ओर कुछ मैले और असभ्य-से लोग जमा गए। वर्षा मे भीग कर वे लोग काँप रहे थे। इनमे से दो-तीन आदमी राकी

पर्वतमाला में पशु फँसाने के काम के कारण या फिर कम्पनी की नौकरी मे आदिवासियो के गाँवो में व्यापार करने के कारण आधे असभ्य-से ही लग रहे थे। ये सब ही कनाडा से आए दीखते थे। इनके सख्त, झुर्रीदार चेहरे और छोटी-छोटी मूँछें इनकी छोटी सी टोपियो के नीचे बडे अजीब से दीख रहे थे। लगता था कि ये भी बहुत बुरे लोग है। इनमे से बहुत से होते भी बहुत बुरे है।

अगले रोज हम कौर्सले की गाड़ियो से जा मिले। इसके बाद के एक-दो सप्ताह तक हम साथ-साथ चले। इस साथ का एक लाभ भी था कि अब हमें पहरे के लिए जल्दी-जल्दी नही जागना पडता था। अधिक आदमी होने के कारण अब बारी कुछ देर से आती थी।

—०:—

७ : भैंसा

प्लाट् नदी के किनारे चार दिन बीत गये, पर हमे कोई भी भैंसा दिखाई न दिया। निशानो से साफ था कि पिछले साल वे बहुत बडी सख्या मे रहे होगे। जगल मे पेड बहुत ही कम थे। फिर भी हमे एक ऐसी लकडी मिल गई जो बहुत अच्छी तरह जलती थी और जिसका कोई बुरा असर न होता था। एक दिन सुबह ही गाडियाँ चल पडी। मै और शॉ घोडो पर सवार हो गए थे, पर हेनरी बुझते हुए अगारो के पास अब भी बैठा हुआ था। पास ही उसका मजबूत क्यादोत जाति का टट्टू उसके पास ही खडा हुआ हमारी ओर देख रहा था। अन्त मे हेनरी उठा और उसने अपने टट्टू की गर्दन थपथपायी, तब वह इस पर चढ गया, पर उसका हृदय प्रसन्न न था। इस टट्टू के गुणो के कारण उसने इस का नाम 'पाच सौ डालर' रख दिया था।

"हेनरी, क्या बात है ?"

"ओह ! मुझे अकेलापन खल रहा है। मै-यहाँ कभी नही आया। पर उधर मैदानो और दूसरी जगहो पर मैने चारो ओर भैसे ही भैसे देखे है। यहा तो जैसे कुछ है ही नही।"

साँझ से पहले उसने और मैने एक हिरण की खोज मे अपना दल छोडा और आगे निकल गए। बहुत दूर पर, शायद दाहिनी ओर, एक या दो मील दूर हमे बहुत बडी-बडी सफेद गाडियाँ और घुडसवारो की छोटी-छोटी पक्तियाँ दिखाई देने लगी। वे सब इतना धीरे-धीरे चल रहे थे, जैसे बिल्कुल ही न बढ रहे हो। बाईं ओर नगी, जली हुई और सुनसान रेतीली पहाडियाँ दिखाई दे रही थी। सामने का फैला मैदान लम्बी लहराती घास से हरा-भरा था। यह घास हमारे घोडो के पेटो को छू रही थी। हवा के झोको से यह खूब लहरा रही थी और इसके बीच मे हिरण और भेडिये इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। भेडियो की पीठो के बाल, उनके उछलने पर, कभी-कभी दीख जाते थे। हिरण अपनी अजब उत्सुकता मे कभी-कभी हमारे पास तक आ जाते थे। उनके छोटे सीग और सफेद गले घास मे से दिखाई दे जाते थे, विशेषकर, जब वे हमारी

ओर अपनी काली-काली आँखो से देखने लगते।

मै घोडे से उतरा और भेडियो पर निशाना साधकर शिकार का मजा लेने लगा। हेनरी इधर-उधर के इलाके पर नज़र दौडा रहा था। बहुत देर बाद वह एकाएक चिल्लाया और मुझे घोडे पर सवार होने को कहने लगा। उसने रेतीली पहाडियो की ओर इशारा किया। हमारे सामने एक-डेढ मील दूर दो काली सी शक्लें एक पहाड़ी पर से गुज़रती दिखाई दी और उसकी चमकती चोटी चोटी के पीछे जा छिपी। हेनरी ने अपने घोडे को चाबुक लगाई और बढने के लिये आवाज़ दी। मै उसके पीछे-पीछे चलता हुआ उन पहाडियो की ओर तेज़ी से बढने लगा।

उन पहाडियो मे से एक रास्ता एक गहरी घाटी मे उतर रहा था। मैदान की ओर यह अधिक चौडा था। हम इस राह पर बढे। आगे बढने पर हमने चारो ओर ऐसी ही छोटी-छोटी पहाडियो से अपने को घिरा पाया। इनमें से आधी से अधिक पहाडियो की ढलवाँ पीठें नगी थी, जबकि बाकी हिस्से पर छोटी-मोटी घास के गुच्छे नज़र आ जाते थे। कही-कही छोटे-मोटे कँटीले पौधे भी दिखाई दे जाते थे। इस इलाके मे अनेको छोटी-मोटी खाइयाँ थी। ज्योही आकाश मे अँधेरा छाने लगा और बादलो से भरी हवा चलने लगी, झाडियाँ और चोटियाँ अधिक भयकर और उजाड लगने लगी। पर हेनरी के चेहरे पर उत्सुकता ही उत्सुकता नज़र आ रही थी। उसने अपनी काठी के नीचे की खाल मे से एक बाल उखाडा और हवा मे उडा दिया। इससे हवा का रुख पता चल गया। यह हमारे सामने की ओर उड गया। शिकार भी हमारे सामने की ओर ही था। इसलिए उस तक पहुँचने के लिए हमे अपनी चाल बहुत तेज करनी आवश्यक थी।

हम इस घाटी से धीरे-धीरे ऊपर चढे और खड्डो को पार करते हुए साँप जैसी टेढी-मेढी एक दूसरी घाटी मे पहुँच गए। इसमे उतर कर हम पूरी तरह छिप गए। हम फिर ऊपर चढे और साथ की झाडियो में कुछ खोजते रहे। इसी समय अचानक हेनरी ने लगाम खीची और नीचे उतर पडा। लगभग दो फर्लांग दूर एक पहाडी पर भैंसो का एक जलूस सा चल रहा था। सभी बहुत धीरे-धीरे और उदास से बढ रहे थे। इनके पीछे दूर के एक गड्ढे से और भी भैंसे एक दूसरी हरी पहाडी पर चढने लगे। तब एक बड़ा सा

सिर, अपने टूटे हुए सीगो के साथ, पास की एक घाटी से ऊपर निकला। तब बहुत धीरे-धीरे शाही चाल से एक-एक करके बहुत से जानवर आने लगे और अपने शत्रु से बिल्कुल बेखबर होकर घाटी पार करने लगे। तुरन्त ही हेनरी जमीन पर लेटकर घास और झाडियो मे से होता हुआ अपने बेखबर शिकार की ओर बढने लगा। उसके पास मेरी और उसकी अपनी दोनो बन्दूके थी। वह जल्दी ही मेरी नजर से ओझल हो गया। भैसे अब भी निकलते आ रहे थे। कुछ देर तक चारो ओर चुप्पी छाई रही। मै अपने घोडे पर बैठा सोचता रहा कि वह क्या करना चाहता है ? तभी अचानक दोनो बन्दूको से गोली छूटने की आवाजें आईं और भैसो की वह लम्बी कतार सामने की पहाडी पर से तुरन्त ही बिखर कर ओझल हो गई। अब हेनरी उठ खडा हुआ और उनकी ओर देखने लगा।

मैने कहा, "तुम निशाना चूक गये हो।"

हेनरी ने कहा, "हाँ ! आओ, चलो, चलें !" वह घाटी मे उतरा और नये सिरे से बन्दूकें भर कर घोडे पर सवार हो गया।

हम पहाडियो तक भैसो के पीछे-पीछे चले। जब तक हम चोटी पर पहुँचे, भैसे आँखो से ओझल हो चुके थे। परन्तु, कुछ दूरी पर घास मे एक मरा हुआ पशु पडा था और उससे कुछ दूर एक और मौत से लड रहा था। हेनरी ने मेरा ध्यान खीचते हुए कहा, "तुमने देखा, मै उस पर निशाना चूक गया हूँ !"

उसने करीब डेढ सौ गज दूर से गोलिया चलाई थी और दोनो ही गोलियाँ उनके फेफडो मे से पार हो गई थी। भैसे के शिकार मे यही निशाना सबसे अच्छा माना जाता है।

अँधेरा बढ चला और साथ ही आँधी बढती नजर आने लगी। हमने अपने घोड़ो को इन शिकारो के सीगो से बाँध दिया। हेनरी तुरन्त ही चीर-फाड के काम मे बहुत सुघड तरीके से लग गया। मैं भी उसकी नकल करने लगा। जब मैने वह मास अपने घोडे की पीठ से बाँधना चाहा, तो वह डर और घृणा से कुछ बिदका। मास बाँधने के लिए हम एक फालतू रस्सी काठी के पिछली ओर बाँधे रखते थे। बहुत देर बाद हम इस कठिनाई को पार कर पाए और तब इस नये भोजन के बोझ को, चुने हुए हिस्सो के रूप मे, लेकर

हम चल पडे। अभी हम लौट कर कुछ ही घाटियाँ पार कर पाये होगे कि एकदम मूसलाधार वर्षा के झोके पर झोके सामने से हमारे चेहरो पर टकराने लगे। अभी सूर्य छिपने मे एक घटा बाकी था। फिर भी अँधेरा एकदम बहुत घना हो गया था। जमा देने वाले इस आँधी और तूफान ने हमारी खाल को एकदम ही सुन्न कर दिया। पर हमारे घोडो की तेज़ और भारी चाल ने हमारी गरमी बनाए रखी। हम उन्हें इस तेज वर्षा मे भी अपने चाबुको से तेज चलने पर विवश करते रहे। यहाँ मैदान बहुत कठोर और समतल हो गया था। सामने हर ओर मैदानी कुत्तो की बनाई पगडण्डियाँ और उनकी मादो के पास ताजा मिट्टी के ढेर बहुत अधिक दिखाई देने लगे। लगता था जैसे किसी खेत में सैकडो छोटी-छोटी पहाडियाँ खडी हो। इस पर भी न तो भौंकने की आवाज सुनाई दे रही थी और ना ही किसी कुत्ते की नाक निकलती दीख रही थी। लगता था सभी अपनी माँदो के अन्दर गहरे चले गए हो। हमे उनकी सूखी और आराम देने वाली जगहो से ईर्ष्या होने लगी। घटा भर बहुत कठिन सवारी करने के बाद हमे आँधी मे से झाँकते हुए अपने तम्बू दिखाई देने लगे। उनके एक ओर से हवा ने उन्हें झुका दिया था, तो दूसरी ओर से वे फूल रहे थे। दूरी पर बँधे हुए घोडे और खच्चर काँपते हुए एक दूसरे से सटकर खडे हुए थे। ऊपर के तीन सूखे हुए पेडो मे से गुज़रती हवा की सीटियाँ सुनाई दे रही थी। एक सरक्षक की भाँति शॉ अपने तम्बू के दरवाज़े पर काठी डाले बैठा था और आराम से अपना पाइप पी रहा था। हमने माँस का बोझ उसके सामने ही जमीन पर उतार कर रखा। पर वह उसे देखकर चुप रह गया। इसके बाद आने वाली रात बहुत अधेरी और भयकर थी। पर अगली सुबह धूप इतनी अच्छी और सुहानी थी कि कप्तान ने भी भैंसे के शिकार पर जाने की चाह दिखाई। भैंसे नदी के किनारे इन मैदानों मे अपनी मूर्खता के कारण इधर-उधर घूमते रहते थे। यह था प्लाट् के किनारे का वातावरण।

कप्तान को अचानक ही जो शिकार की सूझी, यह सब मौसम की वजह से ही नही था। वह सदा ही अपने शिकारी होने का दावा भरता था। पहली दोपहर को भी वह अपने कुछ साथियो के साथ शिकार पर निकला था, पर परिणाम मे उन्हे अपने सबसे अच्छे घोड़े की हानि सहनी पडी। सौरेल ने

एक भैंसे का पीछा करते हुए उसे बुरी तरह घायल कर दिया था। कप्तान को अपने यूरोप के ढग की ही घुडसवारी का पता था, इसलिए सौरेल के इस प्रकार शिकारी ढग पर खाई और खड्डो मे से घोडा दौडाने को उसने अच्छी निगाह से न देखा। सौरेल की यह आदत राकी पर्वतमाला मे इसी प्रकार घोडा दौडाने के कारण पडी थी। दुर्भाग्य से यह घोडा र— का था और सौरेल को उससे बहुत अधिक घृणा थी। लगता है कप्तान ने खुद भी एक भैंसे का पीछा करने की कोशिश की। हालाँकि वह अच्छा घुडसवार था, पर तो भी ज़मीन के ऊबड-खाबड होने के कारण वह जल्दी ही हिम्मत हार बैठा। उसे ऐसी ज़मीन से बहुत घृणा थी।

अगले दिन सुबह जब हम सैर से लौटे तो हेनरी चिल्लाया, "लारामी क़िले से ये दोनो—पैपिन और, फ्रेडरिक—आए है।" हमे बहुत दिन से इस मिलन की इन्तज़ार थी। पैपिन उस किले का मालिक था। वह भैंसो की खालो और बीवर जन्तुओ के व्यापार के लिए नदी की राह आया था। ये चीजें उसने पिछली सदियो के व्यापार मे कमाई थी। मेरे थैले मे एक पत्र उसके नाम था, जो मै उसे देना चाहता था। इसलिए हेनरी को उनकी नावें रुकवाने को कहकर मैं चिट्ठियाँ लेने के लिए अपनी गाडी की ओर चल पडा। गाडियाँ हमसे चार मील आगे चली गई थी। आधे घटे मे मै पत्र लेकर बहुत तेज़ चाल से वापिस लौटा। रास्ते मे मैने बहुत से आँधी के मारे टूटे हुए वृक्ष देखे और उनके पास से गुज़रते हुए आदमियो और घोडो की पक्तियाँ देखी। यहाँ आने पर मुझे अजीब जमघट के दर्शन हुए। कुल किश्तियाँ ग्यारह थी और वे सभी खालो से लदी हुई थी। सब को किनारे से बाँध दिया गया था, ताकि तेज़ धार मे वे बह न जाएँ। उनके खेनेवाले नाविक मैक्सिको के लोग थे। उनके असभ्य चेहरे मुझे देखने के लिए ऊपर उठ गए। एक किश्ती में बीचोबीच पैपिन सामान ढकने वाले तिरपाल पर बैठा हुआ था। वह मज़बूत और डीलडौल वाले शरीर का था। उसकी आँखें चमकीली और सलेटी रग की थी। फ्रेडरिक भी अपने स्वामी के पास ही खडा था। वह भी लम्बा और कठोर ढाँचे वाला था। इनको छोडकर कुछ पहाडी आदमी भी इस दल मे थे, जिनमे से कुछ किश्तियो मे ही लेटे हुए थे और कुछ किनारे पर टहल रहे थे कुछ ने आदिवासियो के समान भैंसो की खालें रगकर ओढी हुई थी।

थी। एक की गालों पर लाल रग का पाउडर मला हुआ था। ये सब दोगले थे, हालाँकि उनमे फ्रासीसी खून अधिक लगता था। उनमें से कुछ की आँखे आदिवासियों की तरह साँप-की-सी लगती थी। कुछ भी हो वे सभी अपने को लाल रग वाले आदिवासियो मे खपा देने के लिए उत्सुक दीखते थे।

मैंने उस धनी—पैंपिन—से हाथ मिलाए और पत्र दिया। इसके बाद तुरन्त ही नावे धारा मे बढ गईं। उन्हे जल्दी करनी आवश्यक थी, क्योकि लारामी किले से अब तक की यात्रा पहले ही एक महीने से अधिक समय ले चुकी थी और नदी भी हर रोज उथली होती जा रही थी। दिन में पचासो बार नाव जमीन मे फँस जाती थी। सच तो यह है कि प्लाट् नदी मे प्रत्येक नाव खेने वाले को अपना आधा समय इन्ही रेतीली उलझनो मे बिताना पडता है। इनमें से स्वतन्त्र नाविको की दो नावे इसी तरह उथले मे उलझ गई थी और इस प्रकार, सारे समूह से अलग हो गई थी। यह घटना पौनी लोगो के गाँव के पास की है। उन लोगो ने इन्हे अकेला पाकर एकदम ही घेर लिया और इनकी हर चीज लूट कर ले गए। जाते-जाते मजाक के तौर पर वे इनके नाविको और व्यापारियो को नाव पर बाँध कर डाल गए और छडियो से अच्छी मरम्मत कर गए।

हमने उस रात नदी के किनारे ही डेरा डाला। हमारे साथी प्रवासियों मे एक बडा लडका था, जिसकी आयु लगभग अठारह वर्ष की रही होगी। उसका सिर काफी बडा और गोल-मटोल था। उसके चेहरे का रंग भी बुखार के बार-बार हमलो के कारण फीका पड गया था। टोप को वह ठोडी के नीचे कसकर पहना करता था। उसका शरीर ठिगना और गठीला था, परन्तु उसकी टाँगे जरूरत से ज्यादा लम्बी थी। मैंने साँझ के समय उसे पहाडी पर खूब लम्बे-लम्बे डगो मे चढते देखा। वहाँ वह पहाडी की चोटी पर खडा हुआ बहुत अजीब लग रहा था। कुछ ही क्षण मे हमे पहाडी के पीछे मे उसके चीखने की आवाज सुनाई दी। हम मे से कुछ साथी अपनी बदूकें सँभाले उसे बचाने के लिए दौड पड़े। उनका ख्याल था कि या तो उसे किसी आदिवासी ने धर दबोचा है या किसी काले भालू ने। सच यह था कि उसने खुशी के मारे वैसा शोर किया था। वह दो भेडियो के बच्चो के पीछे उनकी माँद तक दौड़ता गया था और वहा अपने घुटनो के बल झुककर

एक कुत्ते की भाँति उनकी घात मे बैठा था।

सुबह होने से पहले ही इस लडके ने एक नई गड़बड पैदा कर दी। आधी रात के समय पहरे की ज़िम्मेवारी उसकी थी। पर, पहरे पर आते ही उसने अपने सोने के लिए एक गाडी के नीचे कुछ बोरियाँ बिछा ली और उन पर अपना सिर टिका कर आँखें बन्द करके सो गया। हमारे डेरे का पहरेदार यह सोचकर कि उसे दूसरी ओर से कोई वास्ता नही, अपने घोडो और खच्चरो की देखभाल से ही सन्तुष्ट रहा। उसने बताया कि रात को भेडियो का शोर कुछ अधिक था, पर इस पर भी किसी गडबड का डर न था। पर, सुबह होते ही किसी भी घोडे या अन्य पशुओ के खुर आदि का एक भी निशान वहाँ न बचा था। वह लडका जब सो रहा था, तब भेड़िए घोडो की रस्सियो को काटकर उन्हें भगा चुके थे।

इस प्रकार हमे प्रवासियो साथ के यात्रा करने के र—के निश्चय का मजा चखना मिला। अब उन्हें इसी हालत मे छोडकर बढ जाना अच्छा न था। इसलिए हमने कुछ देर रुककर उनके पशुओ को ढूँढना अच्छा समझा। शायद पाठक यह जानना चाहें कि उस टौम नाम के लडके को क्या दण्ड मिला? मैदानो मे यात्रा के कानून के अनुसार ऐसे आदमी को अपने घोडे की लगाम पकडकर सारे दिन पैदल चलना चाहिए। हमे अपने साथियो पर गुस्सा आया कि उन्होंने उसे ऐसा कोई भी दण्ड नही दिया। पर यह भी सच है कि अगर वह हमारे दल मे होता तो हम भी उसे कोई दण्ड न दे पाते। मज़ा तो यह था कि हमारे साथियो ने उसे दण्ड देने की बजाय उसकी अयोग्यता के कारण उसे पहरे से कतई छुट्टी दे दी। इसलिए अब वह खूब डटकर सोने लगा। ऐसा इनाम किसी भी प्रकार अच्छा नही कहा जा सकता। क्योकि इससे बाकी पहरेदारो का हौसला टूट जाता है। कौन चाहता है कि इस प्रकार अपनी नींद से जागकर कोई भी ऐसे कठिन पहरे के लिए तैनात किया जाए और अपनी नींद के अच्छे तीन घण्टे इस पहरे पर बिताए? खासकर तब, जब कि दूसरे खुर्राटे भर रहे हो।

अगले दिन अचानक ही एक शोर गूँज गया—"भैंसा! भैंसा!"

हमने देखा कि सामने एक बडा भैंसा अकेला ही घूम रहा था, जैसे उसे किसी भी साथी से नफरत हो। सम्भव था कि पहाडी के पीछे की ओर औ

भी भैंसे हो। डेरे के नीरस और सुस्ती भरे जीवन से घबराकर मैं और शॉ अपने घोड़ो की काठियाँ कसकर और पिस्तौलें सँभालकर हेनरी के साथ शिकार की खोज मे बढ गए। हेनरी का इरादा खुद शिकार का नही था। वह हमे मदद भर देना चाहता था। उसने अपनी बदूक साथ रखी हुई थी, पर हम उन्हें बोझ समझकर पीछे छोड़ आए थे। हम पाँच-छः मील तक बढ़ते रहे, पर भेड़ियो, साँपो और मैदानी कुत्तो को छोडकर हमे कुछ भी दिखाई न दिया।

शॉ ने कहा, "इस तरह तो काम नही चलेगा।"

"क्या ? कैसे काम नही चलेगा ?"

"एक तो यहाँ जगल नही है और दूसरा यहाँ की जमीन ऐसी नुकीली घास से भरी है कि कोई भी घायल हो जाए। मेरे विचार में आज शाम तक हममें से कोई न कोई घायल अवश्य होगा।"

उसके इस विचार मे कुछ सत्य था, क्योकि यहाँ की जमीन घुडदौड के लिए कोई विशेष अच्छी न थी। हम ज्यो-ज्यो आगे बढे यह और भी खराब होती गई। बाद मे तो खाइयो, घाटियो और खड्डों से इस तरह भर गई कि इसे पार करना बहुत कठिन हो गया। अन्त मे अपने से एक मील आगे हमने भैंसो का एक जत्था देखा। एक हरी ढलान पर कुछ भैंसे चर रहे थे, जबकि बाकी भैंसे नीचे के एक चौडे खड्ड में इकट्ठे होकर आराम कर रहे थे। हम अपने को छिपाते हुए, कुछ घूमकर, उनकी ओर बढे और तब उनसे दो सौ गज की दूरी पर ही हम पहाड़ी पर चढ आए। यहाँ से हमे वे साफ दिखाई दे रहे थे। एक चट्टान के पीछे हम उतर पड़े और छिपकर अपनी पिस्तौल जाँचने लगे। फिर से घोड़ो पर चढकर हम पहाड़ी पार करके उनकी ओर एक तेज चाल से बढे। उन्हे भी अचानक ही हम से खतरा हो गया। जो पहाड़ी पर थे वे नीचे उतर पड़े और जो नीचे थे वे एक झुण्ड में इकट्ठे हो गए। तब वे सब मिलकर उछलते हुए एक-दूसरे से टकराते आगे बढने लगे। हमने भी अपने घोड़ो को एड लगाई और पूरी चाल से उनका पीछा किया। ज्यों ही यह जत्था डर के कारण तोड़ता-फोडता आगे-आगे भागता हुआ एक दर्रे के पास पहुँचा, हम भी इसके पीछे-पीछे पहुँच गए। धूल के अंबार के कारण हमारी साँस घुट रही थी। हम उनके जितना ही समीप आये, उनका डर और उनकी

चाल उतनी ही बढती गई। हमारे घोडो के लिए यह काम बिल्कुल नया था। इसलिए वे बहुत डरे हुए लग रहे थे। नजदीक पहुँचने पर घबरा कर इधर-उधर बिदकने लगे। वे इन जानवरो में घुसने से कतरा रहे थे। अब ये भैंसे छोटी-छोटी टुकडियो मे बँटकर अलग-अलग दिशाओ मे भागने लगे। इस समय शॉ न जाने किधर छिप गया। हम दोनो ही एक-दूसरे के विषय मे कुछ न जान पाए। मेरा घोडा पौंटियक इन पहाडियो के उतार-चढाव पर एक जगली हाथी की तरह बढ रहा था। उसके ज़ोरदार खुर जमीन पर हथौडों की तरह पड रहे थे। उसमे उत्सुकता और डर दोनो मिले-जुले थे। वह सामने के डरे हुए जत्थे को घेरने के लिए उतावला था, पर पास आते ही निराश होकर एक ओर को मुड जाता था। हमारे सामने के ये विद्रोही जानवर बहुत अच्छे नही लग रहे थे। उनकी सटाएँ और उनके सर्दियो मे बढ आने वाले पीठ के बाल कम होते जा रहे थे। उनकी खाल खुरदरी हो चुकी थी। दौडते हुए उनके कुछ बाल हवा मे भी मिल जाते थे। बहुत देर बाद मैने अपने घोडे को एक भैंसे के पीछे लगा दिया। मैने बहुत कोशिश की कि मेरा घोडा इसकी बगल में पहुँच सके। पर, नाकाम रहने पर मैंने दूर से ही भैंसे पर गोली दाग दी, हालाँकि मेरी जगह बहुत अच्छी न थी। इस गोली की आवाज़ से मेरा घोडा इतना अधिक डरा कि मैं अपने शिकार से फिर पीछे पड गया। मेरी गोली भैंसे की पीठ मे बहुत पीछे लगी थी, इसलिए उसे कुछ अधिक हानि न हुई। भैंसे को मारने के लिए कुछ खास जगहो पर निशाना साधना होता है, नहीं तो शिकार साफ बच निकलता है। यह जत्था पहाडी की चोटी पर बढने लगा। मै भी इसका पीछा करता रहा। जब मेरा घोडा पहाडी के दूसरी ओर उतरने लगा तो मैंने देखा कि दाईं ओर हेनरी और शॉ भी आराम से एक खड्ड मे उतर रहे हैं। हमारे सामने की अगली पहाडी के पीछे सारे भैंसे छिपते जा रहे थे। उनकी छोटी-छोटी पूँछें तनी हुई थी और उनके खुर धूल मे से चमक रहे थे।

इसी समय मैने शॉ और हेनरी को देखा। वे मुझे पुकार रहे थे। इस दशा मे घोडे का रोकना बहुत ही कठिन था, क्योकि वह बहुत तेज़ी मे था। मेरे पास उसे रोकने के लिए वैसे साधन भी न थे, क्योकि मै रास का एक ज़रूरी हिस्सा डेरे पर ही छोड आया था। मुँह मे फंसाए जाने वाले इस हिस्से के बिना उसे एकदम रोकना कठिन था। मेरा घोडा इतना मज़बूत और कठोर

था कि शायद ही कभी कोई घोड़ा उससे अधिक इन मैदानो और खड्डों में दौडा होगा। परन्तु इस नए शिकार के नजारे ने उसे डर से भर दिया और इसीलिए जब वह पूरी तेज़ी पर होता तो उसे रोकना कठिन होता था। पहाडी की चोटी पर पहुँच कर मुझे भैंसो का निशान तक भी दिखाई न दिया। वे सब पहाडियो और खड्डो में छिप चुके थे। मैने अपनी पिस्तौलें फिर से भरीं और जब तक उन्हें सामने की एक तलहटी मे घूमते हुए फिर से न देख लिया, बढ़ता ही रहा। इस समय तक इन भैंसो का डर कुछ कम हो गया था। मेरा घोडा इनके बीच घुस गया। वे इधर-उधर बिखर गए और मुझे फिर से उनका पीछा करना पडा। बारह के लगभग भैंसे मेरे सामने पहाडियो पर चढ रहे थे और उनके चढाव-उतार पर अपने भारी-भरकस शरीर को लेकर बढ रहे थे। एड और चाबुक लगाने पर भी मेरे घोडे ने पीछा करने में आना-कानी की। पर कुछ दूरी पर एक भैंसा अपने जत्थे से कुछ पीछे पड गया। मैंने बहुत कठिनाई से अपने घोडे को उसके कुछ पास तक पहुँचने पर मजबूर किया। भैंसे की पीठ पर पसीना आया हुआ था, वह तेज साँसें ले रहा था और उसकी जीभ फुट भर नीचे तक लटक रही थी। धीरे-धीरे मैं उससे आगे बढ गया और घोडे को उसके साथ चलाने लगा। अचानक ही भैंसे ने अपनी चाल धीमी कर दी और हमारी ओर घूमकर गुस्से और बेचैनी के साथ अपने भारी-भरकम सिर और सीगो को नीचे झुकाकर हमले के लिए तैयार हो गया। मेरा घोडा डर के मारे एक तरफ उछल गया। मैं लगभग नीचे गिर ही गया था, क्योंकि ऐसे झटके के लिए तैयार न था। मैने अपनी पिस्तौल घोडे के सिर पर तानी। पर, उसी समय भैंसा फिर से भागने लगा। मैने अपनी गोली उसी पर दाग दी। तब मैने फिर से लगाम खीची और अपने साथियो से मिलने का निश्चय किया। समय बहुत अधिक हो गया था। घोडा पूरी तरह साँस नही ले पा रहा था। उसके पासो में पसीना बुरी तरह छूट रहा था। मै खुद भी अनुभव कर रहा था, जैसे गरम पानी मे भीग गया हूँ। भविष्य मे कभी बदला लेने का इरादा करके मै अपनी जगह और राह की बात सोचने लगा। मेरी यह खोज ऐसी ही थी, जैसे महान सागर मे कोई जहाज़ निशान खोजना चाहे। मुझे खयाल न था कि मै कितने मील और किस दिशा मे भागता आया हूँ। मेरे चारो ओर यह विस्तृत मैदान टीलो और खाइयो के रूप में फैला हुआ

था। एक भी पहचाना निशान मुझे दिखाई न दे रहा था। मेरे गले मे दिशा देखने की एक घडी लटकी हुई थी। मैंने उत्तर की ओर बढने का निश्चय किया। मैं यह नहीं जानता था कि प्लाट् यहाँ से अपना रास्ता बदल लेती है। इसलिए मैं दो घण्टे तक इसी दिशा मे बढता रहा। ज्यो-ज्यों मैं आगे बढता गया, मैदान का रग बदलता गया। अब झाड़ियाँ कुछ छोटी और हलकी थी, पर प्लाट् नदी या किसी आदमी का कोई भी निशान दिखाई नहीं दिया। चारो ओर जगल-ही-जगल फैला हुआ दिखाई दे रहा था और मैं अपने उद्देश्य से हमेशा की भाँति दूर था। अब मुझे अपने ही भटक जाने का डर हुआ और घोडे पर चढे-ही-चढे मैंने अपने सारे जगल के ज्ञान को बटोर कर उसका लाभ उठाना चाहा, ताकि मैं इस आफत से बच सकूँ। मुझे सूझा कि इस समय भैंसे ही मुझे रास्ता दिखा सकते हैं। अचानक ही मुझे उनके द्वारा बनाया हुआ, नदी की ओर जाने वाला, एक रास्ता मिल गया। मेरी राह से यह एकदम दाईं ओर मुड गया था। ज्यो ही मैंने घोडे को इस दिशा में मोड़ा, उसके खडे कानो और स्वतन्त्र चाल ने मुझे बता दिया कि मेरी दिशा बिल्कुल ठीक थी।

इस बीच मेरी यह खोज अकेली ही रही थी। इस सारे इलाके मे चारों तरफ भैंसे-ही-भैंसे अनगिनत रूप मे, फैले हुए दिखाई दे रहे थे। नर, मादा और कट्टो के रूप मे कतारें बाँधकर झुड के झुड सामने की ढलानो पर इकट्ठे थे। वे दाएँ और बाएँ पहाडियो पर चढ रहे थे। सामने के पीले से टीले पर उनके काले-काले निशान ही दिखाई दे रहे थे। कभी-कभी किसी मुर्राट अकेले बूढे भैंसे को मैं चौंका देता था। वह या तो चर रहा होता या सो रहा होता था। मेरे समीप पहुँचते ही वे उछल पडते, मेरी ओर जड़-से बनकर देखने लगते और तब एकदम भाग जाते। यहाँ हिरण भी बहुत अधिक थे। भैंसों के पास रहने पर वे भी तन जाते हैं। वे मुझे देखने के लिए रुकते, अपनी बडी-बडी आँखो से कुछ देर देखते, पर तभी अचानक ही कुलाँचें भरकर सामने के फैले हुए मैदान पर निकल कर आराम करने लगते। मानो वे भी किसी घुड-दौड के घोडे हो। यहाँ के बुरे दीखने वाले भेडिये भी अपनी खड्डों और रेतीली खाइयों से मुझे झाँकने लगे। मुझे मैदानी कुत्तो के गाँवों मे से कई बार गुजरना पड़ा। वे अपनी माँद के सामने बैठे होते थे और अक्सर भौंकते रहते

थे। हर चीख के साथ उनकी पूँछ उठ जाती थी। ये मैदानी कुत्ते अपने साथियो के चुनाव में बहुत सधे हुए नही होते। इनके घेरे मे ही सैकडो सांप और छोटे-छोटे, गोल आँखो वाले, उल्लू इनके पड़ोसियो की भाँति बसे रहते हैं। यह मैदान जीवन से भरा-पूरा लगता है। मै बार-बार पशुओ से भरी हुई पहाड़ियो को देखता जाता था। मुझे लगा कि मैने कुछ घुडसवार देखे है। जब मैं पास पहुँचा तो आदिवासियो के आने की मेरी उम्मीद और डर मिट गया। सामने भैंसो का जत्था था, उनका नही! इन सारे पशुओं में एक भी आदमी की शक्ल दिखाई न दी।

जब मै भैंसो की राह पर मुड़ा, तब मैदान बदला हुआ नज़र आने लगा। कहीं-कही कोई एक-आध भेडिया नज़र आ जाता। वे दाई या बाई ओर बिना देखे कुछ इस तरह दौड़ जाते, जैसे उन्होने कोई अपराध किया हो। चिन्ताओ के हट जाने के कारण अब मै अपने चारो ओर की चीजो को अधिक अच्छी तरह देख सकता था। मैने पहली बार अनुभव किया कि यहाँ से पूरब की ओर पाये जाने वाले किसी भी जन्तु की अपेक्षा यहाँ के जन्तु काफी भिन्न थे। बडी-बड़ी तितलियाँ मेरे घोडे के सिर पर ही उड़ रही थी। यहाँ की टिड्डियाँ भी काफ़ी चमकदार थी। ये ऐसे-ऐसे पौधो पर मंडरा रही थी, जिन्हे मैंने पहले कभी नही देखा था। सैकड़ो छिपकलियाँ और गिरगिटें इधर से उधर दौडती फिर रही थी। लगता था जैसे बिजली कौंध गई हो।

नदी से मैं बहुत दूर निकल चुका था। भैंसो के इस रास्ते पर मुझे काफी अधिक दौडना पडा। तब कही जाकर मुझे एक टीले की चोटी पर से चमकती हुई प्लाट् नदी नज़र आई। चारो ओर रेतीले तट फैले हुए थे। इससे कुछ पार चमकती हुई पहाड़ियो की एक कतार दिखाई दे रही थी। वह मानो आकाश तक उठी हुई थी। जहाँ मै खड़ा था वहाँ से दूर-दूर तक कही भी एक भी पेड-पौधा या कोई आदमी दिखाई न देता था। चारो ओर धूप से तपी हुई भूमि ही नज़र आती थी। नदी से कुछ ही दूर मुझे पगडडी मिल गई। अभी तक हमारा दल उधर से गुज़रा न था, इसलिए मै दाई ओर मुड कर उनसे मिलने चला। घोड़े की तेज़ चाल ने बता दिया कि मेरा रास्ता ठीक था। सुबह डेरा छोडते हुए मै कुछ बीमार था। अब इस छह-सात घटे की घुड़-दौड़ ने मुझे बिल्कुल थका दिया। इसलिए मैंने घोड़े को रोक कर

८ : साथियों से विदाई

आठ जून के दिन दोपहर ग्यारह बजे हम प्लाट् नदी के दक्षिणी मोड़ पर पहुँचे। इसे यही से पार किया जाता है। राह मे मीलो तक रेगिस्तान ही फैला हुआ था। उसमे कही भी हरयाली न थी। बीच-बीच मे कुछ पहाडियाँ घास से ढकी हुई सिर उठाए दीख पडती थी। पर इनके बीच मे धूप मे चमकती रेत ही फैली हुई थी। मैदान की ही सतह पर बहने वाली नदी भी रेत का ही फैलाव मात्र दीखती थी। यह आधा मील चौडी थी। इसमे पानी बह अवश्य रहा था, पर इतना कम था कि नीचे का तला छिप नहीं पा रहा था। इतनी चौडी होने के कारण इसकी गहराई कही भी डेढ फुट से अधिक नहीं है। इसके किनारे रुक कर हमने कुछ लकडियाँ इकट्ठी की और भैंसे के मांस का भोजन पकाया। दूसरे किनारे बहुत दूर पर एक हरी-भरी चरागाह थी जहाँ हमे प्रवासियो के एक डेरे के बहुत से तम्बू और गाडियाँ दिखाई दे रही थी। हम अपने बिल्कुल सामने पानी के किनारे कुछ मनुष्यों और पशुओ को साफ-साफ देख रहे थे। इसी समय चार या पाँच घुडसवार नदी मे घुसे और दस मिनट मे इसे पार करके ढीली रेत के दूसरे किनारे पर चढ आए। उन लोगो के चेहरे वडे भद्दे लग रहे थे। वे पतले थे और उनकी खाल का रग धूप के कारण गाढा पड चुका था। उनके चेहरो से चिन्ता का बोझ टपक रहा था। उनके ओठ तने हुए थे। उनके लिए चिन्ता का कारण भी था। उन्हें यहाँ डेरा डाले तीन दिन हो चुके थे। आते ही पहली रात उनके एक सौ तेईस पशु भेडियो द्वारा भगा दिये गये थे। यह उनके पहरेदारो की असावधानी के कारण ही हुआ था। ऐसी भयकर और निराशा देने वाली दुर्घटना उनके साथ पहली ही बार न घटी थी। इन बेचारो ने जब से अपने इलाके छोडे, तब से ही कोई न कोई दुर्भाग्य इन पर टूटता रहा। इनके दल के बहुत सारे लोग मर चुके थे। एक साथी को पोनियो ने मार डाला था। एक ही सप्ताह पहले डाकोटा लोगो ने इनके सारे अच्छे-अच्छे घोडे लूट लिए थे। अब इनके पास बहुत ही थोडे घोड़े रह गए थे। जो थे, वे भी बहुत घटिया किस्म के थे। उन्होंने हमे

बताया कि एक दिन साँझ के समय इस नदी के किनारे उन्होने डेरा डाला था और अपने बैल, गाय आदि चरागाह में खुले छोड़ दिए थे। उनके घोडे इस से भी कुछ दूर चर रहे थे। अचानक ही इसी समय उन्हें सामने की पहाडियो पर आदिवासियो के घुडसवार जत्थे घिरते दिखाई दिए। ये लोग सख्या में छ: सौ से अधिक ही थे। एक बड़े शोर के साथ ये डेरे पर टूट पडे और प्रवासियो को डराते हुए उनसे कुछ गज दूर तक आ पहुँचे। तभी अचानक इन्होंने घोडो को घेर लिया और पाँच मिनट मे ही अपने इस शिकार को लेकर सामने की पहाड़ियो के दर्रों से निकल कर गायब हो गए।

अभी ये लोग हमें अपनी हालत बता ही रहे थे कि कुछ और लोग भी हम तक आते दिखाई दिए। ये कोई और न थे, र—और उनके साथी ही थे, जोकि किसी दुर्भाग्य के शिकार तो न हुए थे, पर जो शिकार की खोज में बहुत दूर अवश्य निकल गए थे। उनके कहने के अनुसार उन्हें कोई आदिवासी तो न दिखाई दिया, पर भैंसे लाखो की सख्या मे जरूर दिखाई दिए। र—और सोरेल के घोड़ो की पीठ पर काफी मांस लटक रहा था।

प्रवासियो ने नदी फिर से पार की और चले गए। हमने भी उनके पीछे चलने की तैयारी की। शुरू मे बैलो वाली गाडी किनारे की रेत मे धँस गई और बहुत धीरे-धीरे बढ़ने लगी। कभी-कभी तो बैलो के खुर पानी से अछूते ही रह जाते थे और कभी, अगले ही क्षण, कुछ गहरी पानी की धार में धँसे होते। वे किनारे से बहुत धीरे-धीरे बढने लगे और बहुत देर बाद नदी के बीच में दिखाई दिए। इससे अधिक कठिन मौका हमारी खच्चरो की गाडी के लिए था, क्योकि वह ऐसी तेज़ धार को पार करने के लायक न थी। हम इसे चिन्ता से तब तक देखते रहे जब तक कि वह पानी मे बहुत दूर पहुँचकर एक सफेद निशान के रूप मे न दीखने लगी। यह रेत में फँस गई थी। खच्चरों के पाँव सँभल नही पा रहे थे और पहिए भी गहरे से गहरे धँसते जा रहे थे। धीरे-धीरे पानी गाड़ी के तले पर आना शुरू हुआ और उसने तमाम चीजों को गीला करना शुरू कर दिया। इधर के किनारे पर खड़े हम तुरन्त ही इसे निकालने को बढे। तमाम मर्द पानी मे कूद पड़े और खच्चरो के साथ ताकत लगाकर उन्होंने बड़ी कठिनता से इस गाड़ी को बाहर निकाला और दूसरी ओर पहुँचाया।

जब हम दूसरे किनारे पर पहुँचे तो कुछ असभ्य-से लोगो ने हमे घेर लिया। वे भद्दे और बडे डील-डौल के न थे, पर तो भी कठिन परिश्रम के कारण कठोर अवश्य हो गए थे। अपनी शक्ति का अपने इलाको मे कोई उपयोग न देखकर, वे इन मैदानो मे निकल आए थे। उनमे यहाँ की कठिनाइयो से हौसला और शक्ति और अधिक बढ गई। कभी यही हौसला और शक्ति उनके जर्मन पुरखो के अन्दर भी थी, जब उन्होने अपने जगलो से निकलकर यूरोप पर छाते हुए सारे रोमन साम्राज्य को हथिया लिया था। इसके एक पखवाडे बाद, जब हम लारामी किले मे रुके हुए थे, यह दल भी उधर से गुजरा। उनका एक भी खोया हुआ पशु वापिस न मिला था, हालाँकि वह उनकी खोज मे एक सप्ताह तक वहीं रुके रहे थे। उन्हें लाचार होकर अपने सामान और खाने-पीने की चीजो को पीछे छोडना पडा। अगली यात्रा के लिए उन्हें गायो और बछडो को गाडियो मे जोतना पडा। इस यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा अब भी बचा हुआ था।

यह बात ध्यान देने के योग्य है कि इस जगह हमे कई बार पुराने ढग की कुछ टूटी-फूटी मेजें या सनावर की लकडी का कुछ और सामान यहाँ पडा हुआ मिल जाता था। इनमे से बहुत चीजें उस जमाने की थीं, जब अमरीका अग्रेजो के चगुल में फँसा एक उपनिवेश था। शायद यह सामान इंगलैंड से लाया गया था। यह अपने स्वामियो के भाग्य के साथ-साथ कभी एलेथनी को पार कर ओहियो या केन्टुकी ले जाया गया था और तब वहाँ से इलिनोइस अथवा मिसूरी की ओर गया था। अब यही सामान इन ओरेगन जानेवाले यात्रियो की गाडियो मे समा गया। परन्तु, रास्ते की कठिनाइयाँ कभी कोई नहीं सोच पाता है। ये ही मनपसद निशानियाँ जल्दी ही धूप के कारण इन गरम मैदानो मे खराब हो जाती है।

हमने अपनी यात्रा फिर शुरू की। अभी हम मील भर भी न गए होंगे कि पीछे से र—चिल्ला उठा, "आज हम यही डेरा डालेंगे।"

"तुम क्यो डेरा डालना चाहते हो? अभी तो तीन भी नही बजे। सूर्य की ओर देखो।"

"हम तो यही रुकेंगे।"

हमारे हिस्से मे इतना ही उत्तर मिला। देस्लारियर पहले ही काफी आगे

अपनी गाड़ी ले जा चुका था। दूसरी गाड़ियों को रास्ते से हटता देखकर उसने भी अपनी गाड़ी उधर ही मोड़नी शुरू की। हमने पीछे से आवाज दी, "देस्लारियर ! तुम बढ़ते रहो !" और वह छोटी गाडी फिर से बढने लगी। ज्यों-ही हम कुछ आगे बढे, हमें अपने पीछे अपने साथियो की गाडी टूटने और उसके रुकने की आवाज सुनाई दी। हमने सुना राइट् अपने खच्चरो पर सैंकड़ों गालियो की बौछार कर रहा था। शायद उसका गुस्सा किसी और पर था, पर वह उसे इन असहाय जानवरो पर निकाल रहा था।

इस प्रकार की कोई न कोई घटना होती ही रहती थी। हमारा अंग्रेज दोस्त र—हमें हर तरह से तग करने का इरादा किए हुए था। उसकी हम से सहानुभूति न थी। वह जानता था कि हमे यात्रा निपटाने की जल्दी थी, पर वह इसे जानकर लम्बा डाल रहा था। इसीलिए वह कही भी कभी भी बिना सोचे समझे डेरा डालने की जिद्द कर बैठता था। कभी कहता था कि पन्द्रह मील का सफर दिन भर मे बहुत होता है, तो कभी कुछ और कहता। हमने जब देखा कि हमारी इच्छा कभी मानी नहीं जाती, तब हमने अपनी राह तय करने की जिम्मेवारी अपने हाथ मे ले ली। हम र—की घृणा को स्वीकार करके भी आगे आगे बढने लगे और जहां भी मुनासिब समझते डेरा डाल लेते। हमे इस बात की अधिक परवाह न थी कि हमारे साथी वहीं डेरा डालते है या नहीं? हालांकि वे लोग अपने गुस्से से भरे और उदास चेहरे लिए हमारे आस-पास ही अपना तम्बू गाड़ते थे।

इस तरह से साथ-साथ यात्रा करना हमारी रुचि के अनुकूल न था। इसलिए हमने अलग होने की तैयारी शुरू कर दी। हमने अपनी तरफ बहुत जल्दी ही डेरा छोड़ने का निश्चय किया और सामग्री फिर एक बहुत जल्दी और तेजी से, चार पांच दिन मे ही पहुँच जाने का निश्चय किया। र— तुरन्त ही घोड़ा दौड़ाता हुआ हम तक आया। हमने अपनी बात उसे समझा दी।

उसने कहा, "मैं समझता हूँ, यह मजाक चलता है।" उसके दिमाग में यह बात समा गई थी कि हम उसके दल को छोड़कर जा रहे हैं। उसकी नजर में यह बात यात्रा के इस मौके पर बहुत खतरनाक थी। उसने हमें समझाया कि हम कुछ पार हैं और इसके दल में हम भी जोड़ आदमी हैं। इसलिए हम

आगे-आगे चलेंगे, इसलिए सारी मुसीवतें भी हम पर ही टूटेंगी। उसका चेहरा अब भी ढीला न पड़ा और वह अपनी पुरानी बात को दोहराता हुआ फिर से अपने साथियो से सलाह के लिए उनकी ओर मुड गया। अगली सुबह सूर्य निकलने से पहले ही हमारा तम्बू उखाडा जा चुका था। हमने अपने अच्छे घोडे गाड़ी मे जोते और चल पडे। चलने से पहले हमने अपने मित्रो और प्रवासियो से विदाई के लिए हाथ मिलाए। उन सबने हमारी यात्रा की सुरक्षा के लिए अपनी शुभकामना प्रकट की। हो सकता है उनमें से कुछ के दिल मे यह भाव भी रहा हो कि अगर हम पर आदिवासी टूट पड़ें तो अधिक अच्छा होगा। कप्तान और उसका भाई एक पहाड़ी की चोटी पर अपने लबादो मे लिपटे खडे थे। वे इतने धुँधले से दीख रहे थे जैसे वह कुहरे की आत्माएँ हो, उनकी निगाह घोडो के समूह पर लगी हुई थी। हम ज्यो ही उनके नीचे से निकले हमने अलविदा कहते हुए उनकी ओर हाथ हिलाए। कप्तान ने बहुत ही अच्छी तरह से हमें प्रणाम किया। जैक ने भी उसकी नकल असफलता से करनी चाही।

लगभग पाँच मिनट मे ही हम पहाडियो की तलहटी तक पहुँच गए। पर यहाँ हमे रुकना पड गया। मेरा घोडा हेन्ड्रिक गाडी मे जुता हुआ था। वह आगे न बढने की कसम खा चुका था। देस्लारियर ने हर तरह से उसे मारपीट कर बढाने की कोशिश की, पर वह थक-हारकर रह गया। लगता था, जैसे घोडा एक चट्टान बनकर रह गया था और अपने दुश्मन की ओर बडे गुस्से से देख रहा था। बदले का मौका मिलते ही वह इतने ज़ोर से उछला कि गाडीवान बहुत कठिनता से हवा मे उछलने से बच सका। यह काम कोई फ्रासीसी आदमी ही कर सकता था। तब शॉ और उसने दोनो ओर से घोडो को पीटकर ठीक करना चाहा। घोडा पहले तो कुछ देर चुप खडा रहा, पर जब वह अधिक मार न खा सका तो उसने उछलना-कूदना शुरू कर दिया। इससे गाडी और उसमे पडे सामान को खतरा हो गया। हमने पीछे डेरे पर निगाह डाली। वह पूरी तरह से दिखाई दे रहा था। हमारे साथी हमारी ही नकल करके अपने तम्बुओ को उखाड रहे थे और पशुओ को इकट्ठा कर रहे थे।

मैं बोल पडा, "इसे गाडी से अलग कर दो।" मैने अपनी काठी पौंटियक

से उतारकर हेन्ड्रिक पर रखी । पौंटियक को गाड़ी में जोत दिया गया । अब देस्लारियर ने फिर से आगे बढने की आवाज़ दी । पौंटियक पहाड़ी पर ऐसे चढ़ने लगा, जैसे उसके पीछे बँधी गाड़ी का बोझ एक पंख जितना हो । हमने चोटी पर चढ़कर देखा कि हमारे साथियो की गाड़ियाँ अभी चलनी ही शुरू हुई थीं । हमें तनिक भी डर नही था कि वे हमें पार कर जाएँगे ।

राह छोड़कर हम इस इलाके में से सीधा बढ़ने लगे । नदी की मुख्य धारा तक पहुँचने के लिए हमने सबसे छोटी और सीधी पगडंडी पकड़ी । तुरन्त ही एक गहरी घाटी हमारे सामने आ पडी । हम इसके किनारे-किनारे बढ़कर कम ढलान वाली जगह तक पहुँचे और तब इसमें बहुत हौले-हौले उतर पड़े । 'ऐश हॉलो' नाम की वन घाटियों के बाद हम दोपहर बिताने के लिए वर्षा के पानी के एक जोहड़ के पास रुके । पर तुरन्त ही फिर हम बढ़ चले और साँझ होने से पहले-पहले यहाँ से दक्षिण की ओर प्लाट् नदी के किनारे की घाटियों में उतर पड़े । हमारे घोडे रेत में गिट्टों तक धँसकर चलने लगे । सूरज आग की तरह तप रहा था । हवा मे मक्खियाँ और मच्छर भरे पड़े थे ।

अन्त में हम प्लाट् पर पहुँच गए । इसके किनारे पाँच-छ. मील तक चलने के बाद, ठीक सूरज छिपने के समय हमने एक बड़ी चरागाह में सैकड़ों पशु और उनके पीछे प्रवासियों के अनेकों डेरे देखे । उनमे से कुछ लोग संदेह में डूबकर हमसे मिलने बढ़ आए । जब उन्होंने देखा कि हम सभी उनसे अलग शक्ल और लिबास लिए पहाड़ियों में से निकल रहे हैं और हमारी संख्या भी चार से अधिक नहीं है तब उन्होंने समझा कि हम खूँखार मोर्मन लोगों में से ही हैं । वे इन लोगों से मुकाबला न करना चाहते थे । जब हमने उन्हें अपना असली परिचय दिया, तब उन्होने खुले दिल से हमारा स्वागत किया । उन्होंने इस बात पर अचरज प्रगट किया कि इतने थोड़े लोगों का कोई दल इतने बड़े इलाके मे बढ़ने का साहस कैसे कर सकता है ? हालाँकि आदिवासी और पशु फँसाने वाले इससे भी छोटे दलों में निकलते हैं । उन लोगों की गाड़ियों की संख्या पचास के लगभग रही होगी । चारों ओर तम्बू गड़े हुए थे । इस प्रकार एक घेरा सा बनाया हुआ था । हम उनके खेमे तक गए । उनके घोड़े तम्बुओं के घेरे में ही बंधे हुए थे । चारों ओर जलती हुई आग की

हलकी-हलकी रोशनी चमक रही थी और बच्चो और औरतो की शकलें दिखाई दे रही थी। इस प्रकार का पारिवारिक दृश्य बहुत ही खिचाव से भरा था। परन्तु, हम उन लोगो के सवालो की बौछार से तग आकर वहाँ से बहुत जल्दी ही निकल आए। उनके मुकाबले मे उत्तरी अमरीकनो की उत्सुकता भी कम ही ठहरती है। उन्होने हम से नाम, धाम और उद्देश्य आदि सब कुछ विस्तार से पूछा। जब उन्होने हमारे काम-धधे के बारे मे पूछा, तो हमे बडा अजीब लगा। उसे लोगो की नजर मे ऐसे इलाके मे घूमने का मतलब केवल रुपया बटोरना हो सकता है। इस पर भी हमे वे लोग अच्छे लगे। वे साफ दिल, उदार और सभ्य थे, हालांकि वे सीमान्त के कम असभ्य इलाके से ही आ रहे थे।

हम उनसे एक मील आगे बढ कर डेरे के लिए रुके। पहरे के लिए हमारे पास आदमी नहीं थे और उससे थकान भी अधिक होती। इसलिए हमने आदिवासियों का ध्यान बचाने के लिए अपनी आग बुझा दी और घोडों को अपने आस-पास चारों ओर बाँध लिया। इस प्रकार सुबह होने तक हम निश्चित होकर सोते रहे। अगले तीन दिन तक हम बिना रुके बढते रहे। तीसरी शाम हमने 'स्कॉट्स ब्लफ' नाम के सोते के पास डेरा डाला।

हेनरी और मैं सुबह जल्दी ही निकल पडे और इस सोते के पश्चिम की ओर निकलकर मैदान मे बढने लगे। तुरन्त ही हमारी निगाह मे सामने कुछ मील दूर की पहाडियो पर से उतरती हुई भैंसो की एक कतार दिखाई दी। हेनरी ने अपने घोडे की लगाम खींची और मैदान के पार बहुत सधी हुई निगाह से झाँकते हुए उसमे असल बात खोज निकाली। वह बोला, "ये आदिवासी हैं। लगता है बूढे स्मोक के गाँव के लोग हो। आओ, हम चलें। मेरे प्यारे घोडे बढो!" और, तब घोडे की पीठ पर झुकते हुए तेजी से आगे बढने लगा। मैं भी उसकी बगल मे होता हुआ बढा। बहुत जल्दी मैदान मे लगभग दो मील पर एक काली शाखा-सी हिलती दिखाई दी। यह शक्ल बडी-से-बड़ी होती गई और तब एक आदमी और घोडे के रूप मे बदल गई। हमने देखा कि एक नगा आदिवासी पूरी तेजी से हमारी ओर बढा आ रहा था। हमसे एक फर्लांग की दूरी तक पहुँचकर उसने एक गोल चक्कर काटा और मैदान पर कुछ अजीब भेद-भरे निशान-से बनाए। हेनरी ने अपने घोडे को भी

वैसे ही चक्कर काटने के लिए मजबूर किया। उसने हमें इशारों से समझाते हुए बताया कि यह आदिवासी सरदार स्मोक का ही गाँव था। उस आदिवासी के बढने पर हम उसकी प्रतीक्षा के लिए रुक गए। इसी समय वह अचानक ही छिप गया, जैसे वह धरती मे कही डूब गया हो। तभी वह एक बहुत गहरी घाटी मे से ऊपर आया। पहले उसके घोडे का सिर उठता हुआ दिखाई दिया। तब घोडा और घुडसवार दोनो ही हम तक आए। उसने ज्योही लगाम खीची, घोडा तुरन्त रुक गया। तब हाथ मिलाने और मित्रता जताने का काम शुरू हुआ। मुझे आज अपने उस अतिथि का नाम भूल गया है। अपने लोगो मे वह कोई बडा आदमी भी नही था। पर तो भी अपनी हस्ती और साज-सामान की दृष्टि से वह डाकोटा जाति का एक अच्छा योद्धा था। उसकी पोशाक सादी ही थी। अपने और लोगो की भाँति वह छः फुट लम्बा था। उसके शरीर का ढाँचा बहुत ही सुन्दर और मजबूती से गठा हुआ था। उसकी खाल भी बहुत ही साफ और कोमल थी। उसने कोई भी रंग नही मले हुए थे। उसका सिर नंगा और बाल पीछे को बँधे हुए थे। उनके बीच मे एक पक्षी की हड्डियो से बनी सीटी सजावट के लिए लटकाई हुई थी। उसके सिर के पीछे से पीतल की चमकती हुई कई छोटी-बडी गोल रकाबियो की एक माला लटक रही थी। यह जेवर काफी भारी था। इसे डाकोटा लोग अधिक पहनते है और इसके लिए वे लोग व्यापारियो को अच्छी खासी कीमत देने को तैयार रहते हैं। उसकी छाती और बाहे नगी थी। उनपर ढकी हुई भैंसे की खाल उसकी कमर तक खिसक आई थी और कमर-पेटी के सहारे टिक गई थी। उसके पाँव मे मोकास्सिन के जूते पडे थे। यही थी उसकी वेशभूषा! हथियारो के नाम पर उसके पास कुत्ते की खाल से बना तरकस पीठ पर लटक रहा था और एक बहुत ही मजबूत धनुष उसके हाथ मे था। उसके घोडे की रास मे लोहे की लगाम न थी। घोडे के जबड़े के चारो ओर बालो की बनी एक रस्सी बँधी हुई थी। यही उसकी लगाम थी। उसकी काठी सादी खाल से ढकी और लकडी की बनी थी। आगे और पीछे दोनो ओर लकड़ी की ऊँचाई डेढ-डेढ फुट थी। इस तरह से युद्ध में योद्धा अपनी जगह पर पूरी तरह जमा रहता था। उसे कोई भी बात यहाँ से हिला नही सकती थी।

अपने नये साथी के साथ बढते हुए हमने एक पहाडी की चोटी पर घेरा बनाकर बैठे हुए उसकी जाति के बहुत से आदिवासियो को देखा। पास ही की एक खड्ड मे से मर्दो, औरतो और बच्चो का, घर के बाँसो आदि को ढोने वाले घोडो के साथ आनेवाला, एक जलूस इसी समय जा रहा था। उस सारी सुबह आगे बढते हुए हमने ऐसे ही लम्बे-लम्बे असभ्य लोगो को अपने आस-पास से गुजरते हुए पाया। दोपहर के समय हम हौर्स क्रीक (घोडो की धारा) पर पहुँचे। आदिवासी भी हमसे कुछ पहले ही वहाँ पहुँचे थे। धारा के दूसरे किनारे एक बहुत डील-डौल और ताकत वाला आदमी खडा था। वह लगभग नगा था और उसने अपने हाथ में एक सफेद घोडे की लगाम थामी हुई थी। पास पहुँचते हुए वह हमे देख रहा था। यही था वह सरदार, जिसे हेनरी ने 'स्मोक' (धुआँ) के रूप मे परिचित कराया था। ठीक उसके पीछे उसकी सबसे छोटी और प्यारी स्त्री एक खच्चर पर बैठी हुई थी। उस खच्चर पर सफेद खाल ढकी हुई थी, जो काले और सफेद रग के दानो से जडी थी। उसके चारो किनारे धातुओ के बने हल्के-हल्के ज़ेवर लटक रहे थे, जो चलते हुए बजते थे। वह लडकी बहुत ही हलके और साफ रग की थी। उसके गालो पर हल्का-सा पराग मला हुआ था। वह हमे देखकर मुस्करा रही थी। उसने हाथ मे अपने वीर पति का लम्बा भाला उठाया हुआ था, जिसके ऊपर पख लगे हुए थे। उसकी गोल सफेद ढाल खच्चर के एक ओर लटकी हुई थी और हुक्का पीठ की ओर लटक रहा था। उस लडकी की पोशाक एक हिरण की खाल से बनी थी, जिसे उस इलाके की एक खास प्रकार की मिट्टी से सफेद बना दिया गया था। इस पर पत्थर और दाने आदि कई प्रकार की शक्लो मे सजाए गए थे और चारो ओर झालरें लटक रही थी। इस सरदार के पास ही कुछ ऐसे लोग भी खडे थे, जो ऊँचे दर्जे के थे और जिनके कधो से भैंसो की सफेद खालें लटक रही थी। वे लोग हमे बहुत उदासी से देख रहे थे। इनके पीछे कई एकड ज़मीन मे छोटे-छोटे डेरे पडे हुए थे। यहाँ सैनिक, स्त्रियाँ और बच्चे मक्खियो की तरह भिनभिना रहे थे। हर रंग और कद के सैकडो कुत्ते इधर-उधर दौड रहे थे। पास की एक चौडी और उथली धारा मे बहुत से लडके, लडकियाँ और स्त्रियाँ चीखती चिल्लाती और हँसती हुई खेल रही थी। उसी समय प्रवासियो का एक लम्बा जलूस अपनी भारी

भरकम गाड़ियो के साथ धारा पार करता हुआ नज़र आया। ये लोग जिन आदिवासियो के डेरो के पास से गुजरे, उन्हें ही इन्होने अगले ही कुछ दिनो में समाप्त कर देना था।

यह डेरा केवल दोपहर के लिए ही डाला गया था। कोई भी तम्बू या घर गाड़ा नही गया था। उनके ढकने के चमडे के कपडे और लम्बे-लम्बे बाँस इधर-उधर हथियारो और घर के सामान के बीच बिखरे पडे थे। हर सुस्ताने वाले सैनिक की पत्नी ने उसके लिए छाया करने का प्रबन्ध कर दिया था, और इसके लिए उसने दो एक बाँसो पर खाल के कपड़े को ढक दिया था। इस छाया मे हर सैनिक अपनी प्रिय जवान पत्नी के साथ हँसी-मज़ाक करता हुआ बैठा था। उसके सामने उसके ओहदे का चिह्न, उसकी भैंसे की खाल से बनी ढाल, दवाइयो की संदूकडी, धनुष-बाण, भाला और हुक्का आदि तीन बाँसो को जोडकर बनाई हुई एक तिपाई पर टिके हुए थे। कुत्तो के बाद सबसे ज्यादा शोर मचाने और हलचल करने का काम बूढी औरतो का था, जो चुड़ैलो से कम बुरी न दीखती थी। उनके बाल खुले हुए और हवा मे उड़ रहे थे। एक आध चिथडे-नुमा छोटा-सा भैंसे की खाल का टुकडा ही उनके शरीर को ढक रहा था। उन पर कृपा का मौका दो पीढियाँ पहले ही बीत चुका था। अब डेरे के सबसे कठिन कामो का बोझ उनके कंधो पर ही था। उन्हें घोडो की काठियाँ बाँधनी होती थी। मकान गाडने होते थे। बिस्तर बिछाना और शिकारियो के लिए मास पकाना भी उनका ही काम माना जाता था। इन बूढी औरतो की फटी हुई आवाज़ो, कुत्तो के शोर और लडकियो और बच्चो के चिल्लाने के और हँसने से एक ओर बडा शोर उठ रहा था और दूसरी ओर सैनिक बहुत शात होकर पडे थे। इस सबके कारण वह वातावरण बहुत ही लुभावना हो उठा था।

हमने आदिवासियो के इस डेरे के पास ही अपना डेरा डाला और उनके बहुत से सरदारो और सैनिको को दावत पर बुलाया। हमने उनके सामने बिस्कुट और काफी रखी। वे आधा घेरा बनाकर सामने ही बैठे और उन्होने यह सब कुछ बहुत जल्दी समाप्त कर दिया। जब हम दोपहर बाद की यात्रा के लिए आगे बढे तो बाद मे आने वाले हमारे कुछ अतिथि हमारे साथ हो लिए। इनमे से एक बहुत ही भारी भरकम आदमी था, जिसको उसके डील-

डौल और चरित्र के कुछ गुणो के कारण 'लाकोशो' कहा जाता था। हौग (सुअर) नाम का यह आदमी अपने छोटे से खच्चर पर चढा हुआ था, जो इसके बोझ को सह नही पा रहा था। फिर भी यह अपनी टाँगो के सहारे मे ही चलता जा रहा था। यह आदमी कोई सरदार न था, ना ही,उसने जिन्दगी मे कभी ऐसा बनने की कोशिश की। वह न सैनिक था और न शिकारी, क्योंकि वह मोटा और सुस्त था। वह गाँवो मे सबसे धनी आदमी था। डाकोटा लोगो मे धन-दौलत घोडो से गिनी जाती है और इस आदमी ने अपने पास तीस से अधिक घोडे इकट्ठे कर लिए थे। यह घोडे उसकी अपनी जरूरत से दस गुणा अधिक थे। फिर भी और अधिक घोडे बटोरने की उसकी हवस अभी बाकी थी। अपना खच्चर तेजी से मुझ तक बढाते हुए पास आकर उसने मुझे हिलाया और समझाया कि वह मेरा विश्वास-योग्य मित्र है। तब उसने बहुत से इशारे करने शुरू किए। उसके चेहरे पर खुशी और मुस्कान थी। उसकी छोटी-छोटी आँखो मे हल्की-सी चमक दिखाई दे रही थी। मैं आदिवासियो की इशारो की भाषा तो नही जानता था, पर तो भी कुछ अनुमान जरूर कर लिया। पूरी बात समझने के लिए मैने हेनरी को पास बुला लिया।

लगता है वह मुझ से विवाह का एक सौदा पटाना चाहता था। मेरा घोडा लेकर वह अपनी लडकी देना चाहता था। मैने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इसके बाद वह हँसी मजाक करता हुआ, अपने कपडो को सँभालकर, फिर पीछे की ओर मुड गया।

हमने उस रात एक ऐसी जगह डेरा डाला, जहाँ प्लाट् नदी दो ऊँची चोटियो के बीच होकर बहती थी। वह यहाँ भी मैली और तेज धार वाली ही थी, पर इसके किनारे पेड उगे हुए थे। धारा और पहाडी के बीच के हिस्से मे कुछ घास भी उगी हुई थी। इस जगह पर आने से पहले हमने देखा कि दाईं ओर लगभग दो तीन मील दूर कुछ प्रवासियो ने डेरा डाला हुआ है। आदिवासी भी हमारे पास की ही एक पहाडी पर इकट्ठे हो रहे थे। उन्हें आशा थी कि पहले ही की भाँति उन्हें हमसे बहुत कुछ खाने-पीने को मिलेगा। हमारे सामने के स्वाभाविक नजारे मे चारो ओर शान्ति थी। केवल नदी की धारा का शोर ही उसे तोड रहा था। पेडो की मुडी-तुडी शाखो के बीच मे से हमने 'ब्लैक हिल्स' नाम की पहाडियो की चोटी पर छिपते हुए सूरज की

रगीनी को देखा। इसके रग से नदी भी लाल हो उठी थी। हमारा सफेद तम्बू भी इसके लाल रग मे रग चुका था। सामने की उजाड़ चोटियाँ भी इसी रंग मे रग उठी थी, जैसे उनपर आग लग गई हो। यह रंगीनी तुरन्त समाप्त हो गई। हमारी आग की रोशनी को छोडकर और कोई रोशनी बाकी न बची। हम अपने कम्बलो में लिपटकर तम्बाकू पीते और बाते करते हुए आधी रात तक वैसे ही आग के चारो ओर लेटे रहे।

हमने अगली सुबह धूप से तपता हुआ मैदान पार किया। प्लाट् नदी के इस किनारे पर बहुत सारे फूली लकडी के पेड लगे हुए थे। उनमे से होते हुए हमने सामने, बहुत दूर पर, एक मकान-सा देखा। पास आकर हमे इसकी लम्बाई-चौडाई से इसके लठ्ठो का बना एक बड़ा मकान होने का अनुमान हुआ। यह एक व्यापार की जगह थी, जिसपर दो व्यापारियो का निजी अधिकार था। इसे पुराने व्यापार केन्द्रो की भाँति एक गोल दायरे वाले किले के रूप मे बनाया गया था, जिसमे रहने के कमरे और दूकान आदि का सारा प्रबन्ध अन्दर ही अन्दर, था। इसकी दो ओर ही बनी हुई थी। इस जगह पर अब रक्षा का काम नही होता था। ऐसे ही लकडी के बने घर सीमान्त प्रदेश मे आगे बढने के साथ-साथ आदिवासियो के विरुद्ध रक्षा का अच्छा काम देते रहे है। इस किले के पास ही दो और भी लकड़ियो के घर गाड़े हुए थे। उनके लट्ठो पर तेज़ धूप पड रही थी। उनमे एक बूढी औरत को छोडकर कोई भी जिन्दा चीज दिखाई न दे रही थी। उस औरत ने पास के एक डेरे में से अपना सिर बाहर निकाल कर झाँका। इसके साथ ही चार-पाँच कुत्तो के बच्चे और एक आदमी दरवाजे मे से बाहर आया। यह काली आँखो वाला कोई फ्रासीसी था। उसकी पोशाक अजब तरीके की थी। उसके काले घुँघराले बाल बीच मे से चीर निकाले हुए थे और कंधो पर लटक रहे थे। उसने धुएँ पर सुखाई हिरण की खाल की कमीज़ पहनी हुई थी, जिसपर रंगे हुए दानो मे बहुत कुछ काढ़ा हुआ था। उसके जूते भी उसी प्रकार बहुत सजे हुए थे। उसकी जुराबों पर से झालर लटक रही थी। यह रिचर्ड था। जैसा हमे हेनरी ने बताया। यह बहुत ही मजबूत, पहलवान और साहसी था, हालांकि इसका शरीर ठिगना ही था। उसके शरीर या वेश मे कोई भी चीज़ फालतू न थी। उसका अग-अग बहुत गठा हुआ और सुन्दर था। उसके शरीर की हर पेशी अपनी जगह

और मज़बूती मे तनी हुई थी। लगता था कि कठोरता और मज़बूती का वह एक शरीरधारी पुतला था।

रिचर्ड ने हमारे घोडे नवाहृा जाति के एक दास को दिए। वह बहुत ही नीच-सा दिखाई देने वाला आदमी था और उसे मैक्सिको की सीमा से बन्दी बनाया गया था। हमारी बन्दूको आदि को बहुत नम्रता पूर्वक किनारे रखवा कर, वह हमे अपने घर के मुख्य कमरे मे ले गया। यह कमरा दस फुट लम्बा और चौडा था। इसकी दीवारो और फर्श काली मिट्टी से पुते हुए थे और छत लकडी से ढकी हुई थी। मैदान से लाई गई चार चपटी चट्टानो के सहारे एक बडी भट्टी बनाई गई थी। आदिवासियो-का-सा-धनुष और तरकस भी वही लटका हुआ था। राकी पर्वत-माला की और भी बहुत अच्छी चीज़ें वहाँ पडी हुई थी। आदिवासियो की दवाइयो का एक थैला, चिलम और तम्बाकू की थैली आदि, दीवार पर लटके हुए थे। बन्दूकें एक कोने मे टिकी हुई थी। कोई खास सामान सजावट के लिए न था। एक छोटी सी चारपाई पर भैंसे की खाल ढकी हुई थी और इस पर एक दोगली स्त्री आराम कर रही थी। उसके बाल दोनो कनपटियो पर गुच्छे के रूप मे इकट्ठे थे और उसके गाल पराग से लाल थे। वही पर और भी दो-तीन पहाडी आदमी फर्श पर ही चौकडी मारे बैठे थे। उनका वेश भी रिचर्ड के समान ही था। इनमे सबसे अधिक खिचाव वाला एक आदिवासी लडका लग रहा था। वह नगा था। उसका चेहरा सुन्दर था। उसका बदन हलका और चुस्त था। वह दरवाज़े के पास के कोने मे आराम से बैठा था। उसका एक भी अग रत्तीभर भी हिल नही रहा था। उसकी आँखें एक-दम जडी हुई सी थीं। वह किसी आदमी को नही देख रहा था। बल्कि, ऐसा लगता था कि जैसे वह अपने सामने की अगीठी को देख रहा हो।

इन मैदानो मे अपने मित्रो के साथ तम्बाकू पीने की बात छोडी नही जा सकती, फिर चाहे वह मित्र आदिवासी हो या गोरा। इस लिए दीवार से चिलम उतारी गई और उसमे तम्बाकू और शोगसाशा मिलाकर डाले गए। तब इसे सुलगाकर घेरे मे बैठे सभी आदमियो को बारी-बारी से दिया गया। सभी ने इस मे से कुछ कश खीचे। इस प्रकार आधा घण्टा वहाँ बिताकर हमने छुट्टी ली। हमने विदा होते हुए अपने इन नये मित्रो को मील भर दूर

नदी के पास के अपने डेरे पर काफी पीने के लिए निमन्त्रित किया।

इस समय तक हम भी बडे उजड्ड-से लगने लगे थे। हमारे कपडे चिथडे-चिथडे हो चुके थे। इस पर मजा यह कि बदलने के लिए हमारे पास बहुत कम चीजे थी। यहाँ से लारामी किला अब भी सात मील दूर था। वहाँ इस हालत मे सभ्य कहे जाने वाले लोगो के बीच जाने में हमें लाज आई। इसलिए नदी के किनारे रुक कर हमने अच्छी तरह सज धजकर तैयार होने का निश्चय किया। हमने पेडो पर छोटे-छोटे शीशे लटकाए और अपनी दाढी-मूँछ साफ की। यह काम हम पिछले डेढ महीने से न कर पाए थे। हम प्लाट् नदी में खूब अच्छी तरह नहाए। पानी बहुत मैला था और किनारे पर पीला कीचड भरा हुआ था। तो भी हमे नहाना जरूरी था। इसके लिए हमने पेडो की शाखा आदि इकट्ठी करके एक जगह पानी जमा कर लिया और उसमे नहाए। रिचर्ड के घर से उसकी किसी स्त्री द्वारा बनाए चमकीले जूते भी हमने पहन लिए। और भी जो कुछ अदला-बदली कर सकते थे हमने की। हम अपने आप को और भी अधिक आदर के लायक बनाकर अपने मेहमानो की इतज़ार करने लगे। वे आए और चाय आदि पी। बाद में तम्बाकू पीकर हमने उन्हें विदाई दी। इसके बाद हमने अपने घोडो को लारामी किले की ओर मोड दिया।

हमे चलते हुए एक घटा हो गया था। इस समय हमारे सामने एक ऊसर पहाडी आ गई, जिससे आगे की राह दीखनी बन्द हो गई। इसे पार करते ही हमे एक धारा मिली, जो प्लाट् नदी मे ही मिलती थी। इस धारा के पार एक चरागाह दिखाई दी, जिसमे जगह-जगह झाडियाँ उगी हुई थी। यही पर एक ओर, जहाँ दो धारें एक साथ मिलती थी, किले की नीची दीवारें दिखाई दी। यह लारामी किला नही था। यह एक और किला था, जो अब लारामी किले के बन जाने के कारण उजाड हो गया था और गिरने की हालत मे था। कुछ ही देर बाद आगे बढ़ने पर पहाडियो के बीच से झाँकता हुआ लारामी किला साफ दिखाई देने लगा। धारा के बाई ओर इसकी ऊँची नीवें, दीवारें और परकोटे दिखाई देने लगे। इसके पीछे की ओर ऊँची और उजाड़ पहाड़ियाँ मौजूद थी। इन पहाडियों से भी पीछे सात हज़ार फुट ऊँची 'ब्लैक हिल्स' की पहाडियाँ नजर आ रही थी।

हमने लारामी धारा को किले के सामने की एक जगह से पार करने की

कोशिश की। यहाँ धारा बहुत भरकर और तेजी से चल रही थी। हम इसके किनारे के साथ-साथ बढकर पार करने का एक अच्छा स्थान खोजने लगे। उधर किले की दीवार पर हमे देखने के लिए कुछ आदमी चढ आए। हैनरी ने वोर्दू को दूर से ही पहचान लिया और अपने इस परिचित को पहचानते ही उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला, "इधर वह वोर्दू दूरबीन लेकर खडा है और उधर बूढा वास्किस, टकर, और मे आदि खडे है। सच ही, वहाँ सीमौनू भी खडा है।" सीमौनू उसका अपना मित्र था। यही वह दूसरा व्यक्ति था, जो हेनरी के मुकाबले मे दूसरा अच्छा शिकारी था।

हमने जल्दी ही नदी पार करने की जगह ढूँढ ली। हेनरी ने हमें रास्ता दिखाया। उसका टट्टू नदी तक बहुत ही शाति से बढता गया। धारा में भी वह उसी शान्ति के साथ चुपचाप उतर पडा। हम भी उसके पीछे-पीछे चले। पानी हमारी काठियो तक बढ आया था पर हमारे घोडे बडी आसानी से पार हो गए। छोटे-छोटे खच्चर तेज़ धारा के साथ गाडी समेत ही बहने लगे, परन्तु हमारे देखते-देखते उन्होने नदी के तल के पत्थरो पर पाँव जमाकर, जैसे तैसे तेज़ धार का मुकाबला करते हुए, बडी कठिनता से नदी पार की। अन्त मे सभी बडी सुरक्षापूर्वक किनारे आ पहुँचे। तब हमने एक छोटा-सा मैदान पार किया। एक खड्ड मे उतर कर ज्यो ही ऊपर चढे, हमने अपने को लारामी किले के दरवाज़े के सामने पाया। इस दरवाज़े के ऊपर ही एक बहुत बडा बुर्ज बना हुआ था, जिसे रक्षा के उद्देश्य से बनाया गया था।

— o —

९ : लारामी किले के नज़ारे

आज उस बात को एक साल से भी अधिक बीत गया है, पर फिर भी लारामी किले और उसके निवासियों की जब भी याद आती है, ऐसा लगता है जैसे वह कोई सचाई न होकर पुराने समय का सपनों भरा कल्पना का कोई चित्र हो। इस सभ्य कहलाने वाले संसार से वहां का संसार कतई भिन्न था। वे ऊँचे-लम्बे आदिवासी भैंसों की खाल से बने अपने कपड़े पहने इधर से उधर भागते फिर रहे थे या फिर मकानों की ऊँची-नीची छतों पर पूरी बेफिक्री से आराम कर रहे थे। अनेक स्त्रियां सजी-धजी अपने-अपने कमरों के सामने झुंड बांध कर बैठी थीं। उनके दोगले बच्चे उनके सामने ही किले के हर कोने में भागते फिर रहे थे। इनको छोड़कर और लोगों में पशु फँसाने वाले, व्यापारी और नौकर-चाकर आदि अपने-अपने काम में या आनन्द मनाने में लगे हुए थे। यह था उस समय का किले का दृश्य।

होगा यदि इस जगले के साथ ही हम अपने घोडे बांध दें। ऐसा कहकर वह सीढियाँ चढने लगा और एक छज्जे पर जाकर रुक गया। यह जगह साफ न थी। उसने पाँव की ठोकर से दरवाजा खोला। हमे वह बडा कमरा पूरी तरह दीखने लगा। यह कमरा किसी अनाज भडार की अपेक्षा अधिक सजा हुआ लगा। इसमे थोडा-सा ही सामान था। एक हल्की-सी चारपाई बिना बिस्तर के पडी थी, दो कुर्सियाँ, दराजो वाली एक मेज़, पानी लाने की एक बाल्टी और तम्बाकू के काटने के लिये एक फट्टा भी वहाँ पडे हुए थे। दीवार पर एक ओर पीतल का बना हुआ क्रॉस लटका हुआ था और उसके पास ही एक बहुत ताज़ा खोपडी लटक रही थी। इस खोपडी पर गज़ भर लम्बे बाल लटक रहे थे। मैं बाद मे बताऊँगा कि यह दुखदायक निशानी किस बात की थी? इसका सम्बन्ध बाद की घटनाओ से बैठता है।

लारामी किले मे हमारा यह कमरा ही सबसे अच्छा हिस्सा था। यहाँ का असली मालिक पैपिन जब भी यहाँ होता तो वह इस कमरे मे ही रहता था। उसके चले जाने पर अधिकार बोर्दू के हाथ मे आ जाता था। बोर्दू ठिगना पर गठीले शरीर का आदमी था। वह अपने इस नये अधिकार को पाकर कुछ फूल गया था। अब उसने भैंसो की खालें मँगाने के लिए चिल्लाना शुरू किया। इन्हें लाकर फर्श पर बिछाया गया और हमारे बिस्तर तैयार किए गए। आज तक राह मे हमे जितनी बार सोना पडा, उनसे आज का बिस्तर अधिक आरामदेह था। अपने कमरे को ठीक-ठाक करने के बाद हम बाहर छज्जे पर निकल आए, ताकि बहुत देर से अपनी कल्पना मे बसाये इस लारामी किले को आराम से देख सकें। आखिर हम यहाँ पहुँचे भी तो बहुत दिन बाद और अनेक कठिनाइयो को पार करके! हमारे नीचे एक चौकोर जगह मे छोटे-छोटे कमरे, एक घेरे में, बने हुए थे। उन सबके दरवाज़े इस बीच के चौकोर मैदान की ओर ही खुलते थे। इन सब का प्रयोग अलग-अलग उद्देश्य से होता था। परन्तु इन मे बहुत से किले मे काम करने वाले नौकरो के रहने के थे। उन नौकरो की पत्नियो की सख्या भी उनके बराबर ही थी। उन्हें यहाँ अपनी पत्नियो को साथ रखने की खुली छूट थी। हमारे सामने ही दरवाजे का बुर्ज दिखाई देता था। इस पर तेज़ी से दौडते हुए घोडे की एक तस्वीर बनी हुई थी। तख्तो पर ही बनी हुई यह तस्वीर लाल रग से बनाई गई थी और इससे

उतनी ही शूरवीरता और चतुरता टपकती थी, जितनी कि आदिवासी अपने भैंसो की खालो के कपडे और मकान बनाते हुए दिखाते थे। इस सारे इलाके मे ही ऐसे दीखता था, जैसे हर कोई अपने-अपने काम मे लगा हुआ हो। वास्किस एक बूढा व्यापारी था। उस की बहुत सारी गाडियाँ पहाडो में स्थित एक बहुत दूर की दूकान के लिए सामान लेकर जाने ही वाली थी। कनाडा निवासी नौकर इस यात्रा के लिए पूरी तेजी के साथ जुटे हुए थे। पास ही खडे एक-दो आदिवासी उन्हें बहुत गम्भीर होकर देख रहे थे, जैसे उन्हें कोई चिंता ही न हो।

यह किला 'अमरीकी फर कम्पनी' की दूकानो मे से एक है। इस इलाके के आदिवासियो के साथ तमाम व्यापार इसी के ज़रिये से होता है। यहाँ इसके अधिकारियो का अपना ही शासन चलता है। अमरीका की केन्द्रीय सरकार का अधिकार यहाँ कम चलता है। जिन दिनो हम वहाँ पर थे, सरकारी सैनिको की चौकियाँ सात सौ मील दूर, पूर्व की ओर थी। यह छोटा-सा किला धूप मे सुखाई ईंटो से बना हुआ है। बाहर से चौकोना-सा दीखता था। इसकी नीवें और परकोटे मिट्टी के ही बने हुए थे। सामने के दोनो कोनो पर दो बुर्ज भी बने हुए थे। परकोटो की ऊँचाई पन्द्रह फुट के लगभग होगी और उन पर लकड़ी का एक और जगला लगा हुआ था। अन्दर के मकानो की छतें सैनिको के खडा होकर गोला-बारी करने का काम देती थी। यह मकान दीवारो से एकदम सटकर बने थे। किले के अन्दर का हिस्सा कुछ भागो मे बँटा हुआ है। एक ओर एक चौकोना हिस्सा चारो ओर बने भंडारो, दफ्तरो और रहने के घरो से भरा हुआ है। दूसरे हिस्से में एक तंग जगह पर घुडसाल बनी हुई है, जिसके चारो ओर मिट्टी की ऊँची-ऊँची की दीवारें है। यहाँ रात के समय अथवा आदिवासियो से खतरा होने पर, घोड़े और खच्चर इकट्ठे करके बाँध दिए जाते है। बड़े दरवाजे में दो रास्ते है। उनके बीच मे एक गोल ढका हुआ छोटा-सा रास्ता है। एक-एक छोटी-सी खिड़की ज़मीन से कुछ ऊँचाई पर अगल-बगल से इस बीच के रास्ते मे खुलती है। यह पास के कमरे की खिडकी है। इस लिए बीच का रास्ता बंद हो जाने पर भी कोई आदमी बाहर ही खड़ा होकर कमरे के अन्दर वाले लोगो से, इस छोटी खिडकी के द्वारा, बातचीत कर सकता है। इस तरह जिन आदिवासियो पर सन्देह होता है, उन्हें

अन्दर आने से रोका जा सकता है। ऐसे लोगो को व्यापार के लिए किले के अन्दर नही आने दिया जाता। जब भी खतरा होता है, सारे दरवाज़े बन्द करके इस खिडकी की राह से ही काम लिया जाता है। और दूकानो पर भले ही खतरे की यह बात निश्चित हो, परन्तु इस किले मे यह बात उतनी निश्चित नही है। इस के पडोस मे ही बहुत बार आदमी मार दिए जाते है, पर तो भी यहाँ के लोगो को आदिवासियो के हमले का कोई खास खतरा नही होता।

हम अपने इन नये कमरो मे अभी बहुत देर तक निश्चित होकर आराम नही कर पाए थे कि एकदम ही चुपके से किसी ने हमारे कमरे का दरवाजा खोला। एक काला चेहरा और दो चमकती आँखें हमे देख रही थीं। तभी एक लाल बाह और कधा अन्दर घुस आया और उसके साथ ही एक लम्बा चौडा आदिवासी अन्दर आ गया। उसने हमे अपने हाथो से हिलाया और प्रणाम किया। वह फर्श पर ही बैठ गया। उसके पीछे और भी बहुत सारे लोग आए और बहुत धीरे-धीरे आराम से अपनी-अपनी जगह चुन कर बैठ गए। उन्होने हमारे सामने आधा घेरा बना लिया। ऐसे समय चिलम सुलगाकर हर एक के हाथ मे देनी होती है। इस समय भी वे लोग हमसे यही उम्मीद लेकर आए थे। किले मे रहने वाली औरतो के पिता, भाई या दूसरे सम्बन्धी ही इस समय हमारे मेहमान बन कर आए थे। उन्हें इस किले मे रहने और आराम से अपने दिन बिताने की छूट दे दी गई थी। और भी दो-तीन आदमी बीच में चले आए। वे छोटी उमर के थे और अपनी उमर या कारनामो की कमी के कारण उन्हें कोई भी महत्त्व का दर्जा प्राप्त न था। ऐसे समय बूढो और सैनिको के साथ बैठने मे उन्हें लाज आती थी। इस लिए वे अपनी आँखें हम पर से बिना हटाए भी वही अलग होकर खडे रहे। उनकी गालो पर पराग मला हुआ था, उनके कानो मे शख के बने झुमके लटके हुए थे और उनकी गर्दनो मे दानो से बनी मालाएँ पडी हुई थी। उन्होने आज तक न तो शिकारी के रूप मे प्रसिद्धि पाई थी और न ही किसी आदमी को मार कर इज्जत पाई थी। इस लिए उन्हें आदर न दिया जाता था और इसी लिए ये कुछ अधिक शरमीले बने हुए थे। इन दर्शको के कारण हमे कुछ कठिनाई अनुभव हुई। वे हमारे कमरे की हर चीज देखने पर तुले हुए थे। उनकी आँखे हमारे सामान और हमारी पोशाको को जाँचने मे लगी हुई थी। बहुत से लोग यह बात नही

मानते, पर तो भी इन आदिवासियो की उत्सुकता प्राय. सबसे अधिक उन चीज़ो के बारे मे रहती है, जिन्हें वे अच्छी तरह पहचानते है। जिन बातो को वे नही जानते उनकी तरफ से वे बेखबर रहते है। जिन चीजो की वे कल्पना भी नही कर सकते, उनके विषय में वे जानने का यत्न भी नही करते। आश्चर्य मे डूब कर वे केवल उसे एक 'महान् औषधि' ही मानते हैं। जिस भी चीज़ को यह नाम दे दिया जाए, आदिवासी उसकी ओर से बिल्कुल बेफिक्र हो जाता है। ये लोग कभी भी अनुमान और कल्पना का सहारा लेकर नई बात सोचने की कोशिश नही करते। अपनी घिसी-पिटी पुरानी बातो को ही सोचते रहते है। उनकी आत्मा जैसे सो चुकी है। उन्हें कोई भी धर्म-प्रचारक या सुधारक नही जगा सकता। कम-से-कम अब तक तो जगाने मे कोई सफल नहीं हुआ है।

साँझ होते समय जब हम छत पर से ही चारों ओर के उजाड मैदान को देख रहे थे, हमने, बहुत दूर पर एक झुंड-सा देखा। जैसे लकड़ी की कई छोटी-सी इमारतें हमारे सामने के मैदान मे पश्चिम की ओर कुछ दूरी पर खडी हो। ऊपर की ओर उन पर जैसे कुछ बोझ लदा हुआ था और नीचे हड्डियो जैसी कोई सफेद चीज़ चमक रही थी। यह डाकोटा सरदारो के शवो के गाड़े जाने की जगह थी। उनकी निशानियाँ, उनके मरने के बाद, इस किले के पास ही रख दी जाती है ताकि शत्रुओ के हाथो मे पडने से बची रह सके। फिर भी अनेक बार ऐसा हुआ है कि काक जाति के आदिवासियो के लडाकू दलो ने इस इलाके पर हमला करते हुए इन इमारतनुमा ढाँचो को उखाड फेंका और उनमे से उन सरदारो के शरीरो को निकाल कर फेंक दिया। डाकोटा लोग बहुत थोडी सख्या में होने के कारण यही से अपने पुरखो के निशानो को उखाडा जाता हुआ देखते रहे और अपमान का कडवा घूँट पीकर रह गए। ज़मीन पर पड़ी हुई सफेद चीजें भैसो की खोपडिया थी, जिन्हें उन कब्रगाहों के आसपास घेरे मे सजा दिया जाता था। इन मैदानो का यही रिवाज है।

रात की हल्की रोशनी में हमने पहचाना कि पचास या साठ घोडे किले के पास तक आ गए। ये घोडे इस बस्ती के ही थे। दिन मे इन्हें नीचे की चरागाहो मे हथियारबन्द रखवालो के साथ चरने के लिए भेजा गया था और इस समय ये घुडसाल मे लौटकर आ रहे थे। इसी समय बड़ा दरवाज़ा खुला।

इसके पास ही एक कनाडा निवासी पहरेदार के रूप मे खडा था। उसकी भौहो के वाल सलेटी से रग के थे। उसकी कमर-पेटी में सैनिको जैसी ही एक पिस्तौल लटक रही थी। उसका साथी एक घोडे पर सवार था। उसकी वदूक उसके सामने की काठी पर टिकी हुई थी। उसके लम्वे वाल उसके चेहरे के सामने की ओर उड रहे थे। और वह सवसे पीछे-पीछे चलता हुआ सवको चढने के लिए कह रहा था। कुछ ही क्षण मे घुडसाल का तग दरवाज़ा सवके लिए खोल दिया गया। जगली घोडे दुलत्तियाँ झाडते हुए और एक दूसरे को काटते हुए, अशान्त होकर वहाँ जमा हो गए।

तभी एक कनाडियन ने एक वेतुकी-सी घण्टी वजाई। यह हमे शाम के भोजन की सूचना देने के लिए वजाई गई थी। भोजन हमे एक नीचे के कमरे मे बहुत भद्दी मेज पर परोसा गया। इसमे रोटी और भैंसे का सूखा मास शामिल था। इसके खाने से दात मज़बूत हो सकते थे। भोजन के इस दौर मे इस वस्ती के वडे-बडे लोग और स्वामी बैठे। हेनरी को भी इसमे आदरपूर्वक बिठाया गया। भोजन करने के बाद हमारे उठते ही इसी मेज़ पर एक बार फिर खाना परोसा गया। इस बार रोटी नही दी गई। यह भोजन शिकारियो, पशु फसाने वालो आदि मझले वर्ग के लोगो के लिए परोसा गया था। बचे-खुचे आदिवासियो और कनाडियन नौकरो को अपने-अपने कमरे मे ही खाने के लिए सूखा मास दे दिया गया था। यह सब अन्दरूनी बात वताते हुए यहाँ मै उन दिनो वहाँ सुनी गई एक बात बताये विना न रहूँगा।

कभी यहाँ पियेर् नाम का एक बूढा नौकर था। उसका काम भोजन के समय लोगो को भडार से मास निकालकर देना होता था। दया और सहानुभूति के कारण वह मास के सवसे अच्छे और मोटे हिस्सो को अपने साथियो मे बाँट देता था। यहाँ के अधिकारी की निगाह से यह बात बहुत दिन तक बच न सकी। वह इस बात पर बहुत ही बिगड उठा। उसने जिस किसी भाँति इस बात को रोकने का निश्चय कर लिया। अन्त मे उसने एक उपाय सोचा। यह उपाय उसकी रुचि के मुताविक था। मास के कमरे के साथ ही मिट्टी की दीवार से अलग किया हुआ एक और कमरा था। यहाँ पर रोएँदार खाले इकट्ठी की जाती थी। इस कमरे का किले से सम्बन्ध एक चौकोन झरोखे के द्वारा ही था। यह झरोखा भी उस मिट्टी की दीवार मे ही था। यह कमरा

बिल्कुल अँधेरा था। एक शाम विना किसी के देखे ही अधिकारी मास वाले कमरे मे घुसा और इस छेद के द्वारा इस अँधेरी कोठरी मे घुस गया तथा खालो आदि मे छिप कर वैठ गया। तभी अपनी लालटेन लेकर पियेर् बुडबुडाता हुआ वहाँ आया और मास के टुकडो को खीचने लगा। उसने सबसे अच्छे टुकडे, सदा की भाँति काटे। तभी अचानक ही उसे एक गूँजती-सी भूत की आवाज अन्दर के कमरे से आती हुई सुनाई दी, "पियेर, पियेर् ! इस मोटे मास को छोड़ दो। केवल पतला मास ही लो।" उसके हाथ से मास गिर गया और वह किले में, अन्दर की ओर, चिल्लाता और चीखता हुआ भागा। भंडार मे भूत को देख कर वह बहुत डर गया था। वह दहलीज पर ही गिर पडा और वेहोश हो गया। दूसरे कनाडियन नौकर उसे बचाने के लिए दौड़े। कुछ ने उसे उठाया और कुछ दो लकडियो का क्रास वनाकर अन्दर से भूत को भगाने के लिए गए। इसी समय वह अधिकारी भी वड़ा उदास चेहरा लिए हुए दरवाजे पर आ पहुँचा। उसे होश मे लाने के लिए स्वामी ने सारी बात साफ करनी उचित समझी। पर यह बात उसी के विरुद्ध जा पड़ी।

अगली सुवह हम वास्किस और मे नाम के व्यापारियो से वात करते हुए दरवाजो के बीच मे ही वैठे हुए थे। ये दोनो व्यापारी और मौंथेलो ही ऐसे व्यक्ति थे, जो इस किले मे रहने वाले लोगो में से कुछ पढ़े-लिखे थे। मे हमें यात्री कैंकलो के विपय में कुछ वता ही रहा था कि तभी एक भद्दी सूरत का ठिगना चिथडो मे लिपटा आदिवासी तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ, किले मे हम तक आ गया। पूछे जाने पर उसने बताया कि स्मोक नाम के आदिवासी सरदार का गाँव पास तक ही आ गया था। कुछ ही मिनट वाद हमे सामने नदी के पास की पहाड़ी चोटियो पर कुछ घुडसवार असभ्य लोगो की वेतरतीवी भीड़ इकट्ठी होती हुई दिखाई दी। मे ने अपनी कहानी समाप्त की। तव तक वह सारा गाँव ही लारामी धारा तक उतर कर उसे पार करने लगा था। मै नदी के किनारे तक चला गया। यह धारा काफी चौडी है और तीन या चार फुट गहरी और तेज़ बहने वाली है। काफी दूर तक कुत्ते, घोडे और आदिवासियो से यह धारा घिरी हुई थी। मकान वनाने वाले तम्बू और लम्बे बांस घोडो पर लदे हुए थे। उनका वोझिल हिस्सा आगे को और घोडों की पीठ पर वँधा हुआ था। दोनो तरफ दो या तीन वल्लियाँ वँधी हुई थीं। दूसरा

किनारा नीचे की ओर लटक रहा था। इस तरह घोडो की पीठ पर सामान लादने के लिए एक काठी जैसी बन गई थी। घोडो से कुछ ही पीछे एक टोकरी इन बल्लियो के बीच मे लटका दी गई थी। उसे मज़बूती से बाँधा गया था। इस टोकरी मे बहुत-सा घरेलू सामान, कुत्तो के पिल्ले, छोटे बच्चे, अथवा कोई बहुत ही बूढा आदमी बैठा दिया जाता था। ऐसी बहुत-सी गाडियाँ इस समय नदी से पार आ रही थी। उनके साथ ही अनगिनत कुत्ते भी आ रहे थे। उन पर भी छोटी-छोटी ऐसी ही गाडियाँ-सी बना दी गई थी। इनके पीछे अपने घोडो पर ही बैठे हुए सैनिक लोग आ रहे थे। उनके साथ ही घोडे की पीठ पर बिल्ली की सी आँखो वाले कुछ छोटे बच्चे भी बैठे थे। औरतें खच्चरो पर ढोए हुए सामान पर ही बैठी हुई पार आ रही थी, हालाँकि घोडो पर पहले ही बहुत ज्यादा बोझ लदा हुआ था। चारो ओर बहुत ही गडबड-झाला सा मचा हुआ था। सब कुत्ते साथ मिलकर चिल्ला और भौंक रहे थे। कुत्तो के छोटे पिल्ले इन गाडियो मे बैठे उदासी से गुर्रा रहे थे, क्योकि नदी का पानी उन तक पहुँच रहा था। काली आँखो वाले छोटे बच्चे अपनी टोकरी के किनारो को पकडे बैठे हुए थे और पानी को इतना पास आते देखकर चौकन्ने हो गए थे। चेहरे पर पानी के टकराते ही वे घबरा जाते थे। कुछ कुत्ते अपने बोझो के साथ ही धारा मे बह गए थे। वे बहुत करुणाजनक स्वर मे चिल्ला रहे थे। उन्हें पकडने के लिए बुढिया औरतें उन्हें खीच लाती थी। जो घोडा किनारे पर पहुँचता गया, धीरे-धीरे वह ऊपर चढने लगा। बाद मे खुले घोडे और उनके बछडे ऊपर चढने लगे। खुले होने के कारण वे अक्सर भीड मे से तेज़ी से बढ़ने लगते। उनके पीछे-पीछे बूढी औरतें चिल्लाती हुई दौड रही थी। उत्तेजना से ऐसे मौके पर ऐसा करना उनका स्वभाव ही था। भारी-भरकम जवान औरतें खूब सज-धज कर किनारे पर इधर-उधर खडी थी और हर एक ने अपने हाथ मे अपने स्वामी का भाला पकडा हुआ था। यह एक निशानी के तौर पर था, ताकि प्रत्येक गृहस्थी का सामान एक साथ ही इकट्ठा हो सके। कुछ ही क्षण मे यह भीड फिर खिसकने लगी। प्रत्येक परिवार अपने घोड़ो और सामान के साथ किले के पीछे के मैदान तक कतार बाँधकर चलता आया। यहाँ पहुँच कर आधे घण्टे के अन्दर ही अन्दर कोई साठ-सत्तर मकान खडे हो गए। उनके सैकडो घोड़े आसपास के मैदानो में चर रहे थे और उनके

कुत्ते इधर-उधर घूमते फिर रहे थे। किला योद्धाओ से भर गया और बच्चे दीवारो के नीचे लगातार चीखते-चिल्लाते भाग रहे थे।

अभी ये नये आने वाले लोग आकर पहुँचे ही थे कि बोर्दू अपनी पत्नी की ओर चिल्लाता हुआ आया और दूरबीन माँगने लगा। उसकी आज्ञाकारिणी पत्नी 'मारी' एक आदर्श पत्नी थी। वह तुरन्त ही दूरबीन ले आई और बोर्दू उसे लेकर परकोटे पर चढ गया। पूर्व की ओर देखते हुए उसने कहा कि और भी परिवार आ रहे है। कुछ ही क्षण बीतने के बाद साफ दिखाई देने लगा कि प्रवासियो का भारी जलूस पहाडियो मे से होकर लगातार बढता आ रहा था। वे नदी तक आए और बिना रुके या मुडे वे एकदम इस के पार आ गए और इधर के किनारे पर धीरे-धीरे चढते हुए किले और आदिवासियो के गाँव की ओर बढने लगे। परन्तु, यहाँ से लगभग दो फलाँग दूर ही एक अच्छी जगह पाकर उन्होने घेरा डाल लिया और अपनी गाडियाँ रोक दी। कुछ समय तक हमारी शान्ति मे कोई अन्तर न पडा। प्रवासी अपना घेरा डालने की तैयारी करते रहे। अपना काम खत्म करते ही उन्होने किले पर जैसे एक साथ ही धावा बोल दिया। चौडे किनारो वाले टोप पहने, पतली शक्ल और घूरती हुई आँखो वाले आदमियो की एक भीड दरवाजे पर जमा हो गई। लम्बे और भद्दे दीखने वाले ये आदमी खड्डी का बुना कपड़ा पहने हुए थे। उनकी औरतो के चेहरे मुरझाए हुए और शरीर पतले थे। वे भी वहाँ जमा हो गई थी। लगता था जैसे सभी उत्सुकता से वहाँ खिचे चले आए थे और जैसे उन्होने किले का कोना-कोना लूट लेना हो। इस सब बात को देखकर हम घबरा गए और अपने कमरे मे लौट आए। हमे आशा थी कि इस कमरे मे हमें शान्ति अवश्य मिलेगी। आने वाले इन लोगो ने अपनी पूछ-ताछ पूरे उत्साह के साथ जारी रखी। उन्होंने हर कमरे और कोठी मे घुसकर उसे अच्छी तरह देखा, हालाँकि उनमे रहने वाली औरतें बहुत घबरा गई थी। उन्होंने पुरुषो के हर कमरे को यहाँ तक कि 'मारी' और वहाँ के मालिक के मकान को भी, जैसे तह तक छान डालने का निश्चय कर रखा था। अन्त मे हमारे दरवाजे पर भी बहुत से लोगो का एक जत्था आया। पर, हमने उन्हें किसी प्रकार का बढावा न दिया।

अपनी उत्सुकता शान्त करने के बाद वे अपने काम-काज के लिए आगे

बढे। आदमी अपनी अगली यात्रा के लिए सामान खरीदने मे लग गए। वे या तो इस सामान को पैसो के बदले खरीद रहे थे, या उसके बदले अपनी कुछ फालतू चीज़ो को दे रहे थे।

इन प्रवासियो को पशु फँसाने वालो और व्यापारियो से खास घृणा थी, क्योकि ये उन्हें दोगला मानते थे। ये उन्हे फ्रासीसी आदिवासी के नाम से पुकारते थे। किसी कारण वे यह मानते थे कि ये लोग उनके प्रति किसी प्रकार की शुभ-भावना नही रखते थे। इनमे से कुछ का तो यह विश्वास भी था कि फ्रासीसी लोग उन पर हमला करने के लिए आदिवासियो को उकसाते रहते थे। डेरे पर पहुँच कर हमे वहाँ फैले हुए गडवड-भाले और अनिश्चय के ही दर्शन हुए। लगता था कि लोग जैसे स्वय पर से विश्वास खो वैठे थे। वे बौखलाए हुए और अचरज मे पडे हुए थे। लगता था जैसे जंगल मे भटके हुए कुछ स्कूल के लडके इकट्ठे हो। उन सबके ही अन्दर कुछ इस प्रकार की भावना भरी हुई थी कि उनके पास बहुत देर तक ठहरना कठिन था। ऐसे जगल के रहने वालो के लिए जगल ही अच्छा रहता है इस दूर के रेतीले मैदान मे ऐसे आदमी हमेशा ही चक्कर मे पड जाते है। ऐसे लोग पहाडी आदमियो से कतई भिन्न होते है। उनका यह अन्तर वैसा ही होता है जैसा किसी छोटी नाव खेने वाले कनाडियन और किसी जहाज़ के अमरीकी नाविक का। इस पर भी मै और मेरा साथी प्रवासियो की इस दशा का कारण खोजने मे सफल न हुए। ऐसा उनकी कायरता के कारण न था। ये लोग बहुत वीर थे, पर, एकदम असभ्य और मैदान के हालात से अनजान थे। ये न तो इस इलाके और न ही यहाँ के निवासियो के बारे मे अधिक जानते थे। उन्हे अब तक काफी दुर्भाग्य का सामना करना पडा था और इससे भी अधिक दुर्भाग्य आ पडने की उन्हे उम्मीद थी। उन्होने सारे रास्ते भर न तो मनुष्यता को ठीक से मापा था और न ही अपनी चतुराई का पूरा प्रयोग किया था।

उन लोगो ने हमे भी सन्देह की दृष्टि से ही देखा। अजनबी होने के कारण उन्होने हमे अपना शत्रु समझा। जब हमने देखा कि हमें सीसे की गोलियाँ और कुछ और जरूरी चीजें चाहिएँ तो हम उन लोगो के डेरे की ओर गए। बहुत झिझक, सन्देह और आनाकानी के बाद कही सौदा तय हुआ और शर्तें निश्चित हुईं। तब प्रवासी सामान लेने अन्दर गया। पर कुछ

देर बाद जब हम उसकी प्रतीक्षा करते थक गए और उसे ढूँढने लगे, तो हम ने देखा कि वह अपनी गाड़ी के जुए पर बैठा है। हमें पहुँचता हुआ देखकर वह बोल उठा, "देखो, आगन्तुक ! मुझे लगता है मै यह सौदा नहीं कर सकूँगा।"

लगता है सौदे की जगह से ही उसका कोई साथी उसके पीछे-पीछे उसके साथ ही चला आया था। उसने उसे यह समझा दिया था कि हम उसे ठगना चाहते थे, और यह भी कि अच्छा होगा यदि वह हमसे सौदा न करे। प्रवासियो की घबराहट और डर से भरी यह मानसिक हालत उन्ही के लिए कभी-कभी खतरे का कारण बन जाती थी। आदिवासियो के सामने यदि आत्मविश्वास और बहादुरी के साथ बहुत सावधान रहकर कोई बात की जाए तो वे लोग अच्छे पडोसियो की भाँति व्यवहार करते है। परन्तु यह सब इस पर आधारित है कि आप उनमे कितना आदर या डर जगा देते है। अगर आपने उनके सामने अनिश्चय या डर दिखाया तो आप निश्चय ही उन्हें भयकर शत्रु के रूप मे बदला हुआ पाएँगे। डाकोटा लोगो ने उनकी इस घबराहट को अच्छी तरह भाँप लिया और तुरन्त उसका लाभ उठाया। उन्होंने बहुत बढा-चढाकर अपनी माँगे रखनी शुरू कर दी। उनकी यह आदत ही बन चुकी है कि किले के पास आने वाले हर दल के पास जाकर वह दावत माँगते है। स्मोक का सारा गाँव इसी इरादे से बहुत दिनो की लम्बी यात्रा करके इस किले के पास तक आया था। कॉफी के एक प्याले और दो-तीन बिस्कुटो को पाकर ही वे खुश हो जाते थे। उनके दावत माँगने पर ये प्रवासी मना नही कर सकते थे।

सूर्य छिपने के समय आदिवासियो का गाँव उजाड हो चुका था। हम बूढे आदमियो, सैनिको और बच्चो से मिले। वे खूब सज-धजकर प्रवासियो के डेरे की ओर जा रहे थे। उनके चेहरे पर उम्मीद झलक रही थी। वहाँ जाकर वे आधा घेरा बनाकर बैठ गए। स्मोक सबसे बीच मे बैठा। उसके दोनो ओर सैनिक बैठे। उनसे परे जवानो और लडको की बारी आई। और, सबसे अन्तिम हिस्से पर औरतो और बच्चो को बिठाया गया। जल्दी-से-जल्दी बिस्कुट और कॉफी निपटा दिए गए। प्रवासी फटी आंखो से इनको देखते रह गए। लारामी किले पर जाने वाले हर दल के साथ यही कुछ

दोहराया जाता था। आदिवासियो की हरक्तें और उम्मीदें रोज़ ही बढती जा रही थी। एक शाम को केवल शरारत के कारण ही उन्होने जिन प्यालो मे चाय पी, उन्हें तोड डाला। इस बात से प्रवासी इतने निराश हुए कि उनमे से कुछ ने अपनी बन्दूकें उठा ली और उस भीड को खत्म करने पर तुल गए। जब हम इस इलाके से लौटे तब डाकोटा लोगो की यह आदत और हरकतें कुछ अधिक ही बढ गई थी। वे लोग प्रवासियो को नष्ट कर देने की धमकियाँ देने लगे थे और एक दल पर तो उन्होंने गोली भी चला दी थी। इस प्रदेश मे सेना और सैनिक कानून को स्थिर करने की बहुत ज़रूरत है। अगर लारामी किले या उसके आसपास जल्दी ही फौजें तैनात न की गई तो यात्री सदा ही इस प्रकार के भयकर खतरो के शिकार होते रहेंगे।

डाकोटा या सियू जाति के ओजिल्लाला और ब्रूल तथा और कई वर्ग एकदम असभ्य है। सभ्यता का उनपर कोई भी असर नही हुआ। उनमे से एक भी आदमी न तो यूरोप की कोई भाषा बोल सकता है और न ही कभी किसी अमरीकी बस्ती मे गया है। जब प्रवासियो ने इस राह से ओरेगन की तरफ जाना शुरू किया, तब से एक-दो साल पहले तक इन आदिवासियो ने कही भी किसी भी गोरे को काम करते न देखा था। उनकी दृष्टि मे केवल वे ही गोरे आए थे जो अमरीकी फर कम्पनी के इन व्यापार केन्द्रों मे काम करते थे। आदिवासी लोग उन्हें बुद्धिमान् समझते थे, पर अपने से कम! वे लोग भी आदिवासियो की भाँति ही चमडे के घरो मे और भैंसो के मास पर जीवित रहते थे। परन्तु, जब अपने बैलो और गाडियो के साथ इन प्रवासियो ने उनके इलाके पर हमला-सा बोल दिया तब उनके अचरज का ठिकाना न रहा। वे सोच भी नही सकते थे कि इस धरती पर इतने अधिक गोरे आदमी रहते होगे। अब धीरे-धीरे उनके अचरज का स्थान अपमान की भावना लेती जा रही है। यदि सावधानी न बरती गई तो परिणाम बहुत अधिक अफसोसनाक होगा।

हमे आदिवासियो के घर को अन्दर से देखने की इच्छा थी। मैं और शॉ दोनो ही अक्सर उनके गाँव मे जाया करते थे। सच तो यह है कि हम प्राय हर शाम उनके यहाँ जाते थे। शॉ ने स्वय को डाक्टर के रूप मे परिचित कराया था। इसलिए हमे वह एक बहाना मिला हुआ था। अपनी रोज़ की

इस सैर का परिचय देने के लिए मै एक दिन की घटना को ही बयान करना काफी समझता हूँ। अभी सूरज छिपा ही था। घोडे घुडसाल में बन्द किए जा रहे थे। इसी समय 'मैदानी मुर्गा' नाम का युवक कुछ लडकियो को लिए हुए दरवाज़े पर आया। वह अच्छा खासा छैल-छबीला था। उसने उन लड़कियो के साथ एक चक्कर काटते हुए रास रचाना शुरू किया। जब उसने एक लम्बी और लहरदार तान शुरू की तो उन लडकियो ने भी एक दु खभरी तान उसमे मिलानी शुरू की। एक मकान के दरवाज़े के बाहर ही लडके, लडकियाँ और जवान सुस्ती मे बैठे हँस खेल रहे थे। उन पर उदासी-भरी निगाह डालता हुआ एक सजा-धजा सैनिक खडा था। उसका मुँह काले रग से पुता हुआ था। यह इस बात की निशानी थी कि उसने किसी पोनी जाति के आदमी का सिर काट लिया है। इनको पार कर हम आगे बढे। यहाँ हमे अपने और लाल होते पश्चिमी आसमान के बीच मे बहुत बडे और ऊँचे डेरे दीखने लगे। हम तुरन्त ही स्मोक के घर चले गए। यह किसी भी अन्य मकान से अच्छा न था। बल्कि, यह कुछ खराब ही था। प्रजातन्त्र मानने वाली इस जाति मे सरदार को कभी ऊँचा स्थान नही मिलता। एक भैंसे की खाल पर स्मोक चौकडी मारे बैठा था। उसने हमे देखते ही बहुत प्यार से प्रणाम किया। निश्चय ही ऐसा शॉ के डाक्टर होने के कारण किया गया था। इस घर मे चारो ओर बहुत सी औरतें और बच्चे बैठे थे। शॉ के मरीजो की शिकायत प्रायः आँखो की सूजन के सम्बन्ध मे होती थी, जो कि धूप लगने से हो जाती थी। इस प्रकार की बीमारी का इलाज वह सफलता से कर लेता था। वह अपने साथ होमियोपैथिक दवाइयो का एक बक्सा भी लाया था। ओजिल्लाला लोगो मे इलाज का यह नुकसान न पहुँचाने वाला तरीका लेकर सबसे पहले पहुँचने वाला व्यक्ति शायद वह ही था। हमारे लिए सामने ही एक खाल बिछा दी गई। अभी हम उस पर बैठे ही थे कि एक मरीज़ हाजिर हो गया। यह सरदार की ही लड़की थी। उसे गाँव की सबसे अच्छी दीखने वाली लडकी कहा जा सकता था। डाक्टर के साथ बहुत खुला व्यवहार होने के कारण उसने अपने को डाक्टर के हाथो मे पूरी तरह छोड दिया और उसके हर इलाज को सहने लगी। शॉ अपना काम करता रहा और वह उसे देखकर सारे समय हँसती रही। शायद इन आदिवासी

औरतो को मुस्कराना आता ही नही। इस रोगी को विदा करने के बाद एक और नमूना सामने आया। यह बुढ़िया बहुत ही कमज़ोर और बुरी दीखने वाली थी। यह सबसे अँधेरे कोने में बैठी दर्द के मारे आगे-पीछे झुक रही थी और दोनो आँखो पर हथेलियाँ रखकर उन्हें रोशनी से बचा रही थी। स्मोक के कहते ही वह बड़े अनमने भाव से आगे आगई और उसने अपनी आँखें दिखाईं। सूजन के कारण उसकी आँखें छिप ही गई थीं। डाक्टर ने ज्योंही अपना हाथ उस पर मजबूती से रखा तो वह दुःख से रोने लगी। वह दर्द के मारे परेशान थी। इसीलिए वह अपना तमाम धीरज खो बैठी। पर डाक्टर अपना असर बैठाना चाहता था। वह बहुत देर बाद अपनी मनपसन्द का इलाज करने के बाद सफल हो पाया।

अपना काम पूरा करने के बाद उसने कहा, "यह बड़ी अजीब बात है कि मैं अपने साथ स्पेनी मक्खियाँ लाना भूल गया हूँ। हमे इनकी इस सूजन का इलाज करने के लिए कोई दूसरी उत्तेजना देने वाली चीज़ रखनी ही चाहिए।"

ऐसी किसी चीज के अभाव मे उसने आग मे से एक जलता हुआ लाल अगारा लिया और उस बुढिया की कनपटी पर रख दिया। इससे एक ज़बरदस्त छाला पड गया। वह बहुत तेज़ी से चीखी और सब लोग हँस पड़े।

अभी यह सब कुछ हो ही रहा था कि सरदार की सबसे बड़ी पत्नी कमरे मे आई। उसने हाथ मे लकड़ी का हथौड़ा पकड़ा हुआ था। इसका अगला हिस्सा पत्थर का बना हुआ था। और भी ऐसे बहुत से हथियार न्यू इगलैंड मे मिलने वाले पत्थरो से बने हुए हथियारो जैसे लगते थे। इसके हत्थे पर खाल मढी हुई थी। मैने एक कोने मे कुछ देर पहले छोटे-छोटे काले पिल्लो को भैंस की खाल मे छिपे हुए पाया था। इस आने वाली बुढिया ने उन्हें एकदम ही तग कर दिया। उसने उनमे से एक के पिछले पाँव पकडे और खीचकर दरवाज़े के बाहर ले गई। वहाँ उसने उसके सिर पर यह हथौडा मार कर उसे मार डाला। मुझे यह पता था कि यह सब किस लिए हो रहा है। इसलिए मैंने पीछे के छेद से अगली बातो को देखना चाहा। वह औरत उस कुत्ते को टाँगो से पकडकर एक जलती हुई आग पर इधर से उधर घुमा रही थी। कुछ देर बाद उसके सारे बाल झड गये। इसके बाद उसने अपना-

चाकू नगा किया और उसके छोटे-छोटे टुकडे करके एक पतीली मे डालने लगी। कुछ ही क्षण में हमारे सामने एक बडी सी थाली मे परोसकर यह स्वादु मास लाया गया। कोई भी डाकोटा जाति का व्यक्ति अपने अतिथि का सबसे बड़ा सत्कार कुत्ते का मास परोसकर ही करता है। यह दावत सबसे बडी दावत गिनी जाती है। मुझे पता था कि ऐसी दावत को मना करना उनका अपमान समझा जाएगा। इसलिए हमने उस छोटे से कुत्ते के मास को शायद उसके अनजान बाप के देखते ही देखते खाना शुरु कर दिया। इस बीच स्मोक अपने बडे हुक्के को तैयार करता रहा। हमारे भोजन समाप्त करते ही उसने इसे जलवा दिया और अब यह हुक्का हरएक के हाथ में से होकर गुज़रने लगा। यह सब हो जाने के बाद हमने उनसे छुट्टी ली और बिना किसी दिखावे के वहाँ से विदा होकर किले के दरवाजे पर आ पहुँचे। वहाँ हमे अपना परिचय देकर ही अन्दर आना मिला।

—.o:—

१० : युद्ध की तैयारियाँ

सन् १८४६ की गर्मियाँ डाकोटा लोगो के लिए युद्ध की तैयारियो की बहार बनकर आई। पश्चिम की तरफ के सभी डाकोटा जाति के लोग इन तैयारियो मे लगे हुए थे। कारण यह है कि सन् १८४५ मे उन्हें अपने दुश्मनो के हाथो कई बार मार खानी पडी। युद्ध करने वाले लोगो के बहुत से दल बाहर हमले के लिये भेजे गये थे। उनमे से बहुत से समाप्त हो गए थे और बहुत से हारकर टूटे-फूटे दिल से वापिस लौटे। इस प्रकार सारी जाति ही दु ख मे डूबी हुई थी। शेष मे से दस योद्धा 'नाग' जाति के इलाके की ओर गए थे, जिनका नेतृत्व 'बवडर' नाम के नायक के एक बेटे ने किया था। लारामी के मैदानो को पार करते हुए उन्हें अपने से अधिक दुश्मनो का सामना करना पडा। वे घेर लिए गए और उनका हर आदमी मार दिया गया। यह हरकत करने के बाद नाग जाति के लोग अधिक चौकन्ने हो गए और डाकोटा लोगो के क्रोध से डरने लगे। उन्होने कत्ल किए हुए उस आदमी का सिर वापिस भेजकर सधि की इच्छा प्रकट की। इसके लिए साथ मे उन्होने इसके साथ ही उसके सम्बन्धियो और जाति-भाइयो के लिए कुछ तम्बाकू भेजा। उन्होने बूढे व्यापारी वास्किस को मझोलिये के रूप मे चुना। हमारे कमरे मे जो खोपडी टगी थी, उसका यही भेद था।

पर 'बवडर' इस बात पर राज़ी न हुआ। हालाँकि उसका स्वभाव उसके नाम से मेल नही खाता था, तो भी वह आदिवासी था और अपनी आत्मा की गहराई से नाग जाति के लोगो से घृणा करता था। खोपडी के वापिस आने से बहुत पहले ही उसने बदला लेने की तैयारियाँ पूरी कर ली थी। उसने तम्बाकू और दूसरी भेंटो के साथ अपने दूत डाकोटा जाति के सभी वर्गों के पास भेज दिए थे। ये लोग तीन सौ मील के अन्दर रहने वाले सभी लोगो के पास गए और उन्हें नाग जाति के विरुद्ध इकट्ठा होने के लिए एक विशेष स्थान और समय की सूचना देकर लौटे। सभी ने यह योजना एकदम स्वीकार कर ली। इस समय अनेको गाँव, लगभग पाँच-छह हज़ार की

आबादी के साथ, धीरे-धीरे मैदानो में से होकर बढ रहे थे और लाबोते के डेरे की ओर मिलने के निश्चित स्थान पर पहुँचने का यत्न कर रहे थे। यह स्थान प्लाट् नदी के किनारे पर था। वहाँ पर उन्होने युद्ध की सारी रस्मे, विशेष समारोह के साथ, पूरी करनी थी। तब योजना के अनुसार एक हजार योद्धा शत्रु के इलाके की ओर भेजे जाने थे। इस सब तयारी का परिणाम क्या हुआ ? यह बात आगे बताऊँगा।

मै इस सब बात को सुनकर बहुत खुश हुआ। मै इस इलाके मे आदिवासियो के चरित्र को समझने के लिए ही आया था। अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये यह ज़रूरी था कि मै उनके बीच मे उनके जैसा ही बनकर रहूँ। मैने किसी गाँव मे रहने की उनसे प्रार्थना की और स्वय को किसी एक घर का सदस्य बनाने की पेशकश की। यहाँ से यह सब चर्चा प्राय. इस सबन्ध मे ही रहेगी कि वे लोग कैसे बढे और उनके रास्ते मे कैसे-कैसे वे रुकावटे आईं जिनकी आशा भी न थी ?

हमने निश्चय किया कि लाबोते के डेरे के इस सम्मिलन को देखने से किसी प्रकार भी चूकना न चाहिए। हमारे सोचे अनुसार देस्लारियर को किले मे हमारे घोडो और साज़ सामान की रखवाली करनी थी। हमे अपने साथ सबसे रद्दी जानवर और अपने हथियार ले जाने थे। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि एक-दूसरे को न जानने वाले और दूर-दूर से आकर मिलने वाले इन लोगो मे ईर्ष्या और लडाइयाँ पैदा हो जाएँगी। ये लोग पहले ही काफी असभ्य थे। इस लिए हमें सावधान रहना ज़रूरी था कि कही हम भी कोई ऐसी भावना उनमे भडकाने के कारण न बन जाएँ। हमारी योजना तो ऐसी ही थी, पर हमारा दुर्भाग्य यह था कि हम इस रूप मे लाबोते के शिविर को न देख पाए। एक सुबह एक जवान आदिवासी हमारे किले मे आया और हमारे लिए दुर्भाग्य की बात साथ ले आया। यह नया आने वाला आदमी बहुत ही साफ-सुथरा आदिवासी था। उसका चेहरा पराग से पुता हुआ था। उसके सिर पर मैदानी मुर्गे की पूँछ बधी हुई थी। यह मुर्गा राकी पर्वतमाला के पूर्व की ओर देखने में नही मिलता। उसके कानो में शख के बने झुमके लटक रहे थे और उसने एक चमकीला लाल कम्बल अपने शरीर पर लपेटा हुआ था। उसके हाथ मे अमरीकी सैनिको की एक तलवार थी। पर यह

दिखावे के लिए ही थी, क्योंकि इन मैदानो की लडाइयो मे छुरी, बन्दूक और धनुष-वाण का ही प्रयोग होता है। बाहर जाते हुए कोई भी बिना हथियार के नही जाता। इस आदिवासी की पीठ पर भी धनुष-वाण लटके हुए थे। इस वेश मे पीले घोडे पर चढा हुआ, अत्यधिक शान अनुभव करने वाला, यह युवक 'घोडा' नाम से प्रसिद्ध था। यह दरवाज़े तक आया। न वह दाएँ मुडा और न वाएँ। वह सीधा ही उस दिशा मे बढ गया जहाँ औरतें अपने दोगले बच्चो को लेकर बैठी थी। उसने तिरछी निगाहो से उन्हें देखा। यह आदमी जो खबर लाया था वह आगे आनेवाली घटनाओ को बुरा बना देने वाली साबित हुई। वह हेनरी की पत्नी से बहुत बचपन से गहरे सम्बधो मे बँधा हुआ था। आज वह बहुत सख्त बीमार थी। वह और उसके बच्चे 'बवडर' के ही गाँव मे थे। वह जगह यहाँ से कुछ दिन के सफर की दूरी पर थी। हेनरी की इच्छा थी कि वह मरने से पहले पत्नी के दर्शन कर सके और अगर हो सके तो अपने बच्चो की देखभाल और सहायता का प्रबन्ध कर सके। वह बच्चो को बहुत प्यार करता था। उसे अपनी इस इच्छा को पूरा करने से रोकना बहुत बुरा होता। इसलिए हमने स्मोक के गाव मे अपने को शामिल करने का इरादा छोड दिया और 'बवडर' के गाँवो मे मिलने और उसके साथ शिविर की निश्चित जगह तक बढने का निश्चय किया। मैं बहुत हफ्तो से हल्का-हल्का सा बीमार चला आ रहा था। किले मे पहुचने के तीसरे ही दिन, जागते समय, मुझे बहुत जबरदस्त पीडा अनुभव हुई और उतना ही नुकसान अनुभव हुआ, जितना किसी सेना को बडी लडाई हारने पर होता है। डेढ दिन मे ही मै बहुत कमजोर हो गया। अब मै बिना तकलीफ के घूम-फिर भी नही सकता था। मेरे पास कोई डाक्टर भी नही था। ना ही मुझे बीमारी के लायक खुराक चुननी मिल सकती थी। इसलिए मैंने अपने को भगवान् के सहारे छोड दिया और कष्ट की बिना परवाह किए अपनी बची-खुची ताकत को प्रयोग करने का निश्चय किया। इस प्रकार हम 'बवडर' के गाँवो की ओर बीस जून को चल पडे। हालाँकि मेरे पास ऊँचे किनारो वाली पहाडी काठी थी, तो भी मै घोडे की पीठ पर बडी कठिनता से जमकर रह सका। किला छोडने से पहले हमने लम्बे वालो वाले एक कनाडियन—रेमन्ड—को नियुक्त कर लिया। उसका चेहरा उल्लू जैसा था और देस्लारियर के चेहरे से वह मुकाबला कर

रहा था। हमने केवल इसे ही नये साथी के रूप में नही पाया, बल्कि रेनल नाम का एक दोगला व्यापारी भी हमारे साथ हो लिया। उसकी पत्नी मार्गोत और उसके दो भतीजे भी हमारे साथ थे। इनके साथा ही 'घोडा' नामक आदिवासी सुन्दर युवक और भाई—'तूफान'—भी हमारे साथ थे। इस सब साथ को लेकर हम मैदान मे पहुँचे और घिसी पिटी पगडडी को छोडकर उजाड पहाडियो को पार करने लगे। इन पहाडियो ने लारामी धारा की घाटी को चारो ओर से घेरा हुआ था। आदिवासी और गोरे, कुल मिलाकर, हम आठ आदमी और एक औरत थे।

व्यापारी रेनल अत्यन्त पतला, दुवला और स्वार्थ का पुतला था। उसने अपने हाथ मे घोडा नाम के आदिवासी की सैनिको वाली तलवार पकडी हुई थी और वह व्यर्थ की सैनिक चहल-कदमी करके आनन्द ले रहा था। वास्तव में आधे से अधिक जीवन आदिवासियो मे विताने के कारण उसने, आदतें ही नही, भाव भी उनके ही अपना लिए थे। उसकी पत्नी मार्गोत ढाई मन से अधिक भारी शरीर वाली एक मादा जानवर कही जा सकती थी। वह भी घोडो के पीछे बँधी टोकरी मे बैठी हुई चल रही थी। उसी टोकरी मे, उसके भारी-भरकम वोझ के अलावा और भी वहुत-सा सामान पडा था। खोजी रस्सी को पकडे हुए वह अपने पीछे-पीछे एक लादू घोडे को चला रही थी जिस पर उनके घर ढकने वाली खालें लदी हुई थी। देस्लारियर हमारी गाडी के साथ-साथ-चल रहा था और रेमड पीछे-पीछे खाली घोडो को खदेडता हुआ चला आ रहा था। दोनो आदिवासी अशान्त थे। अपने हाथो मे धनुष और तीर-तरकशो को सम्भाले वे पहाडियो पर जल्दी-जल्दी चढ़ रहे थे। वे किसी भेडिये या हिरण को घनी झाडियो मे से चौंका देते थे। मैं और शॉ इस असभ्य जलूस के आगे-आगे चल रहे थे। कपड़े न रहने पर हमने भी पशु-फँसाने वालो जैसी हिरण की खाल की वेशभूषा पहन ली थी। हेनरी सवसे आगे-आगे चल रहा था। एक के वाद दूसरी पहाडियो, खड्डो आदि को पार करते हुए हम एक ऐसे प्रदेश में से गुजरे जो बिल्कुल उजाड़, फटा-फटा और झुलसा हुआ था तथा जिसमें हमारे परिचित पौधो मे से एक भी पौधा नहीं उगा था। हाँ, यहाँ अनेकों औषधियाँ अवश्य लगी थीं। खासकर एब्सिन्थ नाम का पौधा हर ढलान पर लगा हुआ था। दूसरी ओर बीकर की

फलियाँ हर घाटी मे लटक रही थी। काफी देर बाद हम एक ऊँची पहाडी पर चढे। हमारे घोडे आग जलाने वाले पत्थरो तथा लाल आदि अन्य अनेक पत्थरो पर से होते हुए शिखर तक पहुँचे। हमने लारामी धारा के जगली तटो की ओर देखा। यह धारा हमसे बहुत दूर एक बल-खाते साँप की तरह बहुत पतली और तग-सी होकर इधर-उधर बिखरे हुए फूली लकडी वाले और नीबू की किस्म के पेडो मे से होकर बह रही थी। पर्वतो की चूने जैसी सफेद चोटियाँ जगलो और चरागाहो की हरी-भरी घाटियो से घिरी हुई लगती थी। इन्ही के बीच से होकर हम बढे और रात का डेरा नदी किनारे डाला। सुबह हमने नदी के साथ-साथ एक विस्तृत घास के मैदान को पार किया। सामने एक बगीचा था और उसकी छाया मे ही एक पुराने व्यापारी-केन्द्र के मकानो के निशान बचे हुए थे। यह अमराई जगली गुलाबो से भरी हुई थी। उनकी सुन्दर सुगन्ध हमे अपने घरो की याद दिला रही थी। हम ज्योही पेडो से बाहर निकले। एक चार फुट लम्बा और आदमी की भुजा जितना मोटा साप सामने चट्टान पर कु डली मारे बैठा दिखाई दिया। वह हमे देखकर फुफकार रहा था। पास के कुछ पेडो मे से एक खरगोश, जो हमारे इलाके के खरगोश से दुगुने आकार का रहा होगा, उछलकर सामने आ कूदा। 'कल्यू' नाम के पक्षी हमारे सिरो के ऊपर ही शोर करते हुए मँडरा रहे थे और मांदो के आगे बैठे अनेको छोटे-छोटे मैदानी कुत्ते हमारी ओर देखकर भौंक रहे थे। अचानक ही एक हिरण सामने की झाडियो मे से उछला। उसने हमारी ओर उत्सुकता से देखा। और, तब अपनी सफेद पूँछ खडी करके इस तरह से उसने जम्हाई ली, जैसे वह कोई शिकारी कुत्ता हो। हमारे दोनो आदिवासी युवक साथियो ने एक सफेद भेडिया एक खड्ड मे देख लिया। यह बछडे जितना बडा रहा होगा। वे चीखते हुए उसके पीछे भाग पडे। किन्तु वह भेडिया धारा मे कूद कर पार चला गया। तभी गोली चलने की आवाज़ आई। पर, गोली उसके सिर के ऊपर से ही निकल गई थी। वह सीधी चढाई पर जैसे-तैसे चढ ही गया। मजाक करने के लिए जैसे वह कुछ पत्थर और मिट्टी भी नदी मे सरका कर गिराता गया। कुछ थोडा आगे चलने पर हमने धारा के दूसरे किनारे, इस इलाके की दृष्टि से, एक अजीब दृश्य देखा सामने के वृक्षो के समूह मे से लगभग दो सौ बारहसिगो का जत्था चरागाह मे निकल आया।

चलते हुए उनके सीग एक दूसरे से टकरा रहे थे। हमें देखते ही वे भाग खड़े हुए और सामने के खुले स्थानो मे से होते हुए पेडो के समूहो में और बिखरी हुई अमराइयो मे जा छिपे। हमारे बाईं ओर एक उजाड और ऊसर मैदान क्षितिज तक फैला हुआ था। हमारे दाईं ओर एक गहरी खाई थी, जिसके तल में लारामी धारा बह रही थी। आखिर हम इस सीधी ढलान के एक किनारे पर पहुँच गए। हमारे सामने एक सकरी घाटी बहुत लम्बी घास और विरले वृक्षो के साथ मील भर तक फैली हुई थी। धारा इसी के साथ-साथ बह रही थी। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हम रुके और हमने वही डेरा डाल लिया। वहाँ एक बड़ा-सा पेड अपनी शाखाओ को फैलाए हुए खडा था। हमने उसी के नीचे अपना तम्बू गाडा। हमारे सामने आधा-सा घेरा बनाती हुई लारामी धारा, सामने की सफेद ऊँची चोटियो के नीचे से होती हुई, बहती जा रही थी। हमारे दाईं ओर काफी घने छोटे-छोटे वृक्षो के समूह थे। सामने की चोटियाँ भी झाडियो से आधी ढकी हुई थी। हमारे पीछे की ओर भी, हरे मैदान मे, कही कही फूली लकडी के बडे वृक्ष बिखरे हुए थे। इनमे से मील भर दूर से आने वाला कोई भी दुश्मन या दोस्त साफ दिखाई दे सकता था। हमने यहाँ कुछ दिन रहने और 'बवंडर' के आने की प्रतीक्षा करने का निश्चय किया; क्योंकि यदि वह लाबोने शिविर की ओर गया ही तो वह इधर से होकर ही जाएगा। उसे खोजने के लिए आगे जाना अधिक उचित न था। यह सारा प्रदेश कटा फटा था। साथ ही उसकी स्थिति और हरकतो का भी कुछ निश्चय न था। इसके अलावा हमारे घोडे बहुत थक चुके थे और मेरी अपनी हालत यात्रा करने के योग्य न थी। यहाँ हमे घास, पानी और मछली काफी मात्रा मे मिल सकती थी। छोटा-मोटा शिकार, बारहसिंगे और हिरण आदि के रूप मे, मिल सकता था, हालाँकि भैंसे यहाँ नही थे। हमारे संतोष मे एक ही कमी थी। हमारे पीछे की ओर झाडियो और सूखी घास, का एक लम्बा चौडा मैदान था। इसमें घुसना बहुत खतरनाक था। इसमे फनियर सांपो के अनेकों बिल मौजूद थे। हेनरी ने 'घोडे' को आगे भेज दिया, ताकि वह उसकी पत्नी तक संदेश ले जा सके और वह अपने सम्बन्धियो समेत, सारे गाँव को पीछे छोड़कर, जल्दी से जल्दी हमारे डेरे तक पहुँच सके।

हमारा दैनिक कार्यक्रम इतना नियमित चलने लगा, जैसे हमारी कोई

अच्छी जमी हुई गृहस्थी हो। पुराना वृक्ष बीचो-बीच मे था। हमारी राइफलें उसी के तने के सहारे टिकी रहती थी और हमारी काठियाँ उसके चारो ओर जमीन पर पडी रहती थी। इसकी ऊबड-खाबड जडें कुछ इस प्रकार मुडी हुई थी कि हम उन्हें आराम कुर्सियो के रूप मे प्रयोग कर सकते थे और इस की छाया मे आराम से बैठकर पढ सकते और तम्बाकू पी सकते थे। परन्तु, इन सबसे बढकर खाने का समय हमारे लिए सबसे अधिक चाव-भरा होता था। भोजन के लिए सामान भी बहुतायत से मिल जाता था। कोई न कोई बारहसिंगा या हिरण अवश्य ही किसी झाडी से कूदकर आ निकलता और उसकी पीठ और कमर इस तने के साथ टिक जाती। मुझे वह डेरा अब भी एक सैनिक डेरे की भाँति याद आता है वह पुराना वृक्ष, सफेद तम्बू, उसकी छाया मे सोता हुआ शॉ और नदी की धारा के किनारे रेनल का छोटा-सा घर। रेनल का घर एक चूल्हे जैसा दिखाई देता था। वह फटी-पुरानी भैंसो की खालो से ढकी हुई बल्लियो से बना था। उसका एक पासा खुला हुआ था। दरवाजे के साथ बारूद का डिब्बा और गोलियो का थैला लटक रहे थे। साथ ही उसका लम्बा लाल हुक्का और तरकस तथा धनुष-बाण भी लटक रहे थे। रेनल स्वय, रग को छोडकर, बाकी सब बातो मे आदिवासियो जैसा ही था। वह भी भैंसे का शिकार पुराने हथियारो के साथ करना चाहता था। इस सब के बीच अँधेरे मे, अपने भारी-भरकम बोझे को घर के साज-समान, रोएँदार खालो, कम्बलो और रगे हुए चमडे आदि के बीच छिपाए बैठी, श्रीमती मार्गोत पहचानी जा सकती थी। यहाँ वह सुबह से शाम तक बैठी रहती थी। मोटापे और सुस्ती से वह भरपूर थी। उसका पति या तो चिलम पीता रहता, हमसे छोटी-मोटी भेंटें मांगता रहता, या अपने झूठे कारनामो की कहानियाँ सुनाता रहता। वह कभी-कभी इन मैदानी इलाको के अनुकूल कोई स्वादभरी चीज पकाने मे व्यस्त भी रहता। रेनल अपने काम मे मँजा हुआ था। देस्लारियर और वह मिलकर रसोई का काम निपटाते थे। उधर रेमड भैंसे की सफेद खाल बिछाकर भोजन का सामान परोसता। चाय और भोजन का सामान इसी खाल पर फैला दिया जाता और तब वह हमे हमारे तम्बू मे आकर बहुत नम्रता से तैयारी की सूचना देता। क्षण भर तक हम उल्लू जैसी उसकी गोल-गोल आँखो को देखते रहते। और कुछ वह हमें कहने

आता उसे भूल जाता। पर, तब वह बहुत हिम्मत से याद करके हमे बताता कि खाना तैयार हो चुका है। सूरज छिपने के समय घोडे वापिस बुला लिए जाते। इस घडी यह जगली और एकान्त वातावरण एक नया ही रूप धारण कर लेता। घोडे सारा दिन-भर पास की चरागाह में चरते रहते, पर शाम के समय उन्हें डेरे के पास ही बाँध दिया जाता। मैदान अँधेरे में ढकता जाता और हम आग के चारो ओर बैठकर बातें करते रहते। तब हमें नीद आने लगती। अपनी काठियाँ जमीन पर ही फैला कर अपने कम्बलो मे लिपटे हुए उस आग के चारो ओर सो जाते। हमने कोई पहरेदार नही खडा किया, क्योकि अब हम काफी सुस्त हो चुके थे। इस पर भी हेनरी भरी हुई रायफल अपनी बगल मे रखकर सोता था। बिना बात के भी सावधानी बरतना उसके वीर स्वभाव का अंग बन चुका था। हमें जब-तब इस बात का सकेत मिलता रहता था कि वहाँ हमारी दशा बहुत सुरक्षित नही थी। काक जाति की बहुत सी लडाकू टुकडियाँ हमारे आस-पास के इलाके में ही थी और उनमे से एक यहाँ से कुछ ही दिन पहले गुजरी थी। उन्होने एक पेड की छाल उखाडकर उस पर कुछ चित्रो के द्वारा एक बात लिखी थी। इसका सार यह था कि उन्होने अपने शत्रु डाकोटा लोगो के इलाके पर हमला किया है और अब वे इनसे मुकाबले की आशा रखते है। एक सुबह हमने सारे इलाके को धुन्ध से घिरा हुआ पाया। शॉ और हेनरी घोडो पर चढकर कुछ दूर तक गए और एक विशेष खबर लेकर लौटे। उन्होने हमारे डेरे से कुछ ही दूरी पर तीस घुडसवारो की एक ताजा पैड के निशान देखे। वे लोग न तो गोरे हो सकते थे और ना ही डाकोटा, क्योकि हमे किसी भी ऐसे दल के पास होने की खबर न थी। निश्चय ही ये लोग काक जाति के थे। इस धुन्ध के कारण ही हम एक कठिन युद्ध से बच सके। अगर वे हमें देख लेते तो वे हम पर और हमारे आदिवासी साथियो पर निश्चय ही हमला कर देते। इस बारे में हमें जो सदेह था भी वह एक-दो दिन बाद ही मिट गया। क्योकि तब दो तीन डाकोटा जाति के लोग हम तक आए। उन्होने उसी सुबह एक घाटी में छिपकर काक जाति के लोगों को जाते हुए देखा और गिना था। उन्होने बताया कि जब तक वे चुगवाटर नाम की जगह तक न चले गए, तब तक इन्होंने उन्हें अपनी निगाह में रखकर उनका पीछा किया। वहाँ काक लोगों ने डाकोटा जाति के पाँच

मृत शरीरो को ज़मीन से खोदकर निकाला और उन्हें शत्रुओ की रीति के अनुसार पेड से बाँधकर लटका दिया। तब उन्हें अपनी बन्दूको से दाग कर कण-कण मे उड दिया।

हमारा डेरा एकदम सुरक्षित भले ही नही था, तो भी यहाँ काफी आराम था। कम-से-कम शॉ के लिए तो यह बात ठीक थी। मै तो बीमारी और अपने इरादो मे देरी होने के कारण बहुत दु खी था। ज्यो ही अपनी बीमारी से उबरने के कुछ लक्षण मुझे दिखाई दिए, मै मैदान मे हथियारो से सजकर निकलने लगा। कभी शॉ के साथ धारा में नहाने जाता अथवा पडोस के मैदानी कुत्तो की बस्ती मे जाकर एक झूठ-मूठ का युद्ध खडा कर देता। रात के समय आग के चारो ओर बैठ कर हम आदिवासियो की अस्थिरता और अनिश्चय के लिए उन्हें कोसने लगते और 'बवडर' और उसके साथियो को गालिया देने लगते। अन्त मे हमारे लिए यह बात असह्य हो गई।

मैने कहा, "कल सुबह मै किले की ओर जाऊँगा और देखूँगा कि क्या नई खबर है।"

उसी शाम काफी देर बाद, जब आग बुझने वाली थी और सभी लोग सो चुके थे, बहुत दूर से अँधेरे मे से ही चीखने की एक आवाज़ सुनाई दी। हेनरी आवाज़ को पहचान कर उछल पडा और उसने उसका उत्तर दिया। हमारा मित्र 'घोडा' हमारे बीच आ गया। वह अभी-अभी गाँव की ओर से अपना काम पूरा करके लौटा था। उसने आकर बहुत ठडे दिल से अपनी घोडी बाँध दी और बिना एक भी शब्द बोले खाना शुरू कर दिया। पर, उसकी यह बेफिक्री हमे बहुत खलने लगी। गाँव के सम्बन्ध मे पूछने पर उसने बताया कि वह यहा से दक्षिण की ओर पचास मील दूर था और वह इतना धीमे धीमे बढ रहा था कि यहाँ पहुँचते उसे एक सप्ताह से कम नही लगेगा। तब हेनरी की पत्नी के विषय मे पूछने पर उसने बताया कि वह जितना भी जल्दी सभव है, उतनी तेज़ चाल से महतो तातोका और उसके बाकी भाइयो के साथ आ रही है। पर, शायद वह हम तक पहुँच नही सकेगी, क्योकि वह मरने-ही वाली है और हर घडी हेनरी के बारे मे पूछती रहती है। हेनरी का सम्य चेहरा भी इस खबर को सुनकर उदास हो गया और लटक गया। उसने हमसे पूछा कि अगर हम खुशी से उसे जाने दें, तो वह सुबह ही उसकी खोज मे चल

पड़ेगा । इस पर शॉ ने उसके साथ चलने को कहा ।

हमने सुबह होते ही अपने घोडो की काठियाँ कसीं । रेनल ने अपने को अकेला छोड देने का विरोध किया । हम लोगो के जाने के बाद उसके पास दो कनाडा निवासी और दो आदिवासी ही रह जाते, खासकर जबकि शत्रु इतना पास था । उसकी शिकायतो का ख्याल न करके हमने उसे छोडा और चुग वाटर के मुहाने तक आकर अलग-अलग हो गए । शॉ और हेनरी दाईं ओर मुड गए, जबकि मै किले की तरफ मुड चला । अपने साथी और उसकी दुर्भाग्य से मारी पत्नी के बारे मे कुछ कहने से पहले मै लारामी किले की कुछ बात कहना चाहूँगा । यह हमसे अठारह मील से अधिक दूर न था और मै यहाँ तीन घटे मे ही पहुँच गया । एक सिकुड़ी-सी आकृति वाला कनाडावासी, सफेद पोशाक मे ऊपर से नीचे तक ढका हुआ, बडे दरवाजे के बीचो-बीच खडा था । उसने अपना ठिगना-सा जगली घोडा लगाम से पकडा हुआ था । इसे कभी उसने जंगल से ही पकडा था । उसके अपने अंग बहुत ही गठे हुए थे । उसकी आँखें साँप जैसी चमक रही थी । अपने सिर के चारो ओर उसने वह सफेद कपडा इस तरह लपेटा हुआ था, जैसे वह कपूचिन सम्प्रदाय का कोई साधु हो । उसका मुख पुराने चमडे के टुकडे जैसा लगता था और उसके होठ सारे मुख पर फैले हुए लगते थे । उसने अपना लम्बा और झुर्रीदार हाथ फैलाकर स्वागत किया । ऐसा स्वागत किसी साधारण आदिवासी के स्वागत से अधिक स्नेह वाला था । वह मेरा मित्र था । हमने कभी आपस में घोड़े बदले थे । पाल नाम के इस व्यक्ति ने अपने को सम्मानित समझकर हर जगह यह घोषणा की थी कि गोरे आदमी बहुत अच्छे दिल के होते है । वह स्वय मिसूरी के डाकोटा लोगो में से एक था और दोगले दुभाषिये 'पियेर् दोरियो' नाम के प्रसिद्ध आदमी का बेटा था । इसके पिता का वर्णन इर्विग की 'आस्तोरिया' नाम की पुस्तक में बार-बार आया है । उसने बताया कि वह रिचर्ड के व्यापार-घर की ओर अपना घोडा, किन्ही प्रवासियो को, बेचने ले जा रहा था । वे वहाँ डेरा डाले पडे थे । उसने मुझ से भी साथ चलने के लिए कहा । हमने साथ-साथ ही धारा पार की । पाल अपने जंगली घोडे को पीछे-पीछे घसीटता ला रहा था । हमने जब सामने के रतीले मैदानो को पार किया, तब उसने बात करनी शुरू की । वह एक प्रकार से अपने को मिला-जुला नागरिक अनुभव करता था ।

वह गोरो की बस्तियो मे भी गया था और हजारो मील के दायरे मे बसे आदिवासियो की अनेको जातियो को शान्ति और युद्ध के दिनो मे भी उसने देखा था। वह फ्रांसीसी भाषा की एक बोली और अग्रेजी का एक बिगडा रूप बोल लेता था। पर, तो भी वह पूरा आदिवासी ही था। जब वह अपनी जाति के शत्रुओ के विरुद्ध कारनामो का वणन कर रहा था, तो उसकी आँखें एक अजीब चमक से चमक उठी थी। उसने बताया कि मिसूरी के ऊपरी इलाके मे 'होहे' लोगो के एक गाँव को किस तरह डाकोटा जाति के लोगो ने, उसके आदमियो, औरतो और बच्चो को मारकर, मिटा दिया है और अब किस प्रकार बहुत अधिक सख्या मे होने के कारण उन्होने सोलह बहादुर देलावारे जवानो को मार डाला है। उन लोगो ने अपने शत्रुओ की भीड मे फँस कर भी अन्तिम आदमी तक लडकर कट जाना अधिक अच्छा समझा। उसने एक बात और भी मुझे बताई, जिसपर मैने तब तक विश्वास न किया जब तक और कई जगहो से सुनकर मेरा सदेह दूर न हुआ।

छ साल पहले जिम बेकवर्थ नाम का, फ्रेंच, अमरीकी और नीग्रो खून से मिला जुला, दोगला आदमी फर कम्पनी की नौकरी मे रहकर काक जाति के एक बडे गाँव मे व्यापार करता था। वह पिछली गर्मियो मे सैंट लुई मे भी आया था। वह बहुत ही असभ्य, धोखेबाज, खूँखार और बेईमान किस्म का आदमी था। ऐसा बुरा चरित्र इस इलाके मे किसी और का नही सुना गया। वह किसी भी सोते हुए आदमी को कत्ल कर सकता था और कोई भी नीच-से-नीच काम करने को तैयार रहता था। एक बार जब वह काक लोगो के गाँव मे था, ब्लैकफुट (कृष्णपाद) लोगो की तीस-चालीस की सख्या की एक टुकडी चुपचाप सरकती हुई आई और इक्के-दुक्के घूमते हुए लोगो को मारकर सारे घोडो को भगा ले गई। काक जाति के योद्धा उनके पीछे-पीछे भागे और एक स्थान पर उन्होने उन्हें घेर लिया। ऐसे मौके पर शत्रुओ ने अपने चारो ओर लट्ठो का एक आधा घेरा (परकोटा) सा बना लिया। वे इन लोगो के आने की प्रतीक्षा करने लगे। बल्लियो और छडियो से चार-पाँच फुट ऊँची बनाई गई दीवार उनकी रक्षा कर रही थी। काक जाति के लोग इससे भी ऊँची जगह लाँघकर अपने शत्रुओ का नामो-निशान मिटा सकते थे, पर तो भी उन्होने इस छोटे-से किले को पार करना असम्भव समझा। युद्ध के नियमो

के मुताबिक वे इसे पार करना बहुत बुरा समझते थे। चीखते और चिल्लाते हुए और एक ओर से दूसरी ओर शैतान के अवतार के रूप में घूमते हुए वे गोलियो और बाणों की बौछार इस जगले के ऊपर से करते रहे। परन्तु अन्दर के लोगो मे से एक भी घायल न हुआ। हाँ उनकी गोलियो से काक जाति के कुछ हमलावर जरूर मारे गए। एक दो घंटे तक मूर्खों के ढग की यह लडाई चलती रही। जब-तब काक जाति का कोई वीर योद्धा युद्ध का गीत गाता हुआ और अपने को सबसे अधिक वीर बताता हुआ आगे बढता और कुल्हाड़ी लेकर सामने के जगले को काटने की कोशिश करता। अपने मित्रो की तरफ पीछे लौटते हुए उसपर पीछे से बाणो से वर्षा होती और वह गिर कर मर जाता। इस पर भी सबने मिलकर कोई हमला न किया। कृष्णपाद लोग अपने इस बेडे मे सुरक्षित रहे।

अन्त मे वेकवर्थ का धैर्य टूटा और उसने काक जाति के लोगो से कहा, 'तुम सब लोग निरे मूर्ख और बुद्धू हो। आओ, अगर तुम मे से कोई बहादुर है तो मेरे साथ आए। मै तुम्हे बताऊँगा कि इनसे कैसे लडना है!' उसने पशु फँसानेवालो जैसी अपनी पोशाक उतार दी और नगे बदन, आदिवासियो के समान ही, आगे बढने लगा। उसने अपनी राइफल जमीन पर ही रख दी और एक हल्की-सी कुल्हाडी हाथ मे लेकर बढा। वह मैदान मे दाहिनी ओर एक खड्ड मे छिपता हुआ आगे दौडा और तब चट्टानो के पीछे से चढते हुए उनके पीछे की ओर पहुँच गया। चालीस या पचास लडाकू युवक भी उसके पीछे-पीछे गए। नीचे से आने वाली चीख और चिल्लाहट से वह समझ गया कि कृष्णपाद लोग उसके बिल्कुल नीचे ही थे। आगे दौडकर उसने एक बडी चट्टान को पकड़ा और उनके बीच कूद पडा। कूदने के साथ ही उसने एक आदमी को उसके लम्बे बालो से पकड़ लिया और नीचे गिराकर खीचते हुए उसका गला काट डाला। उसने तब एक दूसरे आदमी की कमर पेटी खीचकर एक बहुत भयकर धक्का मारा और उसके पाँव पकडकर बहुत जोर के साथ काक जाति का जयघोष किया। उसने अपने चारो ओर अपना कुल्हाड़ा कुछ इस तरह चलाया कि कृष्णपाद लोगो के बीच मे से उसने रास्ता साफ कर दिया। अगर वह चाहता, तो लकड़ियो के बने हुए किले की दीवार को लाँघ-कर अपने को बचा सकता था। परन्तु यह जरूरी नही था, क्योकि उसके दल

के लडाकू सैनिक उसकी आवाज़ सुनकर अपने शत्रुओ मे एक-एक करके कूदने लगे। सामने की ओर से भी उसके दल के लोगो ने नारे के उत्तर में नारे लगाए और तुरन्त ही बढ चले। इस नकली किले के अन्दर जो लडाई हुई वह भयकर थी। कुछ देर तक तो घिरे हुए लोग छेडे हुए चीते की भाँति बहुत खूँखार होकर लडे, पर कुछ ही देर बाद उनमे से एक-एक आदमी मारा जा चुका था और उनके कुचले हुए शरीर वही बिखरे पडे थे। उनमे से एक भी भाग न सका।

पाल ने अपनी कहानी जब तक समाप्त की, हमे रिचर्ड का व्यापारी किला दिखाई देने लगा। इसके चारो ओर अनेक किस्म के आदमियो की भीड लगी हुई थी और इसके कुछ ही दूरी पर सामने की ओर प्रवासियो का एक खेमा गडा हुआ था।

मैने कहा, "पाल तुम्हारे मिनिकौंग्यू घर किधर है ?"

पाल ने उत्तर दिया, 'अभी तक तो नही आए। हो सकता है कल तक आ जाएँ।"

मिसूरी से चले हुए डाकोटा लोगो के दो बडे-बडे गाँव, तीन सौ मील की यात्रा करके, युद्ध मे शामिल होने के लिए आज ही रिचर्ड के डेरे तक पहुँचने वाले थे। पर, अब तक भी उनके पहुँचने का कोई निशान न था। इसलिए एक बहुत ही शोर-शराबे वाली, शराब मे मस्त, भीड मे से होते हुए मैं बल्लियो और गारे से बने हुए एक मकान मे घुसा। इस किले मे यही सब से बडा मकान था। यहाँ अनेक जातियो और रँगो के लोग जमा थे। सभी ने थोडी बहुत शराब पी हुई थी। कैलिफोर्निया के कुछ प्रवासियो को यात्रा की इस अन्तिम मजिल मे पता चला कि उनके पास सामान कुछ अधिक है, जो उनके लिए बोझ साबित हो रहा है। इसलिए उन्होने इसका बडा हिस्सा व्यापारियो को बेच दिया या यूँ ही फेंक दिया। परन्तु मिसूरी की शराब के बोझ को हल्का करने के लिए उन्होने उसे अँधा होकर पीना ही उचित समझा। यहाँ कमजोर-सी औरतें अपने बिस्तरो पर लेटी हुई थी। कुछ मैक्सिको वासी धनुष और बाण लिए बैठे थे। कुछ आदिवासी शराब के नशे मे चूर थे। कुछ लम्बे बालो वाले पशु-फँसाने वाले कनाडा निवासी और अमरीका के जगलो के व, अपनी पिस्तौल और छुरी लटकाए हुए यहाँ जमा थे। कमरे के बीचो-

बीच एक बहुत लम्बा और पतला आदमी ऊन का एक भद्दा कोट पहने हुए खड़ा सारे इकट्ठे लोगो को जैसे कोई भाषण दे रहा था। वह एक हाथ को हवा मे हिला रहा था और दूसरे मे उसने शराब की बोतल कसकर पकडी हुई थी। इस बोतल को वह हर मिनट अपने होठो से लगा रहा था हालाँकि यह बहुत पहले ही खाली हो चुकी थी। रिचर्ड ने इस आदमी से मेरा परिचय कराया। इसका नाम कर्नल र— था। कभी यह अपने दल का नेता रहा था। कर्नल ने मेरी कमीज के कालर पकडते हुए अपनी हैसियत मुझ पर जतानी शुरू की। उसने बताया कि उसके आदमियो ने बगावत करके उसे नेतागीरी से हटा दिया है। फिर भी लोग उसके दिमाग के कायल थे। सक्षेप में, अब भी वही उनका सच्चा नेता था। इधर कर्नल बोल रहा था और उधर मै चारो ओर जमा असभ्य लोगो को देख रहा था। सच यह था कि वह ऐसे लोगो का नेतृत्व रेगिस्तानी मैदान की इतनी बडी यात्रा के बीच करने के लिए तैयार न था। बाकी लोगों मे से डेनियल बर्न नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति के तीन पोते खडे थे। उन्होने अपने मशहूर दादा के गुणो को पूरी तरह पाया था। वे कद में लम्बे थे। पर उनमे अपने दादा जैसी शान्ति और धीरज दिखाई न देता था।

इस दल के लोगो को इस समय के महीनो बाद एक बहुत भयकर दुर्भाग्य का सामना करना पडा। कैलिफोर्निया से बहुत दिन बाद लौटते हुए जर्नल कीर्नी इस बात की खबर लाया था। पहाडो के बीच वे गहरी बर्फ मे फँस गए थे। ठण्ड और भूख से तग आकर, उन्होने एक दूसरे के मास को खाकर, अपना गुज़र किया।

इस गड़बडझाले से मैं उकता गया। मैने पाल को बुलाया और वहाँ से निकल चलने को कहा। पाल धूप मे किले की दीवार के नीचे बैठा आराम कर रहा था। वह उछला और घोडे पर सवार हो कर मेरे साथ लारामी किले की ओर चल पडा। जब हम यहाँ पहुँचे, तो दरवाजे से एक आदमी बाहर निकल रहा था। उसकी पीठ पर बोझ था और कंधे पर राइफल रखी थी। कुछ लोग उसके चारो ओर इकट्ठे होकर उससे विदाई के लिए हाथ मिला रहे थे। मैने अचरज किया कि कैसे एक आदमी अकेला ही पैदल इस लम्बे रेतीले मैदान की यात्रा पर निकल पड़ा है ? परन्तु, मुझे उसी समय इस बात

का उत्तर मिल गया। उस कनाडा निवासी का नाम पैरो था। वह वहाँ के स्वामी से लड बैठा था और अब उसका किले मे रहना असभव था। अपने अधिकार के मद मे आकर बोदूँ ने उसे गाली दी थी और उसने उत्तर मे घूसो से उसकी मरम्मत कर दी थी। दोनो ही किले के बीचो-बीच एक दूसरे से जूझ पडे। एक ही क्षण मे बोदूँ नीचे आ गिरा। अब वह गुस्से मे आए हुए इस कनाडा-निवासी के रहम पर था। अगर इसी समय उसका साला—एक आदिवासी—बीच मे न आ पडता, और उसके दुश्मन को पकड न लेता, तो शायद बोदूँ के साथ बुरी बीतती। पैरो उस आदिवासी के हाथो से छूट गया। तब दोनो ही गोरे अपने-अपने कमरो से बन्दूकें लेने के लिए भागे। जब बोदूँ ने अपने दरवाज़े से कनाडा निवासी को हाथ मे बन्दूक लिए हुए और मैदान के बीचो-बीच खडे होकर लडाई के लिए ललकारते हुए सुना, तो उसका दिल जवाब दे गया। उसने अधिक उचित समझा कि वह कमरे मे ही छिपा रहे। बचाने वाले बूढे आदिवासी ने भी अपने बहनोई की कायरता से घबरा कर उसे बार-बार, मैदान मे निकल कर, गोरे लोगो के तरीके से लडने के लिए उकसाया। बोदूँ की पत्नी ने भी अपना अपमान अनुभव करके अपने स्वामी को बार-बार कुत्ते और बूढी औरत के समान बताया। पर, इस सब का कोई भी असर न हुआ। बोदूँ की कायरता उसके साहस पर जीत गई थी। अब वह हिलने को तैयार न था। नीचे पैरो अपने कायर स्वामी के लिए बुरी-बुरी गालियो की बौछार करता जा रहा था। इस सबसे हारकर उसने सूखे मास का एक गट्ठर बाँधा और अपनी पीठ पर लाद कर, मिसूरी मे स्थित, पियेर किले की ओर चल पडा। रास्ता रेगिस्तानी प्रदेश मे से होकर जाता था और तीन सौ मील से भी अधिक लम्बा था। राह मे आदिवासियो का खतरा था। पर तो भी वह अकेला, पैदल ही, चल पडा।

उस रात मै किले मे ही रहा। सुबह होते ही नाश्ता करके मै बाहर निकल ही रहा था कि मैने एक आदिवासी को दरवाज़े का सहारा लेकर खडे पाया। उस समय मैं एक व्यापारी से बातें कर रहा था। यह आदिवासी बडा लम्बा, मज़बूत और भारी-भरकम था। मेरे लिए यह अजनबी था। मैने उसके विषय में पूछा कि वह कौन है? व्यापारी ने बताया कि उसका नाम 'बवडर' है। ९ ही डाकोटा लोगो की युद्ध की सारी तैयारी के लिए ज़िम्मेवार था। इन

लोगो का, आपस में एक दूसरे की जान लेना, धर्म-सा ही बन गया है। अपने घरो मे शान्तिपूर्वक रहने और भैसों की खालों का व्यापार करने की बजाय ये लोग आपस में लडने को ही अपना धर्म समझ बैठे हैं।

उस व्यापारी की इस राय से इस देश के सभी गोरे सहमत थे। वे सभी लोग इनके आपसी युद्धो से घबराते थे, क्योकि इससे उनके व्यापार पर बुरा असर पडता था। किले तक आने के लिए 'बवडर' ने अपना गाँव एक दिन पहले ही छोडा था। उसका युद्ध का उत्साह शुरू से अब तक ठडा न पडा था। अपने पुत्र की मृत्यु का बदला लेने के लिए ये लम्बी और उलझी हुई तैयारियाँ उसके दिल को उकता देने वाली सिद्ध हो रही थी। उसी सुबह बोर्दू ने उसे भेंटें आदि देकर खुश किया और तब उसे समझाया कि अगर वह युद्ध पर गया, तो उसके घोडे तक नष्ट हो जाएँगे और वह गोरे लोगो से व्यापार के लिए भैसे आदि नही मार सकेगा। उसने यह भी कहा कि अच्छा होगा, यदि वह युद्ध जैसी मूर्खता भरी बात का ख्याल भी न लाए और अपने घरो में रहकर एक बुद्धिमान् पुरुष की भाँति आराम से अपना जीवन बिताए। इस बात से 'बवडर' का अपना इरादा डोल गया था। अब वह एक बच्चे की भाँति अपने को इरादो से थका हुआ अनुभव करने लगा। बोर्दू ने बडे निश्चय के साथ यह भविष्यवाणी की थी कि अब वह युद्ध के लिए नही जाएगा। मनुष्यता से मुझे भी प्यार था, पर साथ ही आदिवासियो का युद्ध देखने की मेरी उत्सुकता भी कम न थी। मै इस मौके को, और उसके लिए होने वाली तैयारियो को, देखने से चूकना नही चाहता था। 'बवंडर' ने जो आग लगाई थी, अब वह चारो ओर फैल चुकी थी। डाकोटा जाति के पश्चिम के लोग युद्ध के लिए कमर कसे हुए थे और मुझे उस व्यापारी से पता चला कि उनके छः बडे-बडे गाँव एक छोटी नदी के किनारे, यहाँ से चालीस मील की दूरी पर ही, जमा हो भी चुके थे। प्रतिदिन ही थे, अपने इस आक्रमण मे सहायता देने के लिए, महान् आत्मा (परमात्मा) की प्रार्थना कर रहे थे। यह व्यापारी उनसे कुछ ही समय पहले विदा होकर आया था और लाबोते डेरे की ओर उनका प्रतिनिधि बनकर जा रहा था। उसके कहने के अनुसार यदि उन लोगो को वहाँ भैसे मिलने की उमीद बनी रही तो वे वहाँ अवश्य ही एक हफ्ते के अन्दर ही अन्दर पहुँच जाएँगे। मुझे भैसो की यह शर्त अच्छी न लगी; क्योकि

इस मौसम मे आसपास भैंसे होते भी बहुत कम थे। मिनिकोग्यू लोगो के दो गांव भी पास ही डेरा डाले हुए थे। दोपहर के समय रिचर्ड के किले से आने वाले एक आदिवासी ने बताया कि वे आपस मे लडभिड कर अपने खेमे उखाडकर फिर से अपने-अपने इलाको को लौटने लगे थे। यह सब हुआ प्रवासियो की शराब के कारण। उन लोगो ने सारी शराब स्वय पीनी असभव समझ कर, बची-खुची, उन आदिवासियो में बाँट दी। इसका परिणाम जानने के लिए किसी पैगम्बर की जरूरत न थी। बारूद मे आग लगाने के लिए एक चिनगारी काफी होती है। वही बात यहाँ भी हुई। वह युद्ध के उस उद्देश्य को भूल गए, जिसके कारण वे यहाँ इकट्ठे हुए थे और आपस मे लडने पर उतारू हो गए। उनकी दशा बिगडे हुए बच्चो की भाँति हो गई। उनके भाव बहुत गिरे हुए थे। शराब के इस शोर-शराबे मे उनके कुछ आदमी मारे भी गए। सुबह होते ही छोटी-छोटी टुकडियो मे मिसूरी के अपने-अपने इलाको की ओर वे लौटने लगे। मुझे लगा कि जिस बडे मिलन के लिए यह सब लम्बी तैयारियाँ और उत्सव हो रहे थे, जैसे वह मिलन अब कभी न हो सकेगा। लगता था कि अब आदिवासियो को अपने भयकर रूप मे देखने का यह मौका फिर कभी न मिल पाएगा। इस सब बात के बीच मैने यह भुला दिया कि मै भी युद्ध की दशा मे अपने को एक बहुत बडे खतरे मे डाल बैठता। इस बात को सोचकर मैने भी अपने मन को तसल्ली दी और अपने डेरे तक यह खबर पहुँचाने की तैयारी करने लगा।

मैने अपना घोडा पकडा। मुझे यह देखकर अचरज हुआ कि चट्टानो पर चढते हुए मेरे घोडे के एक खुर मे चोट लग गई थी और उसकी नाल भी उखड गई थी। लारामी किले मे इन घोडो की नाल लगाने का काम पन्द्रह रुपये हर पैर के हिसाब से होता था। मैने हैड्रिक नाम के अपने घोडे को घुडसाल मे एक खम्बे से बाँधा और रूबिदू नाम के लुहार को बुलाया। वह घोडे के खुर को अपने घुटने फँसाकर हथौडी और रेती लेकर अपने काम मे जुट गया। मै यह सब कुछ देखने मे लगा था, कि मुझे पीछे से एक अजीब-सी आवाज़ सुनाई दी।

कोई कह रहा था, "हम मे से दो और खत्म हो गए। खैर अब भी हमारे से लोग बचे हुए है। मै और गिग्रास अभी कल ही पहाडो की ओर जाने

वाले है। मेरा ख्याल है खत्म होने की अगली बारी हमारी ही है। कुछ भी हो, हमारी जिन्दगी बहुत कठोर है।"

मैने देखा कि सामने पाँच फुट का एक ठिगना आदमी खडा था। उसका बदन बहुत गठीला और मजबूत था। देखने में वह भद्दा-सा लग रहा था। उसकी हिरण की खाल की कमीज, चिकनाई के कारण, काली हो चुकी थी। उसकी पेटी, चाकू, थैली और बारूद का डिब्बा आदि बहुत पुराने पड चुके थे। उसके पाँव का सबसे अगला जोड सालो पहले, सर्दियो मे जम जाने के कारण मारा जा चुका था। इसलिए उसके जूते भी उसी हिसाब से सिकुडे हुए थे। उसकी पोशाक और सामान बता रहे थे कि वह एक स्वतंत्र पशु फँसाने वाला है। उसका चेहरा गोल और लाल था और उसपर बेफिक्री और प्रसन्नता झलक रही थी, हालाँकि यह बात उसकी कही हुई ऊपर की बात से मेल न खाती थी।

मैने पूछा, "दो और खत्म हो जाने से तुम्हारा क्या मतलब है ?"

"ओह ! अरापाहो लोगो ने हमारे दो आदमियो को पहाडो मे मार डाला हैं। यह बात हमे बुल्टेल् (वृषपुच्छ) नाम के आदिवासी ने अभी-अभी आकर बताई है। उन्होंने एक को पीठ पीछे घायल किया और दूसरे को उसकी ही बन्दूक छीनकर मार डाला। यह है हमारी जिन्दगी। मै इस साल के बाद इस काम को छोड़ दूँगा। मेरी स्त्री चाहती है कि एक तेज घोडा और कुछ लाल फीते खरीद लिए जायें। मै उसके लिए ये चीजें बीवर नामक जानवर पकड़-कर भी ला सकता हूँ। उसके बाद मेरा काम खत्म हो जाएगा। तब मै नीचे, मैदानो में, जाकर खेती पर गुजर करने लगूँगा।"

उसके पास ही खडे एक दूसरे पशु फँसाने वाले ने कहा, "रूलो ! मैदान मे तुम्हारी हड्डियाँ सूख जाएँगी।" वह आदमी कुछ असभ्य और बडे भद्दे चेहरे वाला लग रहा था। रूलो हँस पडा और उसने गुनगुनाना और नाचना शुरू कर दिया। दूसरे आदमी ने कहा, "आप हमें बहुत जल्दी ही अपने रास्ते से गुजरता हुआ देखोगे !"

मैने कहा, "अच्छा, कुछ देर रुको और हमारे साथ काफी पियो।" साँझ पास आ जाने के कारण मैने भी किला छोडने की तैयारी कर ली।

ज्योही मै किले से निकला, मैने प्रवासियो की एक लम्बी कतार को

धारा पार करते देखा। दो या तीन लोगो की प्रणाम भरी आवाज़ ने मुझे चौंकाया। वे पूछ रहे थे, "तुम कहाँ जा रहे हो ?"

"यहाँ से लगभग अठारह मील, दूर, नदी के किनारे।"

"इतनी दूर जाने के लिए अब समय कहाँ है ? अच्छा है जल्दी ही निकल जाओ। पर ज़रा आदिवासियो से सावधान रहना।"

मैने उनकी इस सलाह पर ध्यान न दिया। धारा पार करके सामने के मैदानो पर एक लम्बा चक्कर काटते हुए मै बढा। परन्तु जल्दी मे चाल भी धीमी हो जाती है। यह बात मेरे साथ पूरी-पूरी घटी। मै जब तीन मील दूर की पहाडियो तक पहुँचा तब तक राह के निशान धुँधले पडने लगे थे। तेज़ी से आगे बढते हुए मुझे ये भी दिखाई देने बद हो गए। लारामी धारा को ध्यान मे रखकर मैं एक सीधी रेखा मे बढता रहा। यह धारा छिपते हुए सूरज की रोशनी मे कभी-कभी दिखाई दे जाती थी। सूरज छिपने से आधा घटे पहले मै इसके किनारे पर उतर आया। इस स्थान के एकान्त मे कुछ अजीब ही उत्तेजना थी। सामने से झाडियो मे निकलता हुआ एक बारहसिगा अचानक ही उछला। अभी वह मेरे सामने तीस गज़ दूर पर भी न होगा कि मैने घोडे पर चढे-चढे ही गोली दाग दी और वह उसी क्षण गिर पड़ा। मैं निश्चिन्त होकर उसकी ओर बढा। जब आराम से मै दुबारा बन्दूक भरने लगा, तो मुझे अचरज मे डुबोकर वह एक दम ही उछला और तेजी से, अपने तीन पाँवो के बल पर दौडता हुआ, सामने की अँधेरी पहाडियो के बीच जा छिपा। उधर जाने का समय मेरे पास नही था। दस मिनट के बाद जब मै एक गहरी घाटी के तल मे से गुज़र रहा था, मैने बहुत हल्की रोशनी मे पीछे मुडकर देखा कि कोई चीज़ मेरा पीछा कर रही है। इसे भेडिया ख्याल करके मैं घोडे से उतर कर, छिप कर, बैठ गया और उसे मारने की प्रतीक्षा करने लगा। उसके सामने आते ही मैंने देखा कि यह कोई दूसरा बारहसिगा था। मेरे सौ गज़ के फासले के अन्दर पहुँचने पर अपनी गर्दन झुकाकर यह निश्चिन्त होकर चरने लगा। मैंने इसकी छाती के एक सफेद निशान की ओर निशाना साधा। मैं अभी गोली दागने ही वाला था कि यह एक दम तेज़ी से भाग निकला। समुद्र मे तूफान मे फँसे जहाज़ की भाँति कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर भागते हुए यह पूरी तेज़ी के साथ एक ओर को निकल गया।

फिर एक बार रुका और पीछे मुड़कर उत्सुकता से देखकर फिर से पहले की तरह दौडने लगा। पर अब इसमे वह जोश न था। यह रुका और मेरी ओर ताकने लगा। मैने गोली दाग दी। यह ऊपर की ओर उछला और फिर अपने ही निशानो पर गिर पडा। दूरी नापने पर मैने देखा कि यह सवा सौ गज़ से अधिक दूर था। जब मै इसके पास खडा हुआ तो इसने अपनी बुझती हुई आँखें मेरी ओर घुमाईं। इसकी ये आँखें किसी सुन्दर स्त्री की काली, और चमकदार आँखो जैसी ही थी। मैने सोचा, "शुक्र है, कि मै जल्दी में हूँ। अगर कही मेरे पास समय होता तो मुझे इसके मरने पर अफसोस करना पडता।"

इस को चीरकर मैंने इसका मास काठी के पीछे की ओर रख लिया और फिर से चलने लगा। अब पहाड़ियाँ पास से पास घिरती नजर आईं। मैंने सोचा कि रात अधिक हो गई है, इसलिए आगे जाना उचित न होगा। सुबह रास्ता खोजने का इरादा करके, रात वही बिताने की सोचने लगा। एक बार और हिम्मत करने की दृष्टि से मैंने एक ऊँची चोटी पार की। बहुत सतोष के साथ मैने देखा कि मेरे सामने ही लारामी धारा पेडो के बीच बल खाती बह रही थी और पास ही पेडो की छाया मे किसी एक पुराने व्यापारी किले के खडहर दिखाई दे रहे थे। तारो की छाया मे मै वहाँ तक पहुँचा। उस धुँधली रोशनी में घने पेडो और झाडियो के बीच से होकर बढना बहुत आनन्ददायक न लगा। मुझे किसी भी आवाज को सुनते ही किसी आदमी या पशु के लिए चौकन्ना हो जाना पडता था। उस सारे स्थान पर एक भी चीज़ हिलती नजर न आती थी। भूरे रग का एक ही पक्षी शाखो पर बैठा शोर कर रहा था। जब मैंने खुला मैदान दुबारा देखा तब मै अत्यत प्रसन्न हुआ, क्योकि कोई भी आने वाली चीज यहाँ मुझे अच्छी तरह दिखाई दे सकती थी। 'चुग वाटर' के मुहाने पर पहुँचने तक अँधेरा बहुत घना हो चुका था। मैंने लगाम ढीली छोड दी और घोडे को अपनी राह चलने दिया। वह बिना गलती किए अपनी सूझ के अनुसार तेज़ चाल मे चलता रहा। नौ बजते-बजते वह हमारे डेरे के पास की चरागाह मे नीचे की ओर उतर रहा था। मै अभी आग की रोशनी को खोजने की कोशिश कर ही रहा था कि मेरा घोडा अपनी तेज पहचान के द्वारा सच्चाई जानकर दूर से ही एक दम हिनहिना उठा। इस आवाज का उत्तर भी, तुरन्त ही, दूसरी ओर की हिनहिनाहट से मिला।

कुछ ही क्षण मे मुझे अन्धेरे मे ही स्वागत भरी आवाज़ सुनाई दी। रेनल हाथ मे राइफल लिए यह देखने बाहर निकला था कि कौन आ रहा है ?

इस समय डेरे पर वह, उसकी पत्नी, दो कनाडा-निवासी और दो आदिवासी—कुल मिलाकर छ प्राणी थे। शॉ और हेनरी अब तक भी न लौटे थे। वे लोग अगली दोपहर को लौटे। उस समय उनके घोडे यात्रा के लायक न रहे थे। हेनरी का दिल टूट-सा गया था। उसकी पत्नी मर गई थी और उसके बच्चे आज के बाद से अपना सरक्षक न पाकर आदिवासी जीवन की हर प्रकार की कठिनाइयो और सख्तियो को सहने के लिए मजबूर हो गए थे। अपने इस शोक की दशा मे भी उसने अपने 'मालिकों' का ध्यान न छोडा। इस हालत मे भी उसने अपने सम्बन्धी आदिवासियो से दो सजी हुई भैंसे की खालें हमारे लिए प्राप्त की और उन्हें हमे भेंट के रूप मे ज़मीन पर बिछा दिया।

शॉ ने अपना पाइप सुलगाया और अपनी यात्रा का किस्सा मुझे सुनाया। किले पर जाते हुए ये लोग मुझसे 'चुग वाटर' के मुहाने से अलग हो गए थे। वे सारे दिन भर उसी छोटी धारा के साथ-साथ चलते रहे। रास्ता उजाड और सुनसान था। उन्हें कई बार एक बडे भारी लडाकू दल के गुज़रने के चिह्न मिले। ये चिह्न उसी दल के थे, जिसके आक्रमण से हम बच चुके थे। ये चिह्न ताज़ा थे। साँझ होने से एक घण्टा पहले वे किसी भी आदमी से बिना टकराए हेनरी की पत्नी और उसके सम्बन्धियो के डेरो पर पहुँच गए। वे लोग हेनरी के सदेश के अनुसार अपने आदिवासी गाँव को छोडकर हम से मिलने हमारी ओर आ रहे थे। घर गाडे जा चुके थे। नदी के किनारे गडे इन घरो की सख्या पाँच थी। उसकी पत्नी इनमे से एक मे पडी थी। वह केवल हड्डियो का ढाँचा रह गई थी। बहुत दिन से वह न बोल सकती थी और न हिल-डुल सकती थी। वह केवल ज़िन्दा ही हेनरी को देखने के लिए थी। उसके साथ उसका बहुत गहरा और पक्का सम्बन्ध था। डेरे में उसके घुसते ही वह कुछ अच्छी दीखने लगी और रातभर उससे बातें करती रही। सुबह होते ही उसे फिर से टोकरी वाली गाडी मे डाला गया। सभी लोग हमारे पडाव की ओर चल पडे। दल मे पाँच लडाकू-वीर सैनिक थे और बाकी औरतें व बच्चे थे। काक जाति के लडाकू दल को पास

ही अनुभव करके, वे सभी बहुत चौकन्ने हो उठे थे, क्योकि वे लोग इन्हे बडी निर्दयता से समाप्त कर डालते। अभी ये लोग एक या दो मील ही बढे होगे कि उन्हें बहुत दूर क्षितिज पर एक घुडसवार दिखाई दिया। बहुत चिन्तित होकर वे सब रुक गए। बहुत देर बाद घुडसवार के ओझल होने पर ही वे निश्चित हुए। उसी समय वे फिर चल पडे। हेनरी, शॉ के साथ-साथ आदिवासियो से कुछ आगे-आगे चल रहा था। पीछे से महतो तातोका ने आवाज दी। पीछे लौटकर उन्होंने देखा कि सभी आदिवासी उस औरत की गाडी के चारो ओर इकट्ठे हो गए है। वे जब उसके पास पहुँचे, तब उसकी अन्तिम साँसें गले मे अटकी हुई थी। एक ही क्षण मे वह उसी टोकरी में मरी पडी थी। चारो ओर एकदम शान्ति छा गई। तब आदिवासियो ने मिलकर उस शव पर झुकते हुए शोक प्रकट करने के लिए रोना शुरू किया। शॉ ने इन आवाज़ो मे 'हल्लेलुजा' जैसी आवाज़ें साफ सुनी। इन सब बातो से उसने यह अनुमान किया कि इन आदिवासियो की आदतें इज़राइल वासियो से मिलती है और हो सकता है कि वे उनके ही खोए हुए दस वशो मे से एक वश के हो।

आदिवासी प्रथा के अनुसार हेनरी और सभी आदिवासी-सम्बन्धियो को शव के साथ-साथ गाडने के लिए कीमती भेंटें देनी आवश्यक थी। आदिवासियों को पीछे छोडकर वह और शॉ अपने डेरे की ओर चल पडे और बहुत कठिन परिश्रम के बाद दोपहर तक यहाँ पहुँच गए। यहाँ से ज़रूरी चीज़ें लेकर वे एकदम ही लौट पडे। बहुत अँधेरा होने के बाद ही वे लौट पाए। वे सब बहुत भयकर पहाडियो के बीच मे स्थित एक खड्ड मे ठहरे हुए थे। उनमे से चार तो दु.ख के मारे हुए दिखाई देते थे, परन्तु पाँचवाँ भाई उत्साह की आग से जलता हुआ दिखाई दे रहा था। उनके पास आते हुए चारो ओर शान्ति छाई हुई थी। लगता था जैसे घरो के अन्दर एक भी रहने वाला वहाँ नही है। कोई भी जीवित चीज़ हिलडुल नहीं रही थी। सारा दृश्य ही बडा डरावना-सा लग रहा था। वे उस डेरे के दरवाज़े तक गए। घोड़ो की टपटपाहट के अलावा और कोई भी आवाज़ सुनाई नही दे रही थी। एक औरत ने आगे बढकर बिना कुछ कहे उनके पशुओ को सम्भाल लिया। अन्दर घुसते ही उन्होंने देखा कि डेरा पहले ही आदिवासियो से भरा हुआ था।

बीचो-बीच आग जल रही थी। इसके चारो ओर तीन कतारें बनाकर अफसोस करने के लिए ये ओग जमा थे। इन नये लोगो के लिए मकान के सामने ही एक नया कमरा बना दिया गया था। उनके बैठने के लिए एक गलीचा बिछा दिया गया था और बहुत चुप्पी के साथ उनके हाथ मे चिलम सुलगाकर दे दी गई थी। इसी तरह, बैठे-बैठे ही उन्होने अधिकाश रात बिताई। बहुत बार आग बुझने को होती थी कि तभी कोई औरत उठकर उसमे भैसे की चरबी डाल देती थी। तब एक तेज़ लपट उसमे से उठती और लोगो के चेहरे अपनी उदासी और जडता को साफ झलका देते। यह चुप्पी लगातार चलती रही। सुबह होने तर शॉ ने कुछ सुख अनुभव किया। अब वह इस अफसोस वाले घर से अलग हो सकता था। हेनरी और उसने डेरे की ओर लौटने की तैयारी की। इससे पहले उन्होंने अपनी बहुत-सी कीमती भेंटें हेनरी की पत्नी के पास रखी। वह इस समय एक घर मे बैठी हुई हालत मे सजी-धजी रखी गई थी। उसके घर से कुछ दूरी पर ही एक बहुत अच्छा घोडा उसकी आत्मा के लिए, बलि देने के लिए, बाँधा गया था। यह इसलिए कि स्त्री लगडी थी और 'मुर्दों के स्वर्ग' की ओर यात्रा करने मे वह घोडे के बिना समर्थ न हो पाती। उसके लिए भोजन और घर-गृहस्थी का सामान भी साथ ही रख दिया गया था।

हेनरी उसे उसके सम्बन्धियो की दया पर छोडकर शॉ के साथ तुरन्त ही डेरे पर लौट आया। उसकी निराशा बहुत देर बाद ही टूट पाई।

— o —

११ : पड़ाव के नज़ारे

रेनल ने एक दिन पड़ाव से लगभग दो मील दूर से बन्दूक की आवाज़ सुनी। उसे लगा कि शायद काक जाति के लोग हमला करने वाले है। यह सोचकर वह निराश हो गया। हम बाहर गए हुए थे। लौटने पर उसने हमसे फिर अपने अकेला रह जाने की शिकायत की। अगले ही दिन उसकी चिन्ता का कारण स्पष्ट हो गया। मौरै, साराफे, रूलो और गिग्रास नाम के चार पशु-फँसाने वाले हमारे डेरे तक आए और हमारे साथ टिक गए। ये ही लोग थे, जिन्होने पहले दिन गोलियाँ चला कर रेनल के दिल मे डर पैदा कर दिया था। उन्होने हमारे पास ही डेरा डाला। उनकी बन्दूकें भी हमारी बन्दूको के साथ ही पेड पर टिका दी गईं। बहुत अधिक प्रयोग के कारण वे भद्दी और पुरानी हो चुकी थी। उनकी नगी और मज़बूत काठियाँ, उनके भैसो की खालो के कपडे, उनके जाल और छोटी-मोटी चीज़े हमारे तम्बू के पास ही रख दी गई थी। उन्होने अपने पहाडी घोडो को चरने के लिए चरागाह की ओर हमारे पशुओ के साथ ही छोड़ दिया। वे चारो हमारे पेड की ही छाया मे दिन भर सुस्ताते रहते, तम्बाकू पीते रहते और अपने साहस की कहानियाँ सुनाते रहते। मै नही जानता कि राकी पर्वत माला के इन पशु-फँसाने वालो से अधिक बहादुरी के इतने कारनामे कही और भी सुनने को मिल सकते हैं।

इन लोगो के आ जाने से रेनल की घबराहट कुछ दूर हुई। हमे इस जगह से कुछ प्यार-सा होने लगा था। तब एक जगह पर बहुत अधिक दिन टिकना अच्छा न था। बिना आवश्यकता के टिके रहने पर कोई बुरा परिणाम भी सामने आ सकता था। अब घास भी यहाँ उतनी अच्छी और चिकनी न रही थी। मिट्टी और कीचड से मिलकर यह कुचल गई थी। इसलिए हमने कुछ दूरी पर दूसरे पेड के नीचे, नदी के किनारे, अपना डेरा बदल लिया। इसका तना दो गज़ से अधिक चौडा रहा होगा और उस पर आदिवासियो ने बहुत से चित्र बनाकर अपनी वीरता और युद्धप्रियता की बाते लिखी हुई थी। इसकी बहुत ऊपर की शाखाओ मे एक मचान दिखाई दे रहा था। इस पर कभी

आदिवासी प्रथा के अनुसार मुर्दे रखे जाते थे ।

हम भोजन के लिए घास पर बैठे ही थे कि हेनरी चिल्लाया, "वह देखो, उधर 'बुलबियर' (सांड-रीछ) नाम का आदिवासी आ रहा है।" हमने सामने बहुत से घुडसवारो को एक पास की पहाडी पर से आते हुए देखा। कुछ ही देर मे चार बहुत मजबूत और अच्छी हैसियत वाले युवक हमारे सामने आए और घोडो से उतरे। इस बुलबियर का उनमे ऊँचा स्थान था। उसका ही दूसरा नाम 'महतो तातोका' था। यह नाम उसे ओजिल्लाला जाति के एक नेता के रूप मे अपने पिता से, उत्तराधिकार मे मिला था। उसके साथ उसका एक भाई और दूसरे दो आदिवासी युवक थे। हमने इन अतिथियो से हाथ मिलाए और अपना भोजन समाप्त कर हमने, उनकी ही प्रथा के अनुसार, उन्हें कॉफी का प्याला और बिस्कुट भेंट किए। इस पर उन्होने पूरी ताकत के साथ "हाऊ, हाऊ" की आवाज करके, प्रसन्नता प्रगट की। तब हमने चिलम सुलगाकर सबको बारी-बारी से पीने के लिए दी।

"गाँव कहाँ पर रुका हुआ है ?"

महतो तातोका ने दक्षिण की ओर इशारा करते हुए कहा, "उधर ! वह दो दिन तक यहाँ पहुँचेगा "

"क्या वे अब भी युद्ध के लिए बढेंगे ?"

"हाँ !

इन दिनो मे कोई भी आदमी मानवता का प्रेमी बनकर नही रह सकता। हमने भी इस खबर का पूरा स्वागत किया। मुझे इस बात पर प्रसन्नता हुई कि आखिर 'बवडर' को युद्ध से हटाने के बोर्दू के प्रयत्न असफल हुए और यह भी कि आगे भी कोई और ऐसी बाधा न आएगी, जो हमे लाबोंते के शिविर पर होने वाले बडे मिलन को देखने से रोक सकेगी।

अगले कुछ दिनो तक ये नये मित्र हमारे अतिथि बन कर रहे। उन्हें हमारे भोजन के बचे-खुचे हिस्से मे ही बहुत आनन्द आता था। वे हमारे लिए चिलम सुलगाते और इसे पीने मे भी हिस्सा बँटाते। कभी वे पेड़ की छाया मे साथ ही साथ लेटकर हँसी और मजाक मे डूब जाते। यह सब बात वीर योद्धाओ के लायक न थी। पर उनमे से दो सचमुच अच्छे योद्धा थे।

दो दिन और बीत गए। तब तीसरे दिन हम आदिवासियो के गाँव की

प्रतीक्षा करने लगे। पर वह न आया। इसलिए हमे उसकी ओर खुद ही चलना पड़ा। हमने आशा की थी कि हम आठ सौ के लगभग आदिवासियो से राह मे मिलेंगे, परन्तु हमने केवल एक आदिवासी को अपनी ओर आते देखा। उसने हमें बताया कि गाँव वालो का इरादा बदल गया है और वे अगले तीन दिन मे भी यहाँ न पहुँच सकेंगे। इस दूत को अपने साथ लेकर हम फिर से डेरे पर लौट आए और आदिवासियो की इस अस्थिरता की हँसी उडाने लगे। जब हम अपने डेरे के पास पहुँचे तो हमने इसे अकेला न पाया। इसके पास ही आँधी और तूफान से कमजोर पडा हुआ एक बडा सा डेरा गडा हुआ था। यहाँ आदमियो और घोडो की बहुत-सी अस्पष्ट शक्लें दिखाई दे रही थी। कुछ रगीन हाथ भी आगे बढे हुए दिखाई दे रहे थे। इसकी छत से लम्बी-लम्बी बल्लियाँ बाहर झाँकती हुई दिखाई दे रही थी और इसके दरवाजे पर एक जादूभरी चिलम टँगी हुई थी। इसी प्रकार के जादू के कुछ और साधन भी वहाँ पडे थे। अभी हम कुछ दूर ही थे कि हमे बहुत से रगो और आकारो के आदमी अपने डेरे के आसपास घूमते हुए दिखाई दिए। पशु-फँसाने वाला मोरै एक दो दिन बाहर रहने के बाद लौट आया था। लगता था कि वह अपने सारे परिवार को भी साथ ले आया था। वह अपने साथ पत्नी को भी लाया था, जिस के बदले मे, मूल्य के रूप मे, उसे एक घोडा देना पडा था। शुरू मे तो यह बात किसी को भी बहुत सस्ती लगेगी। पर, वास्तव में ऐसा सौदा होता बहुत महँगा है और इसे बहुत सोच-समझ कर ही करना चाहिए। बात यह है कि आदिवासियो की लडकी लेने का मतलब केवल कीमत देना ही नही होता, बल्कि वहू के सम्बन्धियो का बड़ा भारी बोझ भी उसके पति को उठाना पड़ता है। वे लोग खासकर गोरे लोगो के सिर पर मौज उड़ाने में खूब आनन्द अनुभव करते है। वे जोको की तरह चिपट कर सब कुछ चूस जाना चाहते है।

मोरै ने बहुत बडी खानदानी लड़की नही ढूँढी थी। उसकी वहू के सम्बन्धी ओजिल्लाला समाज मे बहुत नीची हैसियत के लोग थे। ये लोग यूँ तो प्रजातन्त्र के आदर्श को मानते है, पर तो भी इनमे ओहदे और स्थान के हिसाब से भेद होता है। मोरै की साथिन बहुत सुन्दर भी न थी। उसे भी अपनी पत्नी को सजाना न आता था। तभी उसने हरिण की सफेद बनाई हुई

खाल के कपडे की जगह् प्रवासियो से लिए एक पुराने सूती कपडे की पोशाक उसे पहनाई। यह उस पर बिल्कुल नही सज रही थी। इस सारे खैमे मे सबसे अधिक काम करने वाली अस्सी वर्ष की एक बुढिया थी। हमने कभी भी इससे अधिक बदसूरत और काम करने वाली औरत न देखी थी। उसकी तमाम पसलियाँ झुर्रीदार खाल के नीचे से गिनी जा सकती थी। उसका झुर्रीदार चेहरा किसी जीवित आदमी का न लग कर किसी पुरानी खोपडी-सा लगता था। उसमे धँसी हुई उसकी काली आँखे चमक रही थी। उसकी बाहें इतनी पतली पड चुकी थी, जैसे चाबुक की छडी। उसके बाल आधे काले और और आधे सफेद हो चुके थे। उलझे हुए-से वे जमीन पर लटक रहे थे। उसकी पोशाक बहुत पुरानी और फटी हुई भैंसे की खाल से बनी हुई थी, जो उसकी कमर पर पेटी से बँधी हुई थी। इस हलके से शरीर मे भी बहुत ही अधिक मजबूती थी। उसने डेरा गाडा, घोडे बाँधे और सारा कठिन से कठिन काम खुद ही निपटाती रही। सुबह से लेकर शाम तक वह चीखने वाले उल्लू की भाँति इधर से उधर चिल्लाती फिरती। उसका भाई 'चिकित्सक' अथवा जादूगर था। वह भी उसी की तरह मजबूत था। उसका मुँह चौडा था। उसकी भूख के सम्बन्ध मे हमे पता चला कि वह बहुत अधिक बढी हुई थी। इनके अलावा इस डेरे मे एक जवान पति-पत्नी भी थे। दूल्हा बहुत ही सुस्त और आलसी था। ऐसे लोग आदिवासियो और सभ्य कहलाने वाली जातियो मे सभी जगह पाए जाते है। वह न तो शिकार खेलने के योग्य था और न ही युद्ध के लायक। उसके चेहरे से ही यह बात साफ हो जाती थी। ये लोग विवाह के बाद का आनन्द मनाने के लिए अभी कुछ दिन पहले ही मिले थे। ये लोग धूप मे ही बाँसो के सहारे भैंसे की खाल टाँग कर छाया कर लेते और कुछ खालें नीचे बिछा कर उस पर दिन भर बैठे रहते। मै न जान पाया कि कभी उनमे अधिक बातचीत हो पाती थी या नही ? शायद उनके पास बात करने के लिए कुछ अधिक मसाला था भी नही। ये आदिवासी इधर-उधर की बात बनाने मे चुस्त होते भी नही है। इस खैमे मे आधा-दर्जन से अधिक बच्चे भी थे, जो इधर-उधर खेलते हुए या पक्षियो का शिकार करते हुए अथवा रेत के छोटे-मोटे घरो को बनाते हुए खेल कूद रहे थे। कुछ दूसरे बच्चे पत्थरो से मकान बना रहे थे।

यह दिन गुज़रते ही आदिवसी आने शुरू हो गए। दो-तीन या अधिक सख्या के दल आने लगे और वही घास पर बैठने लगे। चौथे रोज़ लगभग दोपहर को सामने की पहाडी पर कुछ घुडसवार दिखाए दिए। उनके पीछे एक वहुत वडा जुलूस पहाड़ी से मैदान की ओर वेतरतीवे ढग से उतर रहा था। घोडे, टट्टू, कुत्ते, लदी हुई गाड़ियाँ, घुड़सवार योद्धा, पैदल चलती औरते, और वहुत से बच्चे इस समूह मे शामिल थे। यह एकान्त भरा मैदान कुछ ही देर मे एक चहकते डेरे के रूप में वदल गया। अनेको घोडे चारो ओर की चरागाहो में चरने लगे। सारा मैदान ही घुडसवारो या घूमते हुए लोगों की हलचल से भर गया। सब से अन्त मे 'ववडर' भी आया। हम तव तक भी एक सवाल का उत्तर हम न जान पाए थे : "क्या वह युद्ध की ओर अव भी वढेगा। और क्या सुरक्षापूर्वक लावोते कैम्प के खतरनाक मिलन-स्थल पर पहुँच सकेंगे ?"

हमे यह सदेह वना ही रहा। वे लोग मिलते थे, पर कभी कोई निश्चय न कर पाते थे। समूह के रूप मे उनका काम करने का स्वभाव ही नही था। उनका उद्देश्य कितना ही महत्त्वपूर्ण क्यो न हो, वे लोग मिल-जुल कर उसे पाने का प्रयत्न नही कर सकते। यह वात राजा फिलिप, पौंटियक और तेकुमसे आदि सभी ने अनुभव की और इसी कारण नुकसान उठाया। कभी इन लोगो का एक नेता हुआ था, जिसने इन पर नियत्रण किया था। पर, अव वह मर चुका था और ये लोग अपनी-अपनी मर्ज़ी के मुताविक चलने लगे थे।

यहाँ से आगे इन आदिवासियो का यह गाँव इस सारी कहानी का खास केन्द्र रहेगा। इसलिए इन लोगो के विषय में कुछ जान लेना अधिक अच्छा रहेगा। यह जाति सेन्ट पीटर नदी से रॉकी पर्वतमाला तक एक विस्तृत इलाके मे फैली हुई है। इन के कई स्वतन्त्र भाग हैं। उन्हें मिलाने वाली कोई भी केन्द्रीय सरकार या एक नेता नहीं है। उनकी भाषा, रीति-रिवाज और धार्मिक विश्वास ही उनके बीच एकता की कडी बनाते है। युद्ध के मौकों पर भी वे इकट्ठे नही होते। बहुत बार वे आपस में भी लड़ते रहते है। पूर्व के लोग उत्तरी झीलों के कबीलों से और पश्चिम के लोग रॉकी पर्वतमाला के पार आदिवासियों से लगभग हमेशा ही लड़ते रहते हैं। जिस तरह वे लोग अलग-अलग समाजो में बंटे हुए है, उसी प्रकार प्रत्येक समाज भी टोलियों में बँटा हुआ

होता है। हर गाँव का एक मुखिया होता है, जो कि अपने गुणो के कारण ही आदर पाता है। कई बार यह मुखिया केवल नाममात्र का होता है और कई बार इसका अधिकार बहुत व्यापक होता है। कभी-कभी उसका यश और प्रभाव आसपास के गाँवो मे फैलकर सारे समाज मे छा जाता है और वह अपने सारे समाज का मुखिया बन जाता है। कुछ वर्ष हुए यह बात ओजिल्लाला जाति के साथ भी थी। कोई भी योद्धा अपने उत्साह, साहस और कारनामो के कारण सबसे ऊँचे ओहदे पर पहुँच सकता है। अगर वह किसी मुखिया का बेटा हो या उसका परिवार बहुत बडा और उसकी लडाइयो मे साथ देने वाला हो, तब भी वह यह ऊँचा पद पा सकता है। पर यह बात साफ है, कि मुखिया के रूप मे बडे-बूढो द्वारा स्वीकार कर लिए जाने पर भी, वह कभी भी अपने ओहदे या आदर के बाहरी दिखावे को प्रकट नही कर सकता। वह जानता है कि उसका यह ओहदा कितना अस्थिर है। उसे अपने अनिश्चित लोगो मे समझौता कराना होता है। कई लोग उससे ज्यादा अच्छी तरह, अधिक औरतो और घोडो के साथ और अधिक सज-धज कर रहते है। पुराने जर्मन राजाओ की तरह वह भी अपने लोगो और सरदारो को खुश रखने के लिए अपनी ओर से कुछ न-कुछ भेंट आदि देता रहता है। इस प्रकार वह स्वय को निर्धन बना लेता है। अगर वह उन लोगो की कृपा न पाए, तो वे लोग उसका अधिकार छीन लेते है और उसे कभी भी पद से हटा देते है। रीति-रिवाजो के अनुसार वह अपने अधिकार को प्रजा पर जमाने के लिए किसी फौज या पुलिस का सहारा नही ले सकता। बहुत कम बार यह हो पाता है कि बहुत छोटे परिवार का कोई व्यक्ति बडी ताकत पा सके। प्राय सारा गाँव ही उसके खानदान और सम्बन्धियो से भरा होता है और यह सारा घूमने वाला समुदाय एक परिवार के रूप मे ही आगे बढता है।

पश्चिम के डाकोटा लोगो के कोई स्थिर गाँव नही हैं। शिकार और युद्ध मे लगे हुए वे निरन्तर घूमते रहते है। उनमे से कुछ उजाड मैदानो पर भैंसो के शिकार को निकल जाते है और कुछ घोडो पर या पैदल ही ब्लैक हिल्स की ओर निकल कर 'पार्क्स' की ओर निकल जाते है। यह स्थान सुन्दर होकर भी भयानक है। भैंसो के शिकार से ही उनके जीवन की—निवास, भोजन, वस्त्र, बिस्तर और ईंधन आदि सभी आवश्यकताएँ पूरी हो जाती है। अपने

धनुष के लिए तात, गोंद, धागा, रस्सी, खोजी रस्सियाँ, काठियों को ढकने के आवरण, पानी की मश्कें, नदी पार करने के लिए मश्कों की नाव और व्यापारियों से जीवन का आवश्यक सामान खरीदने के लिए कमाई का साधन आदि सब कुछ उन्हें भैंसे से ही मिल जाता है। अगर भैंसा न हो, या कम पड़ जाए, तो उनके जीवन की भी बुरी दशा हो जायगी।

युद्ध उनकी साँसों मे बसता है। अपने अधिकाश पड़ोसी कबीलों के प्रति उनके दिल में घृणा भरी हुई होती है। यह घृणा खानदानी बन चुकी होती है और लगातार हमलों और बदले की भावना से भड़कती रहती है। हर गाँव में साल मे कई बार 'महान् आत्मा' को प्रसन्न किया जाता है। उसके लिए उपवास किए जाते है, सैनिक तैयारियाँ होती है और तब शत्रु के विरुद्ध योद्धाओं के जत्थे निकलने शुरू होते हैं। उन की यह भयकर उत्तेजना उनके हृदय में बहुत-सी महत्त्वाकाक्षाओं को जन्म देती है और उनकी सारी ताकत को खपा लेती है। इसके कारण ही वे लोग सुस्त बनकर एक जगह नहीं बस जाते। अगर यह उत्तेजना न हो तो वे भी पहाड़ों के शान्तिप्रिय कबीलों की भाँति गुफ़ाओं और चट्टानों मे बिखरकर, जगल के फल-फूल और पौधे खाकर, रहने लग जाएँ। पहाड़ों के पार के आदिवासी केवल आकार से ही आदमी दिखाई देते हैं। पर हर महत्त्वाकाक्षा और अभिमान से भरा हुआ डाकोटा योद्धा वीरता के अनेक गुणों से युक्त होता है। इन लोगों में अपना प्रभाव और विशेषता पाने का एकमात्र तरीका वीरता का प्रदर्शन करना ही है। अपने भ्रमों और अन्धविश्वासों के कारण वे कभी-कभी उन लोगों को अपने बीच महत्त्व दे बैठते हैं, जो या तो जादूगर के रूप में होते हैं या फिर ज्योतिषी या सिद्धपुरुष के तौर पर भविष्य की बातें करते हैं।

आइए! हमारे डेरे में भी घुसकर देखिए, अगर आप तम्बाकू के धुएँ और घुटन को सह सकते हैं। यहाँ लोग एक दूसरे से बिल्कुल सटकर एक घेरा बनाए बैठे हैं, और एक दूसरे के हाथ में चिलम थमाते हुए मजाक कर रहे हैं। वे लोग कहानियाँ कहकर और दूसरे ढंग से खूब खुश हो रहे हैं। उनके छोटे-छोटे, ताम्बे के-से रंग वाले, नंगे लड़कों और साँप-की-सी आँखवाली लड़कियों की खुशी से हम भी भर उठते हैं। वे कुछ शब्द कहते हुए हम तक आए, जिनका अर्थ हमें बाद में पता चला कि वे हमें खाकर खाने को

निमंत्रण दे रहे थे। इस पर हम उठे और डाकोटा लोगो के उस भारी-भरकम आतिथ्य को कोसते हुए चले। इन लोगो के इस सत्कार मे दिन-भर मे कोई भी समय खाली नही रहता। हमे इनकी प्रथा को मानना ही पडता था, क्योकि अगर हम न मानते तो ये लोग बुरा मान सकते थे। यह बन्धन मुझे बहुत भारी लगने लगा। मै अभी बीमारी के प्रभाव से भी छूटा न था और घूमने-फिरने लायक भी न हुआ था। मेरे लिए दिन मे बीस-बीस बार भोजन करना बहुत कठिन था। इतना ज़बरदस्त स्वागत सचमुच ऐसा लगता है, जैसे कि किसी की शुभ-भावना एक साथ ही उमड पडी हो। परन्तु, अगर ऐसे लोग—इन्ही मे से कम-से-कम आधे लोग—कही हमे अकेले मे मैदानो मे, निहत्थी हालत मे पा लें तो हमारे हर सामान को हम से छीन लें और हमें बांसो मे घायल करके मार दें।

एक सुबह हमे एक बूढे आदमी के डेरे पर बुलाया गया। यह अपने गाँव का भविष्यवक्ता था। हमने उसे आधा बैठे और आधा झुके हुए पाया। वह अस्सी बरस से ऊपर का था, पर तब भी उसके बाल एकदम काले थे और उसके कन्धो पर दोनो ओर लटक रहे थे। उसका शरीर अब भी बहुत ही गठीले ढग से बना हुआ था, जिससे उसकी पुरानी ताकत का पता चलता था। उसके चेहरे को देखकर उसकी ज़बरदस्त दिमागी ताकत का अन्दाज़ा भी होता था, जो अब भी मानी और सुनी जाती थी। इस बुज़ुर्ग के सामने ही उसका महत्त्वाकाक्षी युवक भतीजा 'महतो तातोका' बैठा था। इनके अलावा एक-दो स्त्रियाँ भी डेरे मे थी।

इस बूढे मनुष्य की कहानी भी कुछ विचित्र है। उससे आदिवासियो मे फैले बहुत-से अधविश्वासो का पूरा अनुमान हो जाता है। वह भी वीरता में मशहूर खानदान का ही आदमी था। पर जब वह अभी युवक ही था, तभी अपने जीवन का अगला लक्ष्य निश्चित करने से पहले उसने भी, और लोगो की तरह एक सस्कार पूरा किया। उसने अपना चेहरा काले रग से पोत लिया और तब ब्लैक हिल्स के सबसे भयकर हिस्से मे, एक छोटी-सी घाटी में, कुछ दिन के लिए उपवास और प्रार्थना करता हुआ लेट गया। अपनी कमज़ोरी की दशा मे उत्तेजना के कारण, अन्य आदिवासियो की भांति, उसने भी दिखाई देने वाले सपनो को अलौकिक वरदान समझा। उसके सामने

बार-बार हिरण की आकृति आने लगी। ओजिल्लाला लोग हिरण को बहुत ही सुन्दर और शान्तिवाली आत्मा मानते है। परन्तु युवा आदमियो को इस प्रकार के उपवासों मे इसके दर्शन कभी-कभी ही हो पाते हैं। प्राय लोगो को भयकर काले भालू के ही दर्शन होते है, जिसे युद्ध का देवता माना गया है। वे उसे देखकर वीरता और यश की कामना से भर उठते हैं। बहुत देर बाद यह हिरण बोला। उसने इस युवक को बताया कि उसे, युद्ध के रास्ते पर न चलकर, शान्ति और चैन के रास्ते पर चलना है। आगे से उसे अपनी सलाहें देकर लोगो को दु खो से बचाते हुए सही रास्ते पर ले चलना है। दूसरे लोग युद्धो के द्वारा यश पाएँगे, पर इसे युद्धो मे यश नही मिलेगा। उसका यश किसी और ही बात मे है।

उपवास के इन दिनो में देखा गया, यह दृश्य ही स्वप्न-द्रष्टा के जीवन के सारे मार्ग को निश्चित कर देता है। उस समय से ही इस वृद्ध ने युद्ध के इरादे को छोडकर शान्ति की ओर अपने तमाम प्रयत्न आरम्भ कर दिए। उसने लोगो को अपने स्वप्न की बात बताई। उन लोगो ने भी उसकी बातो को सही माना और उसके जीवन के इस नए रूप को स्वीकार किया। इस बूढे का नाम हमें केवल फ्रेंच मे ही पता चला। यह था—'लोवोन्ये'।

उसके भाई का नाम 'महतो तातोका' था। वह उससे एकदम भिन्न था। उसका नाम, शक्ल और गुण—सभी कुछ—उसके बेटे को उत्तराधिकार में मिले थे। वह हेनरी की पत्नी का पिता भी था। यह बात हमारे लिए अच्छी सिद्ध हुई। क्योकि इस बहाने हमारा सम्बन्ध एक बहुत वीर परिवार से हुआ, जो कि इस यात्रा के लिए बहुत ही आवश्यक बात थी। इस महतो को नायक माना जाता था। कोई भी बडा सरदार वीरता के विषय में उससे अधिक प्रसिद्ध न था और न ही अपने लोगो पर किसी का इतना अधिकार चलता था। उसकी आत्मा बिल्कुल निडर थी और उसका निश्चय बिल्कुल अडिग। वह जो कुछ चाहता था वही कानून के रूप मे माना जाता था। वह बडा नम्र और सभ्य था। आदिवासियो की अपनी सभ्यता के कारण वह यह जानकर कि गोरो से मिलकर अपने लिए और अपने साथियों के लिए बहुत लाभ उठाये जा सकते है, वह सदा ही उनका मित्र बन जाता था। जब वह कोई भी काम करना निश्चित कर लेता था, तब वह सब योद्धाओं

को बुलाकर उस पर विचार करने का मौका देता, और जब उनकी बहस खतम हो जाती तब उन्हे अपना इरादा बता देता। सब लोग चुपचाप उसकी बात को मान लेते, क्योकि उसकी बात को न मानने का अर्थ दुर्भाग्य का सामना करना होता। वह उन पर उसी समय हमला कर देता या उन्हें मार डालता। अगर कोई और सरदार ऐसा करता तो शायद उसे अपनी जान से ही हाथ धोना पडता। परन्तु, महतो इस काम को बार-बार दोहराता और किसी की हिम्मत उसके विरुद्ध कुछ करने की न पडती। महतो ने एक ऐसी जाति मे अपने को एकच्छत्र नेता के रूप मे बना लिया, जिस मे सदा से ही कभी भी किसी आदमी ने अपनी इच्छा के अलावा किसी कानून को नही माना था। अन्त मे उसका जीवन भी समाप्त हुआ। उसके बहुत से शत्रु थे, जो धैर्यपूर्वक अवसर की प्रतीक्षा करते रहे। इनमे से, अपने सम्बन्धियो के साथ, हमारा परिचित मित्र –'स्मोक' भी एक था, जो उससे हृदय से घृणा करता था। वह एक दिन अपने गाँव मे, अपने घर मे, बैठा हुआ था। तभी महतो उसके गाँव मे अकेला ही घुसा। उसने अपने शत्रु के घर के सामने जाकर, बहुत ऊँची आवाज़ मे उसे बाहर आकर लडने के लिए ललकारा। पर स्मोक न हिला। इस पर महतो ने उसे कायर और बूढी औरत कहकर गालियाँ दी और घर के दरवाज़े पर आकर उसके सबसे अच्छे घोडे को मार आया। यह अपमान भी स्मोक को हिला न सका। महतो तातोका गर्व मे डूबकर चला गया। सबने उसके लिये रास्ता छोड दिया। पर उसके दिन नज़दीक आ चुके थे।

आज से पाँच-छः साल पहले एक दिन बहुत गर्मी पड रही थी। स्मोक के सम्बन्धियो के बहुत-से घर फिर कम्पनी के लोगो के चारो ओर जमा थे। कम्पनी के लोग वहाँ शराब और बहुत-सी दूसरी चीज़ो का व्यापार करने आए थे। महतो भी अपने कुछ साथियो के साथ वही पर आया हुआ था। अभी वह अपने डेरे मे लेटा ही हुआ था कि उसके अपने साथियो और शत्रु के आदमियो के बीच एक झगडा उठ खडा हुआ। उसी समय युद्ध का बिगुल बज गया और गोलियो और बाणो की बौछार होने लगी। सारे डेरे मे गडबड मच गई। सरदार उठा और दोनो दलो के बीच जाकर लडाई रोकने के लिए कहने लगा। पर यह हमला पहले ही तैयारी के साथ किया गया था।

उसी समय दो तीन बन्दूको की आवाज़ आई और दर्जनो धनुप एक साथ गूँज उठे। यह वीर योद्धा उसी समय घायल होकर धरती पर गिर पडा। रूलो उस मौके पर मौजूद था और उसने ही मुझे ये बाते बताईं। यह झगडा बढता ही गया, जब तक कि दोनो ओर से कुछ आदमी मर न गए। जब हम इस इलाके मे थे, तब भी यह झगडा शान्त न हुआ था।

इस प्रकार बूढा महतो मर गया, किन्तु अपने पीछे वह ऐसे खानदानी योद्धाओ की एक बडी और अच्छी सेना छोड गया, जो कि उसके यश को कायम रख सकती थी और उसकी मौत का बदला ले सकती थी। लडकियों के अलावा उसके तीस बेटे थे। जो लोग आदिवासियो की रीति और व्यवहार को जानते हैं, उनके लिए यह सख्या आश्चर्य पैदा नही करेगी। उनमें से हमने बहुत से देखे, जिनका रग गहरा था और जिनके चेहरे एक खास ढाँचे मे ढले हुए दीखते थे। इन्ही मे से था हमारा युवक अतिथि महतो। वह उनमे सबसे बडा था और कुछ के विचार मे वह अपने पिता के यश को पाने का पूरा अधिकारी था। वह अभी इक्कीस वर्ष का भी नही दिखाई देता था। परन्तु, उसने शत्रुओ पर हमले किए थे और उनके अधिक से अधिक घोडे और औरतें चुराई थीं। उसके मुकाबले मे कोई भी युवक इतना न बढ सका। घोडो की यह चोरी इन मैदानो मे किसी व्यक्ति की विशेषता मानी जाती है। औरतो की चोरी भी इसी प्रकार की महत्त्वपूर्ण बात समझी जाती है। यह कार्य अपने आप मे बहुत अच्छा नही है। कोई भी आदमी किसी की भी औरत चुरा लेता है। अगर वह बाद मे कोई उचित भेंट उसके पहले स्वामी को दे देता है तो उनके बीच की शत्रुता मिट जाती है और एक खतरा टल जाता है। परन्तु, अदला-बदली का यह सौदा सबसे हीन दर्जे का माना जाता है। केवल खतरा ही नही टलता, बल्कि आदमी का अपना यश भी इसमे गायब हो जाता है। महतो औरो से काफी भिन्न था। उसने दर्जनों स्त्रियो को चुराकर भी उनके बदले में एक भी भेंट न दी थी। इतना ही नही, उसने तो अपने शत्रुओ के मुख पर, अपमान के रूप में, चाँटा तक मारा था। इस पर भी उसके मुकाबले की हिम्मत किसी मे न जगी। वह अपने पिता के पद-चिह्नो पर पूरी तरह चल रहा था। हर जवान मर्द और औरत अपने-अपने तरीके से उसकी प्रशसा करते थे। जवान मर्द युद्ध में उसका साथ देते

और औरतें उसे सबसे अधिक आकर्षक मानती। शायद उसकी यह निर्भीकता बहुत-से आश्चर्यों को जन्म दे सकती थी। घाटी से आने वाला कोई बाण या अँधेरे से किया गया कोई हमला किसी वीरता की निशानी नहीं होता। आदिवासियो मे ऐसी बात चलती ही रहती है। पर महतो की रक्षा एक और बात भी करती थी। उसका साहस और मजबूत इरादा ही अपने साथियो मे उसे सबसे बडा नही बना रहे थे, बल्कि उसके शत्रु तक इस बात को जानते थे कि वह अकेला नही है। उसके तीस भाई भी है, जो योद्धा है और जवान हैं। अगर कही उन्होने उस पर कोई हमला कर ही दिया, तो कई सारे दिल उनके खून के प्यासे हो उठेंगे। बदला लेने वाला उनके हर कदम पर उनका पीछा करेगा। इसलिए महतो को मारने का अर्थ होता, खुद अपने मरने की तैयारी करना।

हालाँकि औरतों मे वह बहुत प्रिय था, पर तो भी वह सुन्दर जवान न था। वह अपने साथियो की भाँति अच्छे कपडे और जेवर नही पहनता था। बल्कि, वह तो केवल लडाई के कारनामो के बल पर ही अपनी सफलता मानता था। न तो कभी, उसने चमकीले कम्बल ओढ़े और न ही चमकते हार पहने। बल्कि, वह अपने ताम्बे से नगे बदन मे ही, यश पाने के लिए, सब जगह निकल जाता था। उसकी आवाज़ बडी गहरी और भारी थी। छाती से निकलती हुई वह ऐसे लगती थी, जैसे कोई बाजा बज रहा हो। इस सब पर भी वह आदिवासी ही था। धूप मे लेटे हुए उसे देखने पर वह अपनी एडियाँ हवा मे उठाता हुआ और अपने भाइयो से मज़ाक करता हुआ मिलेगा। क्या ऐसे समय मे वह कोई वीर नायक लग सकता है? और अब वीरता के मौके पर उसे देखो! साँझ के समय सारा गाँव उसे देखने उमड पडता है, क्योकि कल वह दुश्मन के विरुद्ध लडाई पर जाने वाला है! उसके सिर के मुकुट मे चील के पख लगे हुए है और उनकी कतार की कतार हवा मे लहरा रही है। उसकी छाती पर उसकी गोल ढाल लटक रही है, जिसपर बीच मे से चारो ओर पख ऐसे फैले हुए हैं, जैसे कोई तारा हो। उसकी पीठ पर तरकश कसा हुआ है। उसके हाथ मे उसका लम्बा भाला है, जिसका लोहे का नुकीला हिस्सा डूबते सूरज की चमक से चमक रहा है। इस प्रकार, एक वीर की भाँति, चमकता हुआ वह सारे घरो के चारा ओर

घूमता है, और अपने घोड़े की चाल को खुला छोडता हुआ वह 'महान् आत्मा' की स्तुति के गीत गाता चलता है। उसके मुकाबले के दूसरे जवान योद्धा उसकी ओर अचरज से देखते है। गालो पर पराग मले सुन्दर लडकियाँ उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखती है, छोटे बच्चे आनन्द के जोश में हँसने और चिल्लाने लगते हैं और बूढ़ी औरतें घर-घर मे उसकी प्रशसा गाती फिरती है।

हमारे आदिवासी मित्रो मे महतो सबसे अच्छा था। हर घटे और हर दिन असभ्य आदिवासियो के हर उमर और दर्जे के लोग हमारे डेरे पर आते और उसे घेर लेते। परन्तु, वह हमारे तम्बू मे लेटा रहता और अपनी आँखे, हमारी सम्पत्ति को लूटे जाने से बचाने के लिए, खुली रखता।

'बवंडर' ने एक दिन हमे अपने घर पर निमत्रित किया। दावत समाप्त हुई और हुक्का घुमाया गया। यह काफी बडा और अच्छा था। मैंने इसकी प्रशंसा की।

बवडर ने पूछा, "यदि तुम विदेशियो को भी यह पसन्द है तो तुम इसे रखते क्यो नही ?"

ओजिल्लाला लोगो में इस प्रकार का हुक्का एक घोडे की कीमत के बराबर का समझा जाता है। यह भेंट किसी सरदार या योद्धा के लिए ही उचित जँचती थी। पर, बवंडर आज अपनी उदारता मे आगे बढ गया था। उसने मुझे वह हुक्का दिया, पर साथ ही उसे यह भी पूरा विश्वास था कि बदले मे मैं भी उसे बराबर की या अधिक कीमत की कोई चीज दूँगा। आदिवासियों मे भेंट देने या लेने मे यह शर्त शामिल समझी जाती है। अगर यह शर्त पूरी न की जाए तो चीज वापिस भी माँग ली जाती है। इसलिए मैंने एक चमकदार सूती रूमाल बिछाकर उसपर बहुत-सा केसर, तम्बाकू, चाकू और बारूद बिछा दिए और तब सरदार को अपने डेरे पर बुलाकर, अपनी मित्रता का विश्वास दिलाते हुए, वे चीजें स्वीकार करने की प्रार्थना की। वह "हाऊ ! हाऊ !" कहकर उन चीजो को समेटता हुआ अपने घर की ओर प्रसन्नता के साथ चला गया।

एक दिन दोपहर के बाद कुछ घुडसवार आदिवासियो का एक दल झाडियो के पीछे से एक दम सामने आया। उनके साथ एक टट्टू भी था, जिसकी पीठ पर बुरी हालत में पडा हुआ एक हब्शी बैठा हुआ था। उसकी

गालें और आँखें गड्ढो मे धँस चुकी थी और उसकी पुतलियाँ फैली हुई थीं। उसके होठ सिकुडे हुए और किसी मुर्दे की भाँति फैले हुए थे। जब वे उसे हमारे डेरे के सामने लाए और उन्होने उसे काठी से नीचे उतारा तो न वह चल सकता था और न खडा हो सकता था। वह कुछ दूर तक सरक कर चला। पर, तब बहुत कमजोरी के कारण वही घास पर बैठ गया। सभी घरो से निकलकर बच्चे और औरतें चीखते-चिल्लाते वहाँ घिर आए और उसके चारो ओर खडे हो गए। वह बेचारा अपने हाथो के सहारे बैठा हुआ बडी निराशा से अगल-बगल में देख रहा था। वह भूख के कारण मरने ही वाला था। तैंतीस दिन तक इस मैदान मे वह भूखा ही घूमता रहा। उसके पास कोई हथियार तक न था। पहनी हुई कमीज़ और पाजामे के अलावा उसके पास जूते या कोई और कपडे न थे। रास्ता पहचानने के लिए न उसके पास बुद्धि थी और न ही उसे मैदान मे पैदा होने वाली चीज़ो का पता था। वह गिरगिटो और छिपकलियो को ही इतने दिन तक खाता रहा, या फिर जगली प्याज़ों और एक मैदानी कबूतर के घोसले मे पडे तीन अण्डो को खाकर ही इतने दिन जिन्दा रहा। इन दिनो मे उसने एक भी आदमी न देखा। इस अनन्त और निराशा भरे रेगिस्तान मे घूमते हुए वह नाउमीद होकर बढता रहा। और, तब चलने की ताकत न रहने पर घुटनो के बल सरकने लगा। इतनी ताकत भी खत्म हो जाने पर वह लेट गया। उसने रात मे सफर और दिन मे चमकती धूप मे सो जाने की बात निश्चित की। वह हमेशा स्वप्न मे ही मक्का और शोरबे को देखा करता। ये ही दो चीजें उसे मिसूरी मे अपने स्वामी के यहाँ मिला करती थी। हमारे डेरे का हर लाल या गोरा निवासी इस बात से अचरज मे डूब गया कि वह केवल भूख से ही नही बचा, बल्कि पडोस मे ही बहुत अधिक पाए जाने वाले काले भालुओ से भी वह बच गया। हर रात मे भौंकने वाले भेडिए भी उसका कुछ न बिगाड सके।

उसके आते ही रेनल ने उसे पहचान लिया। वह एक साल पहले अपने स्वामी के यहाँ से भाग कर रिचर्ड के दल मे मिल गया था, जो इस समय सीमात से पहाडो की ओर आ रहा था। वह रिचर्ड के साथ मई महीने के अन्त तक रहता रहा। तब वह रेनल और कुछ दूसरे आदमियो के साथ कुछ छूटे हुए घोडो को ढूँढने निकला। एक तूफान में वह दूसरो से भटक गया और

आज तक उसके बारे में फिर कभी नही सुना गया था। उसके अनुभव की कमी और सहायता से रहित होने के कारण किसी को सपने मे भी उम्मीद न थी कि वह जिन्दा होगा। आदिवासियो ने उसे जमीन पर इसी हालत में पडा हुआ पाया था।

वह वहाँ बैठा ऊपर की ओर देखता रहा। पर, उसमे इतनी भी हिम्मत न रह गई थी। चारो ओर खडे आदिवासी चुपचाप उसकी ओर देखते रहे। तब देस्लारियर ने उसके लिए शोरबा बनाया। वह कुछ देर इसे बिना चखे वैसे ही बैठा रहा। बहुत देर बाद उसने इसे उठाकर होठो से लगाया। अब वह एक-एक चम्मच करके इसे धीरे-धीरे पीने लगा। तभी, अचानक ही, उसकी भूख एक दम भडक उठी। उसने प्याला उठाकर एक दम मुँह से लगा लिया और क्षणभर मे ही सब कुछ पी गया। अब वह मास माँगने लगा। हमने उसे सुबह तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा। पर वह इतना अधिक जोर देने लगा कि अन्त में हमने उसे एक टुकडा दे ही दिया। उसने इसे, कुते की भाँति, चीर-चीर कर खा लिया। उसने और अधिक माँगा। पर, हमने उसे बताया कि अगर पहले-पहल वह इतना खा गया तो उसका जीवन खतरे मे पड जाएगा। उसने यह बात मानली और यह भी कि अधिक माँगकर वह मूर्खता कर रहा है। पर, फिर भी वह और माँगने लगा। अब हमने कतई मना कर दिया, हालांकि आदिवासी औरतें इस पर बहुत बुरा मानने लगी। हमारी निगाह बचाते ही वे चुपचाप सूखा मास ले आती और जमीन पर उसके पास रख जाती। उसके लिए इतना भी काफी न था। अधिक अँधेरा होने पर वह घोडो की टाँगो के बीच में से सरकता हुआ आदिवासियो के डेरे तक चला गया। यहाँ उसने जी भर कर खाया। सुबह वह हमारे डेरे पर फिर से लाया गया। पर, अब मिग्रास उसे घोडे पर बिठा कर किले की ओर ले गया। अपने लोभ के परिणामो को सहने मे वह जैसे-तैसे समर्थ हो गया। जब वह इस इलाके से विदा हुआ, तब उसकी हालत काफी अच्छी थी और उसे भरोसा हो चुका था कि अब उसे कोई भी चीज या घटना कभी मार न सकेगी।

अभी सूर्य छिपने मे एक घटा बाकी था। गाँव का नजारा देखने लायक था। योद्धा लोग घरो मे शान्ति से बैठे थे, या धारा के किनारे जमा थे, या फिर घोड़ो को देखने और चराने के लिए बाहर निकल गए थे। गाँव के आधे

से अधिक लोग अपने घुटन वाले गर्म घरो को छोडकर पानी के किनारे तक जा चुके थे। इस समय नदी मे लडके-लडकियाँ और जवान स्त्रियाँ नहाती, तैरती, पानी उछालती और डुबकियाँ लेती देखी जा सकती थी। वे खूब हँस-खेल रही थी। सूर्य पूरा छिपने से पहले हमारे यहाँ नजारा कुछ और सुन्दर हो उठा। चारो ओर सूर्य की लाली खिल उठी। हमारे पेड को भी उसने छा लिया। चारो ओर टीलो पर भरे मैदान, अमराइयो और दूसरी जगहो पर भी एक शान्त सुन्दरता छा गई। यहाँ कुछ असभ्य शक्लें जमा थी। उनकी पीठ पर तरकस और उनके हाथो मे बन्दूकें, भाले और दूसरे हथियार सजे हुए थे। वे घोडे पर बैठे हुए अपनी बाहें छाती के सामने बाँधे हुए हमारी ओर स्थिर निगाहो से देख रहे थे। कुछ लोग ऊपर से नीचे तक सिर से पाँव तक भैसे की सफेद खाल से लदे, सीधे, तने खडे थे। कुछ दूसरे लोग घास पर ही बैठे हुए थे। उन्होने अपने घोडो की लगामे हाथ मे पकडी हुई थी। वे नगे बदन बैठे थे और उनकी खालो के कपडे नीचे सरक आए थे। कुछ और भी थे, जो भीड के रूप मे लापरवाही से खडे थे। इनमे से एक बहुत ही गुस्सैल साथी था। इसका नाम 'पागल भेडिया' था। इसने पीठ पर तरकश और हाथ मे धनुष लिया हुआ था। अगर इसके चेहरे पर ध्यान न दिया जाता, तो यह अपोले या विष्णु का अवतार ही दिखाई देता। पश्चिम के लोगो ने जब सबसे पहले बेल्वेडेर को देखा होगा, तब उसकी आकृति उन्हें भी ऐसी ही लगी होगी।

मैदान पर जब अँधेरा छाने लगा, तब घोडो को पास लाकर डेरे के इर्द-गिर्द बाँध दिया गया। भीड धीरे-धीरे तितर-बितर होने लगी। चारो ओर आगे जलने लगी और इनके प्रकाश मे पशु-फँसाने वालो और आदिवासियो की शक्लें साफ दिखाई देने लगी। हमारे पास के परिवारो मे से एक परिवार प्राय सदा ही आग जलाकर उसके चारो ओ जमा हो जाता था। इस आग के प्रकाश से उनके घर का हर कोना चमकने लगता। बुढिया औरतें आग के चारो ओर घूमती रहती और बच्चे तथा छोटी लडकियाँ घटो घेरा बाँधे हँसती और बातें करती रहती। उनके प्रसन्न चेहरे दूर से ही चमकते रहते। आदि-वासियों के डेरे से हमे निरन्तर एक जैसी आवाज मे ढोलो के पीटने की आवाज आती रहती और उसके साथ ही सुनाई देते उनके युद्ध-गीत, जो कि धीरे-धीरे

दूरी के कारण मद पड़ते जाते। और, तब सुनाई देती उनकी लम्बी आवाजें।
यहाँ उसका युद्ध का नृत्य एक बडे भारी मकान मे हो रहा था। कुछ रातो तक हमे असभ्य और अफसोस भरी आवाजें भी सुनाई देती रही। ये आवाजे भेडियो की दुखभरी आवाज़ो के समान ही उठती और गिरती थी। महतो के परिवार के लोगो की ये आवाज़ें हेनरी की पत्नी का अफसोस मनाने के लिए, अपने अगो को चाकुओ से छेदने के साथ-साथ, उठती थी। बहुत रात बीतने पर डेरे में शान्ति छा जाती थी। अँगारो की हल्की-हल्की चमक बाकी रह जाने पर आदमी ज़मीन पर ही कम्बल ओढ कर सो जाते। तब घोडो की आवाज़ को छोडकर और कुछ भी सुनाई न देता।

मुझे इन दृश्यो का स्मरण दु ख और आनन्द दोनो की मिली-जुली भावना के साथ हो आता है। उस समय मै बीमारी के कारण इतना कमजोर हो गया था कि न तो ठीक तरह घूम सकता था और न ठीक से खडा हो सकता था। मेरी चाल शराबी के समान लडखडाती और मेरी आँखो के आगे अँधेरा छा जाता। सामने के पेड और मकान तैरते हुए नजर आते और मैदान एक समुद्र के उतार-चढाव का-सा लगने लगता। ऐसी हालत सभी जगह बुरी साबित होती है। इसलिए ऐसे इलाके मे, जहाँ मनुष्य का जीवन, उसकी अपनी भुजाओ के बल पर टिका रहता है, या फिर उसके अपने मजबूत कदमो पर टिका रहता है, यह हालत और भी बुरी साबित होती है। ऐसे मौको पर गीली जमीन पर, बीच-बीच मे वर्षा मे भीगते हुए, सोना बहुत अच्छा नही रहता। कभी-कभी तो मै अपने को बिल्कुल ही खोखला अनुभव करने लगता। मुझे लगता जैसे मै इन मैदानो से प्यार और सदा रहने के स्वप्नो का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

मैंने आराम और हल्के भोजन पर बल दिया। बहुत देर तक धीरज के साथ मै डेरे पर ही टिका रहता। बहुत होता तो आदिवासियो के गाँव तक लडखड़ाता चला जाता और चक्कर खाता हुआ आदिवासियो के घरो के बीच घूमता रहता। मुझे लगा कि यह सब भी कुछ लाभकारी नही था। मै लगभग भूखा ही रहता। पाँच दिन मे मैंने केवल एक बिस्कुट ही रोज खाकर गुज़र कया। उस समय मै पहले से भी कमजोर हो चुका था। लगता था कि मेरे अन्दर की बीमारी भी जैसे जड से हिल चुकी थी। अब मैंने धीरे-धीरे

खुराक फिर बढानी शुरू कर दी।

मैं अपने तम्बू के सामने सुस्ताकर स्वप्न देखता हुआ लेटा रहता और भूत और भविष्य की बातो पर सोचता रहता। इस समय कमजोरी और एकान्त की भावना से तग आई हुई मेरी आँखें अचानक ही ब्लैक हिल्स की ओर घूम जाती। पहाडो मे शक्ति की भावना का निवास होता है और जो भी इन तक पहुँचता है, उसमे ये शक्ति की भावना, किसी न किसी रूप मे, भर ही देते है। उस समय मुझे यह नही पता था कि इन पहाडियो के विषय मे आदि-वासियो के मनो मे कितने भ्रम और कितनी दुखदायी अफवाहें भरी हुई हैं। पर, मुझे यह इच्छा ज़रूर सताती थी कि मै इनके दर्रों और खाली हिस्सो के अन्दर जाकर इन मे छिपे आनन्दो और चीज़ो को खोज निकालूँ। इनका तेज धाराओ और शान्त जगलो को भी देखने की मेरी इच्छा थी। मुझे विश्वास था कि यह सब कुछ वहाँ छिपा हुआ है।

— o —

१२ : दुर्भाग्य

एक कनाडावासी लारामी किले से अजीब ही खबर ले कर आया। हाल मे ही पर्वतो मे से एक पशु-फँसाने वाले ने प्रवासियो के साथ जाने वाली मिसूरी निवासी किसी स्त्री से प्यार बढा लिया था। ये प्रवासी बहुत दिनो से किले के पास ही डेरा डाले पडे थे। अगर किसी सुन्दरी का प्यार पाने का उपाय वीरता दिखाना ही हो तो पर्वतो से लौटे हुए ऐसे पशु-फँसाने वाले को छोडकर और कौन उसका अच्छा अधिकारी हो सकता है? इस किस्से मे भी यही बात हुई। दोनो प्रेमियो ने एक योजना बनायी और उसे पूरी सावधानी के साथ पूरा करने का निश्चय किया। प्रवासियो के दल ने किला छोडा और उसके एक रात बाद हर रोज जैसे ही डेरा डालकर अपना पहरेदार खडा कर दिया। आधी रात के कुछ देर बाद ही वह पशु-फँसाने वाला एक घोडे पर चढकर डेरे तक आया। उसने एक दूसरे घोडे की लगाम भी थामी हुई थी। उसने दोनो घोडे पेड से बाँधे और चुपचाप सरकता हुआ गाडियो की ओर ऐसे गया, जैसे वह भैंसो के पास पहुँच रहा हो। आधे-सोते पहरेदार की निगाह बचाकर वह अपनी प्रेमिका से, निश्चित किये हुए तरीके से, डेरे से बाहर ही मिला। उसने उसे खाली घोडे पर चढाया और उसे लेकर अँधेरे मे ही गायब हो गया। इस साहस का परिणाम हम तक फिर कभी नही पहुँचा। हम नही जान पाये कि उस गोरी प्रेमिका ने आदिवासियो जैसे घर मे रहना क्यो स्वीकार किया और एक फक्कड पशु-फँसाने वाले को अपना पति कैसे चुना?

काफी देर बाद 'बवडर' और उसके लडाकू जवानो ने आगे बढने का निश्चय किया। अपनी तैयारियाँ पूरी कर लेने के बाद उन्होने निश्चय किया कि वे लाबोते नाम के डेरे की ओर नही जायेंगे। ब्लैक हिल्स की ओर से गुजरते हुए उन्होने कुछ दिन भैंसो के शिकार मे बिताने का निश्चय किया, ताकि उनके पास मास आदि का काफी बडा भंडार और अगली मौसम के लिए मकान ढकने के भैंसो के चमडे इकट्ठे किए जा सके। ऐसा होने के बाद

उन्होने शत्रुओ के विरुद्ध एक स्वतन्त्र लडाकू दल भेजने का निश्चय किया। उनके इस निश्चय ने हमे अजीब पशोपेश मे डाल दिया। अगर हम पहले से निश्चित डेरे की ओर जाते है तो यह सम्भव है कि और भी बहुत से आदिवासियो के गाँव इसी प्रकार से वहाँ न पहुँचें और शायद वहाँ कभी भी वे लोग इकट्ठे न हो सकें। हमारा पुराना साथी रेनल हमे चाहने लगा था। हो सकता है वह हमारे बिस्कुटो और काफी आदि से अथवा समय-समय पर दी जाने वाली भेंटो से अधिक प्यार करता हो ? वह बहुत अधिक उत्सुक था कि हम गाँव के साथ-साथ ही बढें। उसने स्वय भी ऐसा फैसला किया था। उसे पूरा विश्वास था कि ये आदिवासी मिलन के निश्चित स्थान पर कभी जमा नही हो पाएँगे। उसने यह भी कहा कि हमारी गाडी और सामान के लिए इन पहाडियो मे से होकर गुज़रना अधिक आसान रहेगा। उसे इस मामले मे कुछ अधिक पता नही था। न तो वह ही और न हम गोरो मे से कोई और ही उन कठिन रास्तो से परिचित था, जिनमे से होकर इन आदिवासियो ने जाने का निश्चय किया था। बाद मे जब मै उधर से गुज़रा तब मुझे अपने दुखी घोडे को तग घाटियो और धूप के दर्शन न पा सकने वाले घने छोटे वनो मे से गुजरने पर मजबूर करना पडा। हमारी गाडी बहुत आसानी से 'पाइक' की चोटी तक चढ सकती थी। पर हम इस बात से अनजान थे। मिलन के निश्चित स्थान की ओर जाने मे कठिनाइयो और अनिश्चय के कारण हमने यह अधिक अच्छा समझा कि आधी छोड सारी को धावे, वाली कहावत के अनुसार हमे इन लोगो के साथ ही चलना चाहिए।

आदिवासियो और हम लोगो के डेरे पहली जुलाई की सुबह ही उखाड लिए गए। मै बहुत अधिक कमजोर था। थोडी-थोडी देर बाद कुछ चमचे शराब पीकर ही मै घोडे पर बैठकर उस दिन की यात्रा के लिए समर्थ हो सका। हम से आधा मील आगे और आधा ही मील पीछे तक का यह रेतीला मैदान चलते हुए आदिवासियो के जत्थो से घिरा हुआ था। सामने का उजाड, कटा-फटा मैदान दायें और बायें बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर सामने की ओर ब्लैक हिल्ज़ नाम की पहाडियाँ दिखाई दे रही थी। हम भारी बोझे से लदी गाडियो और बुरी तरह लदे हुए लादू घोडो, पैदल चलती बूढी औरतो, घुडसवार जवान औरतो, अशात बच्चो और सफेद खाल ओढे बूढे आदमियो

के पास से होते हुए इस बिखरे हुए जत्थे के आगे तक पहुँच गए । कुछ जवान योद्धा बहुत अच्छे घोडो पर चढे हुए थे । हेनरी ने पीछे की ओर दूर मैदान में देखते हुए कहा कि कोई घुडसवार हमारी ओर आ रहा है । सच यह था कि हमने अपनी ओर बढती हुई एक हल्की सी आकृति सामने के एक टीले पर आती हुई देखी, मानो किसी दीवार पर कोई मक्खी चल रही हो । धीरे-धीरे हमारी ओर बढते हुए यह काला दाग बढ़ने लगा ।

हेनरी ने कहा, "मुझे लगता है कि यह कोई गोरा है । इसके चढने का ढंग देखो ! आदिवासी इस तरह नही चढ़ते । हाँ, उसने अपनी बन्दूक अपने आगे काठी पर अवश्य रखी हुई है ।"

वह घुडसवार मैदान के एक खड्ड मे छिप गया । तुरन्त ही वह फिर से दिखाई देने लगा और आदिवासियो की भीड़ मे होता हुआ हमारी तरफ बढ आया । उसके लम्बे बाल हवा मे पीछे की ओर उड रहे थे । हमने उसके चेहरे और उसकी पुरानी हिरन की खाल की पोशाक से पहचान लिया कि वह पशु-फँसाने वाला गिगास ही था । वह अभी-अभी लारामी किले से ही आ रहा था और हमारे लिए सदेश लाया था । हेनरी के मित्रो मे से बिसोनेत नाम का एक व्यापारी इन्ही दिनो हमारे इलाके से आया था । उसका इरादा कुछ लोगो के साथ लावोते नाम के डेरे की ओर जाने का था । गिग्रास ने हमे बताया कि वहाँ कम-से-कम दस बारह गाँवो के आदिवासी अवश्य इकट्ठे होगे । बिसोनेत चाहता था कि हम भी नदी पार करके उनसे वहाँ जा मिलें । हमारे घोडो और सामान की देखभाल करने का भी उसने विश्वास दिलाया, क्योकि हमने आदिवासियो के साथ आगे जाना था । शॉ और मैने अपने घोडे रोके और कुछ देर विचार किया । न जाने किस बुरी घड़ी मे हमने उस ओर जाने का निश्चय किया ।

उस सारे दिन हमारा और आदिवासियो का रास्ता एक ही रहा । एक घण्टे से भी कुछ कम समय में ही हम उस जगह पहुँच गये, जहाँ इस उजाड़ और ऊसर मैदान के अन्त में एकदम सीधी ढलान आ जाती है । इसके किनारे खडे होकर हमने देखा कि सामने एक बहुत बडी चरागाह थी । लारामी धारा यहाँ से बाईं ओर को मुड़ जाती थी । यहाँ से आगे वह गहराइयो मे से होती हुई, अपने उथले पानी के साथ बढ गई थी । हम घोड़ो की पीठ पर बैठे हुए

तब तक प्रतीक्षा करते रहे और देखते रहे, जब तक उन आदिवसियो का पूरा का पूरा गाँव ही धीरे-धीरे नीचे उतर कर चरागाह मे न फैल गया। कुछ ही देर मे वह सारा मैदान अनेको प्राणियो की हलचल से भर गया। उनमे से कुछ साफ दिखाई दे रहे थे और कुछ बहुत ही धुँधले से दीख रहे थे। कुछ लोग बहुत जल्दी मे अब भी धारा पार कर रहे थे। ऊँचाई के इन किनारो पर कुछ बडी उमर के योद्धाओ का एक दल तम्बाकू पीता हुआ और इस सुन्दर दृश्य को स्थिर निगाहो से देखता हुआ बैठा था।

धारा के किनारे-किनारे, एक घेरे के रूप मे, तुरन्त ही तम्बू खडे हो गये। शान्त रहने की इच्छा से हमने लगभग आधा मील दूर डेरा गाडा। दोपहर के बाद हम गाँव की ओर गये। दिन बहुत ही शुभ था। सारा गाँव बहुत अधिक काम मे जुटा हुआ और हमारे लिये सहानुभूति से भरा हुआ लग रहा था। बच्चो और छोटी लडकियो की टोलियाँ खूब हँस खेल रही थी। ढालें, भाले और धनुष उन तिपाइयो से उतार लिए थे, जिन पर वे मकानो के सामने ही टँगे रखे थे। योद्धा लोग घोडों पर सवार होकर पास की पहाडियो की ओर एक-एक करके निकलने शुरू हो गये।

शॉ और मैं रेनल के मकान के पास ही हरी घास पर बैठे थे। तभी एक बुढिया अपनी प्रथा के अनुसार उबले हुए हिरण के मास का प्याला भर कर ले आई। हम कुछ जवान स्त्रियो को आँखमिचौनी खेलते देखते रहे। तभी पास की पहाडियो मे से चीखती हुई युद्ध की तरह की आवाजें आने लगी। घुडसवारो की एक टोली गाँव की तरफ पूरी तेजी के साथ दौडती हुई आई। उनके बाल हवा मे इस तरह उड रहे थे, जैसे किसी जहाज की चिमनी मे से भाप निकल रही हो। पास आने पर वे ठीक तरह से बँट कर दो-दो करके आने लगे और कुछ दूरी पर एक घेरा बाँध कर खडे हो गये। हर एक योद्धा अपनी-अपनी जगह पर ही युद्ध का गीत गा रहा था। उनमे से कुछ की पोशाकें बहुत ही अच्छी थी। उन्होने पखो के कालर वाले कपडे पहने हुए थे। ये कपडे हिरण की खाल से बनाए हुए थे। इनके किनारे की झालरें शत्रुओ के सिर के बालो के गुच्छो से बनी हुई थी। बहुतो की ढाल पर भी सुनहरी चीलो के पख लगे हुए थे। सबके धनुष और बाण पीठ पर बँधे हुए थे। कुछ लम्बे भाले या बन्दूकें अपने हाथो मे पकडी हुई थी। उनका नेता 'सफेद

खल' बहुत ही सुन्दर चमकदार पोशाक पहने उनके आगे खडा था। उसका घोडा सफेद और काले रग का था। महतो के भाइयो ने इस तैयारी मे हिस्सा न लिया, क्योकि वे अपनी वहिन की मृत्यु का शोक मना रहे थे और अब भी अपने डेरे मे बैठे थे। उन सब के शरीर सफेद मिट्टी से पुते हुए थे और उनके माथे पर से कुछ बाल कटे हुए थे।

योद्धा लोग गाँव के चारो ओर तीन बार परिक्रमा के लिये गये। ज्यो-ज्यो कोई प्रसिद्ध वीर सामने से गुजरता, बूढी स्त्रियाँ उसका नाम लेकर उसकी वीरता का बखान करती और नये योद्धाओ को उनके अनुकरण के लिए हौसला देती। इस जलूस के पीछे दो साल से भी कम आयु के बच्चे अपने कबीले के वीर योद्धाओ की प्रशसा करते हुए चल रहे थे।

यह सारा जलूस वैसे ही गाँव से बाहर निकल गया जैसे अन्दर आया था। आधे ही घण्टे बाद यह फिर से गाँव मे लौट आया। पर, अब एक-एक योद्धा चुपचाप आता गया।

यह सब समाप्त होने के बाद हमे आदिवासियो की गृहस्थी का एक नया नजारा देखने को मिला। एक चुड़ैल-सी औरत बहुत गुस्से मे भर कर अपने पति का अपमान कर रही थी। उसका पति मकान के बीचो-बीच निश्चिन्त होकर तम्बाकू पीता हुआ चौकडी मारे बैठा था। बहुत देर बाद उसकी चुप्पी के कारण पागलपन मे आकर उस औरत ने तम्बू की बल्लियाँ उखाड डाली और धीरे-धीरे सारा मकान पति के सिर पर गिरने लगा। वह इस सब के बीच दब गया। उसने इन चीजो को हटा कर अपना सिर बाहर निकाला। अब भी वह पहले जैसे ही निश्चिन्त होकर तम्बाकू पी रहा था। पर, अब उसकी आँखो मे एक शरारत खेल रही थी। उसकी औरत उसे कोसती हुई अपना घोडा तैयार करने के लिए बढी। वह उसे पार करती हुई डेरे से बाहर नही निकल गई। शायद वह अपने पिता के घर जाना चाहती थी, चाहे वह और कही न जा चुका हो। वह योद्धा चुपचाप उठा और अपने को उस सब गडबड़-झाले से अलग करके उसने बालो की एक रस्सी अपने लादू घोडे के जबडे पर बाँधी और एक बडी बल्ली के आखिरी हिस्से को तोडकर चार फुट लम्बा एक डण्डा हाथ मे ले लिया। भैसे पर चढ कर वह तेजी से मैदान की ओर निकल चला, ताकि अपनी साथिन को काबू मे ला सके।

अगली सुबह सूरज चढने पर हमने चरागाह के पार देखा। आदिवासियो के मकान गिराये जा चुके थे और वे लोग डेरा छोडने की तैयारी कर रहे थे। उनका रास्ता पश्चिम की ओर था। हम अपने तीनो आदमियो के साथ उत्तर की ओर बढे। चार पशु-फँसाने वाले और मोरे का परिवार भी हमारे साथ ही था। रात तक हम चलते रहे और एक छोटे से झरने के पास के पेडो मे हमने डेरा डाला। यहाँ सारे दिन भर बिसोनेत की प्रतीक्षा करते रहे, पर वह न दिखाई दिया। यहाँ से हमारे साथियो मे से दो पशु-फँसाने वाले हमसे विदा हुए और राकी पर्वतो की ओर चले गए। अगली सुबह बिसोनेत को न आता देखकर निराशा मे हमने अपना सफर फिर से शुरू कर दिया। हमारा रास्ता एकान्त, उजाड और धूप से झुलसे हुए मैदानो मे से होकर गुजर रहा था। एक भी जीवित वस्तु नज़र मे नही आ रही थी। कही-कही कोई हिरण अवश्य दिखाई दे जाता था, पर वह भी तीर की भाँति निकल जाता था। दोपहर के समय हमे एक बहुत ही अच्छा और दुर्लभ नज़ारा दिखाई दिया। बहुत से पेड एक धारा के किनारे उगे हुए थे। इस धारा का नाम 'हौर्सशू' धारा था। पेड कुछ दूरी तक खूब पत्तो से ढके हुए थे। उनके नीचे काफी घनी और ऊँची घास उगी हुई थी। धारा बहुत तेज़ी से बह रही थी। उसका पानी बहुत साफ था। इसके नीचे की रेत साफ चमक रही थी। पेडो से भरी घाटियो से गुज़रती हुई यह धारा गहरे रग की हो उठी थी। मै एकदम थका हुआ था। इसलिये हार कर मै ज़मीन पर लेट गया।

सुबह सूर्य बहुत ही सुहावने रूप मे निकला। ऐसा आनन्द इस मैदान पर हमेशा ही छा जाता होगा। हम लोग आगे बढे और जल्दी ही हमारे चारो ओर ऊँची नगी पहाडियाँ नज़र आने लगी। इन पर कहीं-कही नाशपातियो और थोहर आदि के पौधे लगे हुए थे और वह दूर से छिपकलियो जैसे लग रहे थे। सामने मैदान भी था, जिस पर न तो घास ही अधिक थी और न ही जो मुलायम थी। इस पर बुरे लगने वाले ऊँचे पेडो की एक कतार खडी थी, जिस से एक सीमा-रेखा-सी बन गई थी। वहाँ किसी मनुष्य या जानवर का नामो-निशान भी मालूम न पडता था और ना ही किसी जीवित वस्तु का। हालाँकि, इस स्थान पर ही वह जगह थी, जहाँ आदिवासियो के सारे गाँवो ने जमा होना था। हमे यहाँ हज़ारो आदिवासियो से मिलने की आशा थी। हमने चारों ओर

बहुत ध्यान से देखना और सुनना शुरू किया। हमने पूरी तेजी के साथ अपने घोडो को सामने के पेड़ो में से बढने के लिये मजबूर किया। सामने बहुत दूर तक छोटे-छोटे पेड फैले हुए थे। उनके बीच से होकर एक पतली-सी धारा वह रही थी। हम झुकी हुई शाखाओ को हटाते हुए आगे बढने लगे। अब दाएँ-बाएँ सभी ओर हिरण कूदने लगे। बहुत देर बाद हमें सामने का मैदान दिखाई दिया और हम इस पर बढ आये। हमें एक भी डेरा या कोई और जीता-जागता निशान न दिखाई दिया। चारो ओर मीलो दूर तक रेगिस्तान ही फैला हुआ दिखाई दे रहा था। एक भी झाडी, पेड़ या पशु नज़र नही आ रहा था। हमने लगामे खीची और आदिवासियो के विरुद्ध अपने भाव प्रगट किये। हमारी यात्रा बुरी तरह व्यर्थ हुई। मेरे लिये तो यह और भी बुरी पड़ी। क्योकि, मै जानता था कि मेरी सेहत मे थोडी गडबड़ भी बहुत भयानक सिद्ध होगी और इस प्रकार मै अपने उस उद्देश्य में सफल न हो सकूँगा, जिसके लिये तीन-चार हज़ार की मील की दूरी तै करके मै यहाँ तक आया था।

फिर आदिवासी कहाँ थे ? वे लोग यहाँ से लगभग बीस मील दूर एक स्थान पर बहुत बडी सख्या मे जमा होकर युद्ध के नाच आदि कर रहे थे। शायद इस जगह पर भैंसो की कमी के कारण वे नही आये थे। भैंसो की खालो और मास से ही उनका सारे साल का काम चलता था। इसलिये उन्हें यहाँ इकट्ठा होने मे लाभ न दिखाई दिया। यह सब बात हमे बहुत दिन बाद पता चली।

शॉ ने अपने घोड़े को एड लगाई और आगे की ओर निकल गया। मैं उससे भी अधिक उतावला था। पर मै यह सब कुछ करने की शक्ति से हीन था। इसलिये मै धीमी चाल से बढने लगा। हम एक अकेले पुराने पेड़ तक पहुँच गये। यही एक-मात्र जगह थी, जहाँ हम डेरा डाल सकते थे। इसकी आधी से अधिक शाखाएँ मुरझा चुकी थी। बाकी शाखाओ पर बहुत ही थोड़े पत्ते रह गए थे। इस कारण छाया भी बहुत थोडी थी। हमने अपनी काठियाँ तने की छाया मे डाल दी और उन पर बैठ गये। इसी तरह हम एक-दो घण्टे तक छाया के साथ-साथ अपनी काठियाँ सरकाते हुए बैठे रहे। धूप अब भी बहुत तेज़ थी।

—. ० —

१३ : आदिवासियों की शिकार-यात्रा

अन्त मे हम ताबोते नाम के डेरे पर पहुँच गए। इस ओर हमारी आँखे न जाने कब से लगी हुई थी। उस दिन दोपहर और साँझ के बीच मे जितना भी चिन्ता भरा समय बीता, वह हमारी बेचैनी से भरा हुआ था। मै एक पेड के नीचे लेटा हुआ सोच रहा था कि अब आगे क्या किया जाए? मेरी निगाह छाया और सूर्य पर टिकी हुई थी। लगता था, दोनो ही न हिलने की कसम खा चुके थे। हर क्षण यह उम्मीद जगती थी कि व्यापारी बिसोनेत और उसके साथियो के डेरे इसी समय जगलो से निकल कर बाहर आते दिखाई देंगे। शॉ और हेनरी उनका पता लेने के लिए कुछ दूर तक बढ गए थे। वे सूर्य छिपने से पहले न लौट पाए। जब वे लौटे तो उनके चेहरे प्रसन्न न थे।

शॉ ने बताया, "हम यहाँ से दस मील दूर तक गए और सबसे ऊँची जगह पर चढ गए। परन्तु न तो हमे कोई भैसा दिखाई दिया और न कोई आदिवासी। हाँ, हमारे चारो ओर बीस-बीस मील तक केवल मैदान ही मैदान नजर आता था। हेनरी का घोडा खड्डो और खाइयो मे चढने उतरने के कारण नाकाम हो गया था। शॉ का घोडा भी बहुत अधिक थक गया था।

शाम के भोजन के बाद हम आग के चारो ओर इकट्ठे हुए। मैने शॉ से एक दिन और प्रतीक्षा करने की प्रार्थना की। मुझे आशा थी कि शायद बिसोनेत आ जाए। अगर तब भी वह न आया तब हम देस्लारियर को सामान और गाडी के साथ लारामी किले मे ही वापिस भेज देंगे और हम स्वय 'बवंडर' के गाँव की ओर चल पड़ेंगे। हमारा यत्न होगा कि हम इसे पहाडो मे से गुज़रते हुए ही पकड लें। शॉ ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वह आदिवासियो के शिकार को देखने के लिए उतना उत्सुक न था। तब मैंने अकेले ही इस राह पर बढने का फैसला किया। यह बात मैने बडे अनमने ढग से स्वीकार की, क्योकि मुझे पता था कि मेरी इस कमजोर हालत मे ऐसा प्रयत्न बडा दुखदायी और हानि देने वाला साबित होगा। मुझे आशा थी कि, अगले ही दिन बिसोनेत आ जाएगा और हमारा रास्ता तय करने के लायक कोई

खास खबर देगा। इस प्रकार मै अपने उद्देश्य को अधिक अच्छी तरह पूरा कर सकूँगा।

मेरे न रहने पर हेनरी और उसकी राईफल दल की रक्षा के लिए अधिक ज़रूरी थे। इसलिए मैने रेमड को बुलाकर अपने साथ चलने के लिए कहा। रेमड चारो ओर सूनी-सी निगाहें दौड़ाने लगा। अन्त मे उसे कुछ सूझा और वह अपनी गाडी के नीचे बिछे बिस्तर की ओर बढ गया। उसका शरीर कुछ भारी था और चेहरा चौडा। उसके चेहरे पर बहुत मूर्खता-सी झलकती दिखाई देती थी। पर साथ ही उसे अपने पर विश्वास भी बहुत अधिक था। उसके अच्छे गुणो मे सबसे बडी बातें थी उसकी अत्यधिक दृढता, खतरे के प्रति निडरता और उसकी सूझ, जो कभी-कभी उसे अच्छे-अच्छे समझदार लोगो से भी ज्यादा तेज अक्ल वाला साबित कर देती थी। इस सब के अलावा उसे राइफल चलाना और घोडे को सम्हालना वगैरह भी आता था।

अगले सारे दिन बहुत तेज धूप तपती रही। बहुत दूर तक मैदान मृग-तृष्णा के जाल मे पडा हुआ काँप-सा रहा था। हमारे आदिवासियो का तम्बू इन तपती किरणो मे ही तना हुआ था। हमारी बन्दूकें पेडो के साथ टिकी हुई थी। पर, यह सभी कुछ बुरी तरह झुलसा हुआ-सा लग रहा था। सारे डेरे मे बहुत अधिक शान्ति छाई हुई थी। कभी-कभी मच्छरो या भूण्डो के भिनभिनाने के कारण यह चुप्पी टूट जाती थी। आदमी अपनी बाहो पर सिर टिकाए गाडियो के नीचे सो रहे थे। नये विवाहित पति-पत्नी को छोड कर बाकी सारे आदिवासी अपने तम्बू मे ही लेटे हुए थे। यह नया जोडा कुछ दूर पर एक चादर सी तान कर उसके नीचे बैठा हुआ था। इनको छोड कर एक और बहुत कमजोर-सा वृढा, पेड पर ऊँचे चढकर बैठा हुआ था और अचानक ही आ जाने वाले शत्रुओ को चौकन्ना होकर खोज रहा था। हमने भोजन किया और तब शॉ ने अपने घोडे की काठी कसी।

वह बोला, "मै अभी हौर्सशू धारा तक जाकर वापिस आता हूँ। देखूँ, शायद बिसोनेत वहाँ हो।"

मैने उत्तर दिया, "मै भी तुम्हारे साथ चलता, पर, मुझे अपनी बची-खुची ताकत को बचाकर रखना है।"

आखिर साँझ भी आई। मै उस सारे समय अपनी राईफल और पिस्तौलो को साफ करने मे और यात्रा की दूसरी तैयारियो मे लगा रहा। बहुत देर बाद मै सो पाया। शॉ अब तक भी नही लौटा था। पर इससे हमे कुछ बेचैनी न हुई, क्योंकि हमे लगा कि वह विसोनेत से मिल गया होगा और रात भर उसके साथ ही रहेगा। पिछले एक-दो दिन से मेरी सेहत और ताकत कुछ ठीक हो गई थी। पर आधी रात के समय दर्द का फिर एक दौरा पडा और मैं कुछ घण्टो तक सो न सका। प्लाट् के इस मैदान पर चमकता हुआ चाँद काँपता-सा लग रहा था। बहुत दूर पर अस्पष्ट-सी आवाज़ो को छोडकर और कुछ भी सुनाई न दे रहा था। ये अस्पष्ट आवाज़ें जैसे किसी काना-फूसी और घोड़ो की हल्की-हल्की टाप की हो। इन मैदानो मे ऐसी आवाज़ें सुनाई देना मामूली बात है। अभी मैं फिर से सोने ही लगा था कि बहुत दूर से एक पहचानी सी आवाज़ सुनाई दी। एक बहुत तेज़ चाल से कोई डेरे तक आया। यह शॉ ही था, जो नगे पाँव अपने हाथ मे बन्दूक लिए तेज़ी से डेरे मे घुसा।

मैने पूछा, "तुम्हारे घोडे का क्या हुआ?" मै बहुत कठिनता से कोहनी का सहारा लेकर उठ पाया। शॉ ने उत्तर दिया, "गुम हो गया! पर, देस्लारियर कहाँ है?"

मैने कुछ दूरी पर कम्बलो और खालो के ढेर की ओर इशारा करते हुए बताया, "वहाँ।"

शॉ ने वहाँ जाकर अपनी बन्दूक के कुन्दे से छेड-खानी की। वफादार कनाडा-निवासी उछल पडा। शॉ बोला, "उठो, देस्लारियर! ज़रा आग तेज़ करो और मेरे खाने के लिए कोई चीज़ तैयार करो।"

मैने पूछा, "बिसोनेत कहाँ है?"

"भगवान् जाने! उस धारा पर तो कोई भी नही है।"

शॉ वहाँ तक गया था, जहाँ हमने आज से दो दिन पहले डेरा डाला था। वहाँ हमारी ही जलाई आग की राख के अलावा कुछ और न पाकर, उसने अपना घोडा एक पेड से बाँध दिया और खुद नदी में नहाने के लिए उतर गया। अचानक ही उसका घोडा किसी कारण चौंक गया और रस्सी तुडाकर भाग निकला। शॉ ने दो घण्टे तक उसका पीछा किया पर व्यर्थ। साँझ होने लगी। डेरा अभी बारह मील था। उसने अपनी कोशिश छोड़ दी और हमारी

ओर पैदल ही निकल पडा। उसे अपनी इस भयंकर पैदल यात्रा का अधिक हिस्सा अँधेरे मे ही बिताना पडा। उसके जूते चिथडे-चिथडे हो गए थे और उसके पाँव बहुत अधिक घायल हो गए थे। वह खाना खाने के लिए बैठा। हमेशा की भाँति उसके चेहरे पर शान्ति मौजूद थी। नीद आने से पहले मैने देखा वह आग के आगे चौकडी मारे बैठा तम्बाकू पी रहा था।

जब मै जागा, हवा में फिर से एक सिलाब-सी अनुभव हो रही थी। मैदान पर कुछ धु धलका-सा छाया था और पूर्व में कुछ लाल धारें फूटती दिखाई दे रही थी। मैने लोगो को पुकारा और कुछ ही देर मे आग तेजी से जलने लगी। नाश्ता तैयार हो गया था। हम घास पर साथ-साथ ही बैठे। अगले बहुत दिनो के लिए सभ्य लोगो के साथ बैठकर खाना खाने का यह मौका अन्तिम ही था।

"अच्छा अब घोडे ले आओ।"

मेरी ठिगनी घोडी पाली जल्दी ही आग के पास आ खडी हुई। वह बहुत ही मजबूत, कठोर, परन्तु सभ्य, जानवर थी। उसका नाम 'पाल दोरियो' के नाम के कारण रक्खा गया था। इसे मैने उससे ही पौंटियक के बदले में पाया था। वह सवेरे की सैर के लिए सजी हुई न दीखती थी, बल्कि उस पर ऊँचे किनारो वाली पहाडी काठी रक्खी हुई थी। उसकी बगलो मे लटकने वाली थैलियाँ भारी पिस्तौलो से भरी हुई थी। उसके दोनो ओर दो बोरियाँ लटक रही थी। एक कम्बल लपेट कर पीछे बाँधा हुआ था। साथ ही आदिवासियो के लिये भेंटे एक खाल मे बाँध दी गई थी। चमडे के एक थैले मे आटा और एक छोटी थैली में चाय भरी हुई थी। ये सब चीजें काठी के पीछे की ओर बाँधी गई थी। उसकी गर्दन के सहारे एक खोजी रस्सी भी बँधी हुई थी। रेमंड के पास एक मजबूत काला खच्चर था, जो इसी प्रकार सजा और लदा हुआ था। हमने अपने बारूद के डिब्बे गले के साथ लटका लिये और घोडो पर चढ गए।

मैने शॉ से कहा, "तुम्हे पहली अगस्त के दिन लारामी किले मे मिलूँगा।"

उसने उत्तर दिया "अच्छा यही सही। हो सकता है कि हम उससे पहले मिल जाएँ। मेरा विचार है कि एक या दो दिन मे मै भी तुम्हारे पीछे-पीछे आ जाऊँगा।"

उसने ऐसा प्रयत्न भी किया। अगर उसके रास्ते मे दिल तोड देने वाली बाधाएँ न आ जाती, तो वह मुझसे मिल भी जाता। दो दिन बाद उसने देस्लारियर को गाडी और सामान के साथ किले की ओर लौटा दिया और खुद पहाडो की ओर हेनरी के साथ चल पडा। पर उसी समय एक बहुत जबर्दस्त आँधी और तूफान आ टूटा। इसके कारण हमारे ही नही आदिवासियो तक के पाँव के निशान तक मिट गए। वे दोनो पहाडो की तलहटी मे रुके पर अगला रास्ता न खोज पाए। सुबह होते ही शॉ ने अनुभव किया कि विष-भरे एक पौधे का उस पर असर हो गया है। इसके कारण उसके लिये अगली यात्रा करना असम्भव हो गया। अब वे किले की ओर बहुत अनमने ढग से वापिस लौटे। वहाँ एक हफ्ते तक शॉ बहुत अधिक बीमार रहा और जब तक मैं लौटकर उससे न मिला, वह वही टिका रहा।

अपनी यात्रा पर निकलने के पहले मैने और रेमड ने अपने साथियो से हाथ मिलाए और विदा ली। हम मैदान पर, पहाडो की ऊँचाइयो और ढलानो पर, और छोटी-मोटी पहाडियो पर चढते-उतरते आगे बढ निकले। सभी स्थान धूप के मारे बुरी तरह जल रहे थे। धूप से सूख कर मानो यह सारा इलाका बहुत-सी खड्डो और खाइयो मे फट गया था। परन्तु, यह सब भी हमारे रास्ते मे अधिक रुकावट न डाल सका। इनकी ढलानें एकदम नगी और ऊबड-खाबड थी। तले पर जाकर हमे बहुत बार काले रीछो के निशान बहुत बडी सख्या मे मिले। इतनी बडी सख्या मे इस इलाके मे ये कही और नही दिखाई देते थे। पहाडो की चोटियाँ चट्टानो के समान कठोर थी और इन पर चकमक और लाल पत्थर बहुत ज्यादा पाए जाते थे। वहाँ से देखने पर रेगिस्तान चारो ओर एक समान फैला हुआ दीखता था। कही-कही किसी घाटी के किनारे चीड का एक-आध पेड अपनी शाखाएँ फैलाए नजर आ जाता था। इसकी राल की सुगन्ध हमे न्यू इगलैड के चीडो से भरे पहाडो की याद दिलाने लगी। मै बहुत अधिक प्यासा था और चाहता था कि इन पहाडियो मे भी हमे वैसे ही बहते हुए झरने मिल जाएँ, जो हमारे इलाके की हजारो पहाडियो मे मिलते है। मै कल्पनाओ मे ही चट्टानो की छाया मे बैठा हुआ अपने को धाराओ मे नहाता और डुबकियाँ लेता अनुभव करता। परन्तु वे कल्पनाएँ जैसे दूर से दूर होती चली जाती थी। मुझे चट्टानें काली पडती

दिखाई देने लगी जैसे उन पर लगी काई से हल्की-हल्की बूँदे टपक रही हो।

दोपहर के समय एक छोटी-सी धारा दिखाई दी। इसके किनारे कुछ पेड और झाडियाँ खडी थी। यहाँ हमने घण्टा भर आराम किया। यहाँ से सूर्य की दिशा मे ही हम साँझ तक बढते रहे। तब हम एक और धारा के किनारे पहुँचे। इसका नाम 'बिटर कॉटनवुड' धारा था। यहाँ झाडियो और पुराने पेडो का काफी घना जगल-सा था। थोडी-थोडी दूर पर इसी प्रकार के झुंड मिल जाते थे। एक पेड की जड मे हमने अपनी काठियाँ टिकाईं और घोडो के पाँवो मे रस्सी बाँध कर हमने उन्हें चरने के लिए छोड दिया। यह छोटी-सी धारा बहुत तेज और साफ थी। सफेद रेत पर बहती हुई इस धारा की आवाज सगीत की भाँति उठ रही थी। छोटे जल-पक्षी उथले पानी मे खेलते हुए अपनी आवाज और फडफडाहट से उस सारी हवा को ही गुजा रहे थे। लारामी पर्वत के पीछे सुनहरे और लाल बादलो के बीच सूरज डूबने ही वाला था। मैं एक लट्ठे पर पानी के किनारे ही लेटा हुआ गहरे पानी में छोटी-छोटी मछलियो की अशान्त हलचल को देख रहा था। यह बात अजीब लगती है। पर मुझे ऐसा लगा कि जैसे सुबह से अब तक मैने कुछ और ताकत पा ली है और मेरी सेहत लौटने लगी है।

हमने आग जलाई। रात आने पर भेडियो ने चिल्लाना शुरू किया। पहले एक गहरी आवाज उठी और तब उसके उत्तर आस-पास की पहाडियो, मैदानो और जगलो से बडे भद्दे रूप मे दिया जाने लगा। इन मैदानो में ये आवाजें किसी की भी नीद खराब नही करती। हमने घोडी और खच्चर को पास ही बाँध लिया और सुबह होने तक सोते रहे। तब हमने उन्हें फिर चरने के लिए खोल दिया। उनके पाँव अब भी बँधे हुए थे। अभी हम नाश्ता खाने के लिए तैयार हुए ही थे कि रेमड को कुछ दूरी पर एक हिरण दिखाई दे गया। वह उसके शिकार के लिए उत्सुक हो उठा।

मैने कहा; तुम्हारा काम पशुओ की देखभाल करना है। मैं बहुत कुछ नही कर सकता, क्योकि मै बहुत कमजोर हूँ। अगर पशुओ को कुछ हो गया तो तुम्हारी जिम्मेवारी होगी। तुम जहाँ भी जाओ, तुम्हारी निगाह डेरे पर ही रहनी चाहिए।

रेमड ने डेरे के आस-पास ही रहने का वायदा किया और बन्दूक हाथ में

ले निकल पडा। घोड़ी और खच्चर ने धारा पार की और वही लम्बी घास के बीच दूसरे किनारे पर चलने लगे। उन्हें हरे रग के सिर वाली मक्खियाँ बहुत सताने लगी। मैने उन्हें देखा कि वे एक ओर गहरे खड्ड में उतर गए और फिर बहुत देर तक न लौटे। मै भी धारा के पास उन्हें देखने के लिए गया। किन्तु मेरी चिन्ता बढ गई। मैंने उन्हें बहुत दूरी पर पूरी तेज़ी के साथ दूसरी ओर भागते हुए पाया। पाली आगे-आगे दौड रही थी। उसके पाँवो की रस्सियाँ टूट चुकी थी। खच्चर अपने बँधे पाँवो से भी भाग रहा था। मैने गोली दाग़ी और रेमड को आवाज़ दी। कुछ ही क्षण मे वह नदी पार करके भागता हुआ आया। उसके गले मे लाल रूमाल बँधा हुआ था। मैंने भागने वाले इन विद्रोही पशुओ की ओर इशारा किया और उनका पीछा करने को कहा। वह उन्हें मन-ही-मन गाली देता हुआ उनके पीछे पूरी तेज़ी से भागा। उसकी बन्दूक अब भी उसके हाथ मे लटक रही थी। मै एक पहाडी तक चढ गया और मैदान की ओर देखने लगा। मै भागने वाले उन जानवरो को अब भी ठीक तरह देख रहा था। अपनी आग के पास लौटकर, मै एक पेड की जड के पास बैठ गया। चिन्तित और कमज़ोर हालत में ही मैने कई घटे गुज़ार दिए। मेरे पास के वृक्ष की उतरी हुई छाल हवा के साथ ही आगे-पीछे उड रही थी और चारो ओर हल्की-हल्की आवाज मे मच्छर भिन-भिना रहे थे। परन्तु इन दोनो के अलावा कोई और चीज़ दिखाई या सुनाई न दे रही थी। सूरज ऊपर-से-ऊपर उठता गया। मुझे तब ध्यान आया कि दोपहर हो चुकी है। अब यह सम्भव नही दीखता था कि पशु फिर से पाए जा सकेंगे। और, अगर वे न पाए गए तो मेरी हालत और भी बिगड जाएगी। जिस दिन मैं विदा हुआ था, शॉ ने उसी सवेरे चले जाने का फैसला किया था। पर पता नही उसने किधर जाने का फैसला किया होगा? उसकी खोज-बीन करने का प्रयत्न व्यर्थ ही होगा। लारामी का किला यहाँ से चालीस मील दूर था। मेरे लिए जैसे-तैसे एक मील चल पाना भी बहुत काफी था। इसलिए यह सोच कर कि 'कठिन-से-कठिन आपत्ति और बाधा के सामने भी नही झुकना चाहिए', मैने यह निश्चय किया कि आदिवासियो के पीछे चलना ही अधिक उचित है। मेरे दिमाग़ मे एक ही बात आई कि रेमड को भेज कर किले से कुछ और घोडे मँगवा लिए जाएँ और तब तक उसी जगह रहकर उसके

लौटने की इन्तजार करूँ। शायद इस सब मे तीन दिन लग जाएँगे। पर, इन तीन दिनो तक अकेले एक जगह पर टिके रहना कतई उचित न होता, क्योकि यह इलाका आदिवासियो का सबसे खतरनाक इलाका था। इस तरह आदिवासियो के पीछे चलने का मेरा उद्देश्य इस बात से कितना पीछे पड जाता और उसके क्या परिणाम होते, यह कहना भी कठिन है। इन बातो का विचार करते हुए मुझे भूख लगने लगी। हमारे पास भोजन की सामग्री के नाम पर कुल दो-ढाई सेर आटा ही बच गया था। इसलिए मै किसी शिकार की खोज में बाहर निकला। चार या पाँच कर्लयू पक्षियो को छोड़कर कुछ और न दिखाई दिया। वे मेरे सिर पर मँडराते और कभी मैदान मे उतर आते। मैने उनमे से दो पक्षी मार गिराए और लौटने की तैयरी करने लगा। तभी अचानक चौका देने वाल कोई चीज़ मेरी निगाह मे आई। आदमी के सिर की तरह की कोई काली-सी चीज़ अचानक ही सामने आकर, धारा के किनारे की झाडियो मे, फिर से छिप गई। ऐसे इलाके मे हर अजनबी शत्रु ही लगता है। मैने उधर ही गोली दाग दी। एक ही क्षण में झाडियो मे बहुत तेज़ हलचल हुई। दो सिर सामने दिखाई दिए। पर, ये मनुष्य के सिर नही थे। मैने पहचान कर देखा कि दोनो हमारे अपने ही जानवर घोडी और खच्चर थे, जो लौटकर आ रहे थे। रेमड खच्चर पर सवार था। वह बहुत ही मुर्झा गया था और उसकी छाती मे बहुत तेज दर्द उठने लगी थी। मैने पशुओ को सँभाल लिया और वह घुटने के बल झुककर धारा मे से पानी पीने लगा। वह दस मील दूरी पर स्थित लारामी धारा तक पशुओ पर निगाह रखता हुआ आगे बढा और वहाँ पहुँच कर बहुत कठिनता से उन्हें पकडने मे सफल हुआ। मैने देखा कि उसके हाथ खाली थे। मैने उससे पूछा कि उसने बन्दूक को क्या किया ? उसने बताया कि पीछा करते हुए यह उसे कष्ट देने लगी थी। इसलिए उसने इसे मैदान पर ही रख दिया और सोचा कि लौटते हुए इसे खोज लेगा। पर, लौटते समय वह उसे न खोज पाया। यह हानि बहुत बुरी साबित होती। मुझे इस बात की खुशी थी कि पशु मिल गए थे और रेमड की स्वामिभक्ति की भी प्रसन्नता थी। वह चाहता तो खुद भी पशुओ के साथ भाग जाता। मैने उसके लिए थोड़ी चाय तैयार की और बताया कि फिर दुबारा निकल चलने से पहले वह दो घटे तक आराम कर सकता

है। उस दिन मैने भी कुछ नही खाया था पर तो भी मुझे-भूख न थी। वह एक दम ही लेट गया। मैंने पशुओ को सबसे अच्छी घास की जगह पर वांध दिया और हरी लकडियो की आग उनके पास जला दी, ताकि उसके धुँए से मच्छर और मक्खियाँ उनसे दूर रहें। तव पेड की जड मे फिर से वैठकर सूरज की हल्की चाल की ओर देखने लगा और हर क्षण की उतावली से प्रतीक्षा करने लगा।

अब मेरा वताया हुआ समय वीत गया, तव मैंने रेमड को जगाया। हमने काठियाँ कसी और फिर से निकल पडे। पहले हम वन्दूक की खोज मे चले। हमारा यह सौभाग्य था कि एक घण्टे मे ही हमने उसे पा लिया। तव हम पश्चिम की ओर मुडे और पहाडियो और खड्डो को एक धीमी चाल से पार करते हुए ब्लैक हिल्स की ओर चल पडे। गर्मी अव सताने वाली न रही थी, क्योकि सूर्य को कुछ वादलो ने ढक लिया था। हवा भी कुछ ताजी और ठण्डी हो गई थी। सामने कुछ दूर की पहाडियो मे वादल घने रूप मे जमा थे और विजली कडकने की हल्की-हल्की आवाज़ आ रही थी। शुरू मे पहाडियो की कुछ चोटियाँ सफेद-सी दिखाई दी, पर तभी वादलो के घिर आने से एक दम अन्धकार छा गया। हमारे चारो ओर का रेगिस्तान भी जल्दी ही अँधेरे से ढक गया। विजली वहुत हल्के-हल्के गरज रही थी और छाया पहाडो और मैदानो पर धीरे-धीरे वढ रही थी। उसी समय आँधी फूट पडी और विजली भी वहुत तेजी से कडकी। सारे मैदान पर उठता हुआ एक ववडर वहुत तेज़ी से घूमने लगा और चारो ओर पानी इतनी तेजी से वहने लगा जैसे वाढ आ रही हो। आस-पास कही भी कोई भी वचने की जगह न थी। वहुत देर वाद हमे समतल मैदान मे एक गहरी खाई-सी घिरी हुई दिखाई दी। रेमड ने अपने चारो ओर देखा और सारे वातावरण को गालियाँ दी। तभी हमे उस खाई मे एक पुराना चीड का पेड दिखाई दिया। इसकी फैली हुई शाखाएँ आँधी और तूफान मे हमारे लिए शरण का काम दे सकती थी। हमे वहाँ तक जाने का एक रास्ता भी मिल गया। अपने पशुओ को पास के पत्थरो से वाँधकर हमने ऊपर चढकर कुछ कम्बल अपने सिर पर ओढ लिए और पेड के नीचे वैठ गए। मुझे उस समय समय का पूरा ध्यान तो नही रहा, पर तो भी मेरा अनुमान है कि हम घण्टा भर वैठे रहे होंगे। उस समय हमारे चारो ओर

बहुत तेज वर्षा होती रही। दूसरी ओर की नगी चट्टानें भी हमे दीखनी बद हो गई। इस तूफान का पहला झोका रुक गया, पर वर्षा तेज धारो मे होती रही। अन्त में रेमड अधीर हो उठा। खाई में से निकलकर वह समतल मैदान मे आ गया। मैने अपनी जगह से ही उससे पूछा, "मौसम कैसा लगता है ?"

उसने उत्तर दिया, "बहुत बुरा ! चारो ओर अँधेरा ही अँधेरा है।" और तब वह धीरे से उतर आया और मेरे पास ही बैठ गया। दस मिनट और बीत गए।

मैने कहा, "एक बार फिर जाकर देखो, कि मौसम कैसा है ?" और वह धीमे-से चढकर फिर से देखने लगा। मैने पूछा, "मौसम कैसा है ?"

"वैसा ही। केवल पहाड की चोटी के ऊपर एक हल्का-सा प्रकाश फैलता नजर आ रहा है।"

इस समय तक वर्षा धीमी पडनी शुरू हो गई थी। हमने नीचे जाकर पशुओ को खोला। वे घुटनो गहरे पानी मे खडे हुए थे। उन्हे खाई से चढाकर ऊपर लाए। हमारे चारो ओर सब कुछ अस्पष्ट और धुँधला-सा लगता था। पहाड की चोटी पर दीखने वाला वह चमकदार हिस्सा धीरे-धीरे बढने लगा और बहुत जल्दी ही बादल फटने लगे। तब सूर्य की किरणें बाढ के रूप मे धरती पर टूटने लगी। चारो ओर की वनस्पतियो पर गिरती हुई किरणे ऐसे लगी जैसे नये रग की आग जल उठी हो। जल्दी ही बादल छितराकर बिखर गए, मानो किन्ही बुरी आत्माओ की वे सेनाएँ हो। हमारे चारो ओर का वह मैदान सूर्य की किरणो मे सूखने लगा। उत्तर से दक्षिण तक सामने की दिशा मे, एक इन्द्र-धनुप निकल आया। बहुत दूरी पर सामने के जगल मानो हमे आराम और ताजगी के लिए निमन्त्रण देने लगे। जब हम उनके पास पहुँचे, तब उनकी बूँदो मे से छनती हुई किरणे सतरगी बनकर नाचने लगी और पक्षियो की फडफडाहट और गीत मस्ती देने लगे। कुछ अजीब पखो वाले पक्षी वर्षा के कारण गीले पडे हुए पत्तो या शाखो से चिपटे हुए थे।

रेमड ने बहुत कठिनता से आग जलाई। हमारे जानवर चरने के लिए घास पर टूट पड़े। मै भी कम्बल लपेटकर एक जगह लेट गया और साँझ के इस सुहावने नजारे को देखने लगा। सामने के पर्वत कभी गुस्मे मे भरे हुए

दीख रहे थे, पर अब वे बहुत ही प्यार और हँसी मे भरे हुए दीखने लगे। सामने के मैदान के खड्ड और खाइयाँ भी इस धूप से प्रसन्न हो उठीं। मै गीला भी था, बीमार भी और चिन्तित भी। इस नज़ारे को देखकर मेरा दिल खिल उठा और मै इसमे आनन्द लेने लगा।

सुबह होने पर रेमड जागा। उसकी खाँसी बहुत तेज़ हो गई थी। उसे कोई और चोट लगी न दीखती थी। हम फिर से घोडो पर चढे और उस छोटी धारा के पास आए। पेडो के बीच से निकलकर हमने सामने के मैदान पर अपनी यात्रा शुरू कर दी। धीरे-धीरे आगे बढते हुए हम आदिवासियो के निशानो को खोजने लगे। हमे विश्वास था कि वे इधर ही कही पास से गुज़रे है। परन्तु, घास बहुत छोटी थी और ज़मीन बहुत सख्त। इस पर से गुज़रने वालो का निशान भी दीखना कठिन था। पहाडो को चढते-उतरते और घाटियो को पार करते हुए हमारा सफर बढता रहा। हम एक पहाडी की तलहटी मे मे गुज़र रहे थे। मुझसे कुछ आगे चलते हुए रेमड ने अपने खच्चर की लगाम एकदम ही खीच ली और उतर पडा। तब वह एक घाटी की ओर बहुत झुककर धीरे-धीरे बढ़ा। उसी समय मुझे उसकी बन्दूक के चलने की आवाज़ आई। एक घायल हिरण अपने तीन पाँवो पर दौडता हुआ पहाडी पर आ निकला। मैने अपनी घोडी को उसके पीछे दौडा दिया। बहुत जल्दी मैं उसकी बगल मे जा पहुँचा। कुछ देर उछल-कूद मचाने के बाद हिरण शान्त खडा हो गया, जैसे वह भागने से निराश हो गया हो। उसकी चमकती हुई आँखें मेरे चेहरे की ओर बडी करुणा से भर कर उठी। बहुत दुःख के साथ मैने उसके सिर मे गोली दाग दी। रेमड ने उसकी खाल उतारकर उसे चीर लिया। हमने उसके चारो हिस्सो का मास बोरियो मे भर लिया। हमे इस बात की प्रसन्नता थी कि हमारा कम पडता हुआ भोजन का सामान ऐसे मौके पर फिर से ठीक मात्रा मे हो गया।

पहाड की चोटी पर पहुँचकर हम सामने के मैदान मे बहुत-से वृक्षो और छायादार अमराइयो को देख रहे थे। वे सब लारामी धारा के साथ-साथ खडे थे। दोपहर से पहले ही हम इसके किनारो तक पहुँच गए, और बहुत उतावले होकर आदिवासियो के पाँवो के निशान खोजने लगे। हमने कई मील तक इस धारा के साथ, कभी तट पर और कभी पानी मे बढते हुए, रेत

और कीचड़ के हर जमाव पर ध्यान रखा। खोज में इतना आगे बढ़ आने पर हमें लगा कि शायद हम उनकी राह को बिना खोजे ही बहुत पीछे छोड आए है। बहुत देर बाद मैने रेमड को तेज़ी से चिल्लाते हुए और अपनी खच्चर पर से कूदकर किसी चीज पर झूलते हुए देखा। मै उसके पास तक गया। यह किसी आदिवासी के जूते का निशान था। इससे उत्साहित होकर हमने अपनी खोज जारी रखी। कुछ दूरी पर ही मेरा ध्यान एक ऐसी जगह पर गया जहाँ पाँच-छः बच्चो और आदमियो के पाँवो के निशान थे। तभी धारा के परले किनारे एक सोते के मुहाने पर रेमंड ने कुछ देखा। धारा पार कर वह कुछ दूर तक गया और चिल्ला पड़ा। मै भी उसके पास तक जाकर खडा हो गया। यह सोता फैली हुई रेत पर से बह रहा था और इस पर एक बहुत पतली धारा के रूप में पानी बह रहा था। इसके दोनो ओर बहुत पास-पास झाडियाँ उगी हुई थी। मैने देखा कि रेमड झुककर तीन या चार घोडो के निशान देख रहा था। आगे बढ़ने पर हमने एक आदमी, फिर एक बच्चे और बाद में बहुत सारे घोडो के निशान पाए। अन्त में किनारे की झाडियाँ उन निशानो से कुचली हुई दिखाई देने लगी। यहाँ सैकड़ो निशान मौजूद थे। इनमें तम्बुओ को सम्भालने वाली बल्लियो के निशान भी मिले हुए थे। अब यह निश्चित था कि हमने उन आदिवासियो की पगडंडी खोज निकाली थी। कुछ आगे बढ़कर मैने देखा कि सामने के मैदान मे लगभग एक सौ पचास घरो की राख पडी हुई है। उसके पास ही हड्डियो और खालो के टुकडे भी इधर-उधर बिखरे हुए है। कुछ जगह वे खूँटे भी गडे थे, जिनसे घोड़े बाँधे गये होगे। अपनी सफलता पर प्रसन्न होकर हमने एक अच्छे पेड को अपनी शरण के लिए चुना और अपने पशुओ को चरने के लिए खुला छोडकर ताजे मारे गए हिरण के मांस को पकाने की तैयारी करने लगे।

कठिनाइयो और मुसीबतो ने मेरे अन्दर एक अजीब ताजगी भर दी। इससे मेरी सेहत और शक्ति दोनो ही बढ गई थी। हम दोनों ने बहुत आनन्द के साथ-साथ खाना खाया। अब हमे यह खुशी थी कि एक कोना पकड लेने के बाद इन निशानो के दूसरे कोने को भी हम खोज निकालेंगे। पर जब पशुओ को लाया गया तो हमने देखा कि अभी हमारी मुसीबतें समाप्त नही

हुई है। अपनी घोडी पर काठी बांधते हुए मैने देखा कि उसकी आँखें एकदम सूजी हुई थी और उसकी पलको की खाल का रग काला पड गया था। मै उसपर सवार होकर बढने लगा, पर वह लडखडाकर एक तरफ गिर गई। बहुत हिम्मत से वह फिर खडी हुई, पर उसका सिर झुका हुआ था। या तो उसे किसी सांप ने काट लिया था, या किसी ज़हरीले पौधे को उसने खा लिया था, या फिर कोई और ही बीमारी अचानक उस पर हावी हो गई थी। कुछ भी हो उसकी यह बीमारी बहुत बुरे और दुर्भाग्यपूर्ण समय पर आई। एक बार फिर कोशिश करने पर मै उस पर चढने मे सफल हो गया। हम लोग बहुत धीमी चाल से आदिवासियो की पैड पर बढने लगे। इस पर बढते हुए हमे एक पहाडी पार करके एक भयकर मैदान मे उतरना पडा। यहाँ वे निशान अचानक ही गायब हो गए थे। ज़मीन बहुत ही कठोर थी। अगर कभी इस पर किसी खुर के निशान रहे भी होगे, तो कल की वर्षा ने उन्हें मिटा दिया होगा। आदिवासियो का कोई भी गाँव प्राय. आध मील की चौडाई तक फैला हुआ चलता है। इसलिए उनके कोई भी निशान साफ नही होते और उन्हें खोजने का काम बहुत कठिन हो जाता है। सौभाग्य से सामने बहुत-से छोटे-छोटे टीले थे, जिनपर कही-कही आदमियो, घोडो और मकानो की लम्बी वल्लियो के निशान बने हुए थे। कुछ जगह कुछ खास प्रकार के पौधे भी कुचले हुए थे। इनसे हमे राह खोजने मे मदद मिली और हम बहुत धीरे-धीरे आगे बढने लगे। कई बार हम इन निशानो को बिल्कुल ही खो बैठते और फिर अचानक ही पा लेते। दोपहर के समय हम बिल्कुल ही गलत राह पर पड गए। हम एक ऐसी जगह थे जहाँ चारो ओर, एक भी निशान हमारी राह तय करने के लिए नही दिखाई देता था। यह कटा-फटा मैदान हमारे चारो ओर मीलो दूर तक फैला हुआ था और सामने उत्तर मे दक्षिण तक एक बहुत लम्बी पक्ति फैली हुई थी। हमारे दाहिनी ओर लारामी पर्वत और सब पहाडियो से कुछ ऊँचा होकर उठा हुआ था। बहुत दूर से ही हमने देखा कि इस पर सफेद धुआँ बहुत बडी मात्रा मे उठ रहा है।

रेमड ने कहा, "मेरे विचार मे यहाँ कुछ आदिवासी अवश्य होगे। अच्छा हो कि हम उधर चलें।" परन्तु इस योजना को यूँ ही स्वीकार नही किया

जा सकता था, क्योकि हमें खोई हुई पैंड को फिर से खोजना था। हमारा यह फैसला हमारे अच्छे भाग्य के कारण ही था, क्योकि बाद मे हमें आदिवासियो से पता चला कि यह धुआँ काक जाति के कुछ सैनिको ने उठाया था।

शाम बढ आई, पर पहाडो की तलहटी के अलावा न कही जंगल का निशान था और न पानी का। इसलिए हम उसी ओर बढे। हमने अपना रास्ता लारामी धारा के उस हिस्से की ओर मोड दिया, जहाँ से वह पर्वत से मैदान पर आ जाती है। जब हम यहाँ पहुँचे तो सामने की नगी पहाडी चोटियो पर अब भी धूप चमक रही थी। पहाड की अँधेरी कैद से अपने को छुडाती हुई यह नदी एक बहुत तेज धार के रूप मे बह रही थी। इन पहाडो और घास के मैदानो मे कुछ ऐसी विशेषता थी कि जिससे मन अचानक ही खिल उठा। नदी के किनारे ही घास भरे मैदान का एक टुकडा था, जिसके चारो ओर छोटे-छोटे टीले थे और जो हमारी आग को और हमे आस-पास घूमने वाले आदिवासियो की निगाह से बचा सकता था। यहाँ घास मे छिपे हुए बडे-बडे पत्थरो के कई घेरे दिखाई दिए। डाकोटा परिवारो के सर्दियो का निवास कभी यहाँ रहा होगा। हम वही लेटकर सो गए और काफी दिन चढने पर ही जागे। किनारे पर से एक बहुत बड़ी चट्टान आगे बढी हुई थी। इसके पीछे से गहरा पानी धीरे-धीरे चक्कर काटता हुआ बढ रहा था। मै लोभ न रोक सका। अपने कपडे उतारकर इसमे घुस पडा और एक बार धारा के साथ ही मै भी चक्कर खाने लगा। भँवर से बचने के लिए मुझे पानी के ही एक पौधे की जड़ मज़बूती से पकडनी पडी और तब कही मै किनारे पर आ सका। मुझे कुछ इतनी ताजगी अनुभव हुई, जैसे मेरी सेहत लौटने लगी हो। अभी हम कुछ ही दूर बढे होगे कि मेरी यह प्रसन्नता और ताज़गी मिटने लगी। फिर से मै उसी प्रकार झुककर बढने लगा। अब मेरे लिए सीधा बैठना भी मुश्किल था।

रेमड ने कहा, "सामने देखो! वह जो खड्ड दिखाई दे रही है! आदिवासी उधर से ही गए होगे, यदि सचमुच वे इसी राह से बढे है।"

हम उस जगह तक पहुँच गए। लगता था पहाडो के बीच जैसे एक गहरा खड्ड हो। यहाँ पर हमे एक छोटे-से टीले पर घरो की बल्लियो के चिह्न

दिखाई दे गए। हमारे लिए यही बहुत था। अब सन्देह का कोई मौका न था। हम ज्यो-ज्यो आगे बढे रास्ता तग पडता गया। यहाँ आदिवासियो को बहुत सटकर चलना पडा था। इसलिए उनके निशान बहुत साफ और अधिक मात्रा मे दीख रहे थे। यहाँ से हम चट्टानो वाली जगह पर आ निकले और फिर एक नई घाटी मे उतरे। यह घास और छोटे पौधो के कारण हरी-भरी थी, जो जगह-जगह से लोगो के गुज़रने के कारण, मसले जा चुके थे। हम चट्टानो पर से होकर धीरे-धीरे बढे। बहुत कठिनता से इन सैकडो फुट ऊँची चोटियो के बीच से होकर चलने लगे। रेमड अपने मजबूत खच्चर के साथ मुझसे कुछ आगे-आगे चल रहा था। यहाँ आकर हम एक ऐसी सीधी चढाई पर आए, जो शायद सबसे अधिक ऊँची चढ़ाई थी। मेरी घोडी चीखती और लडखड़ाती कुछ दूर तक बढ़ी और तब एकाएक रुक गई। अब उसके लिए आगे बढना कठिन था। मैने उतर कर उसे चलाने की कोशिश की। परन्तु, मेरी ताकत भी जल्दी ही जवाब दे गई। इसलिए मैने उसकी खोजी रस्सी को ढीला कर दिया और अपनी बाँह के चारो ओर बाँधकर अपने हाथो और घुटनो के बल पर आगे सरकने लगा। चोटी पर पहुँचने पर मैं बहुत बुरी तरह थक गया था। मेरे माथे से पसीना टपक रहा था। मेरे पास ही मेरा घोडी एक बुत की तरह खडी थी। उसकी छाया एक झुलसती हुई चट्टान पर पड रही थी। मै इसी छाया मे कुछ देर के लिए लेट गया। अब मेरे अगो मे हिलने डुलने की ताकत बिल्कुल न रही थी। चारो ओर सुइयो जैसी काली-काली घास धूप मे अपना सिर उठाए खडी थी। कोई भी पेड, झाडी या लम्बी घास यहाँ उगी हुई न दीखती थी। चारो ओर असह्य धूप आग बरसा रही थी।

कुछ देर बाद ही मै फिर घोडी पर चढकर बढने लायक हो सका। तब पश्चिम की ओर की घाटी मे हम उतरने लगे। इस हालत मे कुछ ऐसा भद्दापन था, जिसके आगे आदमी और पशु एक समान ही असहाय थे। मैं और घोडी—दोनो ही—न भाग सकते थे और न चढ सकते थे।

रेमड की काठी की रस्सी फिसल गई। मैं आगे चलता रहा, पर वह उसे ठीक करने के लिए रुक गया। मैं उस छोटी सी ढलान के किनारे पर पहुँच गया था। यहाँ एक अच्छा नजारा मुझे दिखाई दिया। एक कोने मे कुछ हरी घास चोटियो पर छाई हुई दिखाई दे रही थी। यही पर कुछ झाडियाँ और

चीड के पुराने पेड़ भी थे। मेरे अन्दर जैसे बचपन के दिन लौट आए और एक तेज आवाज़ ने जैसे मेरा स्वागत किया। यह आवाज़ झीगुर की थी, जो सामने के चीड की शाखाओ से चिपटा हुआ चिल्ला रहा था। तब मै इन झाडियो मे से होता हुआ आगे बढा। यहाँ मुझे अचानक ही किसी झरने की आवाज़ आई। घोडी खुद ही उधर मुड पडी और पेडो की शाखाओ मे से होती हुई एक काली चट्टान की ओर बढ गई। इसके नीचे हरियाली छाई हुई थी। इस पर से एक ठण्डी धारा लगातार नीचे की रेत मे जमा पानी पर गिर रही थी। यहाँ से पानी निकलने का कोई रास्ता नही दीख रहा था। लगता है पानी ज़मीन मे ही सूखता जा रहा था। जब तक मैंने इस चश्मे मे से अपना प्याला भरा, घोडी अपना सिर पानी में डुबोकर आनन्द मे मस्त हो रही थी। साफ था कि हमसे पहले भी बहुत-से दर्शक यहाँ आए थे, क्योकि हिरण, बारहसिंगा और भेडो के निशान यहाँ पर दिखाई दे रहे थे। अभी कुछ ही देर पहले आये काले भालू के निशान भी यहाँ मौजूद थे। लगता है वह इन्हीं पहाडो मे रहता होगा।

इस चश्मे को पार करने के कुछ ही देर बाद हमें एक घास का हरा मैदान, पहाडो से घिरा हुआ, दिखाई दिया। इस पर आदिवासियो के पडाव के सभी निशान मौजूद थे। रेमड की खोजी आँखो ने तुरन्त ही वह जगह पहचान ली, जहाँ रेनल का घर और उसके घोडे रहे होगे। पास आकर मै भी इस स्थान को देखने लगा। रेनल और मुझमे कोई मित्रता या समान बात न थी। पर तो भी मुझे अपने इस प्रकार उत्सुक हो उठने पर अचरज ही हुआ। हम दोनो मे अगर कोई भी समानता थी, तो वह केवल गोरा होने के कारण ही थी।

आधे घण्टे मे ही हम इन पहाडो से बाहर निकल आए। अब हमारे सामने एक विस्तृत मैदान था, जो एकदम उजाड और मैदानी कुत्तो से जगह-जगह भरा हुआ था। ये कुत्ते अपनी माँदो के बाहर बैठे हुए हम पर भौंकते रहे। यह मैदान कम से कम छ मील चौडा रहा होगा। पर उसे पार करने में हमें कम-से-कम दो घण्टे का समय लग गया। अब यहाँ हमारे सामने पहाडियो की एक नई माला नज़र आई। इनकी चोटियाँ काफी घनी झाडियो मे ढकी हुई थी पर इनकी ढलानें काले पत्थरो से ढकी थी। ये सभी आँधी

और तूफान के कारण बडे भयकर और झुके हुए लग रहे थे। जब हम आदिवासियो की पैंड पर बढते हुए एक तग रास्ते से गुज़रे, तो ये पत्थर हमारे सिर पर गिरते हुए-से दीखने लगे।

हमारा रास्ता अब घने पेडो मे से होकर बढने लगा। बीच-बीच मे छाया और धूप पडती रहती थी। इन पेडो की शाखाओ के बीच से हम इधर से उधर घूमते हुए कई बडी-बडी चोटियो को साफ देख सकते थे। कुछ चट्टानें अगल-बगल से हमारे दाएँ-बाएँ हमे घेरती-सी दीख रही थी।

एक खुली जगह पर चारो ओर ऊँची चट्टानो की दीवारो से घिरे हुए दो आदिवासी किले दिखाई दे रहे थे। ये चौकोन थे और लकडी और वल्लियो से मिलाकर बनाए गए थे। ये बिल्कुल उजाड-से थे, शायद साल भर पहले के बने हुए थे। हर एक मे बीस आदमी रह सकते थे। लगता है कभी इस शोक भरे स्थान पर कोई दल शत्रुओ से घिरकर नष्ट हो गया होगा और तबसे इन चट्टानो या पौधो ने कभी भी किसी भी सघर्ष या शत्रु को न देखा होगा। फिर भी अगर कोई खून-खराबी के चिह्न बचे होंगे तो वे इन घासो या झाडियो मे छिप गए होगे।

धीरे-धीरे पर्वतो मे से निकलकर रास्ता खुले मैदान मे आ गया। यहाँ हमे फिर से आदिवासियो की बस्ती के निशान दिखाई देने लगे। हमारे सामने ही पेड और झाडियाँ थी। घण्टा भर आराम करने के लिए हम यहीं रुक गए। भोजन समाप्त करने के बाद रेमड ने चिलम सुलगाई और पेड की जड मे ही बैठकर उसे पीने लगा। कुछ देर तक मै उसे उसी गम्भीर ढग से तम्बाकू पीते हुए देखता रहा। थोडी देर बाद उसने चिलम धीरे से हटाई और बहुत गम्भीरता से बोला, "हमारे लिए आगे जाना अच्छा न होगा।"

मैंने पूछा, "क्यो नही ?"

उसने बताया कि इलाका बहुत खतरनाक हो गया है। हम नाग, अरापाहो, कृष्णपाद आदि जातियो के इलाके मे आ गए है। अगर उनकी कोई भी घूमती हुई टुकडी हम तक पहुँच गई, तो हमे अपनी जान गँवानी होगी। परन्तु उसने यह भी विश्वास दिलाया कि मै जैसा भी फैसला करूँगा वह वफादार होकर मेरा साथ देगा। मैने उसे घोडे लाने के लिए कहा। हम आगे चल पडे। मै स्वीकार करता हूँ कि आगे बढते ही हमे बहुत-से सन्देह

जगने लगे। यदि मेरे अन्दर उस यात्रा के लायक, शरीर और मन मे थोडी-सी भी ताकत होती और मेरे पास शक्ति और उत्साह से युक्त कोई अच्छा-सा घोडा होता तो मै दुनिया की किसी भी बात के मुकाबले के लिए तैयार था।

चट्टानें हमारे अधिक निकट सरकती आईं। ये ऊँची और सीधी ढलान वाली होती जा रही थी और हमारे रास्ते को तग बनाती जा रही थी। तब हम एक ऐसी खाई मे घुसे, जिसके मुकाबले की दूसरी खाई मैने कभी नही देखी। लगता था कि पर्वत चोटी से तल तक चिर गया है। नीचे उतरकर हम तलहटी पर बहुत धीरे-धीरे सरक रहे थे। यहाँ सिलाब और अँधेरा छाया हुआ था, पर साथ ही घोडो के खुरो के निशान भी थे। झरना बहुत हल्की-सी आवाज मे गूँजता हुआ चल रहा था। मानो वही हमारा सच्चा साथी था। कभी-कभी पत्थरो मे टकराता हुआ पानी हमारे सारे रास्ते में छा जाता और कभी एक ओर हो जाता। सूखी जगहो पर पाँव रखते हुए हम बढने लगे। ऊपर देखने पर हमे आकाश एक पतली पट्टी के रूप मे, दो काली चोटियो के बीच, नीला-सा चमकता हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ ही देर बाद हमारा रास्ता चौडा होने लगा और सूर्य की किरणे पानी पर से चमकती हुई हम तक पहुँचने लगी। घाटी यहाँ काफी चौडी हो गई थी। झाडियाँ, पेड और फूल यहाँ, चश्मे के दोनो ओर, काफी अधिक थे। ऊपर की घाटियो पर भी बहुत-सी झाडियाँ और फलो के पेड उगे हुए दिखाई दे रहे थे। कुछ देर बाद फिर अँधेरे रास्ते मे से बढना पडा। यह रास्ता मील भर से अधिक लम्बा रहा होगा। इस रास्ते के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते हमारे पशुओ के बिना नाल वाले खुर घायल हो गए और उनके पाँवो पर भी नुकीले पत्थरो के कारण काफी चोटें आईं। इन पर्वतो से निकलकर हम एक ओर मैदान पर आए। हमारे चारो ओर ऊँची चोटियो का एक घेरा-सा बन गया था। लगता था चारो ओर चुप्पी और एकान्त का राज्य हो। यहाँ भी आदिवासियो ने डेरा डाला था। निश्चय ही वे अपनी औरतो, बच्चो और पशुओ के साथ इस रास्ते से होकर बढे थे। इस प्रकार जो रास्ता उन्होने तीन दिन मे तय किया था, हमने उसे एक ही दिन मे तय कर लिया था।

इस घेरे से निकलने का एकमात्र रास्ता एक पहाडी पर से होकर ही

था। यह पहाडी दो सौ फुट ऊँची थी। हम बहुत कठिनता से इस पर चढ पाए। चोटी से हमने देखा कि अब पहाडो का सिलसिला समाप्त हो गया था। हमारे सामने रेतीला मैदान फैला हुआ था, हर जगह खड्ड और घाटियो ने इसे चीर रखा था। हमारे बाईं ओर एक ऊँचा पहाड आकाश मे उठा हुआ था। इस पर घूमते हुए चार काले धब्बे से साफ दिखाई दे रहे थे। निश्चय ही ये भैंसे थे। इनके दिखाई देने को हमने एक अच्छा लक्षण माना, क्योकि जहाँ भी भैंसे मिलते है वही पर प्राय आदिवासी भी डेरा डालते हैं। हमे उम्मीद थी कि हम उसी रात उनके गाँव तक पहुँच जाएँगे। हमारी उत्सुकता दो कारणो से थी, एक तो यह कि हम अपना यह सफर जल्दी ही समाप्त करना चाहते थे और दूसरा यह कि भले ही दिन मे वहाँ पहुँचना अच्छा होता पर, उनसे अलग होकर रात मे पडाव डालना खतरे से खाली न होता। जब हम आगे बढे, सूर्य छिपने लगा था। थोडी ही देर मे सूर्य छिपने ही वाला था, जबकि हमने एक पहाडी की चोटी से अपना डेरा डालने के लिए एक जगह ढूँढ ली। मैदान एक ज्वार वाले समुद्र के समान दिखाई दे रहा था, मानो एकदम ऊँची लहरो के बाद यह शान्त पड गया हो। इसका आधा हिस्सा धूप से चमक रहा था, और आधा छाया मे डूब गया था। शाम की सुनहरी धूप ने इसे रगबिरगा बना दिया था। चारो ओर जगली झाडियाँ उगी हुई थी—खाइयो में भी और टीलो पर भी! हमारे सामने थोडे-से हिस्से मे, घास का एक मैदान भी था और पास ही पानी के कुछ छोटे-से जोहड भी चमक रहे थे। हम यहाँ पर आए और आग जलाकर हमने अपने घोडो को चरने के लिए खुला छोड दिया। यहाँ एक छोटा-सा सोता था, जो कुछ दूर तक बहकर इस मैदान को हरा-भरा बना रहा था। यही सोता कही-कही जोहडो के रूप मे फैल गया था। यह इस कारण हुआ कि—बीवर नाम के जन्तु ने इसके चारो ओर बाँध जैसा बना दिया था।

हमने हिरण के बचे हुए मास के अन्तिम टुकडे को भूना और अपने भोजन के सामान की कमी पर चिन्ता करते हुए उसे खाने ही लगे थे, तभी एक सलेटी रग का खरगोश सामने से उछलता हुआ आया और हमसे पचास गज की दूरी पर बैठ गया। मैं बिना सोचे बन्दूक उठाकर उसे मारने ही लगा था, कि रेमड ने मुझे ऐसा करने से मना किया। उसने बताया कि कही आसपास

का कोई आदिवासी इस आवाज़ को न सुन ले। उस रात पहली बार हमें यह खतरा अनुभव हुआ कि हम एक भयानक स्थिति में फँस गए थे। जो लोग आदिवासियो के स्वभाव को नही जानते, उन्हें यह अजीब ही लगेगा कि जिन लोगो से मिलने के लिए उतावले होकर हम बढ रहे थे, उन्ही से हम खतरा भी खा रहे थे। अगर कहीं हमारे इन विश्वासपात्र मित्रो की किसी टोली ने किसी पहाड़ की चोटी पर से दिन मे हमें देख लिया होता, तो रात को वे हमें ही लूटने के लिए आ जाते और शायद हमारे घोडे और सिर तक हमसे अलग कर देते। परन्तु यहाँ रहकर एक दम निराश भी नही हुआ जाता। मुझे याद है कि मैंने और रेमड ने उस रात फिर दुबारा इस बात की चिन्ता नही की।

हम लगभग आठ घटे तक बेहोश होकर अपनी काठियों के सिरहाने पर ही सोते रहे। जब मै जागा तो पाली का पीला सिर मेरे ऊपर छाया हुआ था। मैंने उठकर उसे देखा, उसके पाँव कुचले गए और सूजे हुए थे, पर उसकी आँखें और उसकी चाल पहले से बहुत अच्छी थी। लगता है उसकी बीमारी दूर हो गई थी। हम आगे बढे। हमें आशा थी कि घंटे भर मे ही हमें आदि-वासियो का गाँव दीखने लगेगा। पर, हमें फिर निराशा मिली। अब मैदान बड़ा कठोर और पत्थरो वाला हो गया था। हम दोनो अलग-अलग बँटकर चलने लगे, ताकि कही कोई निशान दीख जाए। अन्त में मुझे चट्टानो के किनारे बल्लियो के निशान दिखाई दे गए। अब हम उधर से ही बढने लगे।

"उधर मैदान पर वह काला धब्बा किस चीज़ का है?"

हम चढकर वहाँ तक गए और पाया कि गुज़रते हुए शिकारियो ने इस बडे भैसे को मारा था। इसके उलझे हुए बाल और खाल के टुकड़े चारो ओर बिखरे पडे थे। भेडियों ने इसका मज्जा लूटकर इसे खोखला कर दिया था। इस समय इस पर बडी-बडी काली टिड्डियाँ बैठी हुई थी। लगता था वह चार-पाँच दिन पहले मारा गया था। इसे देखकर हमारा हौसला टूट गया और मैंने रेमंड से कहा, "लगता है अब भी आदिवासी पचास साठ मील दूर होगे।" पर उसने अपना सिर हिलाकर विरोध जताया और कहा कि वे अपने शत्रुओ के इलाके में इतनी दूर जाने की हिम्मत नही कर सकते।

इसके बाद निशान फिर गुम हो गए। हम पास की एक चोटी पर चढे। कहीं कुछ दिखाई न देता था। हमारे सामने एक समतल मैदान कुछ दूर तक

दाएँ-बाएँ फैला हुआ था। इसके सामने की ओर छोटी-छोटी पहाडियाँ अवश्य थी। यह दस बारह मील लम्बा अवश्य होगा। इस सारे खुले और लम्बे-चौडे मैदान मे आदिवासियो या भैंसो का एक भी निशान हमे न मिला।

रेमड बोला, "आपने देखा, हमे उलटा लौट चलना चाहिए।"

मेरा विचार इससे मेल न खाता था। नौकर होने के कारण रेमड को मेरी बात माननी पडी। हम सामने की पहाडी से उतरे और मैदान के पार चलने लगे। हम इतनी दूर आ चुके थे कि अब न तो घोडी मे और न ही मेरे मे जान बची थी कि हम वापिस लारामी किले की ओर लौट सकें। मुझे पता था कि कठिनाई के ऐसे मौको पर सफलता पाने के लिए आगे बढना ही एक मात्र उचित उपाय है। हमारे चारो ओर की ज़मीन भैंसो की खोपडियो और हड्डियो से भरी पडी थी। लगता है साल-दो साल पहले यहाँ आदिवासियो ने कभी भैंसो पर घेरा डाला होगा। पर हमे कोई भी जीवित शिकार सामने नज़र न आया। बहुत देर बाद एक हिरण उछलकर सामने आया और हमें देखने लगा। हमने गोली दाग दी, पर दोनो का ही निशाना चूक गया। पशु हमसे कुल अस्सी गज की दूरी पर भी नही था। शायद इसमे हम दोनो के उतावलेपन का दोष था। थोडे से आटे को छोडकर हमारे पास खाने को कुछ और नही रह गया था। यहाँ हमे कुछ दूरी पर चमकते हुए कुछ जोहड नज़र आए। पास पहुँचने पर हमे इनके चारो ओर की लम्बी घास मे से भेडिए और हिरण उछलते हुए नज़र आने लगे। इन जोहडो के पानी पर तैरते हुए कुछ जलमुर्ग भी दिखाई दिए, जो चीखते हुए उड जाते थे। हिरण पर निशाना चूकने के बाद रेमड ने इन पक्षियो पर निशाना साधना चाहा। पर, इसमे भी उसे सफलता न मिली। यहाँ पानी भी साफ न था। इसके तट भैंसो के कारण इतने दलदले हो चुके थे कि हमारे घोडे इन तक पहुँचने मे घबराने लगे। इस लिए हम घूमकर फिर से पहाडियो की ओर बढने लगे। जहाँ-जहाँ भैंसो ने घास को नही कुचला था, वहाँ-वहाँ हमारे घोडो की गर्दनो तक ऊँची उगी हुई थी।

फिर हमारे सामने ऊसर और उजाड मैदान आ गया। हमे रास्ता बताने के लिए एक भी निशान न था। ज्यो-ज्यो हम पहाडियो के पास आते गए, हमे एक-दर्रा सा दिखाई देने लगा। अगर आदिवासी इधर से गुजरे होते तो

वे निश्चय ही इसी दर्रे मे से गए होगे। धीरे-धीरे हमने इसपर बढना शुरू किया। जब मैने चारो ओर पाँव या किसी और वस्तु का निशान न पाया, तो मुझे लगा कि हम कतई असफल रहेंगे, हालाँकि इस सारे रास्ते मे भैंसो की खोपड़ियाँ बिखरी पडी थी। हमे इसी समय बिजली कड़कती सुनाई दी। लगा कि तूफान आने वाला था।

जब हम इस दर्रे की ऊँचाई पर पहुँचे, तो सामने का नजारा साफ होने लगा। हमें सामने, क्षितिज पर, उठते हुए काले बादल दिखाई देने लगे। उनसे भी परे 'मेडिसन बो' नाम की पहाड़ियो की कतार दिखाई दे रही थी। यही मे राकी पर्वतमाला आरम्भ हो जाती है। धीरे-धीरे सामने का मैदान पूरी तरह दिखाई देने लगा। चारो ओर हरियाली ही हरियाली छाई हुई थी। कोई भी जीवित चीज वहाँ नही दिखाई दे रही थी। लारामी नदी इस पर से एक लहरदार रेखा के रूप मे चमकती हुई बह रही थी। इसके किनारो पर न कोई पेड था और न कोई झाड़ी। इसके सामने ही एक छोटी-सी पहाडी ने एक हिस्सा ढका हुआ था। मै कुछ आगे निकल गया। मुझे मैदान पर कुछ काले धब्बे धारा के किनारे नजर आए। मै चिल्ला पडा, "भैसे!"

रेमड ने प्रसन्नता से कहा, "भगवान् कसम। ये तो घोडे है।" और वह यह कहते-कहते एड लगाकर अपने खच्चर को दौडाने लगा। अब अधिक से अधिक मैदान सामने दीखने लगा। यहाँ घोडे भी अधिक-से-अधिक बिखरे हुए दीखने लगे। वे टुकडियाँ बाँधकर सारे मैदान पर चर रहे थे। हमने देखा कि नदी के किनारे एक घेरे के रूप मे, हमसे कोई मील भर दूर, आदिवासियो के घर खडे हुए थे। शायद किसी भी यात्री का दिल अपने घर को देखकर इतना खुश न होता होगा, जितना आदिवासियों के इस गाँव को देखकर उस समय मेरा दिल प्रसन्न हुआ।

— ० —

१४ : ओजिल्लाला गाँव

आदिवासियो के दिमागी ढाँचे के वर्णन का यहाँ स्थान नही है पर, तो भी उस बात को समझ लेने से हम थोडे-बहुत परिवर्तन के साथ मैक्सिको के उत्तर मे रहने वाले सभी आदिवासियो के स्वभाव से परिचित हो जायेंगे। अपनी आदतो मे यह समानता होने पर भी झीलो, समुद्र-तटो, मैदानो और जगलो मे रहने वाले आदिवासी बाहरी व्यवहार मे एक दूसरे से कतई भिन्न है। इन लोगो के एक कबीले के साथ बहुत दिन रहने के कारण मै इन के व्यवहार से भली-भाँति परिचित हो गया, क्योकि मेरी आँखो के सामने कोई न कोई विशेष घटना घटती ही रहती थी। वे लोग कतई असभ्य थे। सभ्यता के सम्पर्क मे आने पर भी उन लोगो ने कुछ भी नई बात न सुनी थी। उन्हें गोरे लोगो के चरित्र और उन की शक्ति के विषय मे कुछ भी पता न था। इसीलिये उन के बच्चे मुझे देखते ही चीखने लगते। उन के धर्म, अन्धविश्वास और रीति-रिवाज, सदियो से बिना बदले, वैसे ही चले आ रहे थे। उनके हथियार और वेशभूषा तक भी न बदले थे। उन्हें हम पाषाणयुग का प्रतिनिधि कह सकते है। उनके भाले और उनके बाण तो व्यापारियो से लिये गये लोहे से बने थे, परन्तु वे लोग अब भी पत्थर के पुराने हथियार ही बरतते थे।

इस इलाके मे बडे-बडे परिवर्तन हो रहे थे। ओरेमन और कैलिफोर्निया की ओर प्रवासियो के जाने के साथ-साथ इस इलाके से भैंसे खतम होने शुरू हो गये थे। इसके साथ ही भैंसो पर जीवन बिताने वाले आदिवासी लोग भी बिखरने शुरू हो गये थे। वे आदिवासी लोग अगले कुछ ही दिनो मे शराब और सैनिक चौकियो के कारण कमजोर पड जाएँगे। इस प्रकार अगले कुछ ही सालो मे इस राह से लोगो का आना-जाना आसान हो जाएगा। निश्चय ही इसका खतरा कम होने के साथ-साथ इसका आनद भी कम होता जायगा।

ज्योही रेमड और मैने गाँव को पहचाना, वे लोग भी उत्सुक हो कर हमे देखने लगे। हम घोडो पर चढे हुए जब मैदान मे आगे बढ़े, तब तक गाँव का

सबसे अगला हिस्सा, कुछ नंगी शक्लो से घिरा होने के कारण, अँधेरे में डूबा-सा लगने लगा था। बहुत सारे लोग हमसे मिलने आगे तक चले आये। उन में से हरा कम्बल ओढ़े हुए फ्रांसीसी रेनल को मैने पहचान लिया। जब वे पास आये तब हाथ मिलाने की रस्म पूरी तरह अदा की गई। सब लोग इस बात को जानने के लिये अधिक उत्सुक थे कि बाकी लोगो के साथ क्या हुआ ? मैने उन्हे सब बातो का उत्तर दिया। तब वे हमारे साथ ही गाँव की ओर लौट चले।

रेनल ने कहा, "तुम यह सब देखने से चूक गये। अगर कहीं परसो तुम यहाँ होते तो देखते कि इस सारे मैदन मे जहाँ तक भी निगाह जाती थी, भैंसे ही भैंसे फैले हुए दिखाई देते थे। उनमे एक भी मादा भैंस न थी, केवल नर भैंसे ही थे। हमने कल तक उनपर हर रोज घेरा डाला। ज़रा गाँव पर निगाह डालो! क्या तुम्हे सभी अच्छी हालत मे नही दिखाई देते ?"

सचमुच ही मैं, बहुत दूरी पर, एक मकान से दूसरे मकान तक फैली हुई लम्बी रस्सियो को देख रहा था, जिन पर सूखने के लिये मास लटक रहा था। मैंने यह भी देखा कि पिछली बार की बजाय इस बार यह गाँव कुछ छोटा लगता था। मैंने रेनल से इसका कारण पूछा। उसने बताया कि लोबोन्यें नाम का बूढा आदमी अपने सम्बधियो के साथ, इन पहाडो के पार जाना कठिन समझ कर, गाँव को छोड कर पीछे ही रह गया है। इनमे महतो और उसके भाई भी शामिल थे। 'बवडर' भी इतनी दूर तक आने को तैयार न था, क्योकि वह डर गया था। उसके साथ कुल आधा दर्जन घर ही रुके थे। बाकी सब घर अपनी इच्छा के अनुसार आगे चले आये थे। उन्होने उसके नेतृत्व को मानने से इन्कार कर दिया था।

मैने पूछा, "गाँव मे अब कौन-कौन से मुखिया बच गये है ?"

रेनल ने उत्तर दिया, "अब बूढा 'लाल पानी,' 'चील का पंख,' 'महान् काक,' 'पागल भेडिया,' 'चीता,' 'सफेद ढाल,' और दोगला 'शिएन' नाम के सरदार बाकी रह गये है।"

इस समय तक हम गाँव के पास पहुँच गये थे। मैने देखा गाँव के बहुत से घर बहुत बडे-बडे थे। परन्तु, एक हिस्सा बहुत ही छोटी और रद्दी झोपड़ियो का भी था। मैने उनकी ओर देख कर उनके भद्देपन के लिये कुछ कहा।

परन्तु, मेरी यह बात वहुत बुरी जगह लगी।

रेनल बोला, "मेरी पत्नी के सम्बन्धी इन घरो मे रहते है। गाँव-भर में इनसे अच्छा दल कोई और नही है।"

"क्या इन का कोई सरदार भी है?"

रेनल ने उत्तर दिया, "हाँ, क्यो नही? वहुत से है।"

"उनके नाम क्या-क्या है?"

"उनके नाम? उनमे 'बाण-शिर' एक है। वह अभी तो मुखिया नही बना, पर उसे बनना अवश्य चाहिये। फिर 'तूफान' है। वह अभी तो लडका ही है, पर आने वाले दिनो मे वह निश्चय ही मुखिया बन जायेगा।"

इसी समय हम दो घरो के बीच से होते हुए गाँव के वडे मैदान मे पहुँचे। यहाँ बहुत-सी गठी नगी आकृतियाँ हमे देख रही थी। रेनल से मैंने पूछा, "'बुरे घाव' का मकान कहाँ है?"

उसने उत्तर दिया, "तुम उससे भी चूक गये। वह तो 'बवडर' के साथ ही रह गया है। अगर तुम उसे यहाँ पता, और उसके साथ रहते, तो वह निश्चय ही तुम्हारा सबसे अधिक स्वागत करता। परन्तु, अब भी 'महान् काक' का घर सामने है। यह 'लाल पानी' के घर से लगा हुआ ही है। वह भी गोरे लोगो के लिये अच्छा है। मै तुम्हें उसके यहाँ ठहरने के लिये ही सलाह दूँगा।"

"क्या उसके घर मे औरतो और बच्चो की सख्या अधिक है?", मैने पूछा।

"नही, उसमे उसकी केवल एक ही पत्नी है और दो-या-तीन बच्चे। बाकी सबको वह अलग मकान मे रखता है।"

इस प्रकार आदिवासी हमारे पीछे-पीछे चलते रहे। हम 'महान् काक' के डेरे पर पहुंचे। उस मे से एक स्त्री बाहर आई। उसने हमारे घोडे ले लिये। मैंने दरवाजे पर से चमडे का परदा हटाया और झुककर 'महान् काक' के कमरे मे घुसा। वहाँ धुँधली रोशनी मे खालो के एक गट्ठर पर बैठे हुए हमने उसे देखा। उसने अपनी भाषा मे मेरा स्वागत किया। मैने रेनल से उसे समझाने के लिए कहा कि मै और रेमड उसके साथ रहने के लिये आये है। उसने इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की। यह बात उसे लगी तो कुछ अजीब ही, पर तो

भी इस गांव का कोई भी निवासी गोरे लोगों का स्वागत करके प्रसन्न ही होता। इससे उसे अपना अतिथि-प्रेम दिखाने का मौका मिलता।

उसकी पत्नी ने हमारे लिये अतिथि की निश्चित जगह पर एक खाल बिछाई। यह जगह सबसे अगले हिस्से मे थी। हमारी काठियाँ अन्दर लाई गईं। अभी हम पूरी तरह बैठे भी न थे कि हमें देखने के लिये आदिवासियो की भीड जमा हो गई। 'महान् काक' ने चिलम निकाली और उसमें तम्बाकू और शोगसाशा मिला कर भरा। अब यह चिलम बारी-बारी से होकर हर एक के हाथ मे जाने लगी और बातो का सिलसिला जारी हुआ। इसी बीच एक औरत हमारे सामने लकडी के एक बर्तन मे भैंसे का उबला हुआ मास रख गई। हमे स्वागत मे दी जाने वाली यही अकेली चीज न थी। इसके बाद एक एक आदिवासी आकर हमे अपने-अपने घर में, अलग-अलग किस्म की दावत के लिये, बुलाने लगा। आधे घटे से भी अधिक देर तक हम घर-घर जाकर हर-एक के बनाये मास का स्वाद लेते रहे और उनकी सुलगाई चिलमो में से एक दो कश खीचते रहे। बहुत देर से तूफान आने के आसार दीख रहे थे। अब यह तूफान बुरी तरह आ टूटा। हम रेनल के घर मे आ गये। यह जगह घर कहलाने लायक न थी, क्योकि इसे बहुत कम और पुरानी खालो से ढका गया था। यह एक ओर से खुली हुई थी। हम एक ओर बैठ गये। आदिवासी हमारे चारो ओर जमा हो गये।

मैने जान बूझ कर पूछा, "यह कड़क किस कारण होती है ?"

रेनल ने उत्तर दिया, "मुझे यकीन है कि आकाश में एक बडा-सा पत्थर घूम जाता है।"

मैने कहा, "हो सकता है ! पर मै इन आदिवासियो का ख्याल जानना चाहता हूँ।"

इस पर उसने मेरा प्रश्न उन्हे समझा दिया। उनमे कुछ देर वाद-विवाद हुआ। उनकी राय एक न थी। अन्त मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के आदमी ने ऊपर की ओर आँखें उठाकर अपने मुरझाये चेहरे से, एक कोने मे ही बैठे-बैठे, उत्तर दिया। उसने बताया कि वह इस कडक के बारे मे सदा से ही जानता है। यह एक बहुत बडा काला पक्षी है। उसने इसे एक बार स्वप्न में भी देखा है। यह ब्लैक-हिल्स से उडता हुआ आता है। यह आवाज़ इसके

पखो की होती है। जब वह एक झील के पानी पर अपने पंख फडफडाता है, तब पानी से ही यह बिजली और कडक पैदा होती है।

एक और बूढा आदमी बोल उठा, "यह कडक बहुत बुरी है। पिछली गर्मियो मे इसने मेरे एक भाई की जान ले ली थी।"

मेरे कहने पर रेनल ने उससे इसका कारण पूछा। वह बूढा आदमी एकदम चुप होकर बैठ गया। उसने निगाह तक न उठाई। कुछ देर बाद मुझे यह पता चला कि यह दुर्घटना कैसे हुई थी? जो आदमी मारा गया था वह एक ऐसे समुदाय मे से था, जिसे यह विश्वास था कि वे लोग बिजली की कडक से लडाई कर सकते हैं। जब भी उन्हें लगता था कि आँधी आ रही है, तो वे उसका मुकाबला करना चाहते। तब उनमे से बिजली से युद्ध करने वाले लोग, अपने धनुष, बाण और बन्दूकें आदि लेकर, जादू भरे ढोल और बाँसुरी आदि के साथ, बाहर निकल जाते और बादल पर आग बरसाने लगते। इसके साथ ही वे चीखते-चिल्लाते, और ढोल पीटने लगते। यह सब वे बादलो को डराने के लिए करते। एक दिन ढलती दोपहर के समय एक बडा भारी काला बादल उठा और थोडी ही देर मे चारो ओर छाने लगा। ये लोग पहाड की एक चोटी पर अपने पूरे सामान के साथ चढ गये और उसे रोकने की कोशिश करने लगे। पर, बादल गरजने से न रुका। बहुत तेज़ चमक के साथ बिजली कौंधने लगी। यह बिजली उस दल के एक आदमी पर गिरी और उसे इसने मार डाला। कारण यह था कि वह अपना नुकीला लम्बा भाला इसकी ओर ताने हुए था। उसके मरने पर बाकी सब लोग, डरे हुए अपने घरो की ओर वापिस आ गये।

मेरे मेज़बान 'कोगरा तोगा' या 'महान् काक' के घर मे उस रात एक बहुत अच्छा नजारा देखने मे आया। बहुत-से आदिवासी, अपनी नगी काली शक्लो मे, घर के बीचो-बीच हल्की जलती हुई आग के चारो ओर घेरा डालकर बैठे हुए थे। सुलगी हुई चिलम बारी बारी सबके हाथो मे जा रही थी। इसी समय एक स्त्री ने भैंसे की थोडी-सी चरबी आग पर डाल दी। इससे आग भडक उठी। यह लपट बहुत ऊँची उठी। इस मे सभी बैठे हुए आदिवासियो के चेहरे साफ चमकने लगे। वे खूब भाव भरे ढग से एक दूसरे को कहानियाँ सुना रहे थे। इस प्रकाश मे चारो ओर चमडे की पोशाकें, धनुष, तरकस और

भाले लटकते हुए दीख रहे थे। हमारी बन्दूक और बारूद की थैली भी वहाँ लटक रही थी। कुछ देर के लिए दिन का-सा प्रकाश चारो ओर फैल गया। थोडी देर बाद फिर यह प्रकाश मन्द पड गया। इस प्रकार उजाला और अँधेरा बारी-बारी से कुछ देर आने के बाद आग बिल्कुल बुझ गई और अँधेरे ने सब को ही ढँक लिया।

अगली सुबह जब मैने डेरा छोडा, तो मुझे चारो ओर भौंकने और चीखने की आवाज़ें सुनाई देने लगी। गाँव के आधे से अधिक कुत्ते एक साथ ही भौकने लगे थे। वे कायर होने के कारण, मुझ पर हमला करने के लिए आगे न बढकर, अपनी जगह पर ही खडे-खडे उछल रहे थे। केवल एक छोटा-सा पिल्ला ही मुझ तक आ सका। उसके गले मे चमडे की एक रस्सी पडी हुई थी। वह मेरे जूतो के फीतो को पकडे हुए ही भौकता और चिल्लाता रहा। मेरा हर उठने वाला कदम उसे झटका देता था। मुझे पता था कि सब लोग मेरी ओर देख रहे थे कि मै डरता हूँ या नही? इसलिए मै दायें या बायें बिना देखे, कुत्तो से वैसे ही घिरा हुआ, आगे बढता रहा। जब मैं रेनल के घर के पास आकर बैठ गया, तो वे सब अपने-अपने घरो की ओर लौट गये। केवल एक बडा-सा कुत्ता मेरे आस-पास अपने दाँत दिखाता हुआ दौड़ता रहा। मैने उसे पास बुलाया, पर वह अधिक तेज़ी से गुर्राने लगा। मैने उसे देखा, वह मोटा और गठीला था। मैने मन-ही-मन सोचा कि मुझे मनचाहा कुत्ता मिल गया है। मैने जैसे उससे कहा, "मेरे दोस्त, तुम्हें यह सौदा महँगा पडेगा। आज ही शाम मै तुम्हें मरवा डालूँगा।"

मेरा इरादा उस शाम को आदिवासियो को एक दावत देने का था, ताकि मै अपने चरित्र और बड़प्पन की छाप उनके दिल पर बिठा सकूँ। इसके लिये उन लोगो मे ऐसे मौको पर सफेद कुत्ता मारकर बाँटने की प्रथा है। मैने रेनल से सलाह की। उसने तुरन्त ही पता कर लिया कि अगले ही घर की बुढिया इस कुतिया की स्वामिनी थी। मैने एक चमकीला सूती रूमाल ज़मीन पर फैलाया और कुछ केसर और दाने इस पर रखे। तब बुढिया को बुलाया गया। मैने पहले कुत्ते की ओर इशारा किया और फिर इस रूमाल की ओर। वह खुशी से उछल पडी और रूमाल लेकर अपने मकान में चली गई। मैने और सारे काम के लिये दूसरी दो औरतो की सेवा का

लाभ उठाया। उन्होने कुत्ते को पजो से पकडा और उसे मारकर पहले आग पर भूना और तब खाल उतारकर और काटकर उसे दो बडी पतीलियो मे उबलने को डाल दिया। इसी बीच मैंने रेमड को अपना बचा-खुचा आटा भैंसे की चरबी मे डालने को कहा। साथ ही एक बडी पतीली मे चाय बनाने के लिये भी कह दिया।

'महान् काक' की स्त्री भी आज की दावत के लिये घर की सफाई के काम मे जुट गई। मैने अपने मेज़बान को लोगो को बुलाने का काम सौंप दिया, ताकि मुझसे कोई भूल न हो।

दावत के समय मे किसी भी आदिवासी को एक घण्टा पहले सूचना देने से काम चल जाता है। हमारी इस दावत का समय दोपहर ग्यारह बजे था। इस समय रेनल और रेमड गाँव मे से होकर, उसके निवासियो से प्रशसा पाते हुए कुत्ते के मास की दोनो पतीलियो को उठाकर हमारे डेरे तक लाये। उन्होने इसे मकान के बीचोबीच रख दिया। तब वे रोटी और चाय लेने चले गये। इसी बीच मैने नये जूते पहन लिये और अपनी पुरानी हिरण की खाल की कमीज़ की जगह एक दूसरी कमीज़ को पहन लिया। ऐसे मौको के लिये ही मै इसे साथ लाया था। इस समय मैने उस्तरे से अपनी दाढी-मूँछ भी बनाईं, क्योकि ऐसे समय यह सब ज़रूरी हो जाता है। इस प्रकार सज-धज कर मैं दरवाज़े पर रेनल और रेमड के साथ बैठ गया। कुछ ही क्षण मे मेहमान घर मे आने लगे और एक घेरे मे सटकर बैठ गये। हर एक के हाथ मे लकडी का एक बर्तन था, जिसमे उसका भोजन परोसा जाना था। जब सब जमा हो गये, तो उनके दो पहरेदार सामने आये और भेड के सीगो से बनी कडछियो से खाना परोसने लगे। बूढो और सरदारो का दुगना हिस्सा दिया गया। कुत्ते का सारा मास थोडी ही देर मे खत्म हो गया। सबने अपने खाली बर्तन दिखाकर इस बात की सूचना दी। तब बारी बारी से रोटी बाँटी गई और अन्त मे चाय परोसी गई। पहरेदार जब इसे भोजन वाले लकडी के बर्तनो मे परोसने लगे, तो मुझे इसका रग बडा अजीब-सा लगा।

मेरे पूछने पर रेनल ने बताया कि चाय कुछ कम होने से उन्होंने एक और जडी मिला दी थी, ताकि यह गाढे रग की बन सके। सौभाग्य से

आदिवासियो को इसके स्वाद में फर्क मालूम नही पडा। चाय काफी मीठी थी और उन्हें इतने से ही मतलब था।

दावत समाप्त होने पर भाषण करने का समय आया। 'महान् काक' ने लकडी के एक चौडे फट्टे पर तम्बाकू और शोगसाशा को मिलाकर काटा और चिलम भरकर सुलगाई। तब तक चिलम बारी-बारी से सबके हाथ में घूमने लगी। मैने अपना भाषण शुरू किया। मेरे हर वाक्य को रेनल उन्हें समझाता जा रहा था। वे लोग बार-बार प्रसन्नता प्रगट करते थे। मुझे याद पडता है कि मैने कुछ इस प्रकार की बातें कही थी।

मैने कहा, "मै बहुत दूर के देश से आया हूँ, जहाँ उनकी-सी चाल से चलने पर एक साल मे भी पहुँचा नही जा सकता।"

उन्होने अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा, "हाऊ, हाऊ ?"

"वहाँ पर हम लोग घास की पत्तियो से भी अधिक सख्या मे रहते है। हमारी औरतें इतनी सुन्दर हैं, जैसी आपने कभी न देखी होगी। सभी आदमी वीर योद्धा

"हाऊ, हाऊ, हाऊ !"

मैने जब अन्तिम शब्द कहे तब मेरी आत्मा कुछ दुखी हुई। मैने फिर से कहना शुरू किया।

"जब मै वहाँ रह रहा था, तब मैंने आप लोगो के बारे मे सुना कि आप कितने महान् और बहादुर जाति के लोग है। मैंने यह भी सुना कि आप भैंसो और शत्रु के शिकार मे कितने चतुर है ? मैने इन सब बातो को अपनी आँखो से देखने का निश्चय किया।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ !"

"इन पहाडो मे से घोडे पर सवार होकर आने के कारण मै बहुत अधिक भेंटे नही ला सका।"

"हाऊ।"

"पर मै सबको थोडा-थोडा तम्बाकू देने के लिए अवश्य लाया हूँ। आप लोग पीकर देख सकते है कि व्यापारियो से खरीदे गये तम्बाकू के मुकाबले मे यह कैसा है ?"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

"लारामी किले मे मेरे पास काफी सारा बारूद, गोलियाँ, चाकू और तम्बाकू पडा है। ये चीजें मै आप को देना चाहता हूँ, यदि आप किले मे, मेरे यहाँ से जाने से पहले, आ सकें।"

"हाऊ, हाऊ, हाऊ, हाऊ ?"

रेमड ने लगभग डेढ सेर तम्बाकू के छोटे-छोटे टुकडे करके सबको बाँटना शुरू किया। इस बीच मेनेसीला या 'लाल पानी' नाम के बूढे सरदार ने उत्तर देना शुरू किया। यह भाषण काफी लम्बा था। पर उसका सार इस प्रकार था—

"मै भी सदा से ही गोरो से प्यार करता रहा हूँ। इस धरती पर वे लोग सब से अधिक बुद्धिमान् प्राणी है। मेरा विश्वास है कि वे जो कुछ चाहें कर सकते है। हमारे लोगो के घरो मे वे जब कभी भी आते हैं तब मुझे प्रसन्नता ही होती है। यह ठीक है कि मैने उन्हें अधिक भेंटें नही दी, पर यह भी ठीक है कि मै इस लायक ही नही था। आप का हमारे बीच मे आना ही इस बात का सबूत है कि आप हम से प्यार करते हैं, नही तो आप इतनी दूर चल कर क्यो आते ?"

कुछ और लोगो ने भी इसी तरह के भाषण दिये। तब तम्बाकू पीने, हँसने और आपस मे बातें करने का सिलसिला शुरू हुआ। बूढा मेनेसीला बीच मे ही ऊँची आवाज़ मे बोल पडा, "इस समय सब लोग यहाँ जमा हैं। इसलिये यह मौका है कि हम लोग अगले काम-काज की बात तय कर लें। हम इन पहाडो पर इस लिए आये थे कि अगले साल के लिए घरो का सामान इकट्ठा कर लें। हमारे पुराने डेरे कमजोर पड गये हैं। अब तक हम कोई भी अच्छा शिकार नही कर सके। हमने नर भैसे तो काफी मार लिए हैं, पर मादा भैंसे नहीं मार पाये। नर भैंसो का चमडा इतना मुलायम नही है कि हमारी औरतें उनसे तम्बू बना सकें। मेरे विचार मे 'मैडिसन बो' नाम के पहाड पर बहुत-सी मादा भैंसें हमे मिलेंगी। इसलिए हमे उधर ही चलना चाहिए। यह ख्याल रखना कि यह जगह उससे भी पश्चिम की ओर है, जहाँ तक हम लोग अब तक कभी गये है। हो सकता है कि वहाँ हमे नाग जाति के लोगो का हमला सहना पडे। वह स्थान उनके शिकार का ही है। पर, हमे अपने नये घर भी बनाने हैं। हमारे पुराने घरो मे जान नही रह गई है। हमे नाग लोगो

से डरना नही चाहिए। हमारे योद्धा बहादुर है और वे नाग लोगो से युद्ध के लिए तैयार भी है। इसके अलावा हमारे साथ तीन गोरे भी है। उनकी बदूकें भी हमारे ही साथ रहेंगी।"

इस पर उन लोगो मे काफी बहस छिड़ गई। रेनल ने तो मुझे यह नही बताया कि उन लोगो ने क्या-क्या कहा? पर मै बोलने वालो के इशारो से सब कुछ पहचान गया। इस बहस के बाद उन मे से बहुत से लोग उस बूढे सरदार की राय से सहमत हो गये। इसके बाद कुछ देर तक शाति रही। बाद मे उस बूढे सरदार ने बेसुरे ढग से कुछ बोला। मुझे पता चला कि इस प्रकार मुझे धन्यवाद दिया गया था।

उसने कहा, "अब हमे चलना चाहिए और इन लोगो को आराम का मौका देना चाहिए।" इस प्रकार सब वहाँ से विदा हुए। खुली हवा मे आकर कुछ देर बूढा सरदार दावत की प्रशसा मे, गाँव भर मे, गाता फिरा। उनका यही रिवाज था।

दिन ढलने लगा और सूरज भी छिपने लगा। इसी समय घोडे पास के मैदानो से इकट्ठे होकर लौटने लगे और अपने-अपने स्वामियो के घरो के आगे आकर जमा हो गये। बहुत जल्दी ही उन मकानो के बीच घोडो का एक घेरा-सा बन गया। इधर-उधर आग जल रही थी। अँधेरे मे चारो ओर बैठी सूरतें कभी-कभी चमक पडती थी। मै रेनल के पास जाकर बैठ गया। मेनेसीला का एक लडका, जो मेरे मेजबान का भाई ही था, 'चील का पख' नाम से मशहूर था। वह पहले ही से वहाँ बैठा था। मैने उससे पूछा, "सुबह गाँव आगे चलेगा या नही ?" उसने कहा, "कुछ भी निश्चय से नही कहा जा सकता।" उसने बताया कि बूढे महतो के मरने के बाद से लोग अपने को अनाथ अनुभव करने लगे है। उनकी हालत बिना सिर वाले शरीर की-सी है। इस बात को सुन कर मै भी सुबह के विषय मे बिना कुछ जाने ही सो गया।

पौ फटने पर मै सुबह जब नदी तट से, जगल पानी से निबट कर, आ रहा था, तब मैंने देखा कि कुछ घर गिराये जा रहे थे। लगता है एक-दो बडे मुखियाओ ने आगे बढने का निश्चय कर लिया था। बाकी सबने भी उनकी ही नकली करनी शुरू कर दी। अब जल्दी-जल्दी सब तम्बू गिराये जाने लगे

और कुछ ही देर मे घरो की जगह केवल आदमी और घोडे ही इकठ्ठे दिखाई देने लगे। मकानो का ढाँचा पतीलो, पत्थर के हथियारो, सीग की बनी कड-छियो, खालो और सूखे मास के थैलो समेत जमीन पर बिखरा पडा था। औरते बहुत जल्दी मचा रही थी। बूढी औरतें भी पूरे ज़ोर से चीखती फिर रही थी। घोडे धैर्य के साथ खडे रहे। उन पर मकानो का सामान और बल्लियाँ आदि लादा जाता रहा। कुत्ते सुस्ती से लेटे हुए चलने के समय की इन्तज़ार कर रहे थे। हर एक योद्धा जमीन पर बैठा हुआ था। बुझती हुई आग के पास बैठा हुआ प्रत्येक योद्धा निश्चिन्त-सा लग रहा था। उसने अपने हाथ मे घोडे की खोजी रस्सी पकडी हुई थी।

तैयारियाँ पूरी होते ही हर परिवार ने चलना शुरू कर दिया। भीड जल्दी ही खिसकने लगी। मैने उन्हें नदी पार करके दूसरी ओर के पहाडो की ओर बढते देखा। जब सब चले गये, तब मैं भी रेमड के साथ-साथ उनके पीछे-पीछे चला। ज्यो ही हम पहाडी की चोटी पर पहुँचे, हमे अपने सामने मील भर दूर तक आदिवासियो का फैलाव दिखाई दिया। सभी जगह उनके भालो की नोकें, धूप मे, चमक रही थी। जैसे धूप इससे अधिक अच्छी किसी चीज़ पर कभी चमकी ही न थी। इनके साथ भारी बोझ से लदे हुए लादू घोडे थे। उन्हें कुछ समझाते हुए बूढी औरतें चल रही थी। उनकी पीठ पर कुछ बच्चे भी बैठे हुए थे। इस समूह मे कुछ खच्चर और टट्टू भी थे, जिन पर कुछ हँसती हुई जवान स्त्रियाँ चढी हुई थी। हम जब भी देखते, वे प्रसन्न होती। छोटे बच्चे अपने हाथो मे छोटे-छोटे तीर-कमान लिये हुए साथ-साथ भाग रहे थे। अनेको कुत्ते घोडो की टाँगो मे होते हुए दौड रहे थे। जवान वीर खूब सज-धज कर इस भीड़ मे टुकडियाँ बना कर चल रहे थे। कभी-कभी वे दो या तीन सवारो की कतार बना कर तेज़ी से दौडने लगते। इस प्रकार वे अपने घोडो की चाल का पूरा अनुमान करना चाहते थे। बीच-बीच मे सफेद लबादे पहने कुछ बूढे लोग पैदल चलते हुए दिखाई दे जाते थे। ये लोग गाँव के बडे और बुजुर्ग लोग थे। इन लोगो की आयु और अनुभव का सब जगह सम्मान होता था। ऊबड-खाबड मैदान और खड्डो वाली पहाडियो पर दिखाई देने वाले ये दृश्य बहुत ही विचित्र लग रहे थे। बहुत दिन साथ रहने से मैं इन दश्यो से बहुत अधिक परिचित हो गया था। लेकिन इसका जादू का-सा असर कभी कम

न पडा ।

हम ज्यो-ज्यो आगे बढे, यह दल और भी बिखरता गया। तब हम पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचे। यहाँ आकर बूढे लोग एक घेरे मे बैठ गये। उन्होने एक चिलम सुलगाई और सब आपस में हँसी-मज़ाक करने लगे। बाकी लोग भी आकर धीमे-धीमे उनके पीछे जमा होने लग। तब वे बूढे लोग उठ खडे हुए और अपने कपडो को समेट कर फिर से आगे बढने लगे। चोटी पर चढ कर हमने अपने सामने एक गहरी ढलान पाई। बिना एक मिनट भी रुके सब लोग जत्थे के रूप मे नीचे उतरने लगे। चारो ओर धूल उड रही थी और गडबड-सी मची हुई थी। घोडे कई बार पैरो के बल फिसल पडते। औरते और बच्चे चीखने लगते। कुचले जाने पर कुत्ते भौंकने लगते और नीचे की ओर पत्थर और मिट्टी गिरने लगते। कुछ ही देर बाद चोटी पर से हमने देखा कि यह गाँव सामने के मैदान मे फिर से फैल गया था।

उस दिन दोपहर को डेरे मे आराम करते हुए, मुझे फिर से पुरानी बीमारी का दौरा उठा। कुछ ही मिनटो मे मेरी वह सारी शक्ति समाप्त हो गई, जो मै पिछले हफ्तो से बटोर रहा था। मै बहुत कमजोर हो गया। शाम के समय ही मै 'महान् काक' के घर मे सो गया और सुबह होने तक बेहोश लेटा रहा। अपने सिर पर ही खडे एक घोडे के हिनहिनाने और खुली धूप के आ पडने से मै जाग गया। सारा गाँव उठना शुरू हो गया था और औरते घरो को समेट रही थी। उठ कर मैने अपना कम्बल उतारा और अपनी पुरानी सेहत फिर से लौटती अनुभव की। अभी मै पांवो के बल पूरा खडा भी न हुआ था कि फिर से मे काँप गया और खडा न रह सका। रेमड घोडी और खच्चर को ले आया। मैने ज़मीन से ही घोडी पर काठी रखने की कोशिश की, पर सफल न हो सका। रेमड से मैने कहा, "तुम इस पर काठी चढाओ।" तब तक मै पास ही खालो के एक ढेर पर बैठ गया। उसके ऐसा करने पर मै बहुत कठिनता से उस पर चढ पाया। हम एक बडे मैदान से होकर गुजरने लगे। इस समय आदिवासियो से आगे-आगे चलते हुए मै समय और स्थान से दूर की बहुत-सी बातो को सोचने में खो गया। अचानक ही बादल घिर आये और गरजने लगे। बादल इतने काले थे कि उनसे आने वाली तबाही का अनुमान भली भाँति हो सकता था। थोड़ी ही देर मे चारो तरफ अँधेरा छा गया।

मैंने पीछे मुड कर देखा, आदिवासी रुक कर आँधी के सामने की तैयारी कर रहे थे। वे सब तरफ फैल गये थे।

जब से मेरी बीमारी का पहला हमला मुझ पर हुआ था, तब से वर्षा का मेरी सेहत पर बहुत बुरा असर होता था। मैंने अपने को बहुत कठिनता से घोड़े की पीठ पर सँभाला हुआ था। मेरे अन्दर इससे अधिक ताकत न थी। इस दशा मे बादलो को घिरता देखकर मुझे पहली बार यह लगा कि शायद इस रेगिस्तान से मै कभी न लौट सकूँगा। मै अपने मन में सोचने लगा, "यह मैदान बहुत जल्दी ही काम पूरा कर देते है। बहुत देर तक बीमार रह कर बुरी हालत मे इधर-उधर पड़े रहने की बजाय, यह अच्छा ही होगा कि मैं यहाँ समाप्त हो जाऊँ।" इसलिए जिस खाल पर मै बैठा था उसे ही मैंने ओढ लिया और आँधी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। आखिर बहुत तेज़ी से बादल बरसा और जिस तेज़ी से यह आया था उसी तेज़ी से मिट भी गया। थोडी ही देर मे आकाश फिर से साफ हो गया। इस बीच मेरे विचारो ने अपनी पिछली ज़िदगी को दोहरा लिया। इस वर्षा ने मेरी सेहत पर कोई बुरा असर न किया था। घटे भर मे ही हम लोगो ने डेरा डाल लिया। दूसरे कपडे पास न होने से, मैंने रेनल से नये तरीके के कपडे उधार लिये। कपडे बदल कर मैं 'महान् काक' के घर की ओर आ गया, ताकि और सब कुछ भी वहाँ बदल सकूँ। वहाँ कम से कम छ स्त्रियाँ बैठी थी, जिनमे से एक ने उठ कर मेरी बाँह थाम ली। उस समय हम दोनो के रग मे फर्क देख कर बाकी लोगो ने हँसना शुरू कर दिया।

इस दिन का हमारा यह डेरा ब्लैक हिल्स से कुछ ही दूरी पर था। इन पहाडियो पर देवदार के पेड लगे हुए थे। आदिवासियो ने इन शिकारगाहो की ओर जल्दी यात्रा करने की दृष्टि से अपना सूखे मास का बोझ वही छोड कर आगे बढने का निश्चय किया। कुछ ने अपने मकान भी वैसे ही छोड दिये और केवल धूप और वर्षा से बचने के लिए कुछ खालें लेकर ही वे आगे बढ चले। आधे से ज्यादा लोग लादू घोडो को लिए हुए पर्वतो की ओर चल पडे। उन्होंने सारा सूखा मास पेडो पर लटका दिया, ताकि भेडिये और भालू इसे न पा सकें। शाम के समय सभी फिर अपने डेरो पर लौट आये। कुछ लोगो ने बताया कि उन्होने पहाडो मे गोली चलने की आवाज सुनी है। इस पर लोग अनेक

प्रकार के अनुमान करने लगे। मेरे विचार मे शायद शॉ और हेनरी मिलने आ रहे थे। मुझे रत्ती भर भी ख्याल न था कि मेरा मित्र इस समय लारामी किले में एक बिस्तर पर पडा हुआ, किसी पौधे के ज़हर से, बीमार होगा और अपना समय तम्बाकू पीकर या शेक्सपीयर को पढ कर बिता रहा होगा।

अगले दिन जब हम मैदानो मे आगे बढे तो कुछ नौजवान, स्वयसेवको की भाँति, आगे-आगे चले गये। बहुत देर बाद हमने पहाडो की चोटियो पर उन्हे अपने कपडे हिलाते हुए देखा, जो इस बात की निशानी थी कि उन्होने भैंसो को खोज लिया है। इसके कुछ ही देर बाद कुछ भैंसे दिखाई दिये। घुडसवार इनके पीछे-पीछे दौड गये। दूर से ही हमने देखा कि एक दो भैंसे मार दिए गए। रेमड को भी तुरन्त जोश आ गया।

वह बोला, "यह देश मेरे लायक है। काश ! मै यहाँ एक महीने मे जितने भी भैंसे मारूँ, यदि उतने ही सेंटलुई भी ले जा सकूँ, तब एक ही सर्दियो मे मैं मालामाल हो जाऊँगा। तब मै भी पैंपिन या दूसरे व्यापारियो जैसा धनी बन जाऊँगा। मै तो इस इलाके को गरीब लोगो का स्वर्ग कहता हूँ। मुझे यहाँ जब भी भूख लगती है, तो मै बन्दूक उठा कर निकल जाता हूँ और रुपये से खरीदे जा सकने वाले मास से अधिक अच्छा मास ले आता हूँ। आप अगली सर्दियो मे मुझे सेंटलुई मे रहता हुआ नही देखोगे।"

रेनल ने कहा, "अरे यह बात तुम तब कहते तो और भी अच्छा होता, जब तुम और तुम्हारी स्पेनी पत्नी भूखो मर चुके होते। तुम भी कितने पागल हो कि अपनी पत्नी को लेकर वहाँ जा बसे हो !".

मै बोला. "क्या तुम्हारी पत्नी स्पेनी है ? मैंने तो कभी उसके बारे मे नही सुना ? क्या तुम ने उससे विवाह किया है ?"

रेमड ने उत्तर दिया, "नही, जब पादरी लोग अपनी पत्नियो से विवाह नहीं करते, तो मै ही क्यो करता ?"

मैक्सिकन पादरियो के इस प्रकरण ने धर्म का विषय ला दिया। मैंने देखा कि मेरे ये दोनो गोरे साथी, दूसरे गोरे लोगो के समान ही, अपने होन-हार के प्रति बिलकुल बेखबर है। रेमड ने कभी पोप का नाम भी न सुना था। कोई भी पादरी उसके लिए सबसे बडा धर्मगुरु था, भले ही वह लाओस या सान्ताफे मे रहता हो। रेनल ने बताया कि आज से दो साल पहले लारामी

किले मे एक पादरी आया था। वह किसी मिशन पर जा रहा था। उसने वहाँ बहुत सारे लोगो से अपने अपराध स्वीकार करवाये थे। इस प्रकार वह बहुतो को मुक्ति दे गया था। रेनल ने बताया, "मैने भी उस समय अपने लिये मुक्ति माँग ली थी। मेरा विश्वास है कि वस्तियो की ओर जाने के समय तक के लिए यह काफी रहेगी।"

इसी समय वह रुका और एक दम बोल पडा, "देखो! देखो! 'चीता' नाम का युवक हिरण का पीछा कर रहा है।"

इसी समय अपने सफेद और काले घोडे पर चढा हुआ वह युवक हिरण का पीछा करता हुआ, सामने की चोटी पर से तेजी से गुज़रा। उसकी यह हिम्मत केवल शिकार और वीरता के कारण ही थी, नही तो हिरण का पीछा करने की ताकत इन छोटे जानवरो मे नही होती। हिरण आदिवासियो के बडे झुड की ओर दौडा, जो नीचे मे ऊपर की ओर चढ रहा था। कुछ आवाजें गूँज उठी और घुडसवारो ने उसका पीछा किया। इस पर वह एक दम बाई ओर को मुडा और इस तेजी से भाग निकला, कि 'चीते' तक का घोडा उसका पीछा न कर सका। कुछ देर के बाद हमे एक और शिकार देखने को मिला। एक बूढा-सा भैंसा पास के एक खड्ड से उछल कर सामने आया और उसके पीछे-पीछे एक आदिवासी युवक भी उसी खड्ड मे से बाहर आया। वह घोडे पर बिना काठी या जीन के बैठा हुआ था और अपने छोटे से घोडे को पूरी तेजी से दौडा रहा था। वह अपने बहुत बडे शिकार के पास आता गया। भैंसे की छोटी-सी पूँछ तनी हुई थी और उसकी जीभ जबडो से बाहर लटक रही थी। वह पूरी तेजी से भाग रहा था। एक ही क्षण मे वह युवक इसकी बगल मे आ पहुँचा। यह हमारा मित्र 'तूफान' ही था। उसने लगाम घोडे की गर्दन पर ही डाल दी और अपने कधे पर लटकते तरकश मे से उसने बाण खीचा।

रेनल बोला, 'मै सच कहता हूँ कि एक ही साल मे यह लडका इस गाँव के सबसे अच्छे शिकारियो मे से एक होगा। यह लो! इसने उसे तीर मार दिया। यह दूसरा भी मारा। बूढे उस्ताद, तुम्हें अब पता चलेगा। तुम्हारी बगल मे दो बाण धँस चुके है। यह लो, उसने फिर बाण मारा। यह 'तूफान' जब भी हमला करता है, इसी तरह से चीखता है। हाँ बूढे भैंसे! एक बार

फिर कूदो। याद रखो, तुम सारे दिन भी कूदते रहो, तब भी बच न सकोगे।"

वह भसा बार-बार अपने हमलावर पर उछलता रहा, परन्तु घोडा भी बहुत चतुरता से उसके हमलो को बचाता रहा। बहुत देर बाद भैंसे में और अधिक गुस्सा बढ गया और उसने तूफान को भागने पर मजबूर कर दिया। यह युवक घोडे की पीठ पर एक छिपकली के समान चिपक गया और अपने घोडे पर पूरी तेज़ी के साथ दौडता हुआ हमारी ओर देखता और हँसता गया। कुछ ही देर मे वह फिर से भैंसे की बगल मे आ गया। भैंसा अब तक निराश हो चुका था। उसकी आँखें उसकी सटो के बालो से उलभ गई थी। उसके मुख और नाक से खून बह रहा था। इस प्रकार एक-दूसरे से उलभते हुए वे दोनो पहाडी के दूसरी ओर गायब हो गये।

कुछ और आदिवासी भी पूरी तेज़ी के साथ उसी ओर निकल गये। हम बहुत धीमे-धीमे बढे। बहुत जल्दी ही हमने देखा कि भैंसा दूसरी ओर मरा पड़ा था। आदिवासी उसके चारो ओर जमा होकर उसकी खाल और मास उतार रहे थे। ये लोग अपने छोटे-छोटे औज़ारो से इस जादू के साथ काम कर रहे थे कि एक मिनट मे ही वह बडा भारी शव कुछ छोटी-सी हड्डियो और मास के ढेर के रूप मे रह गया। आस-पास के असभ्य लोगों को देखना बहुत अच्छा नही लग रहा था। उनमे से कुछ लोग जाघ की बडी-बडी हड्डियो को लेकर उनके अन्दर की लाली को खा रहे थे। कुछ दूसरे लोग जिगर और दूसरे कुछ अगो के टुकड़े खा रहे थे। लगता था कि वे भेडियो से भी अधिक भूखे थे। उनमे से कुछ के चेहरे खून से पुते हुए और बहुत ही डरावने लग रहे थे। मेरे मित्र 'सफेद डाल' ने मुझे भी एक लाली वाली एक हड्डी दी। उसने इसे इस तरह सफाई से चीरा था कि इसका लाल हिस्सा एकदम ही बाहर आ गया था। एक दूसरे आदिवासी ने मुझे मांस का एक और टुकडा दिया। यह पेट के मास मे से था। मैने इन भेंटो को नम्रता के साथ लौटा दिया। मैने एक छोटे लडके को देखा, जो अपने चाकू के साथ जबडो और गालो के पास जुटा हुआ था। उसमे से उसने कुछ खास टुकडे निकाले, जो बहुत ही मुलायम थे। यह कहना अधिक ठीक होगा कि ऐसे समय, तुरन्त खा जाने के लिये, कुछ थोडे से हिस्से ही प्रयोग किये जाते है।

उस रात वही डेरा डाल कर अगले दिन काफी देर तक हम पश्चिम की

ओर बढते रहे । उससे अगली सुबह हमे फिर से सफर शुरू करना पडा । सात जुलाई के रोज़, दोपहर के लगभग, हम वर्षा के पानी से बने कुछ जोहडो के पास रुके और दोपहर बाद फिर आगे चल पडे । यह दो समय की यात्रा आदिवासियो की आदत के विरुद्ध थी । पर सभी लोग शिकार की जगह पर जल्दी पहुँचना चाहते थे, ताकि जितनी जल्दी हो सके, अधिक से अधिक भैंसे मार कर लौट सकें, क्योकि पडौस बहुत ही खतरनाक था । मै यहाँ बहुत-सी ऐसी बातें और घटनाएँ छोड रहा हूँ, जो इस दौरान मे घटी थी । साँझ होते समय, उसी दिन, हम एक छोटी-सी रेतीली धारा के किनारे पहुँचे । आदिवासियो मे से कोई भी इस धारा का नाम नही बता सका, क्योंकि वे इस इलाके से बिलकुल भी परिचित नही थे । यहाँ की ज़मीन इतनी उजाड और उखडी हुई-सी थी कि उनके घोडो के लिए यहाँ घास नही मिल पाई । इसलिए वे आगे से आगे बढते रहे, ताकि डेरा डालने लायक जगह पा सकें । अब यह इलाका और भी जगली बन गया था । यहाँ मैदानो मे जगह-जगह घाटियाँ, खड्ड और खाइयाँ मिल रहे थे । इसलिए आदिवासी धारा के किनारे-किनारे बढते रहे । इसी समय मेनेसीला नाम के बुज़ुर्ग सरदार ने ध्यान लगा कर यह जानना चाहा कि शिकार किधर मिलेगा ? इसके लिए सब सरदार लोग एक घेरा बना कर घास पर बैठ गए और तम्बाकू पीते हुए बातें करने लगे । एक बूढे आदमी ने एक हरी टिड्डी को उठाया और उसकी ओर कुछ देर ध्यानपूर्वक देख कर वह बोला, "हमारे पिता, हमे बताओ कि हमे भैंसे पाने के लिए कल किस ओर जाना चाहिये ?"

टिड्डी ने बहुत तगी मे आकर अपनी मूँछो के बाल इधर-उधर घुमाये और पश्चिम की ओर उन्हें टिका दिया । मेनेसीला ने उसे ज़मीन पर गिरा दिया और बहुत खुशी से हँसने लगा । वह बोला, कि अगर अगली सुबह सब उसी तरफ गये तो निश्चय ही बहुत अधिक शिकार मार पायेंगे । डाकोटा लोग इस टिड्डी को भैंसे की दिशा बताने वाला कीडा समझते हैं ।

शाम के समय हम एक हरी और ताजी चरागाह मे आये । इसके बीच से होकर धारा बह रही थी । इसके दोनो ओर ऊँची-ऊँची नगी चोटियाँ खडी थी । आदिवासी लोग इसकी ढलान पर उतर गये । मै सबसे पीछे था । इसलिये मैं इस जगह पर सबसे अन्त मे पहुँचा । नीचे पानी के पास भाले चमक रहे

थे, पख फडक रहे थे और आदमी तथा घोडे आ-जा रहे थे। पार की चरागाह पर पहले से ही आदिवासियो की एक भीड जमा हो रही थी। अभी सूर्य अस्त हो ही रहा था और उसकी किरणे पहाडो की चोटियो से होती हुई फैल रही थी।

मैने रेनल से कहा, "आखिर हमने डेरे के लिए एक अच्छी जगह पा ही ली ?" रेनल ने उत्तर दिया, "ओह ? यह तो बहुत ही अच्छी जगह है। खास कर अगर कही नाग जाति की कोई लडाकू टुकडी आस-पास ही हो और उनके दिमाग मे पास की पहाडी की चोटी से हम पर गोलियाँ बरसाने की बात भी बैठ जाए। मै तो ऐसी जगह पर डेरा डालने के हक मे बिलकुल नही हूँ।"

आदिवासी डेरा डालने के लिए उत्सुक थे। एक बहुत ऊँची चोटी पर एक सैनिक साँझ की चमकती धूप में बैठ कर चारो ओर आस-पास के इलाके में देखने लगा। रेनल ने मुझे बताया कि इस बात की खोज मे इनके बहुत से युवक इधर-उधर के इलाके मे चले गये है।

अब पहाड की चोटी पर भी छाया पडने लगी। इस समय तक डेरे खडे किये जा चुके थे। गाँव मे फिर से शान्ति छा गई थी। इसी समय एकदम एक चीख सुनाई दी। मर्द, औरतें और बच्चे बहुत उतावले हो बाहर निकल आये। वे सामने की पहाडियो की ओर देख रहे थे, जिधर से चीखने की यह आवाज़ आई थी। मुझे बहुत दूरी पर कुछ काली और भारी शक्लें एक छोटी-सी पहाडी पर से गुज़रती हुई दिखाई दी। उनके निगाह से हटते ही कुछ और वैसी ही शक्लें आईं। ये मादा भैंसो के जत्थे थे। आखिर हम शिकार की जगह पर पहुँच चुके थे और हर बात इसकी सूचना दे रही थी कि कल का शिकार काफी अच्छा रहेगा। बहुत ज्यादा थकने और हार जाने के कारण मैं 'महान् काक' के घर मे ही लेट गया। कुछ देर बाद रेमड ने आकर मुझे कुछ तमाशा देखने के लिए बाहर बुलाया। वहाँ बहुत से आदिवासी जमा होकर गाँव के पश्चिमी हिस्सों के मकानो के पास खडे हँस रहे थे। उनसे कुछ दूरी पर मैं देख रहा था कि दो काले राक्षसो जैसी शक्ले एक-दूसरे से टकराती हुई हमारी ओर ही आ रही थी। ये दोनो नर भैंसे थे। हवा उनकी ओर से गाँव की ओर आ रही थी। वे इतने अंधे और मूर्ख थे कि अपने शत्रुओ की ओर, बिना सोचे, बढ़े चले आ रहे थे। रेमड ने मुझे बताया कि दो नवयुवक किनारे की घाटियो मे छिप कर, हम से बीस कदम आगे बन्दूकें लिए बैठे थे। वे दोनो भैंसे धीरे-धीरे

आगे बढते आ रहे थे। वे बुरी तरह झूम रहे थे। वे आदिवासी युवको के बिलकुल पास तक चले आये। यहाँ आकर वे कुछ चौकन्ने हुए। दोनो रुक कर खडे हो गये। वे इधर-उधर भी नही देख रहे थे। हमें उनकी काली गर्दन ही दिखाई दे रही थी। सीग, आँखें और नाक उन्होने बीच मे झुका ली थी। आखिर उन दोनो मे से एक ने लौटने का निश्चय किया। बहुत ही धीरे-धीरे और मस्ती के ढग से वह घूमने लगा। अब हमे उसकी बगलें भी साफ दिखाई देने लगी। इसी समय गोली दागने की आवाज और सफेद धुआँ, सामने से उठता हुआ, दिखाई दिया। वह भैंसा बहुत बुरी तरह उछला और तेजी से भाग निकला। इस पर इसका दूसरा साथी भी बहुत तेजी के साथ घूमा। पर, दूसरे आदिवासी ने इस पर बहुत जोर से गोली दाग दी। तब दोनो ही भैंसे पूरी तेजी से भागने लगे। आधे से ज्यादा युवक आवाजें कसते हुए उनके पीछे भागने लगे। पहला भैंसा जल्दी ही रुक गया और लोगो के देखते ही देखते गिर पडा। दूसरा कुछ कम घायल हुआ था। वह पहाडियो मे होता हुआ भाग गया।

आधे घण्टे मे ही चारो ओर पूरी तरह अँधेरा छा गया। मै फिर से सोने के लिए लौट गया। मै बीमार था, इसलिए मुझे अगले दिन होने वाले बडे भारी शिकार को देखने की इच्छा और अधिक उत्तेजित करने लगी।

— ० —

१५ : शिकार का पड़ाव

पौ फटने से बहुत पहले ही आदिवासियो ने अपना डेरा उखाड लिया। मेनेसीला के परिवार की स्त्रियाँ इस काम में सबसे आगे रहती थी। मैंने देखा कि बूढा स्वय बुझते हुए अँगारो के पास बैठा हुआ, अपने हाथ सेंक रहा था। ठड बहुत अधिक थी। आगे बढने की तैयारियाँ बहुत गडबड मे और बेतरतीबी से की गई थी। कुछ परिवार चलने लगे थे और कुछ के मकान अभी उखडे भी न थे। इस पर वह बूढा अधीर हो उठा और गाँव के-बीचो-बीच जाकर वह, अपने लबादे मे लिपटा हुआ, खडा हो गया। वह लोगो को बहुत ऊँची और तेज आवाज मे कहने लगा कि जब वे सब लोग शत्रु के शिकार की ज़मीन पर है, तब उन्हें बच्चो का-सा व्यवहार नही करना चाहिए। उन्हें हमेशा की बजाय अब अधिक सगठित और चुस्त होना चाहिए। उसकी इस बात का असर तुरन्त हुआ। देरी करने वाले लोगो ने अपने घर गिराए और लादू घोडो को लाद लिया। सूर्य उगते तक एक-एक मर्द, औरत, बच्चा और पशु गाँव से बाहर निकल चुका था।

यह हरकत इस लिए की गई थी ताकि अच्छी और सुरक्षित जगह खोजी जा सके। इस लिए हम छोटी नदी के साथ तीन या चार मील तक आगे बढ गए। तब हर परिवार अपनी-अपनी जगह चुनकर एक घेरे मे अपने डेरे गाड़ने में जुट गया। औरतें इस काम मे जुटी रही और घुडसवार बिना उतरे घोडो पर ही प्रतीक्षा करते रहे। सभी वीर सुबह से बहुत रद्दी किस्म के घोडो पर चढ़े थे। उन्होने अपने अच्छे घोड़े आगे के लिए बचा लिए थे। इन्हे या तो वे रस्सी से बाँधकर चल रहे थे, या फिर इन्हे दूसरे बच्चे पकडकर चल रहे थे। इस समय उन्होने छोटी-छोटी टुकड़ियो मे गाँव छोडना शुरू किया और पश्चिम की ओर मैदानो मे तुरन्त ही निकल गए। मैंने भोजन नही खाया था और आगे ऐसी तपस्या करने की हिम्मत मुझ मे थी नही। इसलिए मै अपने मेजबान के घर गया। तम्बू बहुत जल्दी तैयार हो गया। अपनी भूख का पता देने के लिए मै इसके बीचो-बीच जा बैठा। तुरन्त ही मेरे सामने सूखे मास से तैयार

किया गया एक बहुत ही उम्दा भोजन, लकडी के बर्तन मे, रख दिया गया। इस भोजन को उत्तर के यात्री 'पेमीकन' के नाम से और डाकोटा लोग 'वास्ना' के नाम से कहते है। इसमे से मुट्ठी भर लेकर तुरत ही मै भी चल पडा और, अन्तिम शिकारियो के पास की पहाडियो मे छिप जाने से पहले ही, मै यहाँ पहुँच गया। अपनी घोडी पर चढकर मैने भी उनका पीछा किया। मेरे अन्दर ताकत तो न थी, पर तो भी मै जैसे-तैसे खुद को घोडी की पीठ पर सम्भाले रहा। पहाड की चोटी से मैंने सामने के एक उजाड मैदान को देखा। इस पर, पास और दूर, नगे घुडसवारो की छोटी-छोटी टुकडियाँ तेज़ी से चल रही थी। जल्दी ही मैने सबसे पास की एक टुकडी का साथ पा लिया। थोडी ही देर मे—एक मील के सफर मे ही—वे सब एक बडे झुंड के रूप मे इकट्ठे हो गए। चारो ओर उतावली और जल्दबाज़ी दिखाई दे रही थी। हर शिकारी अपने घोडे पर चाबुक चला रहा था, जैसे वह स्वय सबसे पहले शिकार मारना चाहता हो। आदिवासियो मे ऐसे मौको पर यही कुछ हुआ करता है। इस दिन तो खासकर गडबड थी, क्योकि इनका बडा सरदार साथ नही था और इनमे आगे बढने वाले पहरेदार कम थे। इन सैनिक पहरेदारो को आदिवासियो की 'पुलिस' कहा जा सकता है। और सब कामो के साथ-साथ शिकार की दिशा बताना भी इन्ही का काम माना जाता है। हम दाएँ या बाएँ बिना मुडे, सीधी दिशा मे, बहुत तेज़ चाल के साथ पहाडियो के ऊपर-नीचे चढते-उतरते बढते रहे। रास्ते मे सैकडो ही जगली झाडियाँ पडती रही। डेढ़ घंटे तक ये सैनिक इसी प्रकार घोडो की चाल के साथ उछलते-गिरते मेरे सामने बढ़ते रहे। कोई भी कुछ न बोल रहा था। एक बार एक बूढे आदमी को मैने रेमड को कोसते हुए सुना, क्योकि वह अपनी बन्दूक पीछे छोड आया था। वह भी इस लिए कि शिकार और शत्रु के इतना अधिक नज़दीक होने पर बन्दूक न होना खतरनाक ही होता है। आगे चलते हुए हमे बहुत घनी झाडियाँ दीखने लगी। इनमे सभी सवार ऐसे छिप गए, जैसे धरती मे डुबकी मार गए हो। यहाँ की ऊसर जमीन जगह-जगह खाइयो और घाटियो मे फट गई थी। इनमे नीचे जाकर हम सब जमा हो गए और बाहर निकलने की राह खोजकर एक-एक कर चढने का यत्न करने लगे। जल्दी ही हम एक चौडी परन्तु उथली नदी के किनारे आगए। इसके किनारे पहुँचकर बहुत से घुडसवारो ने ज़मीन

पर घुटनो के बल झुककर पानी पिया और फिर से अपनी जगह पर बैठकर तेज़ी से चल पडे।

इस बीच खोजी सिपाही आगे-आगे चलते रहे। अब हमे वे पहाडियो की चोटियो पर अपने कपडे हिलाते हुए दिखाई देने लगे। यह इस बात का संकेत था कि उन्हें भैंसें दिखाई दे गए है। पर बाद मे ये भैंसे बूढे निकले, जो पास के मैदान पर चर रहे थे। हमे देखते ही ये एकदम भाग निकले। बहुत देर बाद हमें वे पहरेदार फिर दुबारा इशारा करते दिखाई दिये। उनके इस इशारे को देखते ही हम आगे बढे। पर, वे अब दूसरी ओर उतर चुके थे और हम उन्हें देख नही पा रहे थे। लगता है उन्होंने असली शिकार खोज निकाला था। उत्तेजित आदिवासी अपने परखे हुए घोडो को पहले से भी अधिक तेज़ी से भगाने लगे। मेरी घोडी पहले ही बीमार और कमज़ोर पड चुकी थी। अब वह बहुत दु ख अनुभव करने लगी। पसीने के मारे इसकी बगलो का बुरा हाल था। एक पास की नीची पहाडी पर जब हम सब इकट्ठ हुए, मैंने रेनल और रेमड को बाईं ओर से पुकारते सुना। जब मैंने उन्हें देखा तो वे बीस आदमियो के एक दल के पीछे खडे थे। ये लोग बहुत ही छोटी जाति के लग रहे थे। ये सब रेनल की पत्नी के सम्बन्धी थे, और अन्य लोगो के साथ शिकार मे हिस्सा न लेकर ये एक दूर के खड्ड में शिकार खेलना चाहते थे। वहाँ उन्होने भैंसो का एक छोटा-सा समूह देखा था। वे चाहते थे कि वह उनके हिस्से मे ही रहे। मैंने उनकी पुकार के उत्तर मे रेमड को अपने पीछे चलने के लिए कहा। वह अनमने भाव से मेरी तरफ चला आया। रेनल ने उसे रोकना चाहा। वह उसी की सहायता पर बढना चाहता था। अब रेमड को साथ लेकर मैं शिकारियो के मुख्य जत्थे के साथ चला। रेनल बहुत गुस्से में डूबा हुआ, अपने असभ्य सम्बन्धियों के साथ पहाडी के दूसरी ओर निकल गया। हमारे साथी आदिवासी अब भी सौ के लगभग थे। वे एक जत्थे के रूप मे बहुत देर तक साथ चलते रहे। उनके पीछे धूल का बादल उड़ने लगा। पहाड की एक तलहटी मे जाकर वे रुके। तब कहीं मैं उन्हें पकड पाया। जहाँ उनके सिपाही लोग खडे हुए थे, वहाँ हर शिकारी बहुत तेज़ी के साथ अपने परखे हुए घोडे से उतरा और साथ लाए हुए दूसरे घोडे पर चढ गया। सारे दल मे किसी के पास भी न काठी थी और न लगाम।

केवल एक खाल से ही घोडे की पीठ को उन्होने ढका हुआ था और बालो से बनायी हुई रस्सी को ही जबडे के चारो ओर बांधकर लगाम का काम चलाया था। हर घोडे के सटा और पूछ पर चीलो के पख लगे हुए थे। ये सब साहस और वीरता की निशानी थे। स्वय घुडसवारो ने कमर के आस-पास एक छोटे-से कच्छे को छोडकर और कोई भी कपडा न पहन रखा था। पाँवो मे जूते अवश्य थे। उनके पास एक भारी चाबुक था, जिसका हत्था बारहसिंगे के सीग से बना हुआ था। या फिर उनके पास एक रस्सी थी, जो भैसे की खाल से बनी थी और जिसे उन्होंने अपनी कलाई से बाँधा हुआ था। अपने हाथ मे धनुष और कधे पर तरकश लटकाए लगभग तीस शिकारी पश्चिम की ओर मुड गए, ताकि पहाडी के चारो ओर घेरा-सा बना सकें। इस प्रकार भैसो पर दोनो ओर से एक साथ ही हमला किया जा सकता था। बाकी सब लोग कुछ देर तक प्रतीक्षा करते रहे, ताकि उनके साथी मनचाही जगहो पर पहुँच जाएँ। तब सब लोग एक साथ ही आगे बढे और एक पहाडी की चोटी पर पहुँच गए। यहाँ से पहली बार भैसें सामने के मैदान मे फैली हुई दिखाई दी।

चार-पाँच सौ की सख्या मे दिखाई देने वाले ये पशु मादा भैसे थी, जो चौडी धारा के एक किनारे पर इकट्ठी हुई थी। यहाँ घाटी एक चौडे और गोल मैदान के रूप मे फैल गई थी। धूप इस पर तप रही थी और जगह-जगह छोटी-मोटी बिखरी हुई झाडियाँ फैली हुई थी। घाटी के चारो ओर कुछ उजाड ऊँची चोटियाँ खडी थी। इनके एक दर्रे मे से हमने सामने अपने साथियो को आते देख लिया। हवा उसी ओर से बह रही थी। भैसे उन्हें पास आता देखकर हिलने लगी थी। एक पूरे जत्थे के रूप मे चलने के कारण ये बहुत धीमे-धीमे बढ रही थी। मुझे इसके बाद की कुछ बातें याद नही। याद इतना आता है कि हम जब इनके बीच मे पहुँच गए, तब चारो ओर अनेको भैसे मैदान पर बिखरे हुए दिखाई दिए। वे हमारे पहुँचने पर भागने लगे और नदी की रेत को पार करते हुए पहाडियो की ओर निकल गए। उनमे से एक बूढा भैसा पीछे रह गया। उसका एक अगला पाँव किसी चोट के कारण लगडा गया था। तीन पाँव पर बढते हुए उसकी शक्ल कुछ इतनी अजीब-सी लगी कि मै उसे देखने का लोभ न रोक सका। मै उसके पास

पहुँचा। वह मुझपर उछला। ऐसे हमले के समय वह खुद ही गिरने लगता था। मैने निगाह उठाकर देखा तो बाकी आदिवासी मुझसे सौ गज़ से भी अधिक दूरी पर जा पहुँचे। मैंने घोडे को एड लगाई और जल्दी ही उन तक पहुँच गया। यहाँ प्रत्येक सवार ने अपने घोडे को बुरी तरह चाबुक मारी और प्रत्येक घोडा उछलता हुआ अलग-अलग दिशा मे बिखरने लगा, ताकि सारे झुड पर एक साथ ही हमला किया जा सके। हम लोग भैंसो पर सीधे हमले के लिए आगे बढे। एक ही क्षण मे हम उनके बीच मे जा घुसे। इस सब गडबड और चीख-चिल्लाहट मे मैं केवल इधर से उधर भागती हुई धूप मे लुकती-छिपती, भैंसो की शक्ले ही देख पा रहा था। घुडसवार तेजी से उनका पीछा कर रहे थे। हमने एक ओर से हमला किया और हमारे दूसरे साथियो ने, इस घबराए हुए जत्थे पर, दूसरी ओर से हमला कर दिया। तभी धूल उठनी बद हो गई और गडबड कुछ कम पड पई। हमने देखा कि भैंसें कुछ बिखरने लगी थी, जैसे किसी केन्द्र से चारो ओर बिखर रही हो। वे अब एक-एक करके, या छोटी-छोटी टुकडियो अथवा कतारो मे, मैदान पर भागने लगी। आदिवासी उनका पीछा कर रहे थे। वे अपनी पूरी तेजी पर थे और साथ ही अपने दाएँ-बाएँ बाण छोडते हुए चिल्लाते जाते थे। सामने के मैदान में जहाँ-तहाँ भैंसो के शव बिखरे पडे थे। इधर-उधर कोई न कोई घायल भैंसा भी खडा था, जो बाणो से छिदा पडा था। जब मैं उनके पास से गुजरता, तो ऐसे घायल भैंसो की आँखे चौंक पडती। वे एक बडे बिलाव की भाँति गुर्राने लगते और तेजी से मेरे घोडे पर हमला करने की कोशिश करते।

सुबह जब मैंने डेरा छोडा था, तब किसी खास विचार मे ही। मैं और घोडी दोनो ही इस प्रकार के शिकार के लिए तैयार न थे। मैंने निश्चय किया था कि मैं कोरा दर्शक बनकर रहूँगा। किन्तु घोडो और भैंसो के इस गडबड झाले मे चुप रहना असम्भव हो गया। जब चार या पाँच भैंसे एक साथ मेरे सामने से, एक-एक करके, गुज़रे, तो मैंने अपनी घोडी को उनके पीछे लगा दिया। अब हम पानी और रेत मे से होते हुए नदी के दूसरे किनारे पर चढे और जगली झाडियो को पार करते हुए सामने के मैदान मे उनका पीछा करने लगे। हालाँकि मेरी घोडी इसी देश की थी पर तो भी न तो इस इलाके की आदतो ने और ना ही चाबुक की मार ने उसकी चाल तेज की। वह

एकदम थकी हारी थी। हम इन विद्रोही पशुओ से एक इच भी आगे न निकल सके। अन्त मे वे एक ऐसी घाटी पर आ गए, जहाँ से वे कूद कर पार नही जा सकते थे। अब उन्हें एक दम ही बाईं ओर मुडने पर मजबूर होना पडा। मैने पिछली भैंस के दस या बारह गज़ दूर तक बढने मे सफलता पाई। ज्यो-ही भैस को पता चला तो वह मुडी और गुस्से से हमले के लिए झुकी। मैने गोली दाग दी। उसकी गर्दन मे जाकर लगी। अब वह घाटी मे उतर गई, जहाँ उसकी साथिनें पहले ही नीचे उतर चुकी थी। मैने उन सबकी काली पीठें घाटी के तले मे लुकती-छिपती देखी। तब वे दूसरी ओर एक-एक करके चढने लगी और पहले की तरह भागने लगी। घायल भैस उन सबके पीछे-पीछे चल रही थी।

पीछे की ओर मुडकर मैने देखा कि रेमड अपने टट्टू पर चढा हुआ मेरी ही ओर आ रहा था। अब हम साथ-साथ बढने लगे। हमने मैदान, घाटियो और नदी के तट पर पडे हुए बीसियो शव देखे। अब भी बहुत दूरी पर घुडसवार और भैसें आपस मे उलझे हुऐ दिखाई दे रहे थे। उनके पीछे धूल के बादल उठ रहे थे। पहाड की चढाइयो पर, घबराए हुए पशु, तेज़ी से चढने लगे। अब शिकारियो ने लौटना शुरू किया। जिन लडको ने पहाडी के पीछे घोडे पकडे हुए थे, वे सामने आ गए। भैंसो को काटने और उनकी खाल अलग करने का काम सभी जगह एक साथ शुरू हो गया। मैने देखा कि मेरा मेज़बान धारा के पार एक भैस के पास उतरा। उसने ही इसे मारा था। उसके पास जाकर मैने देखा कि वह एक बाण खीच रहा था। यह बाण केवल अन्तिम कोने को छोडकर सारा ही पशु के अन्दर धँस गया था। मैने उससे यह बाण माँग लिया। यह अब भी मेरे पास इस बात के सबूत के रूप मे मौजूद है कि आदिवासी कितनी तेज़ी और ताकत के साथ अपने बाण चलाते है।

खालें और मास घोडो पर लाद लिए गए। शिकारी अपने घरो की ओर चलने लगे। रेमड और मै भी इस दृश्य से उकता कर बीच के रेगिस्तान से होते हुए गाँव की ओर सीधा बढ चले। इधर कोई रास्ता बना हुआ नही था और न ही कोई चिह्न बने हुए थे, पर तो भी रेमड क्षितिज पर देखता हुआ अपनी सूझ के बल पर बढता जा रहा था। यहाँ चारो ओर से हिरण

उछल रहे थे। भैंसो के पास रहने के कारण वे अपनी लाज छोड़ चुके थे। उनके समूह-के-समूह चट्टानो भरी चढाइयो पर चढते-उतरते और चोटियो से हमारी ओर देखने लगते। अन्त में हमने वे सफेद ऊँची चट्टानें और वह पुराना चीड़ का पेड़ पहचान लिया, जो हमारे डेरे के पास ही थे। अब भी हमे डेरा दिखाई न दिया। हम एक छोटी-सी पहाडी के ऊपर चढे। यहाँ से हमें मकानो का एक घेरा-सा दिखाई दिया। मकान बहुत पुराने लग रहे थे।

मै अपने मेजबान के घर मे घुसा। तुरन्त ही उसकी स्त्री मेरे लिए भोजन और पानी ले आई। उसने मेरे लिए एक खाल भी बिछा दी, ताकि मै लेट सकूँ। बहुत थका होने के कारण मै सो गया। लगभग एक घण्टे बाद 'महान् काक' के आने पर मेरी नीद खुली। उसकी बाँहें अब भी खून से सनी हुई थी। वह घर में अपनी निश्चित जगह पर बैठ गया। उसकी पत्नी ने उसके लिए अग साफ करने के लिए पानी ला दिया। तब उसके सामने उबला हुआ मास खाने के लिए रखा। खाते समय उसने अपने खून से भरे जूते उतारकर दूसरे नये जूते पहन लिए। खाने के बाद अपने अगो को फैलाकर वह सो गया।

दो और तीन की टुकडियो मे जल्दी-जल्दी शिकारी लौटने लगे। हर कोई अपना घोडा अपनी पत्नी को थमाकर अपने घर मे ऐसी तृप्ति के साथ घुसने लगा, जैसे उसने दिन भर का काम निपटा लिया हो। औरतो ने घोडो की पीठो से सारे बोझ को उतारा और जल्दी ही सब घरो के आगे मास और खालो का ढेर जमा हो गया। इस समय तक अँधेरा छाने लगा और सारे गाँवो मे जगह-जगह आग चमकने लगी। मास और खालो के इस ढेर के पास सभी औरतें और बच्चे इकट्ठे हुए और उनके सबसे अच्छे हिस्सो को देखने लगे। इसमे से कुछ मास आग पर छडो के सहारे लटका कर भून लिया गया। परन्तु कई बार इस बात की भी ज़रूरत नही समझी जाती थी। रात मे बहुत देर तक आग जलती रही और दावत खाने वाले चारो ओर बैठकर दावत खाते रहे।

बहुत से शिकारी हमारे मकान मे बैठे हुए दिन के शिकार पर बाते करते रहे। इसी समय मेनेसीला भी आया। वह हालाँकि अस्सी साल का हो चुका था, पर तो भी उसने आज के शिकार मे पूरा हिस्सा लिया था। उसने दावा किया कि उसने उस रोज़ दो भैंसें मारी थी, और शायद तीसरी भी मार लेता

अगर कही आँखो मे धूल घुसकर उसे धनुष एक ओर रखकर आँखे मलने पर मजबूर न कर देती। आग की चमक उसके झुरीदार चेहरे पर पड रही थी। वह अनेक इशारो के साथ अपनी कहानी सुनाता रहा और लोग हँसते रहे।

बूढा मेनेसीला उन कुछ आदिवासियो मे से था, जिन्हें मै विना सन्देह के विश्वास योग्य मानता था। ऐसा तो यह अकेला ही आदिवासी थी, जिससे मैने बिना किसी लोभ के कोई भेंट या सेवा पाई थी। वह गोरे लोगो का सचमुच अच्छा मित्र था। वह उनके साथ रहने का शौकीन था और उसे उनकी भेंटो के पाने का बहुत गर्व था। उसने एक दिन मुझे बताया कि वह इस धरती पर बीवर प्राणी या गोरे लोगो को ही सबसे अधिक बुद्धिमान् मानता था। उसके विचार मे वे दोनो थे भी एक ही। एक घटना उसके साथ बहुत पहले घटी थी, जिससे उसका यह विश्वास और भी पक्का हो गया था। इस विषय मे उसने अपनी एक कहानी सुनानी शुरू की, जिसका अनुवाद, चिलम के कश खीचने के समय का लाभ उठाकर, रेनल मुझे सुनाता गया। वैसे तो वह बूढा स्वय ही अपने शब्द ऐसे इशारो के साथ बोल रहा था, जिससे अनुवाद की कोई आवश्यकता न रह जाती थी।

उसने बताया कि जब वह बहुत छोटा था और अभी जब उसने किसी गोरे आदमी को न देखा था, तब वह और उसके तीन-चार साथी बीवर के शिकार के लिये निकले। वह एक बहुत बडे बीवर के घर मे घुस गया, ताकि देख सके कि वहाँ क्या कुछ होता है ? कुछ देर वह अपने हाथो और घुटनो के बल चला और कुछ देर उसे तैरना भी पडा। फिर कभी उसे लम्बा लेट-कर सरकना पडा। यह बहुत ही अँधेरी वनी और सटी हुई जगह थी। अन्त मे उसे साँस घुटती-सी लगी। वह मूर्च्छा से घिर गया। जब उसे होश आई तब वह बाहर से आने वाली अपने साथियो की आवाज़ को पहचान पाया। उन लोगो ने उसे मरा हुआ समझकर दुख का गीत गाना आरम्भ कर दिया था। पहले तो वह कुछ भी देख न सका, पर जल्दी ही उसने सामने कोई सफेद सी चीज़ देखी। तब उसने सामने के तीन आदमियो को साफ-आफ पहचान लिया। वे एक दम गोरे थे। उनमे से एक पुरुष था और दो औरतें। वे पानी के एक काले जोहड के किनारे बैठे थे। वह चौक गया और लौटने का उचित मौका जानकर बडी कठिनता से बाहर निकला। दिन के प्रकाश में

आते ही वह तेजी से उस स्थान की ओर गया, जहाँ उसने तीन अद्भुत प्राणी देखे थे। उसने अपनी मूगरी से जमीन मे छेद किया और देखने के लिए झुका। एक ही क्षण मे एक बूढे नर बीवर की नाक निकलती हुई दिखाई दी। मेनेसीला ने उसे तुरन्त ही पकडकर ऊपर खीच लिया। इसी छेद से दो मादा बीवर भी उसी प्रकार से बाहर निकली और उसने उन्हें भी पकड लिया। उस बूढे ने अपनी कहानी समाप्त करते हुए कहा, "लगता है, ये बीवर ही वे तीनो गोरे आदमी थे, जिन्हें मैने पानी के किनारे बैठे देखा था।"

मेनेसीला को अपने गाँव की बहुत-सी पुरानी कहानियाँ और रीति-रिवाज याद थे। मै इनमे से कुछ को ही समझ पाने मे समर्थ हुआ और आदिवासियो की तरह वह भी बहुत ज्यादा अधविश्वासी था और अपनी बातो को न सुनाने का कोई न कोई कारण खोज लेता था। कभी वह कहता, "गर्मियो मे ऐसी बाते नही सुनानी चाहिएँ। तुम अगली सर्दियो तक हमारे साथ रुको, तो मै जितनी बाते जानता हूँ, सभी सुना दूँगा। अगर मै इस समय कहानियाँ सुनाने लगूँ तो हमारे जो नौजवान टुकडियाँ बाँधकर युद्ध के लिए निकलने वाले है, उन्हे मौत का सामना करना पडेगा। इसलिए पाला पडने से पहले मै कहानियाँ नही सुनाऊँगा।"

हम उस जगह पाँच दिन तक डेरा डाले पडे रहे। इनमे से तीन दिन तो शिकारी लगातार काम मे जुटे रहे और मास और खालें बड़ी मात्रा में लाते रहे। वैसे गाँव मे चारो ओर चिन्ता-सी छा रही थी। सभी लोग चौकन्ने थे। कुछ नौजवान सारे इलाके मे, पहरेदार के रूप मे, घूम आते थे। बूढे लोग अपशकुनो और बुरी बातो का ख्याल रखते थे, खासकर अपने बुरे सपनो का। शत्रु को यह बताने के लिए कि हम लगातार अपनी रक्षा मे सावधान है, उन्होंने अपने यहाँ बहुत से पत्थर और लकडियाँ आसपास की पहाडियो से इस तरह जमा कर ली थी कि दूर से देखने पर वे खडे हुए पहरेदारो के रूप मे दिखाई दें। आज भी मुझे उस सारे दृश्य की याद आ जाती है किस तरह सफेद चट्टाने, चीड के पेड, उन पहाडियो की तलहटी मे गाँव को आधा घेरती हुई बहने वाली नदी और अपनी रगीनी और सुगन्ध को फैलाने वाली जगली झाडियाँ—वहाँ सभी ढलानो पर नजर आ रही थी। लगातार घर

और नदी के बीच मे, अपने बर्तनो के साथ, औरतो का आना-जाना जारी था। दिन के अधिक समय डेरे मे औरतो और बच्चो के अलावा कोई और न दिखाई देता था। या फिर दो तीन बूढे या निकम्मे आदमी ही वहाँ रह जाते थे। कुत्तो के साथ-साथ ये ही लोग डेरे मे पडे-पडे मोटे हो रहे थे। तब भी यह डेरा काम-काज मे खूब जुटा हुआ-सा दीखता था। सभी कोनो मे मास चमडे की रस्सियो पर लटक रहा था। घर के चारो ओर खालें बिछाकर औरतें और बूढे आदमी उन्हें ठीक से बना रहे थे। ये उनके बाल और उन पर चिपटा हुआ मास उतार कर उन्हें भैसे के दिमाग की चरबी से रगड रहे थे, ताकि उन्हें कोमल और चिकना बनाया जा सके।

खुद पर और घोडी पर रहम खाकर मैने पहले दिन के बाद से ही शिकार पर जाना बन्द कर दिया था। पिछले कुछ दिनो से मुझ मे फिर से ताकत आने लगी थी। बीमारी के बाद हर आराम के मौके पर ऐसा ही होता था। जल्दी ही मै आराम से चलने फिरने लायक हो गया। रेमड और मै पास के मैदानो मे हिरण या किसी लडखडाते भटके हुए भैसे को मारने के लिए पैदल ही निकल जाते। इस काम मे हमे कम ही सफलता मिलती। एक सुबह मैं ज्यो ही अपने डेरे से बाहर आया रेनल ने मुझे गाँव के दूसरी ओर से बुलाया और खाने के लिए निमन्त्रित किया। यह नाश्ता भी कुछ खास ही था। यह एक बहुत मोटी भैस की पीठ के मास से बना था। यह बहुत स्वादु था। यह आग पर पक रहा था और इसे एक मजबूत छड से बाँधकर लटकाया गया था। रेनल, मैंने और रेमड ने मिलकर भुने हुए मास को अपने चाकुओ से काटना शुरू किया और इसके चारो ओर बैठकर खाने लगे। मुझे दवाइयो के विषय मे कुछ पता था, पर तो भी इस प्रकार के, नमक या रोटी के बिना खाए जाने वाले, सूखे मास मे मुझे आनन्द आने लगा। लगा जैसे इससे कुछ नुकसान न होगा।

रेनल ने कहा, "रात आने से पहले आज हमे किन्ही अजनबियो का सामना करना पडेगा।"

मैने पूछा, "तुम कैसे जानते हो ?"

"मुझे स्वप्न मे ऐसा दिखाई दिया है। मुझे भी आदिवासियो की तरह स्वप्न देखने की आदत है। मेरे सम्बन्धी युवक 'तूफान' ने भी यही बात स्वप्न मे देखी है। इसीलिए वह और उसका छोटा भाई 'खरगोश' इस बात का

पता करने बाहर तक गए है।"

मै रेनल की इस बेवकूफी पर हँस पडा और अपने मेजबान के घर लौटकर अपनी बन्दूक उठाकर एक दो मील दूर तक मैदान मे निकल गया। वहाँ मैने एक भैंसे को अकेले ही एक घाटी के किनारे खडे देखा। मैने उस पर गोली दाग दी, पर वह भाग निकला। तब थका हारा मै फिर से गाँव मे लौट आया। उसी समय एक ऐसा अजब सयोग हुआ कि रेनल की भविष्यवाणी सत्य निकली। मैने गाँव मे घुसते ही जिन दो अजनबियो को सबसे पहले देखा वे थे रूलो और साराफै। ये दोनो पशु-फँसाने वाले हम से लगभग पन्द्र दिन पहले अलग हुए थे। इन दिनों ये ब्लैक हिल्स मे पशु फँसाते रहे थे और अब राकी पर्वतमाला की ओर जा रहे थे। इनका इरादा एक या दो दिन मे ही 'मेडिसन बो' की ओर चले जाने का था। ये कोई बहुत अच्छे या सभ्य साथी नही थे, पर तो भी गाँव मे, हमारे थोडे से दायरे मे, इनका स्वागत होना उचित ही था। उस दिन बाकी समय हम रेनल के घर मे बैठे तम्बाकू पीते रहे और गप्पें लगाते रहे। उसका घर किसी कुटिया से ज्यादा अच्छा न था। बल्लियो पर खालें तो फैली हुई थी, पर सामने की ओर से यह बिलकुल खुला हुआ था। इसमे बहुत सी खालें फर्श पर बिछी हुई थी। यहाँ हम धूप से बचकर बैठे रहे। हमारे चारो ओर घर का साज-समान बिखरा हुआ था। गाँव मे चारो ओर शान्ति थी। शिकारी उस दिन बाहर नही गए थे और उनमे से अधिकाश सो रहे थे। स्त्रियाँ चुपचाप अपने कामो मे जुटी हुई थी। कुछ थोडे से नवयुवक गाँव के बीच के एक घेरे मे गेद से एक खेल खेल रहे थे। जब वे थक गए, तो उनकी जगह कुछ लडकियाँ इकट्ठी होकर हँसी मजाक का एक खेल खेलने लगी। इनसे कुछ दूर, मकानो के घेरे मे, कुछ बच्चे और लडकियाँ भैंसो की खालो मे छिपी अपनी साथिन से खेल रही थी। कभी यही खेल साँचो-पाँचा नाम के प्रसिद्ध व्यक्ति को भी प्रिय रहा था। दूर मैदान मे कुछ नगे बच्चे इधर-उधर कोई छोटा-मोटा खेल खेल रहे थे, या फिर छोटे-छोटे पक्षियो का पीछा, अपने छोटे से धनुष-वाण लेकर, कर रहे थे। अपने हाथ मे पड जाने वाले पक्षियो का वे बुरा हाल बना रहे थे। हमारे पास के ही डेरे से एक सुन्दर गृहस्वामिनी हमारे लिए वास्ना का एक बडा वर्तन भर कर ले आई। जब मैने उसे इसके बदले मे काँच की एक हरी अँगूठी दी तो

वह आनन्द मे डूब गई। ऐसी अँगूठियाँ मैं ऐसे मौके पर देने के लिए अपनी उँगलियो मे पहने रहता था।

सूर्य छिप गया, पर अब भी आधा आकाश लाल-सा बना हुआ था। डूबते सूर्य का प्रकाश धारा के पानी पर और आसपास की झाडियो पर भी पड रहा था। कुछ युवक गाँव से निकले, पर थोडी ही देर बाद वे फिर लौट आए। इनके साथ सैकडो की सख्या मे, हर आयु, आकार और रग के, घोडे मौजूद थे। शिकारियो ने अपना-अपना घोडा चुन लिया और उसकी हालत जाँचकर उसे लम्बी रस्सियो के साथ अपने-अपने मकान के आगे बाँध लिया। आधे ही घटे मे सब हलचल शान्त हो गई और फिर से चारो ओर शान्ति छा गई। इस समय तक अँधेरा हो चला था। पतीलियाँ चूल्हो पर चढा दी गई थी और चारो ओर, अपने बच्चो के साथ जमा होकर, औरतें हँसी-मज़ाक कर रही थी। गाँव के बीचो-बीच एक और किस्म का घेरा बना हुआ था। यहाँ बूढे लोग और प्रसिद्ध योद्धा अपने-अपने सफेद लबादो को पहने हुए बैठे थे। चिलम सबके बीच मे घुमाई जा रही थी। वे बहुत हल्के ढँग से बातचीत करने मे जुटे हुए थे। उनकी बातचीत मे हमेशा की सी गम्भीरता न थी। मैं भी उनके साथ, सदा की भाँति, बैठ गया। मेरे पास करीबन आधा दर्जन साँप और फुलझडियाँ थी, जिन्हें मैंने लारामी धारा के किनारे टिके रहने के दिनो मे बारूद से बनाया था। मै तब तक इन्तज़ार करता रहा, जब तक कि मेरे पास वह जलती हुई बडी लकडी न आ गई, जिसे आदिवासी लोग अपनी चिलम सुलगाने के लिए अपने पास ही रखते है। इससे मैने उन सब पटाखो और फुलझडियो को एक साथ ही जला दिया और सब लोगो के बीच मे हवा मे उडा दिया। वे सब एक साथ ही आश्चर्य मे चीखते हुए, तगी-सी महसूस करने लगे और उछल पडे। कुछ देर बाद उनकी हिम्मत लौटने की हुई। उनमे से कुछ ने जले हुए कागजो आदि को देखकर अपनी उत्सुकता मिटानी चाही। तब से मुझे उन लोगो ने 'आग का जादूगर' समझना शुरू कर दिया।

डेरे में प्रसन्नता-भरी आवाजो की एक हल्की सी गूँज भरी हुई थी। साथ ही एक और प्रकार की आवाज़ें भी आ रही थी। एक बडे भारी घर मे बीचो-बीच आग जल रही थी और उसके पास से एक बहुत दु ख भरी आवाज़

आ रही थी। ऐसे लगता था, मानो भेड़िए चिल्ला रहे हो। वहाँ पर एक लगभग नंगी औरत घुटनो के बल बाहर बैठी ज़ोर से चिल्ला रही थी और अपनी टाँगो पर चाकू से घाव कर रही थी। उसकी टाँगें लहू-लुहान हो चुकी थी। इस परिवार का एक युवक पिछले साल शत्रु ने इसी दिन कत्ल कर दिया था। आज उसके ही सम्बन्धी उसका अफसोस कर रहे थे। इसके अलावा और भी आवाज़ें सुनी जा सकती थी। ये आवाज़ें गाँव से बहुत दूर से, अन्धेरे में से, आ रही थी। ये आवाज़ें उन युवको की थी, जो अगले कुछ ही दिनो में युद्ध के दल के रूप मे जाने वाले थे और इस समय पहाडी की चोटी पर खडे होकर 'महान् आत्मा' को अपने पराक्रम मे सहायता देने के लिए पुकार रहे थे। जब मै इन्हें सुन रहा था, तभी हँसते हुए रूलो ने मेरा ध्यान एक दूसरे कोने की ओर खीचा। एक घर के सामने एक औरत खडी हुई एक पीले कुत्ते पर घृणा प्रकट कर रही थी, जो अपने पजो के बीच मे नाक टिकाए हुए बैठा था। उसकी सुस्ताती हुई आँखें औरत के चेहरे की ओर लगी हुई थी, मानो वह आदरपूर्वक उसकी बात सुनना चाहता हो, और बात खतम होते ही सो जाने की पूरी तैयारी भी कर चुका हो। वह कह रही थी—

"तुम्हें अपने किए पर शर्म आनी चाहिए। मैने तुम्हें अच्छी तरह खाना दिया है और बचपन से ही तुम्हें अच्छी तरह पाला है। आज तुम भिल्लाना सीख गए हो, पर उस समय तुम्हें चलना भी न आता था। जब तुम बडे हुए मैंने तुम्हें एक अच्छा कुत्ता समझा। तुम काफी मज़बूत और सभ्य रहे, खासकर जब तुम्हारी पीठ पर बोझ लादा जाता। तुम घोडों की टाँगों के बीच से होकर, यात्रा के समय, कभी नही गुज़रे। परन्तु इस पर भी तुम सदा ही दिल के काले रहे। जब भी झाडियो मे से कोई खरगोश बाहर आता, सबसे पहले तुम उसकी ओर भाग पड़ते और दूसरे कुत्ते तुम्हारे पीछे भाग निकलते। तुम्हें पता होना चाहिए कि इन मैदानो मे ऐसा करना बहुत भयकर होता है। ऐसे समय अगर तुम अचानक ही अकेले किसी घाटी में पहुँच जाते और कोई भेड़िया तुम पर हमला कर बैठता तो तुम क्या करते? निश्चय ही तुम मारे जाते। अपनी पीठ पर बोझ लादे कोई भी कुत्ता ठीक से नहीं लड़ सकता। आज से कोई तीन दिन पहले फिर तुम उसी तरह भाग निकले और तुमने वे सारे लकड़ी के खूँटे गिरा दिए, जिन्हें मैं घर के तम्बू कसने के काम में लाती थी।

अब तुम्ही देखो, यह सारा तम्बू ढीला पड गया है। इससे बढकर आज रात तुमने मास मे से वडा-सा टुकडा चुरा लिया, जो आग पर मेरे बच्चो के लिए भुन रहा था। मै तुम्हें बता दू कि तुम दिल के काले हो और इसलिए तुम्हें मरना ही पडेगा।"

यह कहकर वह औरत घर मे गई और पत्थर की एक बडी कुल्हाडी ले आई। उसकी एक ही चोट से उसने कुत्ते को मार डाला। उसका यह भाषण ध्यान देने लायक है। इसमे आदिवासियो की एक विचित्र विशेषता छिपी हुई है। उन लोगो की दृष्टि मे नीचे दर्जे के पशुओ मे भी किसी की बात को समझने की ताकत और बुद्धि होती है। अपनी परम्पराओ के अनुसार इनमे से बहुतो से वे अपना सम्बन्ध मानते है। वे लोग स्वय को रीछो, भेडियो, हिरणो और कछुओ से उत्पन्न मानते है।

बहुत देर हो जाने के कारण गांव पार करके मै अपने डेरे पर आ गया। अन्दर घुसकर मैने देखा कि बीच की आग मद्धम पडनी शुरू हो चुकी थी। इसके पास ही, अपनी पुरानी जगह पर, 'महान् काक' सो रहा था। उसका बिस्तर बहुत आरामदेह था। जमीन पर बहुत-सी खालें बिछाकर, और हिरण की खालो का तकिया बनाकर, यह तैयार किया गया था। उसकी पीठ की तरफ बांसो और सरकडो से बना हुआ एक खास ढांचा था, जिसका सहारा वह बैठते समय ले सकता था। इन सबके ऊपर उसके सिरहाने पर धनुष और तरकश लटके हुए थे। उसकी हँसमुख और चौडे चेहरे वाली पत्नी ने अब तक भी अपना काम ठीक से नही निपटाया था। वह अब भी घर मे बर्तनो और सूखे मास की गांठो आदि को खीचती फिर रही थी। दुर्भाग्य से इस मकान मे ये दो प्राणी ही नही रहते थे, बल्कि वहां कम से कम छ बच्चे भी इधर-उधर बिखर कर अजब तरह से सोते थे। मेरी काठी मकान के सबसे अगले हिस्से मे पडी हुई थी और इसके सामने एक खाल बिछी हुई थी। मै यही कम्बल मे लिपट कर सो गया। यदि मै बहुत अधिक थका हुआ न होता, तो पास के मकान से आने वाली आवाज मेरी नीद तोड देती। वहां आदिवासी ढोल बजा रहे थे और साथ-साथ तेज हुकारे भरते जा रहे थे। कम-से-कम बीस आदमी एक साथ ही कुछ गा रहे थे। पास मे ही पूरी रस्मो के साथ जुआं खेला जा रहा था। खिलाडी दावो पर अपने आभूषणो, घोडो, पोशाको

तथा हथियारो तक को लगा रहे थे। इस प्रकार का भयकर जुआ केवल सभ्य संसार का ही अधिकार नही है। मैदानो और जंगलो के लोग अपनी कठिन जिन्दगी की उकताहट को दूर करने के लिये इस प्रकार के उत्तेजना भरे खेल खेलना अधिक पसन्द करते है। मै पूरी तरह सो चुका था, पर तो भी हल्की-हल्की आवाज मेरे कानो मे आती रही। सुबह होने तक यह सब कुछ इसी तरह चलता रहा। रात मे एक बच्चा सरकता हुआ मुझ तक आ गया और एक दूसरा मेरे कम्बल मे घुस कर तिरछा होकर पड गया। मैने अपने सिरहाने रखी एक छडी से इन दोनो बच्चो को दूर भगाया और फिर से सो गया। ये बच्चे दिन भर या तो सोते रहते है या फिर खाते रहते है। इसीलिए ये बेचन हो जाते हैं रात में कम से कम चार-पाँच बार इसी तरह मुझे इन्हे हटाना पड़ता था। मेरे मेजबान ने एक और आफत खडी की हुई थी। सब आदिवासियो के समान वह भी कुछ रस्मो को नियमित रूप मे करता था, क्योकि युद्ध, प्यार, शिकार या और किसी मौके पर इन रस्मो के करते रहने से उन्हे सफलता मिलने की उम्मीद रहती है। इन कामो को वे लोग 'इलाज या टोना' मानते है। उन्हें ये रस्मे सोते हुए स्वप्न मे दिखाई देती है। कई बार ये बहुत बुरी होती है। कुछ आदिवासी इन सपनो के अनुसार चिलम पीते हुए उसे जमीन पर कई बार ठोकते है। दूसरे कुछ लोग यह कहते है कि उनकी हर बात का उलटा अर्थ लिया जाना चाहिए। शॉ ने मुझे एक बार बताया था कि वह एक ऐसे बूढ़े आदिवासी से मिला था, जिसका यह कहना था कि यह दुनिया तबाह हो जाएगी, अगर उस से मिलने वाले प्रत्येक गोरे आदमी को वह अपने हाथ से ठडे पानी का प्याला न पिलाये। इस प्रकार के विधानो के विषय मे मेरा मेजबान वहुत अभागा रहा। उसे स्वप्न के समय आत्माओ ने बताया कि उसे एक खास गाना हर रोज आधी रात के समय गाना होगा। हर रोज, आधी रात के समय, उसका यह उकता देनेवाला गाना या मन्त्र पढना मेरी नीद भगा देने का कारण वनता था। मै उसे चौकड़ी मारकर सीधा बैठे हुए देखता। वह जैसे-तैसे काम निपटाने की भावना से उस भयानक विधि को पूरा कर रहा होता था। रात में इन आवाजो के अलावा इससे भी अधिक बुरी कुछ आवाजें सुनाई दे जाती थी। सूर्य छिपने से अगली प्रात. तक गाँव भर के सारे कुत्ते सैकडो की संख्या में इकट्ठे होकर भौकते और चीखते

रहते। मैने इस प्रकार की भयकर आवाज़ कही नही सुनी थी। शायद ऐसी आवाज केवल अरकसास की पहाडियो के भेडियो के इकट्ठा होकर चिल्लाने पर ही सुनी थी। भेडियो की आवाज़ फिर भी किसी लय मे बँधकर चलती है, कुत्तो की यह आवाज तो बिल्कुल ही बेसुरी और बेमेल थी। बहुत दूर से आने वाली यह आवाज़ एक डर-सा पैदा कर देती थी। अगर इसको सुनते हुए कोई सो जाए, तो यह भयकर आवाज बहुत बुरी साबित होती है। इसके शुरू मे एक बहुत लम्बी और ऊँची आवाज़ आती है और तब कोने-कोने से आवाज़ उठने लगती है। इस प्रकार गाँव के चारो ओर ये आवाज़ें गूँजने लगती है। कुछ देर तेज होकर यह आवाज़ शान्त हो जाती है।

सुबह आई और मेरा मेज़बान दूसरे शिकारियो के साथ ही निकल गया। यहाँ उचित ही होगा, अगर हम उसके पति और पिता के रूप पर भी एक निगाह डाल ल। वह और उसकी पत्नी अधिकाश आदिवासियो की तरह अपने बच्चो के बहुत शौकीन थे। वे उनमे ज़रूरत से ज्यादा उलझते थे और उनके अपराधो पर, बहुत कम मौको पर ही, दड देते थे। उनके बच्चे न तो अपनी ज़िम्मेवारियो को पहचानते थे और न उनकी आज्ञा मानते थे। इस प्रकार की शिक्षा के कारण ही उन बच्चो मे नियत्रण और काबू से बाहर रहने की भयकर आदत पड जाती है। हमारे मेजबान से अधिक बच्चो को प्यार करने वाला पिता कोई और न होगा। उसका एक बच्चा दो फुट से भी छोटा था। यह अपने पिता को सबसे अधिक प्यारा था। घर के बीचो-बीच एक खाल बिछाकर वह स्वय उसपर बैठ जाता और इस बच्चे को अपने सामने सीधा खडा कर लेता। तब उसके सामने युद्ध के नाच के समय गाए जाने वाले कुछ शब्द गाने लगता। वह बच्चा, जो अभी खडा होकर अपने को सम्भाल भी न सकता था, अपनी टाँगें उठाकर पिता की आवाज के साथ घूमने लगता। इस पर मेरा मेजबान खुशी और आनन्द के मारे मस्त हो जाता और मेरी प्रशसा और प्रसन्नता को पाने के लिए मेरी ओर मुडकर देखने लगता। पति के रूप मे वह कम दयालु न था। इस मकान मे रहने वाली उसकी पत्नी उसकी सच्ची साथिन बनी हुई थी। वह उसके बच्चो और घरेलू चीजो का अच्छी तरह ध्यान रखती थी। वह भी उसे बहुत चाहता था। जहाँ तक मैं समझ पाया, वे कभी लडते भी नही थे। इस पर भी उसका अधिक प्यार

नई लाई गई दूसरी कुछ जवान औरतो पर अधिक था। इनमें से इस समय एक उसके साथ ही थी, जो इस मकान से अलग पास के ही एक दूसरे मकान में रह रही थी। एक दिन इसी पड़ाव में रहते हुए वह उससे नाराज़ हो गया और उसने उसे धक्का देकर, जेवर, पोशाक और उसकी हर चीज़ के साथ, उसे बाहर निकाल दिया और अपने पिता के घर जाने को कहा। इस प्रकार का छोटा-सा तलाक देने के बाद वह फिर आकर अपनी जगह पर बैठ गया और बहुत शान्ति और सन्तोष के साथ अपनी चिलम पीने लगा।

मैं उस शाम उसके पास ही बैठा हुआ था। मुझे यह उत्सुकता जगी कि उस के नंगे बदन पर जो सैकड़ो घावो के निशान दिखाई देते थे, उनके बारे में कुछ पूछताछ करूँ। कुछ के बारे मे मुझे पहले से ही पता था। दोनों बाहें चाकू के गहरे निशानो से कुछ-कुछ दूरी पर छेदी गई थी। और भी कुछ दूसरी किस्म के निशान उसकी पीठ और छाती के दोनो हिस्सो पर बने हुए थे। यह एक प्रकार की तपस्या के निशान थे, जिन्हें ये आदिवासी अपने साहस और सहनशीलता की परीक्षा के रूप मे खास-खास मौको पर स्वय ही लगाते है। इनसे आत्माओ को भी प्रसन्न करने का प्रयत्न किया जाता है। छाती और पीठ के बहुत से और निशान जंगल के पेड़ों को गिराते हुए लगे थे। इसके लिए एक रीत यह है कि जिन पेडों पर भैंसो की खोपड़ियाँ लटकाई जाती है, उनपर रस्सियाँ बाँधकर युवक को अपनी छाती के बल से उस पेड़ को गिराने को कहा जाता है। उसकी बाहें पकड़कर दो युवक उसकी सहायता करते है। वह आगे की ओर तेजी से भागता है। अन्त मे पेड़ का तना चिर जाता है और उसके ऊपर लटकती हुई भैंसे की खोपडी एक ओर गिर जाती है। हमारे मेजवान के कुछ और निशान किन्ही दुर्घटनाओ के कारण भी थे, परन्तु युद्धों में भी उसके शरीर पर अनेको घाव हुए थे। वह इस गाँव के माने हुए योद्धाओं में से एक था। उसने मेरे सामने दावा किया कि अपने जीवन में कम-से-कम चौदह आदमियो को वह मार चुका है। और आदिवासियों की तरह भले ही वह भी झूठा था, पर तो भी इस बात में वह निश्चय ही सच्चा था।

मेरी पूछताछ से खुश होकर वह मुझे कहानी पर कहानी सुनाने लगा। उसकी युद्ध की इन कहानियों में कोई सच्ची थी और कोई झूठी। इनमें से

एक कहानी ऐसी थी, जिससे आदिवासियो के चरित्र की सबसे बुरी बातें भी सामने आ जाती हैं। इसे छोड देना उचित न होगा। अपने घर के दरवाजे में से 'मेडिसनबो' नाम के पहाड की ओर इशारा करते हुए उसने बताया कि आज से कुछ साल पहले वह अपने जवान आदमियो की एक लडाकू टुकडी लेकर उधर गया था। वहाँ उन्हें शिकार खेलते हुए दो नाग आदिवासी मिल गए। उनमे से एक को उन्होने बाणो से ही मार डाला और दूसरे का पीछा करने लगे। अन्त मे उन्होने उसे घेर लिया। मेरे मेजवान ने खुद अपने घोडे से उतर कर सामने के पेडो मे उसे बाँहो के साथ जकड दिया। दो और युवको ने दौडकर उसकी सहायता की और ज़िन्दा ही उसकी खोपडी काट लेने का मौका दिया। तब उन लोगो ने एक बहुत बडी आग जलाई और अपने कैदी के पाँवो और कलई के मास को काटकर उसे उसमे जलने के लिए डाल दिया और तब तक उसे बल्लियो से दबाए खडे रहे, जब तक वह जल न गया। उसने अपनी कहानी मे कुछ ऐसी बातें भी वर्णन की, जिन्हें बताने मे मुझे घृणा हो जाती है। यह सब बताते हुए वह बहुत ही नरम और सभ्य बना रहा। यह बात किसी और आदिवासी के लिए सम्भव नही। इन असभ्य बातों को बताते हुए वह मेरी ओर उतने ही भोलेपन से देखता रहा, जितने भोलेपन से कोई लडका अपनी माँ को अपने छोटेपन की कोई बात सुना रहा हो।

बूढे मेनेसीला के घर मे एक और ही नजारा सामने आया। वहाँ चमकदार आँखो वाला एक चुस्त बालक बैठा हुआ था, जो कभी कृष्णपाद जाति का था। ये लोग बहुत खूँखार और भयकर होते है और अरापाहो लोगो से मिलजुल कर रहते है। आज से लगभग एक साल पहले 'महान् काक' और दूसरे योद्धाओ के एक दल ने इन लोगो के बीस घर इस जगह से बीस मील की दूरी पर देखे थे। इन्होने उन्हे रात मे जा घेरा और उनके मर्दों, औरतो और बच्चो को कत्ल कर डाला। केवल इस छोटे से बच्चे को बचा लिया गया। इसे मेनेसीला के परिवार मे अपना लिया गया और अब यह इसी जाति के बच्चो मे बराबर का बनकर हिलमिल कर पल रहा था। इस गाँव मे एक बडे और अच्छे डीलडौल वाला योद्धा भी था, जो काक जाति से सम्बध रखता था। आज से बहुत साल पहले, इसे कैदी बनाया गया था। एक माँ ने, जिसका बच्चा मारा जा चुका था, इसे अपना बच्चा मान लिया था। अब यह अपनी

पुरानी जाति को भूलकर तन-मन से इस नयी जाति को अपना चुका था।

यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि नाग और काक जाति के लोगो से लडने की बात सबसे पहले इसी गाँव में चली थी। बडे भारी युद्ध का हौसला तो खत्म हो गया था, पर उस उत्साह की कुछ चिनगारियाँ अब तक जल रही थी। ग्यारह युवक योद्धाओ ने शत्रु के विरुद्ध जाने की तैयारी कर ली थी। इस पडाव के चौथे दिन उन्होने चलने का समय निश्चित कर लिया था। इस दल का मुखिया गठीले बदन का एक ठिगना आदिवासी युवक 'सफेद ढाल' था। मैने उसे सदा ही अच्छी पोशाक मे बने-ठने पाया था। उसका मकान चाहे बडा न था, पर तो भी गाँव भर में सबसे अच्छा था। उसकी स्त्री भी सबसे सुन्दर थी। कुल मिलाकर उसका घर किसी भी ओजिल्लाला परिवार के लिए आदर्श था। मै उसके यहाँ अक्सर जाया करता था। गोरे लोगो के साथ उसका विशेष स्नेह था और वह मुझे जब-तब दावत के लिए बुलाता रहता था। एक बार उत्सव के समाप्त होने पर मैं और वह चौकडी मारे, चिलम पीते हुए, बहुत ही मित्रतापूर्वक बैठे थे। तब उसने अपने युद्ध के हथियारो को सब तरफ से इकट्ठा किया और गर्व के साथ मुझे दिखाया। और चीज़ो के साथ-साथ उसके पास एक बहुत अच्छी टोपी भी थी, जिसपर पख जडे हुए थे। इसे पहनकर वह मेरे सामने खडा हो गया। वह जानता था कि इसके पहनने से उसके उत्साह भरे सुन्दर चहरे पर कुछ और ही रौनक आ जाती है। उसने बताया कि इसपर तीन चीलो के पख लगे हुए थे, जिनकी कीमत तीन अच्छे घोडो से कम न थी। उसने तब एक ढाल हाथ मे ली, जो अच्छी तरह रंगी हुई थी और जिसपर पख अटके हुए थे। इन हथियारो का असर भी बहुत अधिक होता था। उसका तरकश एक चीते की चित्तीदार खाल से बना हुआ था। ऐसा चीता इन पहाड़ियो मे बहुत मिलता है। इस तरकश से अब भी चीते की पूँछ और पजे जुडे हुए थे। उस युवक ने इस उत्सव का अन्त आदिवासियो की तरह से ही किया। उसने मुझसे कुछ बारूद और गोलियाँ माँगी। उसके पास धनुष और बाण के इलावा बन्दूक भी थी। मुझे यह भेंट देने से इन्कार करना पडा, क्योकि मेरे पास पहले ही बहुत थोडी बारूद रह गई थी। फिर भी विदा होते हुए मैंने उसे केसर दिया। जब मै उससे विदा हुआ, तब वह पूरी तरह संतुष्ट था।

अगली सुबह उस युवक को सर्दी लग गई और उसका गला सूज गया। वह तुरन्त ही हिम्मत हार बैठा। उस गाँव मे किसी ने भी ऐसी बीमारी को अधिक वीरता से नही सहा था। अब वह भी घर-घर बडा उदास और निराश होकर घूमने लगा। बहुत देर बाद एक लबादे मे लिपट कर वह रेनल के दरवाज़े पर बैठ गया। जब उसे पता चला कि मैं और रेनल उसकी बीमारी को किसी भी प्रकार कम न कर सकते थे, तब वह उठा और गाँव के एक जादूगर डाक्टर के पास गया। इस बूढे ठग ने उसे बहुत देर दोनो मुक्को से थपथपाया और उसपर झुककर चीखा चिल्लाया। तब उसके कानो के पास झुककर उसने ढोल बजाना शुरू किया, ताकि बुराई दूर भाग सके। जब इस इलाज का भी कोई असर न हुआ तो वह युवक फिर से अपने घर लौट आया और कुछ घंटे तक निराश होकर पडा रहा। शाम के समय वह एक बार फिर आया और रेनल के घर के सामने उसी प्रकार ठाठ से अपना गला थामकर बैठ गया। कुछ देर वह चुपचाप जमीन पर अपनी निगाह जमाए, अफसोस करता. बैठा रहा। अन्त मे उसने बहुत धीमी आवाज़ मे कहना शुरू किया, "मै एक बहादुर आदमी हूँ। सभी युवक मुझे एक बडा योद्धा मानते है। उनमे से दस मेरे साथ युद्ध पर भी जाने को तैयार हैं। मै जाऊँगा और उन्हें शत्रु दिखा दूँगा। पिछले साल नाग लोगो ने मेरे भाई को मार डाला था। जब तक मै उसकी मौत का बदला न ले लूँ, मेरा जीवित रहना बेकार है। कल हम निकल चलेंगे और मै उनकी खोपडियाँ काट लूँगा।"

'सफेद ढाल' ने जब यह इरादा प्रगट किया, तो उस समय उसमे सदा की भाँति न उत्साह था और न आँखो मे चमक थी। उसका सिर निराशा से झुक गया था।

शाम के समय आग के किनारे बैठे हुए मैने देखा था कि वह युद्ध की पूरी पोशाक मे सजा-धजा अपने गालो पर केसर लगाए अपने सबसे प्यारे घोडे को लेकर अपने घर के सामने आया। इस पर चढकर वह सारे गाँव मे अपने भारी गले से खरखराहट भरे स्वर मे युद्ध का गीत गाते हुए निकला। औरतो की प्रशसा उसपर बरसने लगी। तब वह उतर कर कुछ देर के लिए जमीन पर लेट गया, जैसे वह कुछ प्रार्थना कर रहा हो। अगले दिन सुबह मैं योद्धाओ की विदाई की इन्तज़ार करता रहा, पर व्यर्थ। दोपहर से पहले तक

चारों ओर शान्ति ही छाई रही। तब 'सफेद ढाल' उसी पुरानी जगह पर हमारे सामने आकर बैठ गया। रेनल ने उससे युद्ध में न जाने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, "मैं जा नही सकता, क्योकि मैंने लड़ाई मे बरते जाने वाले अपने बाण किसी दूसरे को दे दिए है।"

रेनल ने कहा, "तुम ने तो उसे केवल दो ही बाण दिए है। अगर तुम अब भी मांगो, तो वह तुम्हें वापिस दे देगा।"

कुछ देर तक वह चुप रहा। पर अन्त में बहुत उदासी भरे स्वर में बोला, "बात यह है कि मेरे जवान साथियों में से एक को बहुत बुरा सपना आया है। कुछ मरी हुई आत्माओ ने नींद में उसपर पत्थर फेंके हैं।"

यदि कही सचमुच ही ऐसा स्वप्न किसी को आया होता तो अब तक युद्ध का कोई भी बड़ा दल तितर-बितर हो चुका होता। हम दोनों को ही यह विश्वास हो गया कि उसने घर पर ही रहने के लिए यह गप्प घड़ ली थी।

'सफेद ढाल' एक माना हुआ योद्धा था। वह पीड़ा को बिना दिखाए बहुत गहरे घाव को भी सह सकता था। उसने शत्रु से पाए हुए भयकर घावो को भी बिना किसी कष्ट के सह लिया था। इस प्रकार के मुकाबले के लिए किसी भी आदिवासी का सारा स्वभाव परीक्षा पर आ जाता है। बचपन से लेकर उस पर पडे हर प्रभाव को जानना ज़रूरी हा जाता है। वह जानता है कि उसे ये कष्ट क्यो सहने पड़ रहे है। इसी लिए उसकी आत्मा उसे शत्रु का पूरी तरह मुकाबला करने और एक योद्धा की भाँति सर ऊँचा करके सबसे ऊँचा गौरव पाने के लिए प्रेरित करती है। पर जब कभी उस पर कोई बीमारी या इसी प्रकार का कोई दुर्भाग्य टूटता है, तब उसकी सारी मर्दानगी जवाब दे जाती है। बड़े-से-बडा योद्धा भी इस प्रकार के न दिखाई देने वाले दुश्मन के सामने अपने को कमज़ोर और असमर्थ पाता है। वह समझ लेता है कि या तो किसी बुरी आत्मा ने या किसी के जादू टोने ने उसे ग्रस लिया है। जब इस प्रकार की किसी लम्बी बीमारी के चक्कर में कोई आदिवासी पड़ जाता है, तो वह अपना भाग्य समझकर, अपने ही ख्यालो में डूबा हुआ, मरने की प्रतीक्षा करने लगता है। अगर किसी परिवार पर एक पर एक दुर्भाग्य टूटता रहे, तब भी यही हालत होती है। आदिवासी इस बात के लिए प्रसिद्ध हैं कि वे अकेले ही शत्रु के खेमे में घुस जाते हैं या अकेले ही काले भालू पर हमला

कर बैठते है। अक्सर वे ऐसा इसलिए भी करते है कि वे भाग्य के सहारे अपने बुरे दिन काटने की बजाय मरने या मारने मे विश्वास रखते है।

इस प्रकार, उपवास, स्वप्न और महान् आत्मा की स्तुति करने के बाद भी 'सफेद ढाल' का यह लडाकू दल अपने काम पर न जा सका।

— ० —

१६ : पशु फँसाने वाले

आदिवासियो की चर्चा करते हुए मै एक अन्य जाति के दो साहसी बहादुरो की बात करना भूल गया हूँ। यह दोनो आदमी है—रूलो और साराफे। ये दोनो एक बहुत ही खतरनाक काम में लगे हुए थे। यह दोनो अरापाहो लोगो के इलाके की ओर जा रहे थे। यह इलाका हम से एक दिन के सफर की दूरी पर था। ये जाति बहुत ही खूँखार और असभ्य है। इन लोगों ने गोरो से दुश्मनी पाल रखी है। ये लोग अपने इलाके मे आने वाले किसी भी गोरे को जान से मारने पर तुले रहते हैं। हम लोग इन्हें बाद मे लौटते हुए मिले भी थे। दुश्मनी की इस घोषणा का भी एक किस्सा है।

पिछले बसत में कर्नल कीर्नी जब बहुत-सी सैनिक टुकड़ियो को ले कर लीवनवर्थ किले से लारामी किले की ओर चले, तो बेंट किले के नीचे के पहाड़ की तलहटी से होकर गुजरे। बाद में लौटते हुए पूर्व की ओर से लीवनवर्थ किले में पहुँचे। लारामी किले मे ठहरने के समय उन्होने अपनी एक टुकडी पश्चिम की ओर 'स्वीटवाटर' तक भेजी। वह खुद किले में ही रह गये और आसपास के आदिवासियो को मिलने के लिए उन्होने किले मे बुलाया। यहाँ उनकी एक खास बैठक बुलाई गई। इस समय पहली बार आदिवासियो ने गोरों को देखा। वे उन सिपाहियो के सैनिक रंग-ढंग, वेशभूषा तथा मजबूत घोड़ो को देखकर हैरान रह गये। और लोगों के साथ अरापाहो लोग भी काफी बड़ी सख्या में वहाँ आये थे। पिछले दिनो उन्होंने बहुत से गोरे लोगों को मारा था। इसलिए कर्नल ने उन लोगो को धमकी दी कि अगर आगे से उन्होने एक भी गोरे को मारा, तो वह अपने सैनिकों को खुला छोड़ देगा और उनकी जाति का नाम तक मिटा देगा। शाम के समय अपने भाषण का असर दिखाने के लिए उसने एक तोप दागने की आज्ञा दी। डर के मारे बहुत से आदिवासी जमीन पर गिर गये और बहुत से चीखते-चिल्लाते भाग गये। अगले दिन वे सब लोग अपने-अपने पर्वतो की ओर भाग गये। वे सैनिकों, तोप और ऊपर की ओर फेंके गये गोले को देखकर घबरा गये थे। गोले से उन्हें ऐसा

लगा कि वह महान्-आत्मा की ओर फेंका गया था। कुछ महीनो तक वे शान्त रहे और उन्होंने कोई गडबड न मचाई। हमसे कुछ ही दिन पहले उन्होंने बहुत ही नीचता भरा एक कार्य किया। बूट और मे नाम के दो गोरे इन्ही पहाडो में पशु फँसाने का काम कर रहे थे। इन्हें उन्होंने बहुत निर्दयता से मार डाला। यह इस कारण हुआ कि आदिवासियो मे स्वभाव से ही खूँखार बनने की आदत होती है। ये दोनो खून होते ही सारी जाति घबराहट मे पड गई। वे हर रोज इस बात की प्रतीक्षा मे रहने लगे कि गोरे सैनिक आ कर उन पर हमला करेंगे। वे नही जानते थे कि वे सैनिक उनसे नौ सौ मील से भी अधिक दूरी पर थे। उनमे से बहुत से लोग लारामी किले मे समझौते के लिए आए और अपने साथ खून का बदला चुकाने के लिए भेंट रूप मे कुछ कीमती घोडे लेते आये। बोर्दूं ने ये भेंटें लेने से मना कर दिया। तब उन्होंने कातिल को ही सौंप देने की बात कही पर बोर्दूं ने यह बात भी स्वीकार नहीं की। हफ्तो बीत जाने पर भी एक सैनिक तक न आया। आदिवासी लोग बहुत डर कर किले से लौटे थे पर, अब उन्हें लगा कि बोर्दूं ने उनकी भेंटें डर के कारण स्वीकार नही की थी। आदिवासियो की इस आदत को हर कोई जानकार अच्छी तरह जानता है। अब उन्हें विश्वास हो गया कि मरे हुए गोरो के बदले से उन्हें डरने की जरूरत नही रही। अब डर का स्थान एक निडर पागलपन ने ले लिया था। उन्होने तब से गोरो को बुज़दिल और बूढी औरत के रूप मे समझना शुरू कर दिया। डाकोटा जाति के एक मित्र ने लारामी किले मे यह खबर पहुँचाई कि ये लोग अपने बीच पहुँचने वाले किसी भी पहले गोरे को मार डालेंगे।

अगर लारामी किले मे पूरे अधिकारो के साथ किसी सैनिक अफसर को तैनात कर दिया जाता और वह कातिल को सौंपे जाने की भेंट स्वीकार कर के उसे सब के सामने ही मरवा डालता तो वे लोग सदा के लिए शान्त हो जाते और यह खतरा टल जाता। परन्तु ऐसा न होने के कारण अब 'मैडिसन बो' नाम की वे पहाडियाँ बहुत अधिक खतरे से भर गई थी। मेनेसीला और बहुत से दूसरे आदिवासियो ने इकट्ठे होकर इन दोनो पशु फँसने वालो को अपने काम से रुक जाने के लिए मनाना चाहा। पर ये दोनो बहादुर गोरे उस खतरे पर हँस दिये। जिस दिन उन्होने हमारे डेरे से विदा होना था,

उससे पहली शाम हम सबने ही 'मँडिसनबो' पहाडो के नीचे से उठते हुए सफेद धुएँ को देखा था। कुछ स्वयसेवक तुरन्त रवाना कर दिये गये थे, ताकि वे असली कारण का पता लगा सके। उन्होंने बताया था कि इस जगह से अभी-अभी, कुछ देर पहले ही, अरापाहो लोगो का डेरा उखड कर जा चुका है। इतने पर भी ये दोनो पशु-फँसाने वाले अपनी तैयारियो मे लगे रहे।

सारार्फ एक लम्बा और ताकतवर आदमी था। उसका चेहरा बडा खूँख्वार लगता था। उसकी बदूक आदिवासियो और भैंसो के अलावा किसी और के ही काम आती होगी। रूलो का चेहरा कुछ अधिक चौड़ा और लाल था और वह बच्चे-सा भोला लगता था। उसका ढाँचा बड़ा मजबूत और गठा हुआ था। उसके पाँव के अगले जोड जम चुके थे। पिछले दिनो अपने घोड़े से कुचले जाने के कारण उसकी छाती पर भी कुछ घाव हो गये थे। इस पर भी उसकी शान में कोई अन्तर न पडा। वह अब भी अपने अधूरे पाँवों पर ही गाँव भर में, बातें करता हुआ, गाता हुआ और स्त्रियो से हँसी मज़ाक करता हुआ, घूमता रहता। रूलो को औरतो से कुछ खास लगाव था। वह एक न एक ऐसी पत्नी अवश्य रखता था, जिसे यह मालाओ और फूलो से सजा सके और दूसरी भी सजावट की चीज़ें उसे लाकर दे सके। हालाँकि वह उसे अपने साथ न ले जाकर गाँव मे ही छोड़ जाता था, परन्तु इससे भी उसे प्रसन्नता ही होती थी। अगर कभी वह अपनी खतरे से भरी सारी कमाई अपनी प्रेमिका पर निछावर न कर पाता, तब वह उसे अपने साथियो मे ही, दावतो में, उडा देता। अगर उसे शराब न मिलती, तो वह बहुत तेज़ कॉफी से काम चला लेता। यहाँ के लोग खुद पर बहुत काबू न रखते थे। इसलिए उनके सामने जो कुछ भी, जितना भी और, जितना महँगा भी रख दिया जाता, उसे एक ही बारी मे समाप्त कर देते। दूसरे पशु फँसाने वालो की भाँति रूलो का जीवन भी विरोध और विचित्रताओं से भरा हुआ था। उसे अपनी इन यात्राओ पर बहुत कम समय के लिए ही जाना होता था। बाकी समय वह या तो किले के आस-पास काटता या उसके पास बसे अपने मित्रो के पास रह कर, शिकार और दूसरे प्रकार के आनन्दो मे बिताता। पर एक बार बीवर के शिकार के समय उसे एक बहुत ही बुरा अनुभव हुआ। तब से हाथ-पाँव, कान और आँख—सभी ओर से वह चौकन्ना रहने लगा। जंगल में वह

अपना शाम का भोजन बिना पकाये ही निगल जाता था, ताकि कही शत्रु उसकी जलाई आग को दूर से न देख ले। कभी-कभी वह भोजन खाने के बाद आग जला कर, कुछ दूरी पर, अँधेरे मे छिप कर बैठ जाता था, ताकि वही कही घूमता हुआ उसका शत्रु उसे न पा कर निराश होकर लौट जाए और उसके पाँवो के निशान भी न खोज पाये। राकी पर्वतमाला मे ऐसी ज़िन्दगी अनेक लोगो को बितानी पडती है। एक बार मुझे एक ऐसे पशु फँसाने वाले से मिलने का मौका हुआ, जिसकी छाती पर बाणो और गोलियो के छः निशान थे। उसकी एक बाँह टूटी हुई और एक घुटना कुचला हुआ था। इस पर भी वह अपने काम से बाज़ न आता था।

इस डेरे के अन्तिम दिन ये लोग जाने के लिए तैयार हो गये। पिछली बार जब ये ब्लैकहिल्स गये थे, तब इन्होने सात बीवर जन्तुओ की खालें उतारी थी। अब ये खाले इन्होने रेनल के पास जमा करवा दी, ताकि उनके आने तक वह इन्हें सम्भाल रखे। उसके मज़बूत और गठीले घोडो की लगाम के आगे स्पेनी लोहे के शिकजे लगे हुए थे। उनकी काठियाँ मैक्सिको की बनी हुई थी, जिनके साथ चढने के लिए लकडी की रकावे लगी हुई थी। उनकी काठियो के पीछे बीवर पशुओ को फँसाने वाले जाल बँधे हुए थे। उनके सामान मे इसके अलावा बदूक, चाकू, बारूद और गोलियो के थैले, पत्थर और लोहा तथा टीन का प्याला भी शामिल थे। उन लोगो ने हम से हाथ मिलाया और चले गये। अपना भारी चेहरा लिए साराफै आगे चल रहा था और रूलो आराम से पीछे-पीछे चल रहा था। वह घोडे को एड लगा कर, चाबुक फटकारता हुआ, मैदान पर भगाने लगा और एक कनाडी गीत बहुत ऊँचे स्वर मे गाने लगा। रेनल ने उसकी ओर बहुत स्वार्थ भरी निगाह से देखा और कहने लगा, "अगर ये इस बार मर गये तो इनकी ये खाले किले मे मुझे कम से-कम पचास डालर दिलवाने मे सहायता करेगी।"

मैने उन्हें यही अन्तिम बार देखा।

इस डेरे मे हमे पाँच दिन हो गये थे। अब तक सुखाया हुआ मास ढोने लायक हो गया था। भैसो की खाले भी अगले साल के घरो के लिए बडी मात्रा मे तैयार हो गई थी। पर अब भी बडी-बडी बल्लियो और लट्ठो को पाने की समस्या बनी हुई थी। ये लट्ठे 'ब्लैकहिल्स' के ऊँचे जगलो मे ही मिल

सकते थे। इसलिए अब हमें उसी ओर बढ़ना जरूरी था। इन दिनो गाँव में चीजो की इतनी बहुतायत हो गई थी कि कोई भी तंगी महसूस नही करता था। हालाँकि खाल और जीभ पर शिकारी का अधिकार होता था, पर तो भी बाकी मास को कोई भी ले सकता था। इस प्रकार कमजोर, बूढे और लूले-लंगड़े भी अपना गुजर कर लेते थे। नही तो, उन्हे भूखो ही मरना पडता।

पच्चीस जुलाई को, दोपहर के काफी देर बाद, डेरा टूटा और एक बडे गड़बड़झाले में पडकर हम सब लोग एक बार फिर घोडों पर चढ कर या पैदल ही मैदानो पर बढने लगे। अभी हम कुछ ही दूर बढ पाये थे कि सब बूढे आदमी, जो सारे रास्ते भर सबसे आगे पैदल ही चलते आये थे, धरती पर एक घेरा बाँधकर बैठ गये। परिवारो ने अपने मकान, ठीक तरतीब में, उनके चारो ओर खडे करने शुरू कर दिये। इस प्रकार एक घेरे में डेरा तैयार हो गया। इस बीच बूढे लोग उसी तरह बैठे हुए तम्बाकू पीते और बातें करते रहे। मैने अपने घोडे की लगाम रेनल को सौंपी और उनके साथ ही जा बैठा। वे लोग बहुत खुलकर बातें कर रहे थे। उन में वह गम्भीरता नही दिखाई दे रही थी, जो कि ऐसे मौको पर अथवा किसी ऐसे गोरे आदमी के सामने उन में पायी जाती है। इसके विपरीत वहाँ खूब हँसी-मजाक होता रहा।

जब पहली बार की चिलम बुझ गई तो मै उठा और अपने मेजबान के डेरे पर आ गया। यहाँ मै झुक कर अभी बारूद और गोलियो के थैले को उतार ही रहा था कि बिल्कुल पास ही एक बहुत तेज और भयंकर युद्ध की पुकार सुनाई देने लगी। मेजबान की पत्नी ने अपने सबसे छोटे बच्चे को गोद में खींच लिया और घर से बाहर भागी। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया और देखा कि सारा गाँव डर के कारण चीखता और चिल्लाता गड़बड में उलझ गया है। गाँव के बीचों-बीच बैठे हुए बूढ़ों का घेरा भी उठ गया था। उस दिशा में कुछ आगे बढ़कर मैने गुस्से से भरी एक भीड़ देखी। उसी समय मैंने रेमंड और रेनल की आवाज पहचानी। वे मुझे ही बुला रहे थे। मैंने देखा कि रेनल के हाथ में बंदूक थी और वह एक छोटी-सी धारा के दूसरे किनारे पर खड़ा हुआ था। वह मुझे और रेमंड को अपने साथ आ मिलने के लिए बुला रहा था। रेमंड अपनी शाही चाल में उस ओर ही जा रहा था।

अपने को इस गडबड से बचाने का यही सबसे अच्छा तरीका समझ कर मैं भी उधर ही मुडने लगा। पर तभी साँप की-सी चमकती दो आँखो ने मुझे पास के एक घर से झाँका। बूढा मेनेसीला एक हाथ मे अपना धनुप बाण तथा दूसरे हाथ मे कृपाण लिये घर से बाहर निकला। अब वह पूरी तरह हथियारो से सजा-धजा सामने आ गया। औरतें चीखती-चिल्लाती बच्चो को खतरे की जगह से बाहर ले जाने के लिए उतावली थी। मैंने देखा कि कुछ लाग खतरे के मुकाबले के लिए जल्दी मे जितने भी हथियार समेट सकते थे, अपने हाथो मे ले जा रहे थे। डेरे के पास की एक ऊँची जमीन पर कुछ बूढी औरतें जमा होकर एक गाना गा रही थी, ताकि आने वाली बुराई को दूर भगा सकें। चश्मे के पास पहुँचते ही मुझे अपने पीछे गोली चलने की आवाज सुनाई दी। मुडकर मैंने देखा कि गाँव के सारे योद्धा एक दूसरे के मुकाबले मे दो हिस्सो मे बँट गये थे और एक दूसरे पर हमला करने के लिए तैयार हो गये थे। उसी समय मुझे अपने सिर पर से गुजरती हुई किसी तेज आवाज से लगा कि यह खतरा केवल वही तक रुका नहीं रहेगा। इसलिये मैंने बहुत जल्दी ही चश्मे को पार किया और रेनल और रेमड से जा मिला। वहाँ हथियारबन्द होकर हम चुपचाप इस सब झगडे को देखते हुए परिणाम की परीक्षा मे घास पर ही बैठे रहे।

सौभाग्य से यह सब झगडा जल्दी ही शात भी हो गया। हमें इसकी आशा न थी। जब हमने फिर से देखा, तब ये ही लडने वाले फिर से एक दूसरे से मिल गये थे। अब भी कही-कहीं आवाजें सुनाई दे जाती थी, पर हमला बिल्कुल बन्द हो चुका था। मैंने पाँच या छ आदमी बीच-बचाव करते देखे। इसी बीच एक आदमी ने कुछ घोषणा की, जिसे मेरे दोनो साथी अपनी बातो मे उलझे रहने के कारण पूरी तरह न सुन पाये। इसीलिए मैं भी पूरी बात न समझ पाया। अब वह भीड छटनी शुरू हो गई। लौटते हुए योद्धाओ मे से कुछ की आँखो मे अब भी चमक दीख रही थी। यह झगडा कुछ बूढे लोगो के कारण समाप्त हुआ, जिन्होने लड़ाकू दल के बीच आकर उन्हें समझाया। इन लोगो का साथ उन सिपाहियो ने भी दिया, जिनका काम इन गाँवो मे पुलिस के समान माना जाता है।

मुझे यह बडा अजीब लगा कि इतने बाण और गोलियाँ चली, पर घाव

किसी को भी नही लगा। इसका एकमात्र कारण यही हो सकता है कि उस समय योद्धा और उसका शिकार—दोनो ही—बराबर हिलते रहे थे। लगभग सारे ही गाँव वाले इस झगडे में शामिल हो गये थे। गाँव भर में कुल मिला कर पाँच या छः बंदूकें ही थी। मैने कुल आठ या दस गोलियो की ही आवाज़ें सुनी थी।

लगभग पौन घंटे मे ही सब कुछ शात हो गया। अब फिर गाँव के बीचो-बीच योद्धाओ का एक दल बैठा हुआ था। इस बार मै इसके बीच न गया, क्योंकि मैंने दूर से ही देख लिया कि इस बार हुक्का उल्टी दिशा में चल रहा था। इससे साफ था कि यह बात समझौते के लिए हो रही थी। ऐसे समय मेरा जाना बुरा ही माना जाता। जब मै गाँव में फिर आया, तो इस समय भी गाँव में कुछ हलचल थी और अँधेरा छाया हुआ था। कुछ शोक भरी आवाज़े, चीखें और रोना हर घर से उठते हुए लग रहे थे। मै ठीक से नही जान सका कि इसका सम्बन्ध हाल की गडबड से था या किसी पुरानी लडाई में मारे गये किसी सम्बन्धी के लिए शोक प्रगट करने से था।

इसी समय लडाई के बारे में अधिक पूछना उचित न था। बहुत देर बाद ही मुझे इस बात का कारण पता चल पाया। डाकोटा जाति में अनेक प्रकार के समाज और बिरादरियाँ पायी जाती है। इन में से कुछ अंधविश्वासों के कारण, कुछ युद्ध के प्रेम के कारण और कुछ सामाजिक बातो के कारण बनती हैं। इन में से एक जाति 'शर-भंजक' कहलाती है। अब ये लोग इधर-उधर बिखरे हुए है। इस के चार आदमी इसी गाँव में रहते थे। उन्हें माथों पर लटकते सजे हुए बालो के कारण आसानी से पहचाना जा सकता था। ये बाल आगे की ओर इस तरह बँधे होते थे, जिस से वे और भी ऊँचे और भयंकर लगते थे। इन का मुखिया 'पागल भेड़िया' नाम का एक बहुत बलवान और डीलडौल वाला युवक था। वह बहुत ही साहसी और भयंकर था। मैंने उसे सदा ही सबसे अधिक खतरनाक युवक माना था। हालाँकि वह मुझे जब-तब दावत के लिए अपने डेरे पर बुलाता था, पर तो भी मैं उसके यहाँ कभी निहत्था नही गया। एक बार इस युवक को एक और आदिवासी के सुन्दर घोड़े को हथियाने की चाह जगी। इसने उसके स्वामी 'लम्बे भालू' को एक दूसरा बराबर का घोड़ा भेंट देना चाहा। डाकोटा जाति के रिवाज के अनुसार

किसी भेंट को स्वीकार करने का मतलब उसके मुकाबले की दूसरी भेट देने से होता है। दूसरे युवक को पता था कि इस की निगाह उसके घोडे पर है। उसने तब भी चुपचाप विना कुछ कहे भेंट स्वीकार कर ली और अपने घर के सामने उस घोडे को बाँध लिया। उसने कई दिन बीत जाने पर भी अपना घोडा भेंट मे नही दिया। इस पर 'पागल भेडिया' अधीर हो उठा। यह देख कर कि उसकी भेंट किसी भी काम मे न आई, वह अपने घोडे को दुबारा माँगने लगा। इसीलिए आजकी शाम डेरा गाडने के बाद, वह दूसरे युवक के घर पर गया और अपने घोडे को खोल कर ले आया। इस पर दूसरा युवक आदिवासियो मे आमतौर पर फूट पडने वाले पागलपन से भर गया और उसने घोडे पर अपने चाकू से तीन भयानक घाव कर दिये। बिजली की भाँति तेजी से लौट कर 'पागल भेडिये' ने भी अपना धनुष पूरी ताकत से तानकर दुश्मन की छाती पर लगा दिया। घबराहट मे भी शात बना हुआ दूसरा आदिवासी हाथ मे खून से सना चाकू लिये ऐसे ही खडा रहा। इसी बीच उसके मित्र और सम्बन्धी खतरे को पहचान कर उसकी सहायता के लिये दौडे। उधर 'पागल भेडिये' के तीनो साथी भी अपने भाई की मदद को आ गये। उनके दोस्त भी इकट्ठे हो गये। और, इस प्रकार चारो ओर एक गडबड़-सी मच गई।

जिन सिपाहियो ने इस लडाई को शात करने मे सहायता पहुँचाई थी, उनका स्थान इन गाँवो मे बहुत महत्त्व का होता है। यह काम बडे मान का माना जाता है और बडे साहसी लोगो को ही सौंपा जाता है। उनको यह अधिकार बाकायदा चुनाव के बाद ही मिलता है। यह चुनाव गाँव के बूढे और खास योद्धा मिलकर करते हैं। इस प्रकार गाँव में सबसे बडी जिम्मेवारी इन लोगो पर आ पडती है। बडे-से-बडा सरदार भी अपने किसी छोटे-से-छोटे आदमी को, बदले का खतरा उठाये बिना, मार नही सकता। परन्तु, इन सिपाहियो को अपनी जिम्मेवारी के निभाने मे ऐसा करने की भी छूट होती है।

— o —

१७ : ब्लैक हिल्स

दो दिन तक हम पूर्व की ओर बढते रहे। तब हमारे सामने ब्लैक हिल्स की चोटियाँ उठने लगी। इनकी ढलानो के नीचे होते हुए कुछ मील दूर तक गाँव वाले बढते रहे। यहाँ मदान एक दम उजाड था। कही-कही छोटी-मोटी पहाडियाँ बिखरी हुई आने लगी। यहाँ से एक दम बाई ओर को मुडकर हम एक पहाडी घाटी मे घुसे, जिसके तले में एक चश्मा बह रहा था। इसके किनारे पर ऊँची घास और छोटे पेड उगे हुए थे, जिनके बीच मे वहुत से बीवर जन्तुओ के बनाये अनेको बाँध दिखाई दे रहे थे। अब हम ऊँची-ऊँची चोटियो के बीच मे बढने लगे। हमारे दोनो ओर चट्टामें अजीव तरह से एक दूसरे पर जमी हुई थी। कही भी कोई भी पेड, झाडी या घास अधिकता में नही दिखाई दे रही थी। चचल आदिवासी बच्चे उन चट्टानो पर होते हुए चल रहे थे। कभी-कभी वे चोटियो पर चढकर नीचे से गुजरने वाले जलूस को देखने लगते। आगे बढते हुए रास्ता तग होने लगा। तब अचानक ही सामने एक घास भरी चरागाह आ गई। इसके चारो ओर पर्वत घिरे हुए थे। यही पर सब परिवार जमा हुए और कुछ ही देर मे गाँव का गाँव खड़ा हो गया।

अभी डेरे खडे ही हुए थे, कि सभी युवक और दूसरे लोग अपने उद्देश्य के लिए निकल पड़े। यहाँ वे बल्लियो और लट्ठो को जमा करने के लिए आये थे। गाँव के लगभग आधे लोग इस काम पर निकल गए और सामने की लम्बी घाटी मे चले गये। इन घाटियो मे ने होते हुए हम आगे बढे और ऊपर की चोटियो पर निकल आये। यहाँ से दोनो ओर सीधी ढलान उतर गई थी। इन ढलानो पर अनेक, मुलायम पत्तो वाले, पेड लदे हुए थे। बाई ओर ये ऊँची पहाडियाँ थी और दाई ओर दल-दल मे से होता हुआ एक चश्मा वह रहा था। धारा मे बीवर के बनाये बाँधो के कारण कई जगह पानी जमा हो गया था और कुछ जोहड बन गये थे। इस धारा के किनारे अनेकों झाडियाँ और वहुत से गिरे हुए पेड़ जमा थे। बीवर नाम के कारीगर जानवर के सामने

केवल पेडो के तने ही वाधा वन कर आ जाते है, नही तो वह किसी भी चीज़ को काट कर अपनी राह बना लेता है। कुछ जगह हम पेडो मे से झुक कर चलने लगे। और कभी फिर खुली जगहो पर निकल आते। यहाँ आकर हम पूरी तेज़ी से बढने लगे। मेरी घोडी जब चट्टानो पर से वढने लगती, तब मेरी काठी गिरने को हो जाती। मै ऐसे समय उतर पड़ता और इसे मजबूती से पकड कर चलने लगता। कुछ ही देर मे सब लोग मेरे पास से होकर आगे बढ गये। औरतें सजधज कर सवार थी और आदमी हँसते खेलते और अपने घोडो को थपथपाते बढ रहे थे। इसी समय चट्टानो मे से दो काली पूँछ वाले हिरण उछले। रेमड ने घोडे पर से ही गोली दाग दी। दूसरी ओर से भी उसके जवाब मे एक गोली चली और तब दोनो ही गूँजें मद्धम पड कर डूब गईं।

इसी तरह सात-आठ मील बढने के बाद नज़ारा वदल गया। चारों ओर की ढलानें बहुत ऊँचे और पतले पेडो से ढकी हुई थी। आदिवासियो ने तुरन्त ही दायें और बायें अपने कुल्हाडो से लट्ठे काटने शुरू कर दिये। इस समय मै अकेला पड गया। परन्तु इन पहाड़ो मे इतनी चुप्पी छाई हुई थी कि इन पेडो के काटने की आवाज़ और लोगो की वातचीत की आवाज़ साफ-साफ सुनाई दे जाती थी।

रेनल भी आदिवासियो के समान ही बन चुका था। उसने अपने घर के लिए भैंसे तो काफी मार लिये थे, पर अब लट्ठे जमा करने के काम मे उसे कठिनाई अनुभव होने लगी। इस लिए उसने मुझ मे रेमड को अपने साथ देने के लिए कहा। मैंने मान लिया। तब वे दोनो ही जगल के सब से घने हिस्से मे घुस गये और अपने काम मे जुट गये। मैने अपना घोडा भी रेमड को ही सौंप दिया और खुद पहाड पर चढने लगा। कमज़ोर होने के कारण मैं बहुत धीरे-धीरे, आराम से बढने लगा। लगभग एक घंटे बाद मै ऐसी ऊँचाई पर पहुँचा, जहाँ से यह घाटी बहुत ही छोटी और अँधेरी खाई जैसी लग रही थी। इन पहाडो की सब से ऊँची चोटी बहुत ऊँची और वहुत दूरी पर दिखाई दे रही थी। चारो ओर से मेरी बचपन से पहचानी चीज़ो ने मुझे घेरा हुआ था। चट्टानें, चश्मे, और काई से घिरे पेड चारो ओर घिरे हुए थे। कही इन्होंने धारा का बहाव रोक लिया था, तो कही ये पेड या चट्टानो मे फँसे

हुए थे ।

ये पर्वत जंगलों से भरे हुए तो थे ही, इन पर रहने वाले पशु भी अनेक प्रकार के और सख्या में बहुत अधिक थे । आगे बढने पर मैने बारहसिगो की चौड़ी पगडडियो को देखा । सब तरफ घास कुचली हुई थी । यहाँ भेड़ियो की भी बहुत-सी पगडडियाँ दिखाई दी । कही-कही मुझे, और जगह देखे गये निशानों से, कुछ भिन्न निशान भी मिले । मैंने समझ लिया कि ये निशान राकी पर्वतमाला मे पाईजाने वाली भेडो के थे । मैं एक चट्टान पर बैठ गया । वहाँ पूरी शाति छाई हुई थी । न हवा चल रही थी और ना ही कोई जन्तु दिखाई दे रहा था । मुझे ध्यान आया कि कही मै ऐसी जगह में गुम न हो जाऊँ । इसलिए मैं सामने के पहाड की एक ऊँची चोटी को देखता रहा । यह जगलो से एक दम सीधी ऊपर उठी थी और कुदरती तौर पर इस की सब से ऊँची जगह पर एक नगी चट्टान पडी हुई थी । इस प्रकार के निशान को भुलाना मुश्किल था । इस लिए मुझे कुछ निश्चिन्तता अनुभव हुई और मै आगे चलने लगा । मेरे सामने की झाड़ियो में से एक सफेद भेडिया उछला और धीरे से सरकता हुआ एक ओर को बढ़ने लगा । वह एक क्षण के लिए रुका और उसने उत्सुक निगाहो से मुझे देखा । मेरी इच्छा हुई कि उसे मारकर उसकी खोपड़ी को मै, इन पर्वतो की निशानी के रूप मे, अपने साथ ले लूँ । पर मेरे निशाना साधने से पहले ही वह भाग गया । कुछ ही देर मे मैने सामने की शाखाओ के टूटने की आवाज सुनी और उन ऊँची झाडियो के ऊपर निकलते हुए बारहसिगे के सीग देखे । मुझे लगा कि मै शिकारियो के स्वर्ग मे पहुँच चुका था ।

इन पहाडियो की यह हालत गर्मियो में होती है । सर्दियो में यहाँ का नजारा कुछ और ही होता है । चारो ओर ऊँचे-ऊँचे देवदार और दूसरी किस्म के पेड़ बहुत घने हो जाते हैं और उनके पराग से यह सारा पहाड़ सफेद-सा पड जाता है । उन दिनो पशु फँसाने वाले यहाँ आकर घने पेडों के नीचे अपने डेरे लगा लेते हैं और शिकार के इस स्वर्ग का खूब आनन्द लेते हैं । उन के मुख से मैंने सुना है कि किस प्रकार वे अपनी आदिवासी प्रेमिकाओ और कुछ आदिवासी साथियो को लेकर यहाँ कुछ महीने अकेले मे बिताते है । वे यहाँ बहुत से गड्ढे खोद कर सफेद झाड़ियो, सँबलो और मार्तेनों को फँसा लेते हैं ।

उनके चारो ओर भेडियो की चीख-चिल्लाहट सारी रात सुनाई देती रहती है, पर अपने डेरे के चारो ओर ऊँचे-ऊँचे लट्ठो और पत्थरो की दीवारें बनाकर ये लोग जलती आग के सामने निश्चिन्त होकर सोते रहते है और सुबह अपने ही दरवाजे पर आये हुए किसी भी हिरण को मार लेते है।

—:o:—

१८ : पहाड़ पर शिकार

डेरे मे नई काटी हुई बल्लियाँ बहुत अधिक जमा हो गई थी। उन में से बहुत-सी काट कर तैयार हो चुकी थी। ये सब साथ-साथ जमा की हुई थी। इन्हे धूप मे सूखने के लिये रख दिया गया था। दूसरी कुछ बल्लियाँ जमीन पर ही पडी थी, जिन्हें साफ करने मे औरतें, बच्चे और योद्धा जुटे हुए थे। पिछले शिकार मे पाई गई बहुत-सी खालें तैयार कर छील ली गई थी। इस लिये बहुत सी स्त्रियाँ इकट्ठी होकर सीने के काम में जुटी हुई थी, ताकि मकानो की नई छतें तैयार की जा सकें। आदमी धारा के किनारे की झाड़ियो मे घूम रहे थे, ताकि वहाँ से शोगसाशा की छडियो को इकट्ठी कर सकें। इस की छाल को तम्बाकू मे मिला कर पिया जाता है। रेनल की पत्नी भी, अपने घर में ही, सीने के काम मे जुटी हुई थी। उसका पति सुबह का भारी नाश्ता खा कर बाहर बैठा रेमड और मेरे साथ चिलम पी रहा था। उसने काफी देर बाद यह प्रस्ताव किया कि हमें किसी शिकार पर चलना चाहिये। उसने हम से अपने डेरे से बंदूकें लाने को कहा। वह घोडे की शर्त लगानें को तैयार था कि मील दो मील की दूरी पर ही हमें किसी बारहसिंगे या अन्य हिरण का शिकार अवश्य मिलेगा। वह अपनी पत्नी की पीली घोड़ी साथ ले चलना चाहता था। उसका कहना था कि भले ही वह घटे में तीन-चार मील से अधिक न चलती हो, पहाडो पर शिकार के लिए वह किसी भी खच्चर से कम अच्छी साबित न होगी।

मैं उस काले खच्चर पर चढ़ा, जिस पर प्राय. रेमड चढा करता था। यह खच्चर बहुत ताकतवर, सभ्य और सम्भाले जाने लायक था। पर पिछले कुछ दिनों से पड़ने वाली कुछ मुसीबतो के कारण इसका स्वभाव भी चिडचिड़ा हो गया था। आज से लगभग एक सप्ताह पहले किसी आदिवासी का अनजाने मे मैंने अपमान कर दिया था। उसने चुपचाप एक चरागाह में अपने चाकू से इस की कमर पर, बदला लेने के लिए, घाव कर दिया था। घाव तो अब भर चुका था, पर अब भी उसकी दर्द अवश्य बाकी थी। इसीलिए वह अपनी

जाति की और घोडियो की बजाय अधिक चिडचिडी हो गई थी।

सुबह बहुत ही सुहावनी थी और मेरी सेहत अच्छी थी। ऐसी अच्छी सेहत मेरी पिछले कई दिनो से नही रही थी। हम लोग यह छोटी-सी घाटी छोडकर एक चट्टानो भरे खड्ड में होते हुए पहाडी पर चढे। जल्दी ही हमारा डेरा दीखना बन्द हो गया। साथ ही हर जीवित चीज भी दीखनी बन्द हो गई। मैं जीवन मे कभी इतनी घृणित जगह से नही गुजरा और ना ही कभी गुजरना चाहूँगा। यहाँ यह काली खच्चर बहुत ही अडियल बन गई। यहाँ तक कि रेनल का पीला घोडा भी हर कदम पर लडखडाने लगा। इनके पाँव और टाँगें चट्टान से टकरा कर घायल होने लगी।

यह जगह चुप्पी और एकात की थी। यहाँ केवल पर्वतो की चट्टानो भरी चढाइयाँ या खुरदरी नगी चट्टानें ही देखने को मिल रही थी। पेड-पौधे तो बहुत ही कम थे। बहुत देर बाद हरे जगल का एक टुकडा मिला। जब हम इसमें कुछ आगे बढे तो हमारी इच्छा चट्टानो मे लौट चलने की हुई। बात यह थी कि हम इतनी सीधी ढलान पर थे और इतने घने पहाडो मे से गुजर रहे थे कि हमे इधर-उधर एक गज तक भी कुछ नही दिखाई दे रहा था।

अगर कोई स्वय को इस प्रकार की कठिनता और खीझ पैदा करने वाली मिली-जुली हालत मे रखना चाहे, तो उसे एक बुरे खच्चर पर चढ कर ऐसे घने जगलो मे किमी ऐमी ही तिरछी ढलान पर उतरने की कोशिश करनी चाहिये। मजा तो तब होगा यदि उसके साथ एक लम्बी बदूक हो, उसने झालरदार कमीज पहनी हुई हो तथा उसके लम्बे बाल हो। ये सब चीजें हर जगह शाखाओ मे उलझ और फँस कर तग करेंगी और इनसे उछल कर शाखाएँ उसके मुँह पर बार-बार टकरायेंगी। उसकी खच्चर बार-बार रुक कर फिर तेजी से भागेगी, जिससे सवार की हालत बार-बार बिगडेगी। कभी वह उसकी पीठ पर चिपक जाएगा और कभी वह अपनी पीठ पर गिर कर अपने पाँव उसकी गर्दन मे फँसा लेगा। यह इस कारण कि वह शाखाओ और चट्टानो की टक्कर से अपने को बचा सके। रेनल लगातार अपने घोडे को कोसता ही रहा। हम मे से किसी को पता न था कि हम किधर जा रहे है? मैं कई-बार ऐसी बुरी सवारी कर चुका था पर, तो भी कुछ मिनट की वह

सवारी मुझे जीवन मे कभी न भूलेगी।

आखिर हम लोगो की मुसीबत खत्म हुई। हम ढलान की ओर बहने वाली एक धारा के किनारे आ निकले। यहाँ से बाईं ओर मुडते हुए हम पत्थरो और पानी पर से गुजर कर, चमकते हुए सूर्य की धूप से बचते हुए, पेडो की छाया मे खुशी-खुशी बढने लगे। यह धारा एक ओर को तेजी से मुड गई थी और चट्टानी पहाडियो के बीच मे एक खाई के रूप मे बदल गई थी। यहाँ यह इतनी गहरी हो गई थी कि हम उसका तला भी खोज नही पाए। यहाँ से आगे एक बार फिर हम बुरे जगलो मे जा फँसे। बहुत देर बाद हम फिर-से धूप और छाया मे आ निकले। हमने देखा कि हम एक पहाड की तलहटी मे थे। यहाँ धूप खूब चमक रही थी। हमारे सामने एक लम्बी-चौडी रेतीली घाटी पहाडो तक फैली हुई थी। रेनल इसकी ओर ध्यान से देखता रहा और अन्त मे कहने लगा—

"बहुत बार आदिवासियो के साथ इन ब्लैक हिल्स में शिकार खेलते हुए मै सोने की खोज मे रहा हूँ। यहाँ काफी सोना है यह बात तय है। मैने कम-से-कम पचास बार ऐसे स्वप्न देखे है और आज तक मेरा स्वप्न कभी झूठा नही हुआ। सामने इन काली चट्टानो की ओर देखो, जो एक और चट्टान के चारो ओर जमा है। क्या यह अनुमान नही होता कि वहाँ कुछ जरूर होगा? किसी गोरे पुरुष के लिए पहाडियो मे अकेले घूमना उचित न होगा। आदिवासी लोग इन पहाड़ियो मे बुरी आत्मा का निवास मानते है। मेरा भी यह विश्वास है कि यहाँ सोने की खोज करना अच्छा सिद्ध नही होगा। हाँ, इस सबके लिए मैं यह जरूर चाहूँगा कि इन नीचे के लोगो मे से कोई यहाँ अपनी छड और छेनी ले कर आये। मेरा विश्वास है कि वह जल्दी ही सोने की खान पा लेगा। खैर आज मै सोने को निकालने की कोशिश नही करूँगा। वह देखो, खड्ड मे जो पेड है, हम वहाँ तक जाएँगे। मेरा विश्वास है कि वहाँ काली पूँछ वाले हिरण का शिकार हमे जरूर मिलेगा।"

रेनल की भविष्यवाणी पूरी न हुई। हम पहाड़ पर पहाड और घाटी पर घाटी पार करते गये। हमने गहरी खाइयाँ भी पार की। पर तो भी हमने एक भी शिकार न पाया। मेरा साथी इससे चकित और परेशान हो गया। हमने किसी अच्छे शिकार के न मिलने पर मैदान में ही किसी साधारण हिरण का शिकार

करना अच्छा समझा। इस इरादे से हम एक तग घाटी मे से गुजरने लगे इसके तले पर जगली झाडियाँ उगी हुई थी और बीच-बीच में भैंसो के चल के रास्ते बने हुए थे। ये भैंसे ऐसी घनी जगहो मे से भी अपना रास्ता बन लेते हैं।

रेनल की आँख लगातार उन चट्टानो और चोटियो की ओर लगी हु थी। उसे आशा थी कि कही से कोई पहाडी भेड हमे झाँकती हुई मि जाएगी। कुछ देर तक हमे कुछ भी न दिखाई दिया। बहुत देर बाद ए पहाडी की तलहटी मे हमे कुछ हलचल-सी दिखाई दी। यह एक काली पूँ वाला हिरण था। वह एक चट्टान पर खडा होकर हमे देखने लगा। ह देखते ही वह धीरे से घूमा और आँखो से ओझल हो गया। तुरन्त ही रेन घोडे से उतर कर उस जगह की ओर भागा। मुझ मे पीछा करने की हिम्म न थी। इस लिए मैं उसके घोडे को थाम कर वही प्रतीक्षा करने लगा। रेन कुछ देर के लिए ओझल हो गया। तब उसकी बंदूक चलने की आवाज आई थोडी देर मे वह फिर से निराशा भरी नजर लिए हुए सामने आया। सा था कि वह अपने काम मे सफल नही हुआ। अब हम उस घाटी मे यहाँ ए ऐसे गड्ढे के पास आये, जिस के तले पर सफेद मिट्टी जमी हुई थी और सू कर फट चुकी थी। इस जगह को देख कर रेनल की आँखें चमक उठी, उस कोई शरारत पहचान ली। उसने मुझे रुकने के लिए पुकारा और एक पत्थ लेकर गढे मे फेंका। मै हैरान रह गया। मैने देखा कि ऊपर की परत को हट कर यह पत्थर पानी मे गिरा और उससे जोर से छींटे उडे। नीचे का पान बहुत ही गाढा और पीले रग का था। पास ही एक पाँच-छ फुट लम्बी छड पडी थी। बहुत पास के किनारे पर इसे डुबा कर हम मुश्किल से इस गढे क तला छू पाये। इस तरह के स्थान राकी पर्वतमाला मे जगह-जगह मिलते है भैंसे अपने अधेपन मे ऐसे गड्ढो मे अनजाने ही फँस जाते हैं। और कुछ दे निकलने की कोशिश करके, असफल होकर, वही डूब जाते है। इतने गह कीचड जैसे पानी मे से निकलना उनके लिए कठिन हो जाता है क्योंकि य पानी बहुत अधिक गहरा होता है।

आखिर हमे इस खाई को पार करने की जगह मिल गई। यहाँ यह घाट मैदानो की ओर खुल गई थी। अब हमारे सामने मैदान ही मैदान फैला हुआ

था। बहुत दूरी के एक टीले पर हमने कुछ काली रेखाएँ हिलती हुई देखी। रेनल का विश्वास था कि ये भैंसे है।

उसने कहा, "आओ, हम इनमें से किसी एक को फँसाने की कोशिश करें। मेरी पत्नी को कुछ और खालें मकान के लिए चाहिएँ और कुछ गोद जैसी चिकनाई मुझे भी चाहिये।"

उसने अपने पीले घोड़े को तुरन्त पूरी तेज़ी के साथ दौडाना शुरू कर दिया। इधर मैंने भी अपने घोड़े को एड लगाई। वह बहुत जल्दी ही अपने साथी से आगे निकल गया। एक-दो मील दौडने के बाद एक बडा खरगोश उछल कर हमारे सामने आया। यह मेरे खच्चर की टाँगो मे उलझ गया। घबरा कर मेरा खच्चर एक ओर को उछला। कमजोर होने के कारण मैं तुरन्त ही जमीन पर गिर पडा। मेरी बन्दूक मेरे सिर के पास ही आ गिरी। गिरते-गिरते इस में से गोली छूट गई। भाग्य से मै बच गया, पर इस की गोली की गुंजन ने मेरे कानो को बहरा कर दिया। एक दम चौंक कर मैं कुछ देर जड़-सा पडा रहा। रेनल मुझे मरा हुआ समझ कर पास तक आया और मेरे खच्चर को गालियाँ देने लगा। कुछ ही देर मे सँभल कर मैं उठा और बन्दूक उठा कर उसे जाँचने लगा। यह बहुत चोट खा गई थी। इस के हत्थे मे चीर पड़ गया था और इस का मुख्य पेंच ढीला हो गया था। अब इसके ताले को बाँधने के लिए ताँत का प्रयोग करना पडा। अब भी इससे कुछ-न-कुछ काम लिया जा सकता था। मैने उस को साफ किया और फिर से भरा। रेनल इसी बीच मेरा खच्चर पकड कर मुझ तक ले आया था। रेनल को बन्दूक पकडा कर मै इस पर चढ गया। अभी मैं चढा ही था कि इस ने फिर से गडबड करनी शुरू कर दी। पर, अब मैं पूरी तरह तैयार था और कोई रुकावट बीच मे न थी। इसलिए मैने उसे जल्दी ही काबू कर लिया। रेनल से बन्दूक लेकर मै फिर पहले जैसे ही आगे बढने लगा।

अब हमारे रास्ते मे पहाड़ न थे। हम चौडे मैदान मे निकल आए थे। भैंसे अब भी हम से दो मील आगे थे। जब हम उन के पास तक आये, तो एक छोटे-से टीले के पीछे छिप गये। मैंने रेनल का घोड़ा थाम लिया और वह तेज़ी से भाग निकला। कुछ ही मिनट मे मुझे गोली चलने की आवाज़ आई। मैंने एक भैंसे को दाईं ओर पूरी तेज़ी से भागते हुए देखा। उन के

पीछे ही असफल शिकारी भी आ निकला। अब वह फिर से निराशा की हालत मे अपने घोडे पर चढ गया। वह इन पहाडियो और भैसो को कोसने लगा और बार-बार अपने अच्छा शिकारी होने की बात दोहराने लगा। यह बात सच भी थी। यह सच था कि वह पहले कभी भी इन पहाडियो से दो-तीन हिरण या भैसे आदि मारे बिना न लौटा था।

अब हम बहुत दूर पर स्थित अपने डेरे की ओर लौटे। हमारे रास्ते में चारो ओर अनेक हिरण मैदान मे दौडते फिर रहे थे। पर, उनमे से हमारे सामने एक भी रुक कर खडा न हुआ, जिससे हम उस पर निशाना साध सकते। जब हम डेरे के पास के पहाड की तलहटी मे पहुँचे तो हम छोटे-से-छोटा रास्ता पकडने को अधीर हो उठे। इसलिए बाई ओर को मुड कर हम अपने थके-हारे जानवरो को चट्टानो मे से ले कर बढे। इन पथरीली ढलानो पर हिरण और भी अधिक दीखने लगे। हम दोनो ने ही काफी दूरी से एक-एक निशाना साधा, पर दोनो ही चूक गये। बहुत देर बाद हम आखिरी टीले की चोटी पर पहुँचे। वहाँ हमने बिल्कुल नीचे ही गाँव को पाया। यहाँ सभी लोग काम मे जुटे हुए थे। हम बहुत निराशा के साथ नीचे उतरे। जब हम घरो के बीच से होकर गुजर रहे थे, तब लोगो ने हमारी ओर देखा कि शायद हम कुछ नया मास आदि लाए होगे। कुछ औरतो ने हँसी भी उडाई, जिससे रेनल को शर्म अनुभव हुई। जब हम उसके डेरे पर पहुँचे, तो हमारी हालत और भी बुरी हो गई। यहाँ हमने रेनल के आदिवासी युवक सम्बन्धी 'तूफान' और उसके साथी 'शशक' को आराम करते पाया। वह लकडी के एक बर्तन मे बडे आनन्द के साथ 'वास्ना' का स्वाद ले रहा था। उसके पास ही एक मादा हिरणी की ताजी खाल भी पडी थी। इसे वह अभी-अभी पास ही मे जगल से मार कर लाया था। निश्चय ही उस युवक का हृदय इस बात से खुश था। पर उसने यह खुशी जाहिर नही की। उसे तो हमारे पहुँचने का पता भी नही चला। उसके सुन्दर चेहरे पर आत्म-सन्तोष और शाति साफ-साफ झलक रही थी। आदिवासियो की यही विशेषता है कि वे अपनी बडी-से-बडी भावना को भी अन्दर-ही-अन्दर बिना बेचैनी के, छिपा लेते है। मै पिछले दो महीनो से इस युवक को जानता था। इसने इस बीच अपने स्वभाव को काफी अच्छा बना लिया था। जब मैंने शुरू से

उसे देखा तब वह अभी बचपन को छोड कर शिकारी बनने की तैयारी कर रहा था। बहुत दिन पहले उसने पहला हिरण मारा था। तब से शिकार की उसकी इच्छा वढने लगी थी। अब वह सदा ही शिकार की खोज मे रहने लगा। इतना छोटा कोई और शिकारी इस मामले में इस जितना सौभाग्यशाली नही रहा होगा। इन सब सफलताओ ने उसके चरित्र मे काफी अन्तर ला दिया था। मुझे याद है, पहले-पहल वह जवान स्त्रियो के बीच मे बैठने से घबराता था और उनके सामने वह भीगी बिल्ली-सा बन जाता था। पर, अब वह अपने को बहादुर मानने लगा था। इसीलिए अब अच्छी पोशाके पहन कर और ख़ूब सज-धज कर निकलता था। मेरा अनुमान है कि इस दिशा में भी उसे सफलता ही मिली थी। पर अब भी योद्धा का पूरा सम्मान पाने के लिए उसे बहुत-कुछ करना बाकी था। वह औरतो और लडकियो मे सज-धज कर अवश्य निकलने लगा था, परन्तु अब भी सरदारो और बूढे लोगो के सामने जाने मे भी उसे शर्म महसूस होती थी। उसने आज तक भी किसी आदमी को न मारा था और न ही लडाई मे मारे गए किसी शत्रु के शरीर पर चोट पहुँचाई थी। मुझे पूरा विश्वास है कि वह युवक शत्रु की गर्दन काटने वाले अपने अछूते चाकू का बहुत जल्दी ही उपयोग करेगा, क्योकि उसके दिल में इस बात की इच्छा बहुत दिन से घर किए हुए है। मै उसके साथ अकेला रहने मे, इसीलिए घबराता भी था।

'घोडा' नाम का उसका वडा भई कुछ भिन्न चरित्र का था। वह ख़ूबसूरत हो कर भी सुस्त था। वह अच्छा शिकारी हो कर भी, दूसरो के शिकार पर मौज उड़ाना पसद करता था। उसे अपना नाम चमकाने की कोई खास इच्छा न थी। उसका छोटा भाई पहले ही प्रतिष्ठा मे उससे आगे वढ चुका था। उसका चेहरा गहरे रग का और भद्दा था। वह इस पर रग मलते रहने और मेरे द्वारा दिए हुए एक शीशे मे अपनी शक्ल देखते रहने मे ही अपना अधिक समय गुजार देता था। बाकी समय वह खाडे, सोने या घर के बाहर धूप सेकने मे बिता देता था। यहाँ वह पूरी तरह सज-धज कर और अपने हथियार ले कर बैठा हुआ घंटो बिता देता। वह इस बात में ही खुश था कि उसे देख-देख कर औरतें प्रसन्न होती है। वह हमेशा ही गभीर चेहरा ले कर बैठा रहता, जैसे वह ध्यान मे डूबा हुआ हो। बीच-बीच मे वह अपने प्रशंसको की ओर

भी तिरछी निगाह डाल लेता।

वे दोनो भाई आदिवासियो के दो वर्गों के प्रतिनिधि थे। यहाँ हमें 'शशक' का भी ध्यान रखना चाहिए। 'तूफान' और वह दोनो सदा साथ रहते थे। उनका खाना, सोना और शिकार साथ-साथ ही होता था। उनकी हर चीज ही साँझी रहती थी। आदिवासी जीवन मे अगर कोई चीज़ बहुत आकर्षक है, तो वह है इस प्रकार की दोस्ती। ऐसी दोस्ती मैदान के इन कबीलो मे कभी कभी देखने को मिल जाती है।

धीरे-धीरे दोपहर के बाद समय बीतने लगा। मै रेनल के डेरे मे ही लेटा रहा। सारे डेरे मे ही छाई सुस्ती ने ही मुझे भी आ घेरा। दिन का काम लगभग समाप्त हो गया था। जो कुछ रह गया था, उसे बिना समाप्त किए ही सब लोग अपने घरो मे सुस्ताने के लिए लेट गए थे। एक गहरी सुस्ती और आलस्य ने सारे गाँव को घेर रखा था। जब-तब कुछ लडकियो की हँसी, पास के घर से आती हुई सुनाई दे जाती, या फिर दूर से बच्चो के हँसने-खेलने की आवाज़ आ जाती। धीरे-धीरे मै भी सुस्त होता गया और नीद ने मुझे आ घेरा।

शाम होने पर जब चारो ओर आगें जलने लगी, रेनल के घर के पास ही परिवारो का एक घेरा सा बन गया। ये परिवार उसकी स्त्री के ही सम्बन्धी परिवार थे। ये लोग बहुत ही असभ्य और नीच खानदान के थे। इनमे से केवल 'तूफान' ही अकेला ऐसा था जिससे आगे चलकर कुछ आशा हो सकती थी। खानदानी गुणो के कारण यह बात भी सदेह मे ही पडी दिखाई देती थी। कारण यह था कि उसके साथी इतने वीर और सख्या मे अधिक नही थे कि वे लडाइयो या बदला चुकाने मे उसका साथ दे सकें। रेमड और मै उनके साथ ही बैठ गए। आग के पास कम-से-कम आठ दस आदमी और लगभग इतनी ही जवान और बूढी औरतें जमा होगी। उनमे चिलम घूमने लगी। साथ ही, हँसी-मज़ाक का सिलसिला शुरू हुआ। कुछ देर बाद दो-तीन बूढी औरतो ने रेमड को तीखे ताने देने शुरू किए। कुछ आदमियो ने भी इसमे हिस्सा लिया। अन्त मे एक बूढी औरत ने उसे एक बहुत बुरे नाम से पुकारा। इस पर सब लोग हँस पडे। रेमड हँसता रहा और उसने कई बार मुकाबले मे उत्तर देने का यत्न किया। पर वह असफल रहा। मै चुप

ही रहा । मुझे डर था कि कही उसे बचाते हुए मै स्वयं ही अपना अपमान न करवा बैठूँ ?

सुबह होने पर मैंने बहुत निराशा के साथ देखा कि अभी डेरा एक दिन और इसी जगह रुका रहेगा । मै यहाँ की सुस्ती से तंग आ गया था । इसलिए मैंने आसपास के पहाड़ो में निकल जाने का निश्चय किया । मेरे साथ केवल मेरी बंदूक थी, जिस का साथ मुझे हर मुसीबत मे भरोसा दिलाता रहता था । इस गाँव के सारे लोग गोरो के प्रति अपना विश्वास बताते थे, परन्तु अनुभव बताता था कि वे लोग इतने विश्वास योग्य थे नही । उनकी बेलगाम इच्छाओ और विचित्र हरकतो के बारे मे कुछ भी, निश्चित रूप मे पहले से ही नही कहा जा सकता था । अगर इन लोगो के बीच पूरा सावधान न रहा जाए, तो किसी भी समय जीवन को खतरा हो सकता है । इन लोगो को दूसरे की कमजोरी ही सब से अधिक लुभावनी लगती है और ये किसी पर भी हमला कर बैठते है ।

बहुत-सी घाटियाँ साथ के पहाडों से मैदान पर खुल रही थी । इनमें पेड और झाडियाँ बहुत अधिक उगे हुए थे । इन जगलो मे बहुत से आदिवासी घूम-फिर रहे थे । पहाडो पर उनके बच्चे हँसते हुए आँखमिचौनी खेल रहे थे । साथ-साथ वे पक्षियो और छोटे जन्तुओं को अपने छोटे-छोटे धनुष-बाणों से मारते जाते थे । पास ही एक गहरी घाटी, पहाड की चोटी से नीचे तक फैली हुई थी । मैने इसके तले से चढना शुरू किया । चट्टानों, पेडो और झाडियो मे से होकर मैं बढने लगा । इसमे एक बहुत ही पतली धारा बह रही थी । यह इतने अँधेरे रास्ते से बह रही थी कि इस पर अब तक भी सूर्य की किरणें कभी एक क्षण को भी न पड पाई होगी । कुछ देर आगे बढने के बाद मैंने सोचा कि मैं बिल्कुल अकेला हूँ । पर, एक जगह साफ मैदान में आने पर मैंने एक आदिवासी के काले सिर और लाल कधो को दूर से पहचाना । यह कोई खतरे की बात न निकली । यह मेरा मित्र मेनेसीला ही था । वह वहाँ बैठकर, चट्टानो और पेडो के बीच मे छिपा हुआ, ध्यान कर रहा था । मैने उसे खुल कर देखा, उसका चेहरा ऊपर उठा हुआ था । उसकी आँखें ऊपर की चट्टान से उगने वाले एक वृक्ष पर जड़ी हुई थी । चीड़ के उस पेड की सबसे ऊपरी शाखा इधर-उधर हिल रही थी । नीचे की शाखाएँ भी

ऊपर-नीचे हिल रही थी। लगता था जैसे वह पेड भी जिन्दा चीज़ हो!
उसकी ओर कुछ देर देखने के बाद मै समझ गया कि मेनेसीला ध्यान मे डूब कर किसी अलौकिक चीज़ के साथ अपना सम्बन्ध जोडे हुआ था। मैने उसके विचारो को पहचानना चाहा। पर, मै केवल अनुमान मात्र ही कर सकता था। मै जानता था कि किसी आदिवासी की बुद्धि मे यह तो आ सकता है कि कोई 'महान् आत्मा' सर्वशक्तिमान, सबसे अधिक बुद्धिमान् और सबका शासक है, पर उसके लिए यह सोचना कठिन है कि वह उससे सीधा सम्बन्ध बना सकता है। इसीलिये वह अपना सम्बन्ध दिखाई देने वाली किसी छोटी सी चीज़ से करके ही प्रसन्न हो जाता है। इसीलिए ये आदिवासी अपने लिए एक प्रतिनिधि और रक्षक आत्मा को मानकर उस पर, हर कठिनाई और राह दिखाने के लिए, भरोसा करके चलते है। उनके लिए सारी प्रकृति ही किसी जादूभरे असर से भरी हुई है। उन पहाडो मे घूमने वाला एक भी जगली जानवर, गाने वाला कोई भी पक्षी, या हिलता हुआ कोई भी पत्ता उसके भाग्य को बताने वाला या भविष्य के लिए चेतावनी देने वाला बन सकता है। वह इस सारे ससार को वैसे ही देखता है, जैसे कोई ज्योतिषी तारो को देखता है। वह इन चीज़ो से इतना निकट का सम्बन्ध समझता है, कि वह अपनी रक्षक आत्मा को किसी जीवित प्राणी का रूप दे बैठता है। यह रूप भालू, भेडिया, चील, या साँप आदि किसी भी रूप मे हो सकता है। मेनेसीला भी शायद इस चीड के पेड की ओर यही सोच कर देख रहा था कि यह उसकी रक्षक आत्मा का प्रतिनिधि है।

उसके दिमाग मे चाहे जो कुछ भी रहा हो, यह ठीक नही था कि मै उसे छेडता। अपने कदम चुपचाप हटाता हुआ मै घाटी मे उतर आया और दूसरी ओर चढने का रास्ता खोजने लगा। ऊपर की ओर देखते हुए मैंने जगलो में से उठी हुई एक ऊँची चोटी देखी। मुझ मे इस पर चढने की इच्छा जगी। ऐसी इच्छा पिछले बहुत दिन से नही जगी थी। डेढ घटे तक लगातार मेहनत करने के बाद मै चोटी तक पहुँच सका। अँधेरी चट्टानो के पास से होते हुए मै रोशनी मे निकल आया और इसके किनारो पर घूमने लगा। मैं इसकी सब से ऊँची जगह पर जा कर बैठ गया। यहाँ से जब मैंने पश्चिम की ओर देखा तो पहाडी चोटियो मे से दूर तक फैला हुआ पीला और नीला मैदान दिखाई

दिया । लगता था जैसे एक शान्त समुद्र लहरा रहा हो । चारो ओर के पहाड भी कम लुभावने न थे । परन्तु इस विरोध भरे दृश्य ने उन्हे और भी लुभावना बना दिया था ।

१६ : पहाड़ों की राह

लावोते नाम के स्थान पर जब मै शॉं से जुदा हुआ था, तब मैने उससे पहली अगस्त के दिन, लारामी किले मे, मिलने का वायदा किया था। आदिवासियो का इरादा भी पर्वतो की राह किले की ओर जाने का था। अब इस अवसर पर ऐसा करना कठिन था, क्योकि कोई भी राह नही मिल रही थी। ऐसी राह खोजने के लिए हमे दक्षिण की ओर बारह-चौदह मील जाना पडता। दोपहर काफी देर बाद सारा डेरा चलने की तैयारी करने लगा। मै तीन या चार आदिवासियो को लेकर सबसे पीछे-पीछे चला। मेरे सामने बहुत दूर तक सूर्य के लाली भरे प्रकाश मे या पर्वतो की छाया मे इन आदिवासियो का ही फैलाव नजर आता था। यह जगह बहुत ही अपशकुन वाली थी और डेरे के लिए चुनी गई थी। जब वे यहाँ एक साल पहले रुके थे, तब 'बवडर' के बेटे के साथ दस आदमियो की लडाकू टुकडी शत्रुओ के विरुद्ध लडाई के लिए गई थी। उसमे से एक भी लौट नही पाया था। इस साल की लडाइयो की तैयारियो का यही सबसे बडा कारण था। जब मै डेरे मे पहुँचा, तब मैने इसे बहुत भंयकर आवाजो से भरा पाया। पर, मै चकित नही हुआ। लोग अफसोस मे चीख और चिल्ला रहे थे। अधिकाश स्त्रियाँ केवल रोने से ही सन्तुष्ट न रह कर, अपने शोक को प्रकट करने के लिए, अपनी टाँगो पर चाकुओ से घाव कर रही थी। एक योद्धा का भाई मारा गया था। उसने अपने दु ख को प्रकट करने का दूसरा ही ढग सोचा। ये आदिवासी जब कभी दु ख मे होते है, तो कितनी ही भयकर आदत के क्यो न हो, उस समय बहुत ही उदार हो जाते हैं। कई बार अपने दु ख को प्रकट करनें के लिए अपनी हर चीज दूसरो को देकर स्वय को कतई निर्धन बना लेते है। जिस योद्धा का जिक्र है, वह अपने दो सबसे अच्छे घोडे गाँव के बीचो-बीच लेकर आया और उसने उन्हें अपने मित्र को दे दिया। तब उसकी प्रशसा मे चारो ओर से गीत गाए जाने लगे, जो उस चीख और चिल्लाहट मे मिलकर एक हो गए।

अगली सुबह हम फिर पर्वतो मे घुसे। ये पर्वत न बहुत बड़े थे और न

सुन्दर। यहाँ कतई एकान्त था और ये बिल्कुल उजाड थे। चरो ओर टूटी-फूटी काली चट्टानें ही बिखरी हुई थी। किसी भी पेड़ या वनस्पति का कोई चिन्ह तक दिखाई नही देता था। जब हम इन घाटियो में से गुजर रहे थे, तब मैने रेमड को एक जवान स्त्री के साथ-साथ बढते देखा। वह उसकी प्रशसा मे बहुत कुछ कह रहा था। पास पड़ोस की बूढी स्त्रियाँ उसकी हरकतो को बहुत प्रशसा के साथ देख रही थी। वह लडकी खुद भी अपना सिर उसकी ओर मोड़कर हँस रही थी। तभी रेमड का खच्चर अपनी बुरी हरकतो पर उतर आया और बुरी तरह उछलने-कूदने लगा। रेमड एक अच्छा घुड़सवार था। पहले तो वह अपनी जगह पर टिका रहा, परन्तु थोडी देर बाद मैने देखा कि खच्चर ने बुरी तरह दुलत्तियाँ झाडनी शुरू कर दी। रेमड उसकी गर्दन पर चिपट गया। चारो ओर से हँसी और चीख की आवाजे आने लगी। यहाँ तक कि वह लड़की भी जोर से हँसने लगी। रेमड पर चारो ओर से इतने अधिक ताने कसे गए कि उसने उनसे आगे भाग कर ही अपने को बचाया। इसके कुछ ही देर बाद जब मै उसके पास गया तो मैने देखा कि वह मुझे ही बुला रहा था। उसने एकान्त मे खडी एक चट्टानी पहाडी की ओर इशारा किया। यह हमारे सामने की घाटी मे खडी थी और इसके पीछे से, बहुत ही अच्छे बारहसिगो की एक कतार, सामने से होकर, निकल गई। अभी वे निकले ही होगे कि मेरे चारो ओर लगभग पचास आवाजे तेजी से उठी। कुछ युवक अपने घोडो से उतर कर पूरी तेजी से पास की तलहटी की ओर भाग निकले। रेनल भी उनके साथ ही पूरी तेजी से उसी दिशा में बढ़ गया। उसने हमे भी पुकारा, "आ जाओ! दौडे आओ! क्या तुमने उन हिरणो के समूह को देखा? अगर वहाँ ये इतने से हो सकते है, तो और भी अनेक होगे।"

निश्चय ही यह बात सच थी। पहाड की चोटी के पास मैने सैकड़ो सफेद चीजो को चट्टानो की ओर तेजी से भागते देखा, जब कि दूसरी कुछ इधर-उधर झुण्ड बाँधकर खडी हो रही थी। इस शिकार को देखने की मेरी भी इच्छा हुई और मै आगे बढकर पहाड़ के एक रास्ते से होता हुआ, हल्की-हल्की चट्टानो के बीच मे से, वहाँ तक गया, जहाँ तक मेरे घोड़े को चलने में सहूलियत थी। यहाँ मैने उसे एक चीड़ के पेड़ के साथ बाँध दिया। उसी

समय दाईं ओर मे मुझे रेमड ने बुलाया। वहाँ भेडो का एक जत्था पास मे ही था। एक खुली जगह आकर मैने देखा कि सामने पचास-साठ भेडें खडी थी। ये के बदूक कस बनिशाने की पहुँच के अन्दर ही थी। सब चट्टानो मे से होकर ऊपर की ओर बढने की कोशिश कर रही थी। नगे आदिवासी पूरी तरह इनका पीछा करने मे लगे हुए थे। थोडी ही देर मे शिकार और शिकारी आँखो से ओझल हो गए। कुछ देर तक कुछ भी दिखाई या सुनाई न दिया। कभी-कभी बन्दूक की आवाज दूर से दूर होती हुई सुनाई दे जाती थी।

मै उतरने के लिए मुडा। नीचे उतरते हुए मैने देखा कि आदिवासी पैदल और घोडो पर चढे हुए जल्दी मे उधर से गुज़र रहे थे। कुछ दूर जाकर वे फिर इकट्ठे हो गये। यहाँ थोडी ही देर मे डेरा खडा हो गया। मै इधर की ओर ही उतरा। कुछ ही देर मे रेनल और रेमड भी यही आ गए। उन्होंने अपने बीच मे एक भेड लटका रखी थी, जिसे उन्होने एक घाटी के किनारे पत्थरो से ही मार गिराया था। अब एक-एक करके हर शिकारी लौटने लगा। इन पहाडों की भेडो की यह विशेषता है कि ये बहुत तेज़ हरकत वाली होती हैं। तभी तो साठ या सत्तर शिकारी कुल मिलाकर आधी दर्जन भेडें ही मार सके। इनमे से केवल एक ही जवान नर मेढा था। उसके सींग बहुत बडे थे। इस प्रकार के बडे सीग मैने बहुत कम देखे है। ऐसे सीगो से ही आदिवासी लोग इतनी बडी-बडी कड़छियाँ बना लेते है, जिनमे बहुत अधिक चीज आ जाती है।

अगली सारी सुबह हम पहाडो मे ही चलते रहे। उससे अगले दिन पहाड कुछ हमारे अधिक निकट तक घिर आए और हमारा रास्ता सही रूप मे पहाडी रास्ता बन गया। डेरा छोडने से पहले ही मै एक मजबूत और गठीले शरीर वाले 'चील-पख' नाम के युवक के साथ आगे बढ निकला। उसका चेहरा बहुत ही भद्दा और खूँख्वार लगता था। उसका छोटे आकार का एक लडका भी हमारे साथ ही चला और 'चीता' नाम का एक और आदिवासी युवक भी हमारे साथ हो लिया। गाँव को अपने बहुत पीछे छोड कर हम इन चट्टानी रास्तो से होते हुए आगे बढे। कुछ ही देर बाद हमे शिकार सामने दिखाई देने लगा। दोनो बाप-बेटे उस ओर निकल गए। 'चीते' के साथ मैं आगे बढता रहा। इस युवक का 'चीता' नाम इसका दूसरा नाम था। इसका

असल नाम कुछ और ही था, जिसे किसी अंधविश्वास के कारण छिपाया गया था। यह बहुत ही अच्छा साथी था। जब इसकी ओढ़ी हुई खाल कंधो से खिसक कर नीचे तक गिर जाती, तब इसकी आकृति और भी अच्छी और सुन्दर लगने लगती। जब वह अपने घोडे पर आराम से बैठा होता, तब मुर्गे के पख, उसके मुकुट से ऐसे फरफराते हुए उडते कि वह एक आदर्श मैदानी घुडसवार दिखाई देने लगता। उसका शरीर दूसरे आदिवासियो से पूरी तरह मेल नही खाता था। उसके चेहरे से ईर्ष्या, सन्देह, धूर्तता आदि बाते नही झलकती थी। अधिकाशत कोई भी गोरा आदमी उसमे और दूसरे आदिवासियो मे समानता की बातें शायद ही खोज पाएगा। पूरा न्याय करने के लिए यह ध्यान रखना उचित होगा कि इस युवक मे और इसके दूसरे लाल रग वाले भाइयो मे एक बडी खाई इनके चरित्र को अलग करती है। यहाँ पर रहकर कुछ ही दिन मे इन मैदानी आदिवासियो को कोई भी गोरा आदमी एक जंगली जानवर ही अनुभव करेगा। परन्तु इस युवक को देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई, क्योकि मुझे उसमे और अपने में समानता की कुछ बातें अवश्य मिल गईं। हम दोनो बहुत अच्छे मित्र थे। ज्यो-ज्यो हम इन चट्टानी रास्तो, गहरे खड्डो और उजाड मैदानो से होकर आगे बढने लगे, वह मुझे डाकोटा जाति की अपनी भाषा पढाने मे गर्व अनुभव करने लगा। कुछ देर बाद हम एक ऐसे खुले घास भरे मैदान मे आ निकले, जहाँ जगली फलो की कुछ झाड़ियाँ चट्टानो के नीचे से उग रही थी। इनका आकर्षण मेरे साथी के लिए इतना अधिक लुभावना रहा कि वह मुझे पढाना छोड़कर फल इकट्ठे करने के लिए निकल गया। अब जब हम आगे बढे तो गाँव की गाडियाँ भी हमारी निगाह मे आने लगी। सामने एक बूढी स्त्री अपने लादू घोडे को बढ़ाती हुई चट्टानो से आती दिखाई दी। तब एक-एक करके आदिवासी आने लगे और थोड़ी ही देर में वह छोटी-सी घाटी भीड से भर गई।

उस दिन की सुबह की यात्रा को आसानी से भुलाया नहीं जा सकता। उस दिन हम एक ऐसी जगह से होकर गुज़रे, जहाँ सुन्दरता फैली थी, पहाडो का पूरा रूप निखरा हुआ था, चीड़ों के जगल थे, और इस सबसे बढ़कर, वहाँ एकान्त और शान्ति बरसती हुई दिखाई देती थी। ऊपर-नीचे चारों ओर हरियाली ही हरियाली नजर आती थी। घाटियाँ, पहाड़ो, नालों

चट्टानो, चोटियो तथा नीचे बहने वाली धाराओ तक यह हरियाली ही छाई हुई थी। मै पहाडी की चोटी पर चढकर देखने लगा, मेरे ही नीचे से होकर गाँव के लोग गुज़र रहे थे। यह जलूस बहुत दूर तक फैला हुआ था। बहुत दूर की एक चोटी से अब भी घुडसवार उतरकर आ रहे थे। दूर से वे रेखाओ के रूप मे ही दिखाई देते थे।

मै तब तक इस चोटी पर खडा रहा, जब तक सब लोग गुज़र न गए। तब उतर कर मै उनके पीछे चलने लगा। कुछ और दूर चलकर मुझे पहाडियो से घिरी हुई एक छोटी-सी चरागाह मिली। गाँव ने उस दिन यहीं डेरा डाला। इस छोटी-सी जगह मे सब लोग बडे बेतरतीबे और घबराए हुए ढग से जमा हो गए। कुछ घर खडे हो चुके थे और कुछ तैयारी मे थे। बहुतो के घर का सामान अभी भी जमीन पर ही पडा हुआ था और वे उसे ठीक से सजा न पाए थे। औरते एक दूसरे को पुकार रही थी। घोडे हिनहिना रहे थे और उछल-कूद रहे थे। कुत्ते भौंक रहे थे। उन्हें अपना बोझ उतरवाने की जल्दी थी। दूसरी ओर, पखो की फरफराहट और आदिवासियो के आभूषणो की आवाज़ इस दृश्य को और भी आकर्षक बना रही थी। छोटे-छोटे बच्चे इस भीड मे दौडते फिर रहे थे। बहुत से बडे लडके पास की चट्टानो पर अपने छोटे-छोटे धनुष बाण लेकर कूद रहे थे या फिर गाँव की ओर देखते हुए खडे थे। इस सब गडबडझाले के मुकाबले मे, दूसरी ओर कुछ बूढे आदमी और योद्धा एक दायरा बनाकर बैठे थे और बहुत अधिक शान्ति के साथ तम्बाकू पी रहे थे। काफी देर बाद वह गडबड समाप्त हुई। घोडे पास की ही घाटी मे चरने के लिए ले जाए गए और सारा डेरा फिर से एक शान्त आरामगाह लगने लगा। अभी दोपहर बीती ही थी कि पास के जगल से, पूर्व की ओर उठता हुआ, सफेद धुएँ का एक बडा-सा समूह दिखाई दिया। इससे सूर्य की किरणें कुछ छिप ज़रूर गई, परन्तु अब भी धूप सही न जा सकती थी। सारे मकान बिना किसी क्रम के, थोडी-सी जगह मे ही, खडे थे। हर एक का घर तप रहा था और बीचो-बीच उस घर का स्वामी सुस्ताने के लिए सो रहा था। डेरे मे मौत का-सा सन्नाटा छाया हुआ था। केवल कभी-कभी किसी बूढी औरत के एक घर से दूसरे घर मे जाने की आवाज़ आ जाती थी। लडकियाँ और युवक समूह बनाकर चीड़ के पेडों के

नीचे आसपास के टीलो पर जाकर बैठ गए थे। कुत्ते जमीन पर ही लेटकर आराम कर रहे थे। मुझ जैसे गोरे को देखकर भी वे भौंक न पाए। इस चरागाह के बाहर ही चट्टानो के बीच से एक ठंडा सोता बह रहा था। इसके किनारे घने पेड और घास उगे हुए थे। इस ठंडी और शान्त जगह पर बहुत-सी लड़कियाँ इकट्ठी होकर चट्टानो और गिरे हुए पेड़ों पर बैठी गप्पें और हँसी-मजाक कर रही थीं। अचानक मैं उधर से निकला। उन्होंने मुझ पर पानी उछालना शुरू कर दिया। कुछ मिनट घण्टों के रूप में बदलने लगे। मै वही एक पेड़ के नीचे लेटा हुआ ओजिल्लाला लोगो की भाषा को, अपने साथी 'चीते' की सहायता से सीखने लगा। जब हम दोनो ही इस बात से थक गए, तब मै एक गहरे और साफ़ जोहड के किनारे जाकर लेट गया। यह जोहड़ इसी सोते से बना था। छोटी मछलियों का एक समूह इसमें मचल रहा था। लगता था वे आपस मे बहुत मित्रता से खेल रही थी। पर बहुत झुककर देखने पर मालूम पड़ा कि वे एक दूसरे को खाने में लगी हुई थी। जब-तब उनमें से सबसे छोटी किसी दूसरे का शिकार बन जाती और शिकारी मछली उसे निगल जाती। हर वार एक बड़ी सी मछली किनारे पर आ जाती और फिर बीच मे जाकर कुछ एक का शिकार कर आती। इसके आते ही सारी मछलियाँ इधर से उधर डर कर बिखर जाती। इस मछली को देखकर बाकी सारी छोटी-छोटी मछलियाँ छिप गईं।

मैं सोचने लगा, "इस घटना को देखकर मानवता-प्रेमी और दयालु लोग बहुत देर तक अपने युग की शांति के लिए आहें भरने लगेंगे। सच यह है कि इन छोटी-छोटी मछलियों से लेकर मनुष्यो तक सभी प्राणी अपनी-अपनी जिन्दगी की लड़ाई मे उलझे हुए है।"

आखिर साँझ आई। पहाड़ की चोटियो पर अब भी धूप पड़ रही थी, हालांकि हमारी घाटी पूरी तरह अँधेरे की जकड़ मे आ चुकी थी। डेरा छोड़कर मै पास की एक पहाड़ी पर गया। चीड़ों में से होती हुई सूर्य की किरणें अब भी पश्चिम की एक पहाड़ी पर पड़ रही थीं। थोड़ी देर में सूर्य छिप गया और यह दृश्य भी अँधेरे में समा गया। अब मैं फिर से गाँव की ओर लौटा। उतरते हुए मैंने अँधेरे जंगलों में से, पास और दूर से, आती हुई भेड़ियों और लोमड़ियों की आवाजें सुनीं। गाँव में चारों ओर अनेकों

जगह आग जल रही थी और अनेको नगी आकृतियाँ चमक रही थी। आस-पास पडने वाली उनकी लम्बी छाया देखकर लगता था, जैसे कुछ भूत घूम रहे हो।

एक जगह मैंने कुछ युवको को इकट्ठे बैठकर तम्बाकू पीते देखा। ये लोग समाज मे प्रिय समझे जाने वाले एक योद्धा के घर के आगे जमा थे। मै भी अपने मित्रो के साथ विदाई के समय की चिलम पीने के लिए बैठ गया। आज का दिन पहली अगस्त का था। इसी दिन मैने लारामी किले मे शॉ से मिलने का वायदा किया था। किला यहाँ से कम-से-कम दो दिन की यात्रा की दूरी पर था। यह सोचकर कि मेरा मित्र कही मेरे लिए परेशान न हो उठे, मैने पूरी तेजी के साथ आगे बढने का निश्चय किया। मैने 'तूफान' नाम के युवक को खोजा और उसे कुछ भेंटें दी। शर्त यह थी कि सुबह होते ही इन पर्वतो से होकर वह मुझे किले का रास्ता दिखाता चलेगा। वह मेरी बात को सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसने मेरी भेंटें स्वीकार कर ली। हम दोनो कुछ अधिक न बोले। बात तय होने पर मै अपने पुराने डेरे मे आकर सो गया।

सुबह पौ फटने से बहुत पहले ही रेमड ने मुझे कधा पकडकर हिलाया और बताया कि तैयारी पूरी हो चुकी है। मैं बाहर निकला। वह सुबह बहुत ठण्डी, सीली और अँधेरी थी। सारा गाँव नीद में डूबा हुआ था। हमारे घर के सामने ही 'तूफान' घोडे पर बैठा था और उसके पास ही मेरी घोडी और रेमड का खच्चर भी खडे हुए थे। हमने काठियाँ कसी और अपने सफर की और तैयारियाँ पूरी की। अभी ये तैयारियाँ पूरी भी न हुई थी कि गाँव मे हलचल शुरू हो गई। औरतो ने अपने डेरे उखाडने शुरू कर दिए और चलने की तैयारी करने लगी। प्रकाश की पहली किरणो के साथ ही हम वहाँ से विदा हुए और तब एक छोटे से दर्रे मे से निकलते हुए पूर्व की ओर बढे। यहाँ राह पाकर हम पीछे की ओर गाँव को देखने लगे। इस धुँधलके मे वह बहुत हल्का-हल्का दिखाई दे रहा था। वहाँ सभी लोग तैयारी मे जुटे हुए थे। बहुत आनन्द से मे, इन सबसे विदाई लेते हुए, अगली राह पर मुडा। अब हम चट्टानो और चीड के पेडो मे से होते हुए बढने लगे। रास्ता अँधेरा था और हम पूरी तरह देख नही पा रहे थे। सामने का इलाका टूटा-फूटा और जगल भरा था। कही पहाडी, कही मैदान, कही खुला हुआ और कही घिरा

हुआ—इस प्रकार के रास्ते से हम बढते रहे। रास्ते मे कभी-कभी ऊँचे पहाड़ बाधा बनकर आ जाते। सुबह जगल बहुत ही ठण्डे और ताज़गी देने वाले लग रहे थे। पहाड धुँध से भरे हुए थे और उनके पास के पेडो मे हल्की-हल्की फुहारें छाई हुई थी। बहुत देर बाद हमे पहाड की सबसे ऊँची चोटी पर सूर्य की सुनहरी किरणें फैलती हुई दिखाई दी। उन्हें देखकर आगे बढ़ते हुए 'तूफान' ने खुशी प्रगट की। इसी समय कोई एक बड़ा सा जानवर सामने से उछला और एक बारहसिगा अपने बडे-बड़े काले सीगो के साथ हमारे सामने से तेज़ी से निकल कर पास के चीड़ो में छिप गया। रेमड अपनी काठी से उतर कर उसके पीछे दौडा, पर उसके गोली दागने से पहले ही शिकार दो-सौ गज से अधिक दूर जा चुका था। फिर भी उसका निशाना ठीक जगह पर लगा, हालाँकि उसमे जोर उतना नही रहा था। अब बारहसिगा दाईं ओर मुड़कर पूरी तेजी के साथ सामने के पेडो मे से भागने लगा। मैंने भी गोली दागी, जो उसके कँधे पर लगी। अब भी वह लगडाता हुआ पास के खड्ड में भाग गया। यहाँ हमारे आदिवासी मित्र ने उसका पीछा करके उसे मार डाला। पास जाकर हमने देखा कि वह बारहसिगा न होकर काली पूँछवाला हिरण था। ऐसा हिरण दूसरे हिरणो की बजाय दुगना बडा होता है। पूर्व के इलाको में यह देखने मे नही आता। हमारी बन्दूकों की आवाज़ें आदिवासियो तक भी पहुँच गई। उनमे से बहुत से उसी जगह पर आ पहुँचे। हमने वह खाल 'तूफान' को ही दे दी और अपनी जरूरत के लायक मास अपनी काठियो के पीछे लाद लिया। बाकी बचा-खुचा मास अपने आदिवासी साथियो के लिए छोडकर हम अपने सफर पर आगे बढ गए। इस बीच बाकी गाँव वाले अपनी चाल से बढते हुए बहुत दूर निकल गए थे। उन्हें पार करके आगे निकलना असम्भव था। इस लिए हमने ऐसा रास्ता चुना, जिससे हम उनके बिल्कुल नज़दीक तक पहुँच सके। थोड़ी ही देर मे हमें चीड़ो में से दिखाई दिया कि वे सामने से ही गुज़र रहे थे। एक बार फिर हम उनसे जा मिले। अब वे एक तग दर्रे में से होकर गुज़र रहे थे। इस बार वे सदा की अपेक्षा अधिक सट कर और इकट्ठे होकर बढ रहे थे। हम पहाड़ की पूर्वी ढलान पर थे। यहाँ हमें एक बहुत तंग घाटी मिली, जिसकी ढलान बहुत कठिन थी। सभी लोग इसमे एक साथ ही उतर पडे और चट्टानो भरे इस

रास्ते को उन्होंने ऐसे घेर लिया, जैसे कोई उमडती हुई पहाडी नदी बह रही हो। हमारे सामने के पहाडो पर आग लगी हुई थी, जो कि पिछले कई हफ्तो से इसी प्रकार जल रही थी। छाए हुए धुएँ के कारण सामने का नज़ारा दीख नही रहा था। दाँए-बाँए ऊँची-ऊँची चोटियाँ उठी हुई थीं। उनपर चीडो के पेड लगे हुए थे। कुछ टूटी चोटियाँ भी कुछ दूरी पर, सामने, दिखाई दे रही थी, जैसे वे किसी परदे से ढकी हुई हो। यह सारा नज़ारा बहुत ही सुन्दर और महान् दिखाई दे रहा था। चलने वाले इन असख्य असभ्य घुडसवार योद्धाओ, नगे बच्चो और सजी-धजी लडकियो के कारण यह और भी सुहावना बन गया था। किसी चित्रकार के लिए यह बहुत ही अच्छा विषय बन जाता और शायद इसका वर्णन करने मे कोई बडा लेखक ही सफल हो पाता।

अब यहाँ से हमे एक जले हुए हिस्से पर से गुजरना पडा। घोडो के खुरो के नीचे की धरती गरम थी। पास के दोनो ओर के पहाड जल रहे थे। बहुत शीघ्र हम इससे अधिक अच्छी जगह मे आ गए। यहाँ लगातार कई घाटियाँ, एक नदी के किनारे पर ही, मिली। इनके किनारे बहुत अच्छी और मधुर फलों की झाडियाँ उगी हुई थी। बच्चे और आदमी इन फलो को इकट्ठा करने के लिए टूट पडे। इससे भी नीचे जाकर ऊपर का नज़ारा बिल्कुल बदला नजर आया। जलते हुए पहाड पीछे छूट गए थे और सामने की खुली घाटियो मे से हमे मैदान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ दिखाई देने लगा। धारा के किनारे के पेडो से निकलने के बाद समतल मैदानो मे आदिवासी फिर से कतार बाँधकर चलने लगे। मैं प्यासा था, इसलिए मैंने झुककर धारा मे से पानी पिया। जब मैं फिर घोडे पर चढा, तब भूल से मै अपनी बन्दूक वही घास पर ही छोड आया। कुछ और ही विचारो मे डूबा हुआ रहने के कारण मैं उसे उठाना भूल गया। कुछ दूर निकल जाने के बाद मुझे इसका ध्यान आया। मैं तुरन्त ही इसकी खोज मे लौटा। आदिवासियो मे उनमे से एक के पास उसे देख भी लिया। पास जाकर माँगते ही इसने मुझे तुरन्त दे दी। उसका धन्यवाद करने के लिए मेरे पास कुछ और न था, इसलिए उस समय अपनी घोडी की काठी की रकाब ही मैंने उसे भेंट मे दे दी। वह बहुत ही हुआ। प्रसन्नता मे उसने अपना पाँव मेरी ओर बढा दिया, ताकि मैं इसे

उसके पाँव में फँसा दूँ। मैंने ज्यो ही यह उसके पाँव में बाँधी, उसने तुरन्त घोड़े को एड़ लगाई जिससे घोड़ा उछला। वह हँसने लगा और पहले से भी अधिक तेज़ी से एड़ लगाने लगा। इस पर घोड़ा तीर की भाँति भाग निकला और औरतो और मनुष्यो की हँसी और खुशी की आवाज़ो के बीच बढ़ गया। लोगो ने मेरी भेंट की बहुत तारीफ की। उस आदिवासी के पास काठी के नाम पर केवल एक खाल और लगाम के नाम पर चमड़े की एक रस्सी ही थी। उसका घोड़ा काबू मे न रहकर पूरी तेज़ी से भाग निकला और थोड़ी ही देर में वह सामने के टीले के पीछे जा छिपा। मै उस आदमी को फिर कभी न देख पाया। पर, मेरा विश्वास है कि उसे किसी प्रकार का कोई नुकसान न हुआ होगा। घोड़े पर चढकर आदिवासी अपने को अधिक सुरक्षित समझता है।

गाँव वालो ने उस दिन पहाड़ी तलहटी के पास के झुलसते मैदानो में ही डेरा डाला। इस समय गरमी बहुत तेज़ और चुभने वाली थी। मकानो के परदों को ज़मीन से एक या डेढ फुट ऊँचा उठाकर खड़ा किया गया ताकि उनके नीचे से हवा आ-जा सके। रेनल ने अपनी पशु-फँसाने वालो जैसी हिरण की खाल की पोशाक उतार कर आदिवासियो की-सी पोशाक पहन ली। इस प्रकार सज-धज कर वह अपने मकान में भैंसे की खाल के गलीचे पर लेट गया। कभी वह गर्मी को कोसता और कभी चिलम का कश खीचता। हम दोनो को छोड़कर कुछ और भी आदिवासी मित्र और सम्बन्धी बैठे थे। एक छोटा-सा कुत्ता पकाकर परोसा जा रहा था। यह हमारी विदाई का भोज था। मीठी चीज़ के रूप में पहाडों से इकट्ठी की गईं बेरियाँ भी इसके साथ साथ ही रख दी गई थी। रेनल ने अपने दरवाज़े की ओर इशारा करते हुए कहा: "उधर यहाँ से लगभग पन्द्रह मील दूर उन चोटियों को देखो! इन में से सबसे परे की सफ़ेद चोटी को देखो! क्या तुमने इसे पहले भी देखा है?"

मैंने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि आज से छः या सात हफ्ते पहले हमने इसी पहाड़ी के नीचे, लारामी धारा के किनारे, डेरा डाला था।"

रेनल ने कहा, "हाँ, तुमने बिल्कुल ठीक पहचान लिया।"

मैंने रेमंड से कहा, "जाओ, पशु ले आओ। हम आज रात वहीं डेरा डालेंगे और सुबह होते ही किले की ओर चल देंगे।"

जल्दी ही घोडी और खच्चर मकान के सामने आ गए। हमने काठियाँ कस ली। इसी समय अनेकों आदिवासी भी वहाँ जमा हो गए। मेरी घोडी के गुणो की तारीफ सब जान चुके थे। कुछ आदिवासी बहुत अच्छे घोडो पर चढकर आए। उन्हें वे मुझे भेट मे देने के लिए लाए थे। मैने उनकी भेंट लेने मे इन्कार कर दिया। उनकी भेट लेने का अर्थ होता, इस घोडी को उन जगली लोगो के हाथ मे देना। हमने रेमल से विदाई ली, पर आदिवासियो से नही। आदिवासी लोग इन मौको पर बहुत-से उलटे-सीधे रिवाज पूरे करने लगते हैं। डेरा छोडकर हम मैदान पार करते हुए सीधा उस सफेद चोटी की ओर बढे। उस पर्वत की पीली-सी चोटियाँ धीरे-धीरे बादल की तरह उठने लगी। हमारे साथ ही एक आदिवासी भी था जिसका नाम मै भूल गया हूँ। उसके चेहरे का भद्दापन और मुँह का चौडापन अब भी मुझे पूरी तरह याद है। रास्ते मे हिरण बहुत अधिक थे, परन्तु हमने उनकी ओर ध्यान न दिया। हम सीधा ही अपने लक्ष्य की ओर, उजाड मैदानो और ऊसर पहाडियो मे से होते हुए बढते रहे। दोपहर बहुत बीत जाने के बाद, गरमी, प्यास और थकान से परेशान होकर, हमने एक बहुत आनन्ददायक नज़ारा देखा। हमे वे पेड और वे गहरी खाई दिखाई दे गई, जो लारामी धारा के साथ-साथ चल रही थी। इन पुराने और फैले हुए पेडो के बीच मे से होते हुए हम धारा के पार पहुँच गए। धारा का तेज बहता हुआ पानी उथली जगहो पर खेलती और फडफडाती मछलियो से भरा हुआ था। दूसरे किनारे पर पहुँच कर हमारे घोडे पानी पीने को उत्सुक हो उठे। हम भी घुटनो के बल बैठकर पानी पीने आये। हम बहुत दूर न गए थे कि रास्ता परिचित लगने लगा। मैंने रेमड से कहा, "हम उद्देश्य के नज़दीक ही पहुँच रहे है।"

वहाँ पर वह बडा पेड दिखाई दिया, जिसके नीचे हमने बहुत दिन डेरा डाला था। वे छोटी-छोटी सफेद चोटियाँ भी यहाँ थी, जो कि हमारे डेरे के बिल्कुल ऊपर ही थी। हमने वह छोटी-सी चरागाह भी देखी, जिसमे हमारे घोडे हफ्तो तक चरते रहे। थोडी दूर आगे चलकर हमने मैदानी कुत्तो का यह गाँव भी देखा, जहाँ मै घण्टो सुस्ताता हुआ उन अभागो का शिकार करता रहता था।

रेमड ने आकाश की ओर अपना चौडा चेहरा उठाते हुए कहा, "अब

वर्षा और आँधी आने ही वाली है।"

सचमुच ही चोटियाँ, मैदान, धारा और अमराइयाँ—सभी—बडी तेज़ी से अँधेरे की लपेट में आने लगी। काले-काले बादलो के समूह दक्षिण से उठकर छाने लगे और भयंकर रूप मे बिजली कडकने लगी। मैंने धारा से नीचे की ओर एक घनी अमराई की ओर इशारा करते हुए रेमड को कहा, "हम आज रात वहाँ होगे। तब हम दोनो उधर ही गये पर पीछे से आदिवासी ने हमे एकदम बुला लिया। जब हमने उससे इस बुलाने का कारण पूछा, तो उसने बताया कि दो योद्धाओं के भूत उन्ही पेडो पर रहते है और अगर हम वहाँ सोए तो वे चीख-चिल्लाकर रात भर हम पर पत्थर फेकेंगे। शायद सुबह होने से पहले ही वे हमारे घोडो को भी चुरा ले जायेगे। उसे प्रसन्न करने की बात सोचकर, इस जगह को छोडकर हम 'चुगवाटर' की ओर बढ़ गए। इसके लिए हमें चाल तेज़ करनी पडी, क्योकि वर्षा की बड-बडी बूँदें गिरने लगी थी। हमें उस छोटी-सी धारा के मुहाने पर उगने वाला वही पुराना परिचित पेड दिखाई दिया। हम जमीन पर कूद पडे और अपनी काठियाँ पटककर हमने अपने घोडो को खुला छोड दिया। अब अपना चाकू निकालकर हमने आसपास की झाडियो से टहनियाँ और शाखे काटी, ताकि वर्षा से अपना बचाव कर सकें। हमने बडे ऊँचे और पतले वृक्षो को झुकाकर उनकी छोटी-छोटी टहनियाँ काट ली और अपने लिए आराम देने वाला एक हल्का-सा शरण-घर बना लिया। परन्तु, हमारी यह मेहनत बेकार रही, क्योंकि आँधी हम तक पूरी तरह पहुँची ही नही। हमसे आधा मील दूर पर बहुत तेज मूसलाधार वर्षा हो रही थी और बिजली तोपों के समान गरज रही थी। परन्तु सौभाग्य से हमारी ओर केवल कुछ बूँदें ही गिर कर रह गईं। थोड़ी देर में मौसम साफ हो गया और सूर्य फिर से चमकने लगा। अपने इस नये शरण-घर के नीचे लेटे हुए हम उस भोजन के बारे में चर्चा करने लगे, जो मुझे एक खूबसूरत स्त्री—'वेया वेस्थी'—ने दिया था। आदिवासी अपने साथ चिलम भी लाया था, और कुछ शोगसाशा भी उसके पास था। इसलिए लेटने से पहले कुछ देर साथ बैठकर हमने तम्बाकू पिया। इससे पहले हमारा वह आदिवासी मित्र पास-पड़ोस को ध्यानपूर्वक देख आया था कि कही कोई गड़बड़ न हो। उसने बताया कि वहाँ पर कुछ देर पहले ही आठ आदमी रुके

थे, इनमे विसोनेत, पाल, रूज, रिचर्ड्सन और दूसरे चार आदमी थे। इन बाकी चारो के नाम वह नही बता पाया। बाद मे यह बात बिल्कुल सही निकली। परन्तु उसने किस बुद्धि से यह सब इतना अधिक सही बताया, मैं आज तक भी पूरी तरह नही जान सका।

चारो ओर एकदम घना अँधेरा छाया हुआ था। जागकर मैंने रेमड को पुकारा। आदिवासी हमसे पहले ही किले की ओर निकल गया था। उसके पीछे-पीछे चलते हुए हम भी कुछ देर तक अँधेरे मे ही बढते रहे। जब आकाश पूरी तरह लाल-लाल उगते हुए सूर्य के प्रकाश से भर गया, तब तक हम किले से दस मील दूर ही रह गए थे। कुछ दूरी पर चलकर एक रेतीले टीले की चोटी से हम किले को एक काले धब्बे के रूप मे देखने मे सफल हो गए। यह धारा के किनारे ही चारो ओर के उजाड मैदान के बीच मे खडा हुआ था। मैंने अपना घोडा रोका और एक क्षण के लिए उधर देखता हुआ रुका रहा। मुझे ऐसा लगा, मानो इसे देखकर आराम मिलता हो। यह सभ्यता का केन्द्र था ही। हमे यहाँ पहुँचने मे देर न लगी। क्योकि बाकी हिस्से को हमने तेजी से पार कर लिया। अब भी लारामी धारा हमारे और किले की उन मित्रतापूर्ण दीवारो के बीच मे थी। हम जहाँ किनारे पर पहुँचे, वही से हमने धारा पार की। हमने अपने पाँव पीछे को उठा लिए मानो घोडे की पीठ पर ही हम घुटनो के बल झुक गए हो। इस प्रकार तेज़ धारा मे से भी सूखे ही पार आ गए। हम जब दूसरे किनारे पर चढे, तो हमे किले के दरवाज़े मे अनेक व्यक्ति खडे हुए दिखाई दिये। इनमे से तीन आदमी हम से मिलने के लिए कुछ आगे तक चले आये। मैंने उन्हें तुरन्त पहचान लिया। अपने सरल और शान्त चेहरे को लिए हेनरी और हँसता हुआ देस्लारियर इन लोगो के पीछे-पीछे आए। दोनों ओर से ही यह मिलन बहुत प्यार भरा रहा। मुझे तो यह मिलन पसन्द था ही, क्योकि असभ्यों के बीच से निकल कर मुझे अपने बहुत ही प्यारे और सभ्य साथियो से मिलना मिला। मेरे साथियो को भी मेरा मिलन उतना ही पसन्द आया। शॉ बहुत दिन से मेरे लिए बहुत अधिक चिन्तित हो उठा था।

बोर्दू ने बहुत खुले दिल से मेरा स्वागत किया और रसोइये को पुकारा। यह नया ही नौकर आया था। इसे पोर्टपियेर् से व्यापारी गाडियो के साथ

भेजा गया था। वह कितना ही दावा, अपनी योग्यता के विषय मे, करता हो, पर उसके पास सामान उस योग्यता को सिद्ध करने लायक नही था। फिर भी उसने मेरे सामने बिस्कुट, कॉफी और सूअर के नमकीन मास का नाश्ता परोस दिया। बहुत दिनों बाद इस प्रकार बैंच और मेज़ पर बैठकर छुरी, काँटे, प्याले और तश्तरी आदि में खाने का यह आनन्द अपने जीवन में मुझे एक नया मोड लगने लगा। कॉफ़ी बहुत ही स्वाद भरी लग रही थी। रोटी भी बिल्कुल ही नयी सी लग रही थी। पिछले तीन हफ्तो से मुझे लगातार मास ही खाने को मिल रहा था और वह भी अधिक समय बिना नमक के ही खाने को मिला था। भोजन भी अच्छा साथ पाकर और अधिक आनन्द देने लगता है। मेरे सामने ही शॉ बैठा था। वह खूब प्रसन्न था। किसी भी व्यक्ति को यदि अपने मित्र की कीमत पहचाननी हो, तो उसके लिए अच्छा है कि वह कुछ दिन आदिवासियो के साथ रह कर देख ले। अगर उसे वहाँ रहकर बहुत अधिक कठिनाइयाँ, एकान्त और मुसीबतें सहनी पड़ी हो, तब वह अपने मित्र के गुणो को और अधिक पहचान सकेगा।

शॉ पिछले दो-तीन सप्ताह किले में ही रहा था। मैंने उसे पुराने कमरो मे ही पड़े हुए पाया। यह वही कमरा था, जो यहाँ के स्वामी के बाहर जाने के क़ारण खाली था। एक कोने में बहुत अच्छी भैंसो की खालें खडी थी। मैं इसी पर लेट गया। शॉ ने मुझे तीन पुस्तकें ला कर दी और बोला, "ये हैं तुम्हारे शेक्सपियर और बायरन, और यह है ओल्ड टैस्टामेंट। मेरी नज़र में इस मे, बाकी दोनों ही पुस्तको की अपेक्षा अधिक अच्छी कविता है।"

मैंने इन तीनो में से सबसे रद्दी पुस्तक चुन ली और बाकी सारे दिन भर वही लेटे-लेटे उन विचारों पर सोचता रहा, जिन्हें हमें उस प्रतिभाशाली मनुष्य ने दिया था, जिसने हमें इस दुनिया के बनाने वाले पर विचार करने के लिए विवश किया।

२० : एकान्त यात्रा

लारामी किले मे पहुँचने के दिन मै और शॉ गलीचो पर पडे आराम कर रहे थे। हेनरी भी काठियो और दूसरे सामान की देख-भाल मे लगा हुआ था। पास ही दो-तीन आदिवासी चौकडी मार कर फर्श पर बैठे हुए हमारी तरफ एक-टक देख रहे थे। शॉ ने कहा, "यूँ तो मै यहाँ मजे मे ही रहा, पर कमी एक बात की रही। वह यह कि यहाँ प्यार या पैसे के बदले भी अच्छा शोगसाशा नही मिलता।"

मैंने उसे ब्लैकहिल्स से साथ लाया हुआ शोगसाशा दिया।

वह बोला, "हेनरी अब जरा मुझे पैपिन का तम्बाखू काटने का तख्ता ला दो या फिर, यह उस सामने बैठे आदिवासी को दे दो। वह इसे काट कर ठीक से मिला देगा। हम लोगो की बजाय वे इसे अच्छा जानते हैं।"

उस आदिवासी ने बिना कुछ कहे तम्बाखू और इस छाल को काट कर मिला दिया और चिलम भर कर उसे सुलगा दिया। इसके बाद हम दोनो अपनी आगे की यात्रा तय करने लगे। इससे पहले शॉ ने मुझे किले मे घटने वाली कछ बातो से परिचित करवाया, जो मेरे पीछे घटी थी।

आज मे एक हफ्ता पहले बहुत दूर के पहाडो से चार आदमी यहाँ आये थे। पहुँचने से कुछ ही पहले कुछ आदिवासियो के चगुल मे फँस गये थे। ये आदिवासी हमार मित्र स्मोक के ही दल के थे। ये लोग सदा अपने को गोरो का मित्र बताते थे। इसलिये चारो गोरे बिना सन्देह के ही उन से बातें करने लगे। उन्होने अचानक ही उनके घोडो की लगामे पकड ली और उन को उतरने पर मजबूर किया। इन्होंने कहना न मान कर अपने घोडो को एड लगाई और तुरन्त ही उन की पहुँच से बाहर निकल आये। आगे बढते हुए इन्होंने उन्हें पीछे से चिल्लाते हुए सुना और बन्दूक चलने की कुछ आवाजें भी सुनीं। इनमे से केवल रेड्डिक की लगाम की रस्सी ही एक गोली से कट पायी। बाकी किसी को कोई भी नुकसान न पहुँचा। इसके बाद इन लोगो ने इस प्रकार का कोई और खतरा न लेना चाहा। वे दक्षिण की ओर के पहाडो

की तलहटी से होकर बेट के किले की ओर जाना चाहते थे। हम दोनो दलो के इरादे मिलते-जुलते थे, इसलिये उन्होने हमारे साथ मिलने की इच्छा प्रकट की। मेरे ठीक समय पर न लौट पाने के कारण वे अधीर हो उठे और अपने पुराने ख़तरे को भूल कर अकेले ही उस किले की ओर चल पड़े। हमें वही मिलने का वायदा उन्होने किया। वहाँ से हम लोगो ने बस्तियो की ओर साथ-साथ ही निकल जाना था। यह इलाका बहुत खतरनाक आदिवासी जातियो से भरा हुआ था।

बेट के किले में पहुँचे पर हमे एक और भी दल के आ मिलने की उम्मीद थी। केण्टुकी का रहने वाला एक युवक—रसेल केलिफोर्निया के प्रवासी लोगो के साथ इन पहाडो तक आया था। उसने हमे बताया कि उसका मुख्य उद्देश्य किसी आदिवासी को मारना था। इस उद्देश्य मे वह बाद मे सफल तो हुआ, पर इस से उसने हमारे लिए, और उधर से गुजरने वाले दूसरे लोगो के लिए, खतरा पैदा कर दिया। पौनी जाति के जिस युवक को उसने मारा था, उसके सम्बन्धी बदले के लिए उतावले हो उठे थे। अपने साथियों से बिछड़ कर वह कुछ दिन पहले, अपने कुछ और साथियो के साथ, अरकासास की ओर निकल चला था। उसने हमारे लिए एक पत्र लिखा था कि वह भी हमारी प्रतीक्षा बेट के किले मे ही करेगा और वहाँ से हमारे साथ ही बस्तियो की ओर लौटेगा। जब वह उस किले मे पहुँचा, तो वहाँ उसने तीस-चालीस आदमियो को घर लौटने के लिए उत्सुक पाया। उसने उन लोगो के साथ जाना अधिक अच्छा समझा। पहले के चारो गोरे भी उनके साथ ही मिल गये। इसलिए जब हम छ हफ्ते बाद उस किले में पहुँचे तो हमने स्वय को अकेला ही पाया।

चार अगस्त के दिन दोपहर के तुरन्त बाद, हम लारामी किले से विदा लेकर चल पड़े। मैं और शॉ मैदान की ओर साथ-साथ बढने लगे। पहले कुछ मीलों तक हमारे साथ कुछ और लोग भी थे। इन में रॉशे नाम का एक पशु फँसाने वाला और रवैल नाम का फर कम्पनी का एक नौकर भी था। यह नौकर विसोनेत नाम के व्यापारी के पास जा रहा था। हम उस दोपहर कुल सात या आठ मील ही गये होंगे कि एक छोटी-सी धारा के किनारे आ पहुँचे। इसके किनारे पर जगली शहतूतो के छोटे-छोटे पेड़ लगे हुए थे। इन पर फल पक चुके

थे। ये इतने घने थे कि इन मे से होकर बहता हुआ पानी साफ नही दिखाई दे रहा था। हमने यही डेरा डाला। तम्बू गाडने की मेहनत न करके हम जमीन पर ही अपनी काठियाँ डाल कर, और भैंसो की खालें बिछा कर, लेट गये और तम्बाकू पीने लगे। इसी बीच देस्लारियर खाना पकाने मे जुट गया। रेमड पास ही खडा होकर हमारे चरने वाले घोडो की निगरानी करने लगा। रुवैल रसोई के काम मे हाथ बँटा लेता था। उसने देस्लारियर को तुरन्त सहायता देनी शुरू की। रुवैल खुद को सब बातो का जानकार समझता था। इसलिए उसने तुरन्त ही सब ओर अपनी चतुरता दिखानी आरम्भ की। सेंटलुई मे वह किसी सर्कस मे घुडसवार रहा था। लारामी किले मे भी उसने एक बार सिर के बल ही घोडे पर घूम कर दिखाया था, जिसे देखकर आदिवासी चक्कर मे आ गये थे। किले मे वह मज़ाक के लिए भी मशहूर था। उस रात उसने सबसे अधिक हँसी-मजाक मे समय गुज़ारा। कभी वह देस्लारियर के पास झुक कर उसे कुछ समझाता और कभी वह हमारे पास बैठकर इधर-उधर के शिकारो की कहानियाँ सुनाता। या फिर कभी अपने स्वामी पैपिन की बातें सुनाने लगता। अन्त मे उसने शेक्सपीयर की एक किताब पास से ही उठा ली और उसे पढ़कर यह बताने लगा कि वह भी पढा-लिखा है। वह सारे डेरे मे उछलता-फिरता और बन्दर की तरह चहकता रहता था। लगभग यह निश्चित ही था कि हर मिनट वह नया ही काम कर रहा होगा। उसका साथी त्रौगे हमारे पास ही चुप बैठा, बिना कुछ बोले सामने बैठी बहुत ही भद्दी और छोटी सी, ऊटा जाति की एक स्त्री की ओर बडी ईर्ष्या से देख रहा था।

अगले दिन हम और आगे बढे। हमने 'गोशे होल' नाम के मैदान को पार किया। रात के समय बहुत देर तक हम खाइयो मे ही उलझे रहे। पानी न पाकर हमें बहुत रात तक सफर करना पडा। अगली सुबह हमे पहाडियो की एक लम्बी कतार मे से गुज़रना पडा। इनकी ढलानें देखने मे बहुत बुरी लग रही थी। जब हम इन पहाडियो के बीच से होकर चले तो रास्ते मे किसी राक्षस के पाँव के समान ही निशान देखे थे। इसके तुरन्त बाद हमे एक उजाड मैदान मे से गुज़रना पडा, जो सामने बहुत दूर तक छोटे-मोटे टीलों के साथ फ़ैला हुआ दिखाई दे रहा था। हालाँकि इस समय धूप तेज़ थी, फिर भी चारो

ओर कुछ धुन्ध-सी छाई हुई थी। दूर की पहाड़ियाँ रेत की चमक के कारण कुछ अजीब-सी दिखाई दे रही थी। क्षितिज की सीमा हर क्षण बदलती हुई दिखाई दे रही थी। शॉ और मैं आगे-आगे चल रहे थे। हेनरी हमसे भी कुछ आगे चल रहा था। वह एक दम रुका और एक ओर को मुडकर उसने हमें भी बुलाया। ऐसा वह तभी करता था जब वह अधिक उत्तेजना मे होता था। हम उस तक पहुँच गये। उसने हमे सामने के एक मैदानी टीले पर एक काला-सा निशान दिखाया। यह हम से मील भर दूर रहा होगा।

वह बोला, "शायद यह भालू है। आओ, हम इसका शिकार करे। भैंसे की बजाय इससे लडने का कुछ मजा और ही है। यह बहुत ताकतवर होता है।"

अब हम साथ-साथ बढने लगे। हम कठिन लडाई के लिए तैयार थे। ये भालू बहुत भयकर और खूँखार होते है। टीले ने उस काली चीज़ को हमारी नज़रो से छिपा लिया। कुछ ही देर बाद यह फिर दिखाई देने लगी। जब हमने इसकी ओर देखा तो हमारे अचरज का ठिकाना न रहा। यह दो हिस्सो में बँट गई थी। दोनो हिस्से तुरन्त ही पख फैला कर उड गये। हम ने घोडे रोके और हेनरी की ओर देखा। वह कुछ डरा हुआ और कुछ खुश-सा लग रहा था। आज उसकी आँख एक दम धोखा खा गई थी। उसने दो बडे मैदानी कौवो को पचास गज की दूरी से देख कर ही ऐसा सोचा था, जैसे मील-भर दूर पर कोई भालू खडा हो। फिर दोबारा उससे ऐसी गलती कभी नही हुई।

दोपहर बाद हम एक पहाड की तलहटी मे पहुँचे। इस पर चढते हुए रुवैल हम से तरह-तरह के सवाल घर बार के बारे मे पूछने लगा। शॉ उसे अपनी पत्नी और बच्चो के बारे मे झूठ-मूठ की बाते बताता रहा और वह भोदू सुनता रहा। इस पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर हमने नीचे के मैदानों में 'हौर्स क्रीक' नाम की धारा के मोड को देखा। कुछ ही दूरी पर हमे बाईं ओर विसोनेत के तम्बू गड़े हुए दिखाई दिए। रुवैल का चेहरा एक दम उतर गया। हमने पूछा, 'बात क्या है?' उसने बताया कि व्यापारी ने उसे यहाँ से तम्बाकू लेने के लिए किले तक भेजा था, पर वह इस बात को कतई भूल गया था। उसका सौ मील का यह सफर बिल्कुल बेकार हो गया था। हम

धारा पर आ गये और हमने इसे पार कर लिया। दूसरे किनारे पर एक अकेला आदिवासी किसी पेड के नीचे खडे घोडे पर बैठा हुआ था। वह कुछ भी बिना बोले हमारे आगे-आगे डेरे की ओर चलने लगा। विसोनेत ने डेरे की जगह बहुत ही अच्छी चुनी थी। यह धारा और इसके किनारे के ऊँचे पेड उसे तीन ओर से घेरे हुए थे। यह जगह एक चरागाह के रूप मे थी। यहाँ डाकोटा लोगो के चालीस घर भी थे। यहाँ से कुछ दूर 'शिएने' लोगो के कुछ घर और भी थे। विसोनेत खुद भी आदिवासियो के ढग से रहता था। उसके डेरे पर पहुँच कर हमने देखा कि वह दरवाजे के पास ही बैठा था। उसके आसपास इस इलाके मे न पाये जाने वाले बहुत से आराम के सामान थे। उसकी पत्नी उसके पास-ही बैठी हुई थी। उसके बच्चे छपे हुए सूती कपडे पहने आस-पास घूम रहे थे। उसके पास-ही पाल दोरियो भी बैठा था। साथ ही एन्टोनी भी बैठा था। इनके इलावा एक पौनी, एक व्यापारी और कुछ दूसरे गोरे लोग बैठे थे।

विसोनेत बोला, "अगर तुम यात्रा पर आगे बढने से पहले कुछ दिन मेरे साथ यहाँ बिता लो, तो अच्छा होगा। किसी भी प्रकार की हानि न पहुँचाने का विश्वास दिलाता हूँ।" हमने उसका निमत्रण स्वीकार कर लिया। और कुछ दूरी पर, एक ऊँची जगह पर, अपना तम्बू गाड दिया। विसोनेत ने तभी हमे दावत के लिए बुलाया। यहाँ भी हमे उसके आदिवासी साथियो के हाथों वैसी ही बहुत-सी खातिर मिली। पाठको को याद होगा जब मैं ब्लैक हिल्स से परे आदिवासियो के पहले गाँव से जाकर मिला था, तब उनमें से कुछ घर पीछे रह गये थे। विसोनेत के डेरे मे रहने वाले ये आदिवासी उन्ही कुछ परिवारो के थे। शाम के समय वे मुझ से अपने सम्बन्धियो और मित्रो के बारे मे पता करने आये। उन्हें बहुत दु ख हुआ, जब उन्हें यह पता चला कि वे लोग अपनी कमजोरी और सुस्ती के कारण इधर भूखों मर रहे हैं और उधर उनके वे सम्बन्धी अगले साल के लिए घरो और खाने-पीने के सामान से अपने को पूरी तरह भर चुके हैं। विसोनेत के ये साथी बहुत समय से जगली शहतूतो पर पल रहे थे। इनकी औरतें इन्हें पीसकर धूप में सुखा लेती थी और बाद मे इन्हे ऐसे ही खा लिया जाता था अथवा किसी और चीज़ के साथ पका लिया जाता था।

अगले दिन डेरे मे किसी नये अतिथि के कारण कुछ घबराहट-सी छा गई। यह आदिवासी अकेला ही अपने परिवार के साथ, अरकसास के इलाके से, आ रहा था। लोगो के घरो के पास से गुजरते हुए यह बहुत ही शान के साथ निकला। उसने लोगो को बताया कि वह गोरे लोगो के लिए कोई खास खबर लेकर आया है। इसके तुरन्त बाद उसकी औरतो ने उसका डेरा गाड दिया। तब उसने छोटे बच्चे को भेज कर सब गोरे लोगो को, और खास-खास आदिवासियो को, दावत पर बुलाया। सब अतिथि इकट्ठे बैठ गये। घर बहुत अधिक घुटा हुआ और गर्म लग रहा था। स्टेबर नाम के इस आदिवासी ने राह में एक बूढे भैंसे को मारा था। आज इसी के मांस की दावत दी गई थी। इसके साथ कुछ जगली शहतूत और चरबी उबाल कर अलग से रखे गये थे। भोजन सब को बाँटा गया। कुछ क्षण सब चुप रहे। तब सबने ही अपने वर्तन उलटा दिये, ताकि अपने मेजबान का धन्यवाद किया जा सके। इसके बाद स्टेबर ने तख्ता सामने रख कर तम्बाकू तैयार किया और कुछ चिलमे सुलगा कर सब के बीच घुमाई। इसके बाद वह अपनी जगह पर सीधा बैठ गया और बहुत अधिक हाव-भाव जता कर अपनी बात सुनाने लगा। मैं उसकी वह सारी बात नही बताऊँगा, जिसमें आदिवासियो की कहानी की तरह इधर-उधर की सैकडो बातें मिली हुई थी। उसकी बातो का सार यह था :—

वह इन दिनो अरकंसास मे ही था। वहाँ गोरे लोगो की कम-से-कम छ बहुत वडी-वडी सैनिक टुकडियाँ जमा थी। उसने कभी सोचा भी न था कि सारी दुनिया मे कुल मिला कर भी इतने अधिक गोरे लोग रह रहे होगे। उन सबके पास बहुत बडे घोडे, लम्बे चाकू और छोटी बदूकें थी। उनमें से कुछ ने लडाई की बहुत ही अच्छी पोशाकें पहनी थी। इससे हमे पता चला कि सैनिको और स्वयंसेवको के बहुत से दल उन पहाडियो से गुज़रे थे। स्टेबर ने खुद बहुत बडे-बड़े गोरे लोगो के सफेद तम्बुओ को बैलो पर तने हुए देखा था। साफ़ था कि ये गाड़ियाँ थी, न कि तम्बू। इनमें सैनिको की रसद जा रही थी। इसके कुछ ही देर बाद हमारे मेजबान को एक आदिवासी मिला। उसने बताया कि एक दिन सभी मैक्सिको निवासी भैंसों के शिकार पर गये हुए थे। अमरीकन लोग झाड़ियों में छिप गये। जब मैक्सिको वाले लोगों के सारे बाण समाप्त हो गये, तब अमरीकनों ने गोलियाँ चलानी शुरू कर दी

और युद्ध का नारा बोलकर वे बाहर निकल आये। उन्होने सभी शत्रुओ को मार डाला। हमे इस बात से इतना ही पता लगा कि मैक्सिको और अमरीका में एक छोटी-सी लडाई छिड गई थी और उसमें अमरीका की जीत हुई थी। जब हम कुछ दिन बाद प्यूब्लो पहुँचे तो हमे पता चला कि अरकसास की ओर जनरल कीर्नी और मातामोरा की ओर जनरल टेलर गये थे।

उस शाम सूर्य छिपने के समय हमारे तम्बुओं के पास ही कुछ आदिवासी अपने घोडो की चाल परखने के लिए जमा हो गये। इनमे सभी प्रकार के लोग थे। कुछ कैलिफोर्निया के इलाके के थे। शेष मे से कुछ अमरीकी, कुछ पर्वतो के इलाके के, और कुछ मैदानो के जगली कबीलो के लोग थे। उनमे सफेद, काले, लाल, सलेटी और सभी दूसरे रगो के लोग मिले-जुले थे। सब की नजरें बडी जगली और चौंकी हुई थी। इस बात मे वे नगर-निवासी सभ्य लोगों से एक दम भिन्न थे। जो लोग अपनी तेजी और उत्साह के लिए प्रसिद्ध थे, उन्होंने अपने घोडो की गर्दन और पूँछ मे चील के पख अटकाए हुए थे। पाँच या सात डाकोटा लोग भी, ऊपर से नीचे तक सफेद पोशाक पहने हुए, वहाँ जमा थे। कुछ 'शिएने' लोग भी वहाँ जमा थे। उन्होंने मैक्सिकोवासियों की भाँति पोशाकें पहनी हुई थी। इन आदिवासियो के साथ ही मिले-जुले कनाडावासी भी खडे थे, जो बिसोनेत के नौकर थे। ये लोग जगलो मे रहने और घर की बजाय डेरे डाल कर सोने मे अधिक आनन्द मानते थे। कठिनाइयो, खतरो और मुसीबतो के बीच ये लोग खुश रहते थे। इनकी खुशी कभी कम नही पडती और दुनियाँ मे इन से अधिक लापरवाह होकर जीना कोई और नही जानता था। इनके अलावा कुछ दोगले लोग भी इनके बीच मे थे। एन्टोनी इनमे से ही एक था। उसने ढीला-ढाला पाजामा और हलकी सूती कमीज पहनी हुई थी। उसने सिर पर रूमाल के साथ अपने काले बाल पीछे की ओर बाँधे हुए थे। उसकी छोटी-छोटी आँखें शरारत भरी और चमकती दिखाई देती थी। उसका घोडा हलके पीले रग का था। वह उसकी चाल को भी दूसरे घोडो के साथ परखना चाहता था। इसलिए उसने अपनी काठी परे रख दी और उसकी जगह भैसे की खाल लपेट कर उस पर सवार हो गया। मैदान खाली कर दिया गया और एक साथ ही वह और उसका आदिवासी साथी तेजी से घोडे दौडाने लगे। आदिवासी ढग के अपने चाबुक

तते हुए वे तेज़ी से आँखो से ओझल हो गये। इसी समय एन्टोनी फिर से पिस आया। वह जीत गया था और अपने घोड़े को थपथपा ा था।

आधी रात के समय मैं कपडों में लिपटा हुआ सो रहा था। इसी समय ंड ने आकर मुझे जगाया। उसने बताया कि इस समय कुछ ऐसा नज़ारा मने था, जिसे मैं देखना पसंद करूँगा। मैंने डेरे की तरफ निगाह डाली र देखा कि आग के चारो ओर बहुत से आदिवासी जमा थे। उन सब के व में से एक अजीब से गाने की आवाज़ आ रही थी। बीच-बीच मे चिल्लाने आवाज़ भी आती थी। मैं भी कपड़े पहन कर बाहर निकला और उस ाह तक गया। आदिवासियो का यह काला जमाव इतना घना था कि उस से छन कर आने वाली आग की रोशनी भी अब दिखनी बन्द हो गई थी। जब उनके बीच से बढने लगा, तो उनके एक मुखिया ने बढकर मुझे ाझाया कि इन मौको पर किसी भी गोरे को उनके बीच में नही जाना हिये। मैं दूसरी तरफ एक ऐसी जगह खडा हो गया, जहाँ से हर हरकत ी जा सकती थी। यहाँ 'मजबूत-दिल' नाम के वर्ग के लोग अपना नाच कर थे। ये लोग युद्ध के प्रेमी होते है तथा 'डाकोटा' और 'शिएने' दोनो ही तियों से मिल कर बनते है। इन समाज में केवल सबसे मजबूत लोगो को शामिल किया जाता है। इनका सबसे बडा असूल यह है कि केवल वही दमी प्रशसा के लायक है, जो किसी काम को एक बार शुरू करने के बाद से मुडे नही। आदिवासियो के ऐसे समाजो की एक-एक प्रतिनिधि आत्मा ी है। इस वर्ग की प्रतिनिधि आत्मा 'लोमडी' मानी जाती थी। गोरे लोग ी लोमडी को ऐसा महान् स्थान नही देंगे। पर आदिवासियो की आदतो इसका मेल खा जाता है। ये नाचने वाले आग के चारो ओर चक्कर लगा थे। उनकी शक्ले कभी चमक उठती और कभी छाया के कारण काली जाती। वे इस नाच में पूरी तरह लोमडी की हरकतों की नकल कर रहे । बीच-बीच मे एक तेज़ हुंकार भी उठाई जाती। तब कुछ दूसरे युवक च मे उछल आते। उनके चेहरे आसमान की ओर उठे होते और वे पैंतरे करते हुए अपने हथियारो को हवाई दुश्मनो पर चलाने लगते। लगता था, े वे किसी शैतान के अवतार हों।

हम इस जगह दोपहर तक रुके। तब हम दोनो साथी और तीनो नौकर प्यूब्लो की ओर चल पडे। वह यहाँ से लगभग तीन सौ मील की दूरी पर था। हमे इस यात्रा मे पन्द्रह दिन लग जाने का अदाजा था। इस बीच हमे एक भी मनुष्य से मिलने की उम्मीद न थी। अगर कोई मिलता ही तो वह हमारा शत्रु होता। और, उसके लिए हमारे पास एक ही इलाज था—हमारी बदूकें।

पहले दो दिन तक कोई विशेष बात न घटी। तीसरे दिन सुबह एक बुरी घटना घटी। हम लोग मैदान के एक खड्ड मे, चश्मे के किनारे, डेरा डाले पडे थे। देस्लारियर पौ फटने से बहुत पहले ही जाग चुका था। नाश्ता तैयार करने से पहले उसने सभी घोडे चरने के लिए खुले छोड दिये। चारो ओर ज़मीन कुहरे से ढकी हुई थी। जब हम लोग जागे, पशु दिखने बन्द हो गये थे। बहुत देर खोजने के बाद हम उनके निशान ढूँढ पाये और उनके जाने का रास्ता खोज पाये। वे सब लारामी किले की ओर ही एक विद्रोही बूढे खच्चर के पीछे-पीछे चल पडे थे। हालांकि उन सबके पाँवो मे रस्सियाँ बँधी थी, तब भी हमारे पहुँचने से पहले वे तीन मील तक निकल गये थे।

दो या तीन दिन तक हम एक उजाड रेगिस्तान से गुज़रते रहे। रास्ते मे हरियाली के रूप मे केवल घास के ही कुछ गुच्छे इधर-उधर धूप से उलझे हुए दिखाई दे जाते थे। यहाँ अनेक विचित्र जन्तुओ और सरकने वाले जानवरो की बहुतायत थी। बडी-बड़ी टिड्डियाँ और घास के कीडे यहाँ बहुत अधिक और बडे-बडे मिल रहे थे। ये हमारे घोडो के पाँवो से कूदते रहते थे। घास मे बहुत-सी छिपकलियाँ भी इधर-उधर, बिजली के समान तेज़ी से भागती फिर रही थी। इन मे सब से अजीब जन्तु सीगो वाला मेढक था। मैंने ऐसे एक मेढक को पकड कर देस्लारियर को दे दिया। उसने उसको एक जूते मे बन्द कर दिया। इसके लगभग एक महीने बाद जब मैंने उसे खोल कर देखा, तो वह अभी ज़िन्दा था। तब मैंने उसे भैंसे की खाल के एक पिंजरे मे बन्द कर दिया और गाडी मे लटका दिया। इस तरह वह बस्तियो तक ठीक तरह से पहुँच सका। वहाँ से एक सन्दूक मे बन्द करके उसे हमने बोस्टन भेजा। यहाँ उसे एक शीशे के डिब्बे मे रख दिया गया। वह कुछ महीनो तक अपने देखने वालो का जी ललचाता रहा और, तब सर्दियो के

दिनो मे एक सुवह वह मरा हुआ पाया गया। अब वह एक म्यूजियम मे एक बोतल में रखा हुआ है। वह भूखा रहने के कारण मरा था। छः महीने तक उसने कुछ भी न खाया था, हालाँकि उसके प्रशसक उसके सामने उम्दा चीजें रखा करते थे। यहाँ हम ने कुछ और किस्म के ही जन्तु देखे। चारो ओर मैदानी कुत्ते बहुत अधिक पाये जा रहे थे। स्थान-स्थान पर यह कठोर और शुष्क भूमि, उन कुत्तो की मादो से खोदी हुई मिट्टी से मीलो दूर तक भरी नजर आती थी। अपनी माँदो के किनारे तक आकर ये हमे देखकर भौंकने लगते। इनकी केवल नाक ही बाहर निकली हुई दिखाई देती। हमे देखने के तुरन्त बाद वे फिर अन्दर ही छिप जाते। इनमे से कुछ बहादुर कुत्ते बाहर निकल कर अपनी मांदो पर बैठे-बैठे भौंकते। उनकी हर चीख के साथ उनकी पूँछ भी उठ जाती। जब खतरा उनके पास तक आ जाता तो वे अपना मुँह फेर लेते और अपनी एडियाँ हवा मे उछालने लगते। तब तुरन्त, पलक झपकते ही, अपनी माँद मे घुस जाते। शाम के समय अगर वारिश आने को होती, और अगर न भी आती तब भी, वे बाहर मैदान मे इकट्ठे हो जाते। हमने उन्हें इसी तरह किसी एक प्यारे कुत्ते के चारो ओर बैठे हुए देखा। वे सब तनकर बैठते और उनकी पूँछे जमीन पर फैली रहती। उनकी चख-चख और चिल्लाहट इस तरह से होती, मानों वे किसी एक साँझी बात पर विचार कर रहे हो। जिसके घर के पास ये सब इकट्ठे होते, वह सबसे ऊँचाई पर बैठता और अपने अतिथियो को देखता रहता। इस बीच कुछ कुत्ते आसपास भागते रहते, ताकि किसी आने वाले दुश्मन को पहचान सकें। इनके सबसे बडे दुश्मन मैदानी साँप होते हैं। मेरे विचार मे कुत्ते अपनी ओर से यही सोचते हैं कि वे साँपो को चुपचाप अपने बिलो मे घुस सकने और इसी मैदान पर रहने देकर अपना एहसान उनपर करते हैं। ये साँप किसी भी दुश्मन को देखते ही बिल मे छिप जाते है। छोटे-छोटे उल्लू भी यहाँ रहते हैं और वे भी कुत्तो के आसपास ही अपनी जगह चुन लेते है। मैं नही समझ पाया कि उनका यह साथ किस तरह निभता है।

पाँचवें दिन बहुत दोपहर बाद हमने एक बहुत बडी धारा दूर से देखी। पर जब हम उस तक पहुँचे, तो हमारी निराशा का ठिकाना न रहा। यह रेत का एक बड़ा भारी फैलाव मात्र था। लगता था, कभी यहाँ बहने वाली

नदी बिल्कुल सूख गई थी। हम अलग-अलग होकर इसके साथ-साथ दोनों दिशाओ मे बढे। अब भी हमे कही पानी न मिला और न ही कोई गीली जगह दिखाई दी। बहुत बडे-बडे पेड किनारे पर अवश्य खडे थे, पर वे भी मानो इस सूखे की शिकायत कर रहे थे। बिजली और तूफान ने उन्हें बहुत नुकसान पहुँचाया था। एक सबसे ऊँचे पेड की मुरझाई हुई शाखा पर लगभग आधा दर्जन कौवे बैठे हुए शोर कर रहे थे। मानो वे किसी अपशकुन की सूचना दे रहे हो। हमारे लिए चलने के सिवा और कोई चारा न था। सबसे नजदीक पानी हमे प्लाट नदी की दक्षिणी धारा मे ही मिल सकता था, जो यहाँ से दस मील दूर थी। हम आगे बढे, किन्तु उदास और निराश होकर। चारो ओर रेगिस्तान एक समुद्र की भाँति फैला हुआ था।

आकाश सुबह से ही हलके-हलके कुहरे और धुँध से घिरा हुआ था। अब पश्चिम की ओर बादल बहुत अधिक जमा होने शुरू हो गये थे और काफी ऊपर तक फैल गये थे। ये बादल ऊपर की ओर उठते हुए एक नुकीली चोटी-सी का रूप धारण कर गये थे। मैंने इसे कुछ देर बाद फिर देखा। यह पहले जैसी ही थी। थोडी देर बाद चारो ओर से धुँध और बादल उठने लगे और इधर-उधर फैल गये, परन्तु यह नुकीली चोटी बिना हिले-डुले वहाँ ही खडी रही। मैंने समझा कि निश्चय ही यह किसी पहाड की चोटी होनी चाहिए। पर, मैं कुछ निश्चय न कर सका, क्योकि यह बहुत अधिक ऊँची थी। बाद मे पता चला कि यह रॉकी पर्वतमाला की एक बहुत ऊँची चोटी थी, जो 'लौंग की चोटी' के नाम से प्रसिद्ध थी। बढते हुए अधकार ने इसे फिर हमारी आँखो से ओझल कर दिया। फिर हम इसे कभी दुबारा न देख सके। इसका कारण यह था कि अगले कुछ दिन तक इसी प्रकार की धुँध चारो ओर छाई रही।

देर बहुत हो गई थी। इसलिए हम अपने सीधे रास्ते से हटकर नदी के सबसे नजदीक किनारे पर आ गये। इस अँधेरे मे रास्ता खोजना बहुत कठिन था। एक ओर रेमड चल रहा था और दूसरी ओर हेनरी। दोनों ने ही चिल्लाकर बताया कि सामने एक गहरी घाटी आ गई है। हम चारो ओर झाडियो और घिरते हुए अँधेरे मे आगे बढे। यहाँ हमारे लिए एक भी कदम बढना मुश्किल था। हम लगभग घिसटकर चलने लगे और कठिनता से इस

घाटी के पार हुए। यहाँ से आगे एकदम ढलान थी, जिस पर हमने यह बिना जाने ही कि वह कितनी गहरी है, उतरना शुरू कर दिया। अब सूखी टहनियो के टूटने की आवाजें आने लगी। हमारे सिर के ऊपर हमे कुछ बड़ी छायादार चीजें दिखाई देने लगी और सामने की ओर हलका-सा चमकता हुआ पानी दिखाई देने लगा। रेमड का घोडा एक पेड के साथ जा टकराया। हेनरी ने उतर कर जमीन टटोली और बताया कि यहाँ घोडो के लिए हरी घास काफी है। हम सब अपने घोडो को पहले पानी तक ले गये और तब, उनमे से दो-तीन बुरे घोडो को बाँधने के बाद, बाकी सबको चरने के लिए खुला छोडकर हम भी सोने के लिए वही लेट गये। सुबह हमने पाया कि हम प्लाट् नदी के दक्षिणी किनारे पर थे। यहाँ बहुतसी झाडियाँ और ऊँची घास उगी हुई थी। रात की बुरी यात्रा का बदला हमने बहुत भारी नाश्ता करके चुकाया और आगे के लिए चल पडे। अभी कुछ ही कदम चले होगे कि मैंने देखा शॉ ने अपनी बदूक तानकर पास में किसी चीज़ पर निशाना दाग़ दिया। देस्लारियर भी नीचे कूद पडा और न दिखाई देने वाले शत्रु पर चाबुक फटकारता हुआ नाचने लगा। तब उसने झुककर अपने चाबुक से एक बहुत बडे फनियर साँप को खीचकर बाहर निकाला। इसके फण शॉ की गोली ने बुरी तरह कुचल दिये थे। उसने इसे कुछ दूरी पर खडे होकर लटकाया। इस साँप की पूँछ जमीन को छू रही थी। यह साँप लगभग बाँह जितना मोटा रहा होगा। इस समय से लेकर प्यूब्लो पहुँचने तक हमने ऐसे चार या पाँच साँप प्राय हर रोज ही मारे होगे। इस मामले मे शॉ सबसे आगे बढा हुआ था। वह जब भी किसी साँप को मारता उसकी पूँछ अपनी गोलियो के थैले मे भर लेता। यह थैला कुछ ही दिन मे इन छोटी और बडी पूँछो से भर गया। हर बार देस्लारियर अपने चाबुक से साँपो को घसीटकर वैसी ही प्रशंसा पा लेता। एक बार उसने इसी प्रकार मे डेढ़ हाथ लम्बे एक साँप को खीचकर निकाला, जिसकी पूँछ के अन्त में एक छोटी-सी कुण्डली थी।

हमने प्लाट् नदी का यह दक्षिणी मोड़ पार किया। इसके परले किनारे पर हमे अरापाहो लोगों के एक बहुत बडे डेरे के निशान मिले। यहाँ लगभग तीन सौ घरों के चूल्हो की बुझी हुई राख दिखाई दी। इस जगह को छोड़कर वे कुछ महीने पहले ही चले गये थे। लगता है कि यहाँ वे बहुत दिन टिककर

रहे थे। कुछ मील और आगे चलकर हमें आदिवासियो के हाल के निशान मिले। एक ऐसी भी पैड मिली, जो दो या तीन घरो के इधर से दो दिन पहले ही गुज़रने की बात बताती थी। हमने एक जूते के विशेष निशान देखे, जिसकी एडी मे एक खास जोड लगा हुआ था। इन निशानो ने हमारे दिल में घबराहट भर दी। इन लोगो की सख्या हमारे समान ही थी। दोपहर के समय हमने एक बडे भारी किले की दीवारो की छाया मे आराम किया। यह किला आज से कुछ साल पहले बनाया गया था। यह बिलकुल एकात मे था। बहुत समय से अब इसका उपयोग नही हो रहा था। यह गिरने भी लगा था। बिना पकाई ईंटो की दीवारें नीचे से ऊपर तक चिर गई थी। हमारे घोडे इसके दरवाज़े से ही डरकर लौट आए। इसके किवाड टूट-फूट गये थे। अन्दर के घेरे मे जगली घासें उग आई थी। कभी अन्दर बने हुए कमरो मे बहुत से व्यापारी, कनाडा-निवासी, आदिवासी-औरतें और सेवक रहा करते थे। अब ये सब कमरे भी खाली पडे थे। यहाँ से लगभग बारह मील परे एक और उजाड किले के दर्शन हमे हुए। हमने रात को इसके पास डेरा डाला।

अगली सुबह बहुत सवेरे ही हमें एक और बात पता चली। हम अरापाहो की अभी हाल मे छोडी गई एक बस्ती के पास से गुजरे। यह लगभग पचास घरो की बस्ती थी और इसकी आगें अब भी पूरी तरह बुझी नही थी। यह साफ था कि वे लोग अभी हमसे दो घण्टे पहले ही यहाँ से गये होंगे। उनका रास्ता हमारे रास्ते को एकदम काटकर हमारे बाई ओर कुछ दूरी पर स्थित, पहाडो की ओर निकल गया था। उनमे औरतें और बच्चे भी थे। इसलिए उनसे मुकाबले का खतरा और भी कम रह गया था। हेनरी ने बहुत गम्भीरता से उनके डेरे और रास्ते के चिह्नो को देखा। मैंने पूछा, "अगर हम उन्हें मिल जाते ?"

वह बोला, "क्यो ? हम उनसे हाथ मिलाकर दोस्ती कर लेते और उन्हें अपनी तमाम चीजें दे देते। इस तरह वे हमे शायद न मारते। शायद, वे हमे लूटते भी नही। शायद, हम उनके आने से पहले ही घाटी मे छिप जाते या नदी के किनारे छिपकर उनसे लडने की तैयारी करते।"

दोपहर के समय हम 'चैरी' नाम की नदी के किनारे पहुँचे। यहाँ बहुत

से जंगली फल, अलूचे, बेरियाँ और ककरौंदे आदि लगे हुए थे। यह नदी भी औरो की भाँति लगभग सूखी हुई थी। हमें अपने घोडो और खुद के लिए गड्ढे खोदकर पानी निकालना पडा। दो दिन तक हम इस धारा के किनारे किनारे बढते रहे। तब इसे पार कर हम उन ऊँची चोटियो के पार जाने लगे, जो प्लाट् नदी को अरक सास से अलग करती है। यहाँ नज़ारा बिलकुल ही बदल गया था। अब जले हुए मैदानो की बजाय हमें घाटियो और पहाडो में में गुज़रना पड रहा था जहाँ बहुत सी झाडियाँ और चीड के पेड उगे हुए थे। हमने इस एकात इलाके मे ही सोलह अगस्त की रात बिताई। इस समय तेज़ तूफान आने वाला था। सूरज बडे-बडे बादलो मे खून के से लाल रग का बनकर छिप गया। इन सब बातो के बाद भी हमने अपना तम्बू ठीक से नही गाडा और बहुत थके होने के कारण ज़मीन पर, बिना छत के ही, सो गये। आधी रात के समय आँधी आई। तब हमने अँधेरे और घबराहट में अपना तम्बू खड़ा किया। सुबह मौसम फिर से साफ हो गया। बर्फ से ढकी हुई एक चोटी सामने बहुत दूरी पर दिखाई देने लगी थी।

अब हमे चीड के पेडो के एक भारी और लम्बे रास्ते से होकर गुजरना पड़ा। यहाँ शाखाओ मे से बहुत बडी काली गिलहरियाँ उछल रही थीं। इस जंगल के परले पार से हमने फिर से मैदान की ओर निगाह डाली। हमे लगा जैसे वह एक लम्बे-चौडे तसले के रूप मे बदल गया हो। हमसे एक मील की दूरी पर सामने कोई एक काला-सा धब्बा घूमता हुआ दिखाई दे रहा था। निश्चय ही यह भैंसा रहा होगा। हेनरी ने अपनी राइफल सम्भाली और सामने की ओर भाग निकला। भैंसे के बाईं ओर एक छोटा-सा चट्टानी किला था। हेनरी इसके पीछे से छिपकर बढने लगा। तभी हमने गोली छूटने की हल्की-सी आवाज़ सुनी। एक भैंसा बहुत अधिक घायल हालत मे हम से तीन सौ गज की दूरी पर एक गोल चक्कर के रूप में घूमता भाग रहा था। मै और शॉ आगे बढ गये और हमने पास जाकर उसकी बगलो में पिस्तौलें दाग दीं। इस पर भी वह एक दो बार तेजी से दौडा। पर, तब वह बिल्कुल गिर पड़ा। उसने क्षण भर अपने शत्रुओ की ओर क्रोध भरी आँखों से देखा और तब एक ओर मुडकर ठडा पड गया। पतला और गठीला होकर भी वह किसी भी बडे और भारी भैंसे की बजाय अधिक भारी था। उसके मुँह और

नो से खून और झाग बह रहे थे। वह-अन्तिम साँसें लेता अपने पाँव धरती पटक रहा था। उसके दोनो पासे बहुत भारी साँस से बोझिल होकर गिर रहे थे। उसकी आँखो की चमक एकदम मन्द पड गई और वह मुर्दा कर पड गया। हेनरी उस पर झुका और अपने चाकू से उसका मास टकर उसने बताया कि उसका मास खाने के लायक नही है। इस प्रकार ने सामान मे और कुछ जोडने मे हम असफल रहे। इसपर निराशा होनी भाविक थी। इसे यही छोडकर हम आगे बढे।

दोपहर बाद हमने अपने दाई ओर पहाडो को बहुत ऊँचा उठते देखा। ाडो की तलहटी की ओर अपने चाबुक का इशारा करते हुए देस्लारियर कदम चीख उठा, "आदिवासी ! आदिवासी !" डरे हुए चेहरे से वह उधर देख रहा था। हमने देखा पहाडो की तलहटी मे कुछ काले निशान से र-उधर घूमते नज़र आ रहे थें, मानो घुडसवार हो। मैं, शॉ और हेनरी छ दूर तक पता लगाने के लिए निकल गये। पास जाकर हमने देखा कि न्हें हमने आदिवासी समझा था, वे आदमी न होकर, चीड के पेडो की टियाँ बहुत दूर से ऊपर उठी हुई ऐसी ही लगती थी, जैसे कुछ घुडसवार म रहे हो।

हमने खाई और खड्डो मे ही डेरा डाला। उन मे से होकर एक नाला ह रहा था। सूर्य उगने से पहले ही सामने की बर्फ से ढकी चोटियाँ लाल हो ठी। हम जब आगे बढे तो सामने का नजारा बहुत ही सुन्दर हो उठा था। मारी दाईं ओर सात-आठ मील दूर, बहुत सी चोटियाँ ऊँची उठी हुई थी, ानो वे धरती फाडकर आकाश की ओर अचानक ही चल पडी हों। उनकी ोटी और तलहटी के बीच मे बहुत-से बादल समाए हुए थे और हवाओ के ारण इधर-उधर दौड रहे थे। कुछ समय के लिए कोई भी ऊँची चोटी नसे ढक जाती। इस बादल के हटते ही हमे पर्वत के भयकर जंगल, बडी-डी चट्टानें, बर्फ से लदी जगहें, खाइयाँ और काले खड्ड, अचानक ही, सामने ख जाते और बादल के आ ने पर फिर से ढक जाते।

एक दिन बाद हमने कुछ दूर के इन पहाडो का रास्ता पार कर लिया। सी समय इन पर एक बादल उतरा और एक गूँज चारो ओर फैल गई। थोडी देर मे चारो ओर अँधेरा छा गया और मूसलाधार बारिश होने लगी।

हम लोग एक पुराने पेड के नीचे छिप गये और इस बवंडर के गुज़र जाने की प्रतीक्षा करने लगे।

जिधर से बादल इकट्ठे हुए थे, उधर से ही वे हटने भी लगे। थोड़ी ही देर मे सारे पहाड धूप मे नहाने लगे। लगता था जैसे इस जंगल में पूर्व के देशों का प्यार सच्चा रूप धारण करके जग पडा हो। थोड़ी देर बाद सारा आसमान नेपल्स के नीले आकाश की तरह या काप्री की सुनहरी चोटियो को नहलाने वाले सागर के समान नीला हो उठा। बाईं ओर का आकाश अब भी स्याही के समान काला था। पर, दोनो ओर इन्द्रधनुष भी निकले हुए थे, हालाँकि बादल और बिजली अब भी अपना खेल दिखा रहे थे।

उस साँझ और अगली सुबह हम 'उबलते सोते' नाम की धारा के पास से ही गुज़रते रहे। इसका यह नाम उन उबलते हुए सोतो के कारण पड़ा है, जिनका पानी इसमें आता है। जब हम दोपहर को रुके, तब हम से प्यूब्लो कुल सात-आठ मील की दूरी पर रह गया था। आगे चलते हुए हमने फिर देखा कि किसी घुडसवार के ताज़ा निशान बता रहे थे, कोई हमे देखने आया था। उसने हमारा आधा चक्कर काटा और फिर पूरी तेज़ी से किले की ओर लौट गया। वह हमसे इतना अधिक क्यो सकुचाया ? हम नही पहचान पाये ! एक घटे बाद हम उस पहाड़ी के किनारे पहुँच गये, जहाँ से हमे सामने का दृश्य लुभाने लगा। यहाँ अरकंसास नदी नीचे की घाटी मे पेड़ो और अमराइयो मे से होती हुई बह रही थी। उसके दोनो ओर मक्का के खेत और हरी चरागाहें फैली हुई दिखाई दे रही थी। इन पर पशु चर रहे थे। सामने ही यहाँ के किले की, मिट्टी से बनी, दीवारें उठी हुई थी।

२१ : प्यूब्लो और बेंट का किला

हम प्यूब्लो के बडे दरवाज़े पर पहुँचे। यह बहुत ही पुराने तरीके का बना हुआ एक रद्दी किस्म का किला था। सच यह है कि यह किला न होकर एक चौकोना घेरा था, जो मिट्टी की दीवारो से घिरा हुआ था। यह दीवारें जगह-जगह टूटी और गिरी हुई थी। इसके चारो ओर के छोटे-छोटे बुर्ज भी टूट चुके थे। लकडी का बना दरवाज़ा चौखटो से इतना ढीला जडा हुआ था कि इसके खीचने या बन्द करने मे इसके गिरने का खतरा रहता था। दो या तीन मैक्सिकोवासी, अपने चौडे टोपो और बढे हुए बालो वाले चेहरे को लिए, इसके सामने ही नदी के किनारे आराम कर रहे थे। हमे पहुँचता हुआ देखकर वे वहाँ से गायब हो गए। जब हम दरवाज़े तक पहुँचे तो एक छोटे कद का चुस्त आदमी हमसे बाहर मिलने आया। यह हमारा पुराना मित्र रिचर्ड ही था। यह, लारामी किले से ताओस व्यापार करने आया था, परन्तु जब वह इस किले पर पहुँचा तो उसे लगा कि अगला युद्ध उसे आगे बढने नही देगा। इसलिए उसने यहाँ तब तक रुकने का निश्चय किया, जब तक सारा देश पूरी तरह जीत न लिया जाए। उसने हमे उस जगह के लायक पूरा सम्मान देने का निश्चय किया था। हमसे अच्छी तरह हाथ मिलाकर वह हमें अन्दर ले गया।

यहाँ हमने सान्ताफे की ओर जाने वाली बडी भारी व्यापारी गाडियों को एक साथ खडे पाया। कुछ आदिवासी, स्पेनी औरतें और मैक्सिकोवासी यही पर सुस्ताते हुए घूम रहे थे। वे इस जगह के अनुरूप ही, दीन-हीन बने हुए थे। रिचर्ड हमे किले के सरकारी हिस्से मे ले गया। यहाँ एक छोटा-सा मिट्टी से बना हुआ कमरा था। अन्दर से सफाई बहुत अच्छी थी। इसमे एक तरफ क्रास का निशान टँगा था। इसके साथ ही एक शीशा और कुमारी माता की तस्वीर भी टँगी थी। इन सबके साथ ही एक जग खाई हुई बडी पिस्तौल भी टँगी थी। यहाँ कुर्सियाँ तो नही पडी थी, पर उनकी जगह बहुत सी पेटियाँ इधर-उधर रक्खी थी। इससे परे एक और कमरा था, जो

कुछ कम सजा हुआ था। यहाँ तीन या चार स्पेनी लडकियाँ केक पका रही थी। इनमें से एक बहुत खूबसूरत थी। उन्होंने जमीन पर एक मेज़-पोश सा बिछा दिया। तब उन्होने बहुत ही अच्छा खाना हमारे सामने रक्खा। चारो ओर कुछ भैंसों की खालें तकियो के रूप मे रख दी गईं, ताकि आने वाले मेहमान बैठ सकें। हमारे अलावा दो या तीन अमरीकन भी वहाँ ठहरे हुए थे। हम लोग आस-पास बैठकर समाचार पूछने लगे। रिचर्ड ने बताया कि दो-तीन सप्ताह पहले जनरल कीर्नी की सेना सान्ताफे की ओर हमला करने के लिए बैंट के किले से गई है। उसने यह भी बताया कि उसने अन्तिम समाचार यह सुना है कि वे सेनाएँ उस शहर की बाहरी सीमाओं तक पहुँच चुकी है। एक अमरीकन ने हमारे सामने एक अखबार रक्खा, जिसमें 'पॉलो आल्तो' और 'रेसाका देला पालूमा' की लडाइयो का विवरण दे रखा था। हम इन बातो पर बहस कर रहे थे कि दरवाज़े मे हमें एक ऊँचे कद के आदमी की छाया पडती दिखाई दी, जो जेबो मे अपने हाथ डाले, घुसने से पहले कमरे का अन्दाज़ा ले रहा था। उसने खड्डी के बुने कपडे के भूरे रंग का पाजामा पहना हुआ था। यह उसके पाँव की लम्बाई से बहुत छोटा था। उसकी कमर-पेटी से पिस्तौल और खुखरी लटक रही थी। उसका सिर और एक आँख पट्टी से ढकी हुई थी। पूरी तरह चारो ओर निगाह डालकर वह झुकता हुआ अन्दर आया और एक पेटी पर बैठ गया। उसके बाद आठ या दस आदमी, उसकी तरह ही, उसके पीछे-पीछे आए और बहुत ढीले-ढाले तरीके से चारों ओर पेटियो पर बैठ गए और हमें घूरने लगे। हमें तुरन्त ही औरेगन के प्रवासियो की याद ताजा हो आई। पर इनकी आँखो मे कुछ चमक भी थी और होंठ कुछ दबे हुए थे। इससे साफ था कि ये लोग उनसे अलग किसी और जाति के है। उन्होंने तुरन्त ही हमसे सवाल पूछने शुरू कर दिए। वे हमारे आने के स्थान, उद्देश्य और लक्ष्य-स्थान आदि को जानना चाहते थे।

जिस आदमी की आँख पर पट्टी बँधी थी, उसके साथ कुछ ही दिन पहले एक बहुत बुरी दुर्घटना हुई थी। वह नदी तक पानी लेने जा रहा था। रास्ते में उसे छोटी-छोटी झाड़ियो को हटा कर आगे बढना पडा। इसी समय उसे अचानक ही एक रीछ का सामना करना पड़ गया, जो अभी-अभी एक भैंसे को मार चुका था। उस समय वह आराम से लेटा हुआ था। भालू अपनी

पिछली टाँगो के बल पर उठ खडा हुआ। उसने अचानक बाधा डालने वाले को ऐसी बुरी चोट पहुँचाई कि उसका पंजा इसके सारे माथे को नोच गया। बहुत कठिनता से इसकी एक आँख बच गई। सौभाग्य से उस समय भालू अपने भरपेट भोजन के कारण तृप्त था और वह बिगडा हुआ नही था। इस आदमी के पीछे आने वाले साथियो ने तुरन्त ही शोर मचा दिया और भालू भाग गया।

ये लोग मोर्मन लोगो के एक दल के ही थे। ये और प्रवासियो से घबरा कर कुछ देर के लिए पीछे ही रुक गए थे, ताकि प्रवासी आगे निकल जाएँ। इसी कारण ये लोग लारामी किले मे उस समय तक न पहुँच सके, जब तक कैलिफोर्निया की ओर जाना सम्भव हो सकता था। वे बहुत देर से पहुँचे। इस लिए जब इन्होने यह सुना कि अरकसास के इलाके मे अच्छी जमीन मिल सकती है, तो ये लोग रिचर्ड के साथ इधर चले आए और इस किले से आधा मील दूर ही रहकर सर्दियाँ बिताने का इरादा कर चुके थे।

सूर्य छिपने के समय हमने रिचर्ड से विदाई ली। दरवाजे से निकल कर हमने अरकसास की छोटी सी घाटी की ओर देखा। हमारी आँखो के लिए यह सुन्दर नजारा और भी सुन्दर हो उठा क्योकि बहुत दिनो से ये आँखें रेतीले और उजाड इलाके देखने की आदी हो चुकी थी। यहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे पेड नदी के दोनो किनारो पर उगे हुए थे। दोनो ओर बहुत बडी हरियाली भरी चरागाहे फैली हुई थी। धूप से रगे हुए हरे टीले इस घाटी मे जगह-जगह छाए हुए थे। पशुओ को लेकर एक मैक्सिकोवासी घुडसवार किले के दरवाजे की ओर आ रहा था। कुछ दूरी पर हमारा सफेद तम्बू बहुत ही सुहावना लग रहा था। इसे हमारे आदिवासियो ने चरागाह मे एक पेड के नीचे गाडा था। जब हम वहाँ पहुँचे तो हमने देखा कि रिचर्ड ने एक मैक्सिको-वासी को हरा मक्का और सब्जियाँ देकर हमारे लिए भेजा है और हमे चारो ओर के खेतो मे से अपनी मनपसद का माल चुन लेने का निमत्रण भी दिया है।

यहाँ के निवासी हम से भी ज्यादा किन्ही और ग्राहको से प्रतिदिन घबराते रहते थे। हर साल जब उनकी मक्का पकनी शुरू होती, तो अरापाहो जाति के हजारो लोग इस किले के आस-पास आ जाते। मुट्ठी भर गोरे

आदमी इन असभ्य और जगली लोगो के हाथ मे पड जाते। इससे बचने के लिए उन्होने एक रास्ता ढूँढ निकाला। बहुत उदारता के साथ उन्होने इन लोगो से हाथ मिलाकर मित्रता जताई और उन्हें बताया कि अगर वे चाहें तो सारी फसल उन्ही की हो जायगी। अरापाही लोगो ने उनका कहना मानकर उनकी सहायता करनी शुरू की और बहुत उदारतापूर्वक फसलें बटोरने में उन्हें मदद देने लगे। साथ ही वे अपने घोडे खेतो मे छोड देते। आदिवासी लोग एक बात को अच्छी तरह समझते थे। वे खेतो मे काफी सारा अनाज छोड देते थे, ताकि अगले साल खेती करने के लिए गोरे लोगो का लोभ बना रहे और वे स्वयं भी अगले साल फिर से इस अनाज का आनन्द उठा सकें।

ससार के इस कोने मे मनुष्य जाति तीन हिस्सो में बँटी हुई है. गोरे, आदिवासी और मैक्सिकोवासी। इनमे से मैक्सिकोवासियो को 'गोरा' नही कहा जाता।

वह साँझ गरम होने पर भी अगली सुबह बहुत ही खराब और भयंकर निकली। सारी सुबह लगातार वर्षा होती रही। बादल पेडो तक झुक आए थे। हम नदी पार करके मोर्मन लोगो के खेतो की ओर निकल गए। जब हम धारा पार कर रहे थे, तभी दूसरी ओर से कुछ पशु फँसाने वाले, घोडो पर चढे हुए, नदी मे उतरे। उनकी हिरण की खाल से बनी कमीजें वारिश से भीगी हुई थी और उनके अगो से बुरी तरह चिपटी हुई थी। उनके चेहरो से, बन्दूको के कोनो से और घोडे की काठी के पीछे बँधे हुए जालो से बुरी तरह पानी चू रहा था। उनकी और उनके घोडो की शक्लें बहुत दुःखो और कष्टो से भरी हुई लग रही थी। उन्हें देखकर हमें हँसी आ गई। हम भूल गए कि कई बार हमारी हालत इससे भी अधिक बुरी रही थी।

लगभग आधा घटा सवारी करने के बाद हमने पेडों के पास रुकी हुई मोर्मन लोगो की सफ़ेद गाडियो को देखा। उनके कुल्हाडे काम में लगे हुए थे। जब हम पास आए तो उन लोगो ने अपना काम छोड़ दिया और हमारे चारो ओर पेडो के तनो पर ही बैठ गए। उन्होने तुरन्त ही परमात्मा और धर्म के विषय में विचार करना शुरू कर दिया। उन्हें इस बात की शिकायत थी कि सभ्य कहलाने वाले बहुत से लोगों ने उनसे बुरा व्यवहार किया था। उन्हें गवाहो ने

अपने मन्दिर के नष्ट किए जाने का भी बडा अफसोस था। उनके साथ घंटा भर रहकर हम फिर अपने खेमो में लौट आए। हमे इस बात की प्रसन्नता थी कि बस्तियो से ऐसे धर्मान्ध लोग निकल आए है।

अगली सुबह हम बेंट के किले की ओर निकल पडे। रेमड का व्यवहार पिछले कुछ दिनो से अच्छा नही रहा था। इसलिए हमने प्यूब्लो पहुँचते ही उसे छुट्टी दे दी थी। अब हमारा दल कुल मिलाकर चार आदमियो का रह गया था। हमे अपना अगला रास्ता भी पूरी तरह पता नही था। बेंट के किले और बस्तियो के बीच मे लगभग छह सौ मील का अन्तर है। यह रास्ता इन दिनो सबसे अधिक खतरनाक था, क्योकि जनरल कीर्नी की सेना के गुजरने के बाद से खूँखार और भयानक आदिवासियो के बहुत से दल इन इलाको के कुछ हिस्सो मे जमा हो गए थे। वे इतनी अधिक सख्या मे इकट्ठे हो गए कि कोई बडे-से-बडा दल भी उधर से गुजरे तो उनकी निर्दयता और दुश्मनी का इनाम बिना पाए वह आगे नही बढ सकता था। इस समय के अखबार इस हालत का पूरा अन्दाज़ा देते है। अनेक आदमी मारे गए और घोंडे तथा खच्चर बहुत बडी सख्या मे छीन लिए गए। अभी कुछ ही दिन पहले मुझे एक नवयुवक मिला, जो सर्दियो मे सान्ताफे से बेंट के किले की ओर आया था। वहाँ उसने लगभग सत्तर आदमियो का एक दल देखा। वे लोग अकेले बस्तियो की ओर लौटने को तैयार न थे, बल्कि किन्ही और लोगो के आ मिलने का इन्तजार कर रहे थे। यह कायरता उनकी मूर्खता की ही सूचना देती है, पर इससे यह भी पता चल जाता है कि उस समय देश मे कितनी अधिक बेचैनी और खतरे से डर की भावना छाई हुई थी। जब हम अगस्त के महीने मे वहाँ पर थे, तब खतरा इतना अधिक नही बढ़ा था। पास-पडोस मे कोई इतनी ध्यान बँटाने वाला चीज़ थी भी नही। हमने यह भी समझ लिया था कि अगर हम आधी सर्दियाँ भी इन्तजार मे बिता दें, तब भी साथ चलने वालो का कोई दल न मिलेगा। रिचर्ड ने हमे बताया था कि जिन लोगो ने हमसे बेंट के किले में मिलने का वायदा किया था, वे लोग पहले ही आगे जा चुके थे। इस लिए हमारे लिए रास्ते का सब से अच्छा दोस्त केवल हमारा भाग्य ही रह गया था। हमने अपने अच्छे भाग्य का लाभ उठाना चाहा और उसपर भरोसा करके हेनरी और देस्लारियर को लेकर हम लोग चल पड़े। हमने सोच लिया कि

अगर आदिवासियो का कोई वार हम पर हो ही गया, तो हम उसका अधिक से अधिक अच्छी तरह मुकाबला करेंगे।

यहाँ से लगभग पचहत्तर मील दूर बेंट का किला नदी के किनारे खडा है। तीसरे दिन दोपहर के समय हम इससे तीन-चार मील दूर तक पहुँच गए। हमने अपना डेरा वही एक पेड के नीचे गाड दिया। इसके तने पर ही हमने शीशे लटकाए और दाढ़ी-मूँछ आदि साफ़ करके तथा नहा-धो कर किले की ओर निकल गए। हमने इसे तुरन्त ही देख लिया। इसकी ऊँची-ऊँची दीवारें तपते मैदानो मे दूर से ही दिखाई दे जाती थीं। हमे लगा कि इस इलाके पर टिड्डियो ने हमला कर दिया था, क्योंकि हमें चारो ओर की मीलो तक की घास खाई नज़र आती थी। सच यह था कि यह घास जनरल कीर्नी के घोड़ों ने खाई थी। जब हम किले मे पहुँचे, तो हमने देखा कि घोड़ो ने केवल घास ही समाप्त नही की थी, बल्कि उनके स्वामियों ने उस किले के भण्डारों को भी बिल्कुल खाली कर दिया था। इसलिए हमें घर की यात्रा के लिए बहुत थोडी चीज़ें ही मिल सकी। सेना के जाने के बाद किला भी उजाड और सुनसान-सा हो गया था। चारो ओर चुप्पी छाई हुई थी। कुछ अफसर और सैनिक, जो नाकाम हो चुके थे, इधर-उधर घूम रहे थे। चारों ओर गरमी बुरी तरह छाई हुई थी। चारो ओर की ऊँची सफेद दीवारो के कारण चमकते सूर्य की धूप और भी ज्यादा तपती हुई लगने लगी। इस किले का स्वामी मौजूद नही था। हमे होल्ट नाम के एक सज्जन ने आदर दिया। इस समय किले का अधिकार उसके पास ही था। उसने हमें भोजन के लिए बुलाया। यहाँ हमें पहली बार मेज़ पर एक सफेद कपडा, बीच मे एक गुलदस्ता और चारों ओर कुर्सियाँ बिछी पाकर बहुत ही प्रसन्नता हुई। यह आनन्ददायक भोजन समाप्त होने पर हम अपने डेरे पर लौट आए। शाम के भोजन के बाद हम वहीं पर चिलम पीते हुए आग के चारो ओर लेटे हुए थे कि तभी हमें किले की ओर से आते हुए तीन आदमी दिखाई दिए। वे हम तक घोड़ों पर सवार होकर आए और हमारे पास ही, ज़मीन पर ही, बैठ गए। इनमें सबसे पास का आदमी लम्बे कद का और अच्छा जानकार था। उसके चेहरे और व्यवहार ने हम में विश्वास जगा दिया। उसने एक चौड़ा टोप पहना हुआ था, हालांकि यह पुराना पड गया था। उसकी बाकी पोशाक एक कमीज और

खाल के पाजामे की थी। उसके एक जूते की एडी मे लोहे की एडी फँसी हुई थी। उसके घोडे पर मैक्सिको-वासियो जैसी काठी लदी हुई थी, जो भालू की खाल से ढकी हुई थी। इसके दोनो ओर की एड़ें बहुत बडी और लकडी की बनी हुई थी। दूसरा आदमी वहुत छोटा, ठिगना और चुस्त था। उसका शरीर वहुत ही गठीला था। उसका चेहरा किसी मैक्सिकोवासी जैसा था। उसकी दाढी बहुत घनी और मुडी हुई थी। उसने एक चिकना, पुराना, सूती रूमाल अपने सिर पर बाँधा हुआ था। उसकी हिरण की खाल की बनी कमीज़ बहुत सटी हुई थी। यह चिकनाई तथा बार-बार प्रयोग के कारण काली पड गई थी। इनमे से तीसरा आदमी बहुत ही मजबूत था और सीमात के इलाके का पाजामा पहने हुए था। यह बहुत ही सुस्ती के साथ सरकता हुआ-सा चल रहा था। उसकी सलेटी रग की आँखें नीद से भरी दिखाई देती थी। उसकी ठोडी कुछ पिचकी हुई-सी, मुँह कुछ खुला हुआ-सा और ऊपर का होठ कुछ फूला हुआ-सा लग रहा था। इन सबसे वह एक बहुत ही सुस्त और निकम्मा व्यक्ति लगता था। उसके पास अमरीका का एक पुराना हथियार था। इससे उसने कोई निशाना तो न साधा था, पर तो भी वह इसे आग उगलने वाले हथियार की निशानी के रूप मे अपने पास रखता था।

पहले दोनो आदमी कैलिफोर्निया से आने वाले दल से सम्बन्ध रखते थे। उनके पास बहुत से घोडे थे, जिन्हें उन्होने वेंट के किले मे बेच दिया था। इनमे से, लम्बे आदमी का नाम मुनरो था। वह इयोवा के इलाके का था। वह बहुत ही अच्छे स्वभाव का, खुले दिलवाला और बुद्धिमान् आदमी था। दूसरा आदमी वोस्टन का एक मल्लाह था, जिसका नाम जिमगुर्नी था। वह कैलिफोर्निया तक एक व्यापारी जहाज मे आया था। अब उसकी इच्छा थी कि सारे महाद्वीप पर पैदल ही पार जाए। इस यात्रा ने उसे पहले ही एक अच्छा खासा "पहाडी" बना दिया था। वह एक अजीव प्रकार का मल्लाह बन चुका था, जो घोडे की सवारी भी पूरी तरह जानता था। हमारे तीसरे अतिथि का नाम एलिस था, जो मिसूरी का रहने वाला था, और जो ओरेगन के प्रवासियो के साथ आया था। परन्तु ब्रिजर के किले तक आकर, वह घर लौटने के लिए उतावला हो उठा था। उसने, इसीलिए इन लोगो के साथ मिलकर घर की ओर लौटना उचित समझा।

उन्होने प्रार्थना की कि वे लोग भी हमारे दल के साथ मिलकर बस्तियों तक साथ-साथ ही यात्रा कर सकें। हमने इन लोगो को तुरन्त स्वीकृति दे दी, क्योकि हमें पहले दोनो आदमियो के अनुभव से लाभ मिलने का पूरा विश्वास था। हमने उन्हें अगली शाम नदी के किनारे, यहाँ से छः मील दूर, एक खास जगह पर मिलने के लिए कहा। हमारे साथ कुछ देर तम्बाकू पीकर हमारे साथी हमसे विदा हुए। हम भी नींद लेने के लिए लेट गए।

—:०:—

२२ : तेत रूज़ : स्वयंसेवक

अगली सुबह देस्लारियर को गाडी ठीक करके मिलने की जगह पर ले जाने की बात कह कर हम लोग एक बार फिर किले की ओर चले, ताकि यात्रा का पूरा प्रवन्ध किया जा सके। इन प्रबन्धो को पूरा करने के पश्चात् हम कुछ आदिवासियो के साथ तम्बाकू पीने के लिए ड्योढी मे बैठे। कुछ ही देर मे हमने एक बहुत ठिगना आदमी सैनिक की-सी वर्दी पहने अपनी ओर ओर आते देखा। वह छोटे गोल चेहरे, खुरनुमा गड्ढो के बीच धँसी आँखो और लाल घुँघराले वालो के साथ अजीब-सा लग रहा था। उसने एक छोटी-सी टोपी भी पहन रखी थी। लगता था कि वह खाने-पीने के मामले का उस्ताद होगा। पर मैदानी जीवन की कठिनाइयो से वह बिल्कुल अनजान था। वह हमारे पास आया और उसने हमसे प्रार्थना की कि हम उसे बस्तियो की ओर अपने साथ ले चलें, नही तो उसे सारी सर्दियो-भर, यही, किले मे ही, रहना होगा। हमे उसकी शक्ल कतई अच्छी नही लगी। इसलिए हमने उसकी प्रार्थना को मानने से इन्कार कर दिया। अब वह इतनी अधिक प्रार्थना करने लगा कि हम मानने को मजबूर हो गये। वह बहुत ही निराश था। उसने हमे बहुत ही दु ख से भरी कहानियो सुनाई थी। इस पर भी हमे उससे पूरी तसल्ली नही हुई।

हमारे इस नये अँग्रेज साथी का नाम कुछ इतना अजीब और बेतुका-सा था, कि हमारे दोनो फ्रासीसी सेवक बहुत कोशिश करके भी उसे बोल न सके। तब हार कर हेनरी ने उसका नाम 'तेत रूज' रख डाला। यह नाम उसके लाल बालो के कारण रखा गया था। वह कभी किसी जहाज मे लेखक रहा था। कभी किसी बस्ती मे किसी व्यापारी का दलाल बन कर रहा था। अन्य अनेक जगहो पर वह कुछ और नौकरियाँ भी कर चुका था। पिछले वसन्त मे वह गर्मियो की यात्रा का इरादा लेकर स्वयसेवको के एक दल के साथ निकल पडा था।

उसने बताया, "हम तीन आदमी थे। हम ने सोचा कि हम सेना के साथ

चलेंगे और देश को जीतने के बाद जब हम सेना से छोड दिए जाएँगे, तो अपनी तनखाह ले कर मैक्सिको जा कर आनन्द मनाएँगे। वहाँ से फिर हम 'वेरा क्रूज़' होते हुए न्यू ओर्लियन्स लौट जाएँगे।"

पर रूज़ का यह विचार बिल्कुल गलत था। मैक्सिकोवालो से लडना उतना आसान न था, जितना उसने सोचा था। इस यात्रा के बीच मे ही उसे दिमाग़ी बुखार चढ आया। यह बुखार उसे बेंट के किले की ओर जाते हुए हुआ था। उसके बाद उसने बाकी सफर सामन लादने वाली एक गाड़ी में किया। जब वे किले पर पहुँचे तब उसे अन्य बीमार आदमियो के साथ वहीं छोड दिया गया। यह किला बीमारो के लिए बहुत अच्छा नही था। रूज को एक मिट्टी के कमरे मे रहना पड़ा। यह और उसका एक अन्य साथी वहाँ एक ही भैंसे की खाल पर, जमीन पर ही, सो जाते थे। डाक्टर का सहायक आ कर उन्हें देख जाता और दवाई दे जाता था। वह केवल 'कैलोमल' नाम की दवाई ही देनी जानता था।

रूज़ ने एक सुबह जाग कर देखा, उसका साथी मर चुका था। उसका अपना दिमाग़ घबरा गया। उसे कुछ होश-सी आई। वह कभी डाक्टर और कभी कैलोमल की बात सोचता। वह इस किले मे पहुँचने पर भी अपने दिमाग से वह डर न निकाल सका था। अपने साथी की मौत के बाद भी उसके चेहरे पर कुछ इस प्रकार का भाव था कि हम हँसे बिना न रह सके। उसने पोशाक तो सैनिक की पहनी हुई थी, पर व्यवहार बिलकुल उल्टा ही कर रहा था। हमने उससे पूछा कि उसकी बन्दूक कहाँ है? उसने बताया कि उसकी बीमारी मे किले के लोगो ने उससे बन्दूक ले ली थी। तब से उसे वह दिखाई नही दी थी। उसने आशा प्रकट की कि शायद हम अपनी एक बडी पिस्तौल उसे किसी आदिवासी से सामना होने पर, दे देंगे। इसके बाद मैने घोडे के बारे में पूछा। उसने बताया कि वह बहुत शानदार है। शॉ के कहने पर एक आदिवासी उस घोडे को ले आया। घोडा देखने मे अच्छा लगता था, परन्तु भूख के कारण उसकी हड्डियाँ उभर आई थी और उसकी आँखें गढो मे धँस गई थी। उसके कंधो पर कुछ निशान भी थे। देखने से साफ लगता था कि उसकी बीमारी के दिनों में लोगो ने उसे तोपों मे जोता था। तेत रूज को अचरज हुआ, जब हमने उसे घोडे की बजाय खच्चर लेने

को कहा। किले के लोग उससे इतने तग आ गये थे कि वे उसे कुछ भी देकर छुटकारा पाने के लिए उतावले थे। इस प्रकार उसे अपने रद्दी घोडे के बदले एक अच्छा खच्चर मिल गया।

एक आदमी तुरन्त ही खच्चर को रस्सी के सहारे लेकर दरवाज़े पर आया। उसने उसको रूज़ के हाथ मे पकडा दिया। अपने इस नये पशु से घबरा कर रूज़ ने अपना रोब जमाने के लिए, उसे अनेक प्रकार के हुक्म देने चाहे और आगे आने को कहा। खच्चर यह सोचकर कि उससे आगे बढ़ने को कहा जा रहा है, अपनी जगह पर ही चट्टान की तरह जम गया। वह ऐसे देखने लगा, जैसे वह कुछ समझा ही न हो। पीछे से मुक्का मारने के बाद वह बढने लगा और किले के दूसरी ओर तक दौडता हुआ भाग गया। देखने वालो को हँसता देखकर रूज ने हौंसला बाँधा और रस्सी को खींच लिया। खच्चर पीछे की ओर उछला और चक्कर काट कर दरवाज़े की ओर दौडा। रूज़ उसकी रस्सी को पकड कर कुछ दूर तक उसके साथ ही घिसटता हुआ चला गया। तब उसने रस्सी छोड दी और खुद खच्चर के पीछे मुँह बाए खडा देखता रहा। खच्चर मैदान पर बहुत दूर भाग गया। उसे एक मैक्सिकोवासी जल्दी ही वापिस ले आया।

इस प्रकार मैदान के सफर के लिए अपनी योग्यता दिखाने के बाद रूज़ अपना सामान लेने के लिए किले की ओर गया। किले मे जाकर वहाँ ठहरे एक सैनिक अधिकारी से उसने अपना सामान माँगा। यह अधिकारी खुद भी सेना द्वारा पीछे छोडा जाने के कारण बहुत दु खी और अपमानित था। वह भी रूज़ से छुटकारा पाने को उतावला था। इसलिए उसने चाबी निकाली और नीचे की ओर खुलने वाला एक दरवाज़ा खोल कर जमीन मे बने तहखाने मे चला गया। थोडी देर बाद वे दोनो बाहर आये। रूज़ बहुत सारे बडलो के कारण परेशान था। ये सारी चीजें गाडी मे रख दी गईं, जो कि उस समय तक मिलने के निश्चित स्थान की ओर चल पडी थी।

तब हमने रूज़ से कहा कि अगर किसी तरह हो सके, तो उसे एक बन्दूक भी अपने लिए ले लेनी चाहिए। इसके लिए भी उसने किले के बहुत से लोगो की मिन्नत की। पर, किसी ने भी उसकी सहायता न की। इस हालत से हमे कोई खास परेशानी नही हुई, क्योकि अगर कही कोई झडप हो ही गई,

तो वह हमारी सहायता के बजाय कोई नुकसान ही कर बैठेगा। जब ये सब तैयारियाँ पूरी हो गई तो हमने अपने घोडो की काठियाँ कसी और, किले को छोड़ने को तैयार हो गये। इसी समय हमने देखा कि हमारा नया साथी फिर एक मुसीबत मे जा फँसा है। एक आदमी ने उसका खच्चर किले के बीचो-बीच थाम रखा था और रूज़ उस पर काठी रखने की कोशिश कर रहा था। खच्चर वार-बार इधर-उधर हिलकर या कभी चक्कर काट कर उसे परेशान कर रहा था। इन सब मुसीबतो से छुटकारा पाने के लिए उसे सहायता की जरूरत थी। बहुत देर बाद वह अपनी युद्ध की काली काठी पर बैठ गया। शायद इसी काठी पर बैठकर वह मैक्सिको के युद्ध के लिए जाता। तब उसने खच्चर को आगे बढने का हुक्म दिया।

खच्चर वहुत शरारत के साथ आगे बढने लगा। उसकी हाल की हरकतो ने रूज़ को इतना डरा दिया था कि अब वह चाबुक मारने को भी तैयार न था। हम वहुत तेज़ी से मिलने के निश्चित स्थान की ओर वढे। अभी हम वहुत दूर न गये थे कि हमने मुडकर देखा, रूज़ का खच्चर एक जगह खडा होकर घास चर रहा था। इसलिए उसके पीछे होकर हमने उसे वढाना शुरू किया। तभी हमे कुछ दूरी पर आग चमकती हुई दिखाई दी। इस समय साँझ हो चुकी थी। मुनरो, जिम, और एलिस उस आग के आस-पास लेटे हुए थे। उनकी काठियाँ, गट्ठड, और हथियार इधर-उधर पडे हुए थे। और, उनके घोडे उनके पास ही बँधे हुए थे। हमारी गाडी और गाडीवान भी वहाँ मौजूद थे। तुरन्त ही हमारे लिए भी आग धधकने लगी। हमने अपने नये मित्रो को कॉफी पर वुलाया। चाय के बाद बाकी दोनो तो अपनी ओर चले गये, पर जिम गुर्नी कुछ देर हमारी आग के पास ही खडा-खडा तम्बाकू पीता रहा।

उसने कहा, "हम लोग आठ है, पर हमे छ मानकर ही चलना चाहिये। हमारे साथ एलिस और यह आपका नया साथी दोनो ऐसे है, जिन्हे न गिनना ही अच्छा है। हमे किसी भी कठिनाई से डरना नही चाहिए। हम उसके मुकाबले के लिए काफी है। बस डर हो सकता है तो केवल 'कमाचे' नामक आदिवासी लोगो से ही।"

---

२३ : आदिवासियों का खतरा

हमने बस्तियो की ओर अपनी यात्रा सत्ताईस अगस्त के दिन शुरू की। शायद हमसे अधिक किसी और छोटी और बेतरतीबी टुकडी ने कभी उत्तरी अरकसास के किनारे यात्रा न की होगी। जब हम सीमान्त से वसंत के दिनो मे चले थे, तब हमारे पास बहुत सुन्दर और बडे घोडे थे। परन्तु आज उनमें से एक भी नही रहा था। हमने उनका स्थान मैदानी किस्म के घोड़ो को दे दिया था। ये घोडे खच्चरो जैसे ही कठोर और भद्दी किस्म के थे। हमारे साथ अब बहुत से खच्चर भी थे। हालाँकि उनमे ताकत और कठोरता काफी अधिक थी, फिर भी बहुत अधिक सेवा और कठिन यात्रा के कारण उनमे से बहुत से कमज़ोर पड चुके थे। इनमे से एक के भी खुर ठुके हुए नही थे। इसलिए बहुत जल्दी ही बहुतो के पाँव सूजने शुरू हो गए। हर घोडे और खच्चर पर एक रस्सी बँधी हुई थी, जो कि भैंसे की खाल से बनी हुई थी। हमारी काठियाँ और सारा सामान भी लगभग खराब हो चुका था। हमारे हथियार भी जग खाए हुए और कमज़ोर पड चुके थे। घुडसवारो की पोशाक भी घोडो की हालत से अच्छी न थी। सारा दल बहुत ही बुरी हालत मे दिखाई दे रहा था। शॉ ने ऊपरी पोशाक के तौर पर लाल फलालैन की एक कमीज़ पहनी हुई थी, जब कि मैंने और कोई कपडा न पाकर हिरण की खाल की ही पोशाक पहन ली थी।

इस प्रकार चिन्ता से रहित होकर हम लोग खुशी-खुशी, भिखारियो से बने हुए, आगे बढने लगे। यह यात्रा हर रोज़ एक जैसी होने के कारण उकता देने वाली सिद्ध हुई। रूज़ हमे लगातार मुसीबतें देता रहता। न तो वह कभी अपने खच्चर को पकड पाता, न उसपर काठी रख पाता और न ही कोई और काम बिना किसी की सहायता के कर पाता। हर रोज़ उसकी कोई नयी शिकायत उठ खडी होती। एक क्षण वह दुखी और निराश लगने लगता, तो दूसरे ही क्षण उसका दिल खुशी से पागल दिखाई देता। वह हँसता हुआ इधर-उधर की कहानियाँ कहने लगता। जब किसी भी तरीके से वह काबू न

आता तब हम उसे सताकर मजा लेते। इसी सताने में हम उसके दिए दु खो का बदला चुकाने का यत्न करते। हम उसपर हँसते, पर वह इसे भी अपना आदर समझता। वह कमजोरी, अच्छा स्वभाव और पागलपन का एक मिला-जुला नमूना था। उसकी चाल को देखकर वह एक चित्रकारी का नमूना दिखाई देता था। खच्चर पर चढे हुए और भैंसे की खाल के कपड़े पहने वह किसी तस्वीर में बैठे हुए सैनिक की भाँति लगता था। यह पोशाक उसे किसी ने दया करके दी थी। यह इतनी बडी थी कि इसमे उस जैसे दो आदमी समा जाते। इस पर भी उसने इसे पलटकर पहना और कभी भी, कठिन-से-कठिन गर्मी मे भी इसे उतारा नही। सब तरफ से इसकी सीवन उखड़ी हुई थी। पुरानी होने के कारण खाल जगह-जगह से फट गई थी। इस खाल के ऊपर उसके लाल बालो का एक गुच्छा-सा दिखाई दे रहा था। सिर पर रखी हुई टोपी से लगता था कि वह सैनिक है। काठी पर उसके बैठने की जगह, खुद उसके लिहाज से, बुरी न थी। उसने अपने पाँव घोडे की अगल-बगल से अन्दर को दबाकर और बाहर की ओर तिरछे करके मोड़ रखे थे। उसके पाजामे सैनिको की भाँति लाल धारी से सजे हुए थे। इसका उसे बहुत गर्व था। पर, पाजामा छोटा होने के कारण उसके जूते बिल्कुल साफ ऊपर तक दिखाई दे रहे थे। उसका कम्बल एक गठरी के रूप मे बँधा हुआ, उसकी काठी की पीठ से लटक रहा था। हर कुछ मिनट के बाद वह चिलम, चाकू, पत्थर, लोहा, तम्बाकू या कोई और चीज़ गिरा बैठता और फिर उन्हें उठाने के लिए रुकता। इन सब बातो में वह हर एक के लिए मुसीबत खडी कर देता। गुस्से में आकर हमारे दल के लोग भी, सभ्य भाषा की बिना परवाह किए, उसे नये-नये विशेषणो से सजाते रहते। अन्त मे तग आकर वह भी अपनी जिन्दगी और साथियो को कोसने लगता।

बॅंट के किले से निकलने के एक या दो दिन बाद ही हेनरी एलिस को लेकर कुछ दूर तक शिकार खोजने निकल गया। वे कुछ देर हमसे अलग रह-कर सामने की पहाडी से उतरते हुए दिखाई दिए। उनके साथ सेना के तीन घोडे थे, जो अपने मालिको से, चढाई के समय, भाग निकले थे। मालिको ने भी उन्हें ढूँढना छोड दिया था। उनमे से एक की हालत काफ़ी अच्छी थी। पर, बाकी दोनो काफी कमजोर और भेडियो के सताए लगते थे। हमने उनमें

से दो अपने साथ, बस्तियो तक, ले लिए और तीसरे को हेनरी ने अरापाहो लोगो से एक अच्छे खच्चर के बदले मे बदल लिया।

अगले रोज़ जब दोपहर को हम आराम के लिए रुके तो सांताफे आनेवाली गाडियो की एक लम्बी कतार हम तक आई और धीरे-धीरे एक शानदार जलूस के रूप मे आगे निकल गई। इनके व्यापारी का नाम मैगोफिल था। इसका भाई बहुत से और लोगो को लेकर आया और हमारे साथ कुछ देर घास पर ही बैठ गया। ये लोग जो समाचार अपने साथ लाए थे, वे बहुत अच्छे न थे। उन्होने बताया कि आगे के इलाको की यात्रा बहुत बुरी है। उन्होंने बीसियो बार आदिवासियो को अपने डेरो के आस-पास घूमते हुए पाया था। हमसे कुछ हफ्ते पहले जो बडा दल बेंट के किले से चला था, उसपर आदिवासियो ने हमला कर दिया था। उनमे से स्वान नाम का एक आदमी मारा भी गया था। उसके साथियो ने उसका शरीर दफना दिया था। परन्तु, इस व्यापारी ने उसकी कब्र को 'कँचेज़' नाम की जगह के पास जब देखा, तब तक उसे आदिवासी खोदकर उसकी खोपडी अलग कर चुके थे, और भेडियो ने उसके बाकी शरीर का बुरा हाल कर दिया था। इसके साथ ही उन्होने यह भी अच्छी खबर दी कि कुछ दिन की यात्रा के बाद हमे असख्य भैंसे मिलने लगेंगे।

अगले दिन दोपहर बाद जब हम नदी के किनारे-किनारे बढे तो क्षितिज के पास सफेद गाडियो की लम्बी कतारें दिखाई दी। जब कुछ देर बाद हम उन लोगो मे मिले, तो ये सरकारी बैलगाडियाँ साबित हुईं। ये सांताफे के व्यापारियो की गाडियो से कतई भिन्न थी और इनमे सरकार का सामान भरा हुआ था। यह सामान सेनाओ के लिए भेजा जा रहा था। ये सब रुक गए और इनके गाडीवान आकर हमारे चारो ओर जमा हो गए। उनमे से बहुत से अभी छोटी उमर के थे और खेतो को छोडकर सीधा ही इस काम मे जुट गए थे। रास्ते की हालत ने व्यापारियो की बताई हर बात को सच साबित कर दिया। 'पौनीफोर्क' और 'कँचेज़' के बीच मे से गुज़रते हुए इनके पहरेदारो ने आदिवासियो को पास आता समझकर कई बार गोलियाँ चलाई थी। उन्होंने बताया कि एर्विग नाम के एक युवक ने एक आदिवासी का सिर काटा था। यह युवक वही था, जो हमसे कुछ दिन पहले निकल पडा था। इन मे से

कुछ लोगो ने हमे लौटने की सलाह दी और कुछ ने हमे जल्दी-से-जल्दी आगे बढने की सलाह दी। पर, सभी लोग बहुत अधिक चिन्तित और घबराए हुए दिखाई दे रहे थे। उनका दिल ठिकाने न था। हमने भी उनकी बात को पूरा महत्त्व नही दिया। इसके बाद उन्होने हमे एक और खबर दी। नीचे, नदी के किनारे, अरापाहो लोगो का एक बड़ा गाँव डेरा डाले पडा था। उन्होंने बताया कि वे मित्र है। परन्तु हम जानते थे कि एक बडे दल और हमारे जैसे छोटे-से दल की हालत मे काफी अन्तर था और आदिवासी मौके को अच्छी तरह समझते थे।

अगले दिन दोपहर बीतते ही जब हम बढे तो हमने क्षितिज पर आरे के दांतो की भाँति कुछ उठा हुआ देखा। ये थे अरापाहो लोगो के घर जो कुछ दूरी पर उठे हुए थे। हमे यहाँ तक पहुँचने में दो-तीन घंटे लग गए। ये मकान सख्या मे दो सौ के लगभग थे और नदी के पार कुछ दूरी पर एक चरागाह मे खडे थे। नदी के दोनो ओर, एक मील तक, अरापाहो लोगो के घोडे या खच्चर समूहों में या अकेले-दुकेले चर रहे थे। यह सब कुछ एक साथ ही हमारी निगाह मे आ गया, क्योकि बीच मे न तो कोई पहाड़ी ऊँची उठी हुई थी और ना ही कोई पेड या झाडियाँ रुकावट बनकर खडे थे।

इधर-उधर कोई घुडसवार आदिवासी पहरे के काम मे लगा हुआ दिखाई दे जाता था। अभी हमे ये दिखाई ही दिए थे कि रूज़ ने देस्लारियर को, गाड़ी रोक कर, अपनी सैनिक पोशाक देने के लिए कहा। इसमे सज-धज कर वह अपनी काठी पर बैठकर सजा हुआ सैनिक लगने लगा। बाईं ओर को अपनी टोपी मोडकर वह एक उद्धत सैनिक की भांति आगे बढने को तैयार हुआ। उसने हमसे आधे घटे के लिए बन्दूक या पिस्तौल माँगी। जब हमने उससे इस सबका कारण पूछा तो उसने बताया कि वह जानता है कि आदिवासी लोग सैनिक को उसकी पोशाक मे देखकर घबरा जाते है। उसकी इच्छा थी कि उसे देखकर आदिवासी यह भली भांति समझ लें कि इस दल मे भी कोई सैनिक मौजूद है।

इस नदी के किनारे इन आदिवासियो से मिलना इनके पहाडी निवास स्थानो मे मिलने से कतई भिन्न किस्म का होता है। एक और भी बात हमारे हक मे हुई। हमसे कुछ हफ्ते पहले ही जनरल कीर्नी अपनी सेनाओं के साथ

इधर से गुज़रे थे और उन्होंने इन्हें पिछले साल की तरह धमकी दी थी कि अगर एक भी गोरे आदमी का बाल बाँका हुआ, तो उसका भयकर बदला लिया जाएगा। इस बात ने उनका दिमाग दुरस्त कर दिया था। अब तक वे फिर से बिगडे नहीं थे। मेरी इच्छा गाँव और उसके निवासियो को देखने की हुई। इसके लिए हमने यह अधिक उचित समझा कि उनके बीच खुले रूप मे जाया जाए। शॉ, मैं और हेनरी नदी पार करने के लिए बढे। इस बीच बाकी दल को इसने पूरी तेज़ी के साथ आगे बढने के लिए कह दिया, ताकि वे इन आदिवासियो की पहुँच से, रात आने से पहले ही, दूर निकल जाएँ।

इस जगह अरकसास नदी केवल रेतीली ही रह जाती है। उसमे पानी की पतली धारा बहती है। यह बात यहाँ से सैकडो मील दूर तक ऐसी ही चलती है। सर्दियो मे कुछ जगहो पर रेत मे समाकर पानी गुम हो जाता है। इस मौसम में हम इस नदी को बिना कठिनाई के अच्छी तरह पार कर सकते थे, भले ही इसकी धार कई जगह चार सौ गज से अधिक चौडी हो गई थी। हमारे घोडे नदी के किनारे उछलकर नीचे उतरे और तुरन्त ही नदी पार करने लगे। मिट्टी सख्त थी इसलिए उछलते हुए जल्दी ही दूसरी ओर पहुँच गए। यहाँ ऊँची घास मे से होते हुए हमने नज़दीक ही कुछ आदिवासियो को देखा। उनमे से एक हमारे आने की प्रतीक्षा करता रहा और हमारे पास पहुँचने पर भी चुपचाप खडा रहा। वह अपनी छोटी साँप जैसी आँखो से हमारी ओर प्रश्न की दृष्टि से देख रहा था। अपने इशारो से हेनरी ने उसे समझाया कि हम क्या चाह रहे थे ? तब वह आदिवासी अपने लबादे को सँभाल कर हमारे आगे-आगे बिना बोले ही, चलता हुआ हमे गाँव की ओर ले चला।

अरापाहो लोगो की भाषा इतनी कठिन है—और इसका बोलना तो और भी कठिन है—कि शायद ही कभी कोई गोरा इसे पूरी तरह सीख पाए। इन लोगो मे रहने वाला व्यापारी मैक्सवैल भी सालो तक रहकर इनकी भाषा को न सीख सका, और उसने भी इशारो की वह भाषा ही सीखी, जो इन मैदानी इलाको के सभी कबीले प्रयोग करते हैं। इशारो की यह भाषा हेनरी को खूब आती थी।

गाँव के पास पहुँचकर हमने चारों ओर भैंसो का बिखरा हुआ माँस, ढेरियो के रूप मे, पडा पाया। सारे मकान एक घेरे के रूप मे गाडे गए थे।

ये डाकोटा जाति के लोगों के घरों के समान ही थे। इनकी सफाई अवश्य उनसे कम थी। दो घरो के बीच से होते हुए हम बीचो-बीच आ गए। हमने तुरन्त ही सैकड़ों मर्दों, औरतो और बच्चो से अपने को घिरा हुआ पाया। उसी समय गाँव के चारो ओर कुत्तो ने भौंकना शुरू कर दिया। हमारा पथ-प्रदर्शक हमें मुखिया के घर की ओर ले चला। यहाँ हम घोड़ो से उतरे और उनकी खोजी रस्सी खोलकर हम दरवाज़े के सामने खड़े हो गए। हमारी बन्दूकें हमारे पास थी। मुखिया ने बाहर आकर हमसे हाथ मिलाया। वह बहुत ही नीच किस्म का आदमी था। उसका कद लम्बा और चेहरा पतला था। वह अपनी बाकी जाति की भाँति ही अच्छे कपड़े आदि भी नहीं पहने हुए था। अभी हम कुछ मिनट ही बैठे थे कि चारो ओर एक अच्छी खासी भीड, गाँव के कोने-कोने से आकर, जमा हो गई। हम चारो ओर से उन असभ्य चेहरो से घिर गए। कुछ दर्शक हमारे चारो ओर जमीन पर ही बैठ गए। कुछ उनके पीछे बैठ थे और कुछ झुके या खडे हुए थे। उनमें हर कोई हमें देखने को उतावला था। मैंने इस सारी भीड में एक भी सभ्य या उदार शक्ल न देखी। सभी की शक्ल भेड़ियो जैसी भयकर और खूँखार दिखाई दे रही थी। डाकोटा लोगों की अपेक्षा इनका रंग और इनकी शक्ल बहुत ही बुरी थी। सरदार दरवाज़े के पास बैठा था। उसने वहीं से अपनी पत्नी को बुलाया और उसने आकर हमारे सामने लकडी के बर्तन मे मांस परोस दिया। हमें यह देखकर अचरज हुआ कि भोजन के बाद चिलम नही पी गई। मास का स्वाद चखने के बाद मैंने भेंटों का पुलन्दा खोला। उसमें तम्बाकू, चाकू और केसर आदि बहुत-सी चीजे थी। इसे देखकर उस असभ्य भीड़ का हर चेहरा मुसकराता हुआ नजर आया। उनकी आँखें चमकने लगी और हर एक के हाथ कुछ-न-कुछ माँगने के लिए फैल गए।

अरापाहो लोग अपनी ढालों को बहुत महत्त्व देते है। ये खानदानी तौर पर चलती आती हैं। मैंने एक ऐसी ही ढाल उनसे माँगनी चाही और इसके लिए एक लाल रूमाल बिछाकर कुछ और भेंटें सामने रक्खीं। मैंने उनमें से किसी भी ऐसे आदमी को यह भेंट देने का वायदा किया जो मुझे ढाल लाकर दे सके। काफी देर बाद एक अच्छी-सी ढाल हमारे सामने लाई गई। वे यह जानना चाहते थे कि आखिर हम इसे क्या करेंगे? हेनरी ने बताया कि हम

उनके दुश्मन पौनियो से लडने जा रहे हैं। इस बात ने उन सब पर बहुत ही अच्छा प्रभाव डाला। यह प्रभाव हमारी भेंटों से और भी गहरा हो गया। हमने औरतो के लिए भी कुछ भेंटें दी, क्योकि हम उन लोगो की सुन्दरता भी देखना चाहते थे। हेनरी ने यह बात उन्हें बताई और औरतो को बुलाने के लिए कहा। तब एक सैनिक ने जोर की आवाज लगाई। जवान और बूढी औरतें एक साथ ही दौडती और हँसती हुई वहाँ पर जमा हो गई। सबके हाथ भेंटो के लिए आगे बढ गए। सभी एक-दूसरे मे बढकर भद्दी और बदसूरत लग रही थी।

अपने घोडो पर चढकर हम उनसे जुदा होने लगे। दोनो तरफ की भीड ने छँटकर हमे रास्ता दिया। अभी हम आधा ही गाँव पार कर आए होंगे कि हमे एक बात सूझी। शायद पौनी लोग 'कैंचेज' के आसपास थे। हमने यह उचित समझा कि अरापाहो लोगो को यह बात समझा दी जाए और उन्हे अपना एक लडाकू दल उनकी ओर भेजने के लिए कहा जाए। इस बीच हम खुद पीछे रुककर भैंसो का शिकार करते रहें। पहले-पहल तो यह विचार हमें बहुत ही कमाल का लगा परन्तु, तुरन्त ही हमे यह ध्यान आ गया कि अगर कही ये ही अरापाहो सैनिक हमे नदी के नीचे के मैदानो मे, अकेले मे, टकरा गए तो हमारे लिए बहुत खतरनाक साबित हो सकते हैं। इसलिए अपने इस इरादे को वही छोडकर हम गाँव से बाहर निकल आए। अब ऊँची-ऊँची घास में से हमने अपने घोडो को दौडा दिया। इसमे कुछ दूरी पर कुछ आदिवासी घूम रहे थे। ऊपर से हिलते हुए उनके चेहरे दिखाई दे जाते थे। इस घास पर जौ जैसे कुछ दाने भी लगे हुए थे, जो बहुत ही स्वादु और अच्छे थे। चाबुक और लगाम के बरतने के बाद भी हमारे घोडे इस आराम से मिले भोजन को खाने का लोभ न रोक सके। गाँव से मील भर दूर आकर मैंने घास के इस लहराते हुए समुद्र को मुडकर देखा। अभी सूर्य अस्त होकर ही चुका था। पश्चिम का आकाश पूरी तरह चमक रहा था और इसके आगे मैदान मे खडा हुआ अरापाहो लोगो का गाँव दिखाई दे रहा था।

नदी के किनारे पहुँचकर कुछ दूर तक हम इसके साथ-साथ चले और तब हमने तारो के हल्के प्रकाश मे दूसरे किनारे पर अपनी गाड़ी की सफेद छत को पहचान लिया। जब हम उस तक पहुँचे, तो वहाँ बहुत से आदि-

वासियों को जमा पाया। वे जमीन पर ही बैठे हुए थे, जैसे बहुत दिनों से भूखे हो। रूज़ अपनी पोशाक में सजा-वजा गाडी के पास ही खडा हुआ उन्हें इशारों में कुछ समझा रहा था। जब उसके इशारे सफल हो गए, तो उसने अँग्रेजी के शब्दों को ही कुछ ऊँचे से बोल कर उन पर रोब जमाना शुरू किया। आदिवासी उसके सामने जड से बने बैठे थे। उनके चेहरों से यह साफ था कि वे लोग इस सैनिक की असलियत को पहचान चुके है। इस बात को देखकर हमें हँसी आ गई। हमने उसे जल्दी-से-जल्दी अपनी बात खतम करने को कहा। डाँट खाकर ही वह एक दम ही दुबक कर वही बैठ गया। हेनरी ने उसे देखा और बहुत धीरज और शान्ति से कहा कि कोई भी आदिवासी ऐसे-ऐसे दस आदमियों को मारकर भी हँसता ही रहेगा।

एक-एक करके दर्शक उठे और चले गए। अधिक अँधेरा होने पर हमारा स्वागत एक और किस्म की आवाजों ने किया। भेडिये इस इलाके में बहुत होते है। खासकर अरापाहो लोगों के खेमे के चारों ओर फैंके गए मास के कारण तो उनकी सख्या बहुत अधिक वढ गई थी। नदी के बीचों-बीच एक हरा टापू जैसा था। वह हमारे निशाने की पहुँच मे ही था। ये भेडिये यही पर जमा थे। उनकी रोने की-सी आवाजें और गुस्से भरी चीखें सूरज छिपने के कुछ घटे बाद तक लगातार उठती रही। हम भेडियों को भागते हुए साफ-साफ देख सकते थे। ये हमारे डेरे के पास से ही मैदान पर भागते हुए या नदी के रेत पर अथवा उसके पानी मे मचलते हुए दिखाई दे जाते थे। इनसे हमे कुछ भी खतरा न था, क्योंकि इन मैदानों मे सबसे अधिक कायर ये जानवर ही होते हैं।

अपने पास के इन्सानी भेडियों की ही परवाह हमे अधिक थी। उस रात हर आदमी अपनी बन्दूक भरकर और बगल मे ही रखकर सोया। हमारे घोड़े भी बिल्कुल पास ही बाँधे गए। हम लोगों को पहरा रखने की आदत नहीं थी, पर फिर भी हर कोई बहुत चौकन्ना बना हुआ था। उस रात हममें कोई भी गहरी नींद न सो सका और सारी रात एक-न-एक उठकर, चौकन्ना होकर, इधर-उधर घूमता ही रहा। खुद मै इसी तरह जागता और सोता आधी रात तक लेटा रहा। रूज़ नदी के किनारे की ओर सोया था। परन्तु मैंने देखा कि चारों हाथों-पाँवों के बल वह गाडी के

बाद मैं गहरी नीद मे सो गया । थोडी देर मे ही किसी ने कधा हिलाकर मुझे जगाया । मैंने देखा कि डरा हुआ पीला चेहरा लिए रूज़ मुझे जगा रहा है। मैने उससे कारण पूछा । उसने बताया कि जब वह नदी-किनारे सो रहा था, कोई उसे दिखाई दे गया और उसे कुछ सन्देह हुआ । इसलिए अपने को बचाने के लिए वह गाडी नीचे छिप कर देखने लगा । तब उसने देखा कि दो आदिवासी कुछ आगे बढे और सारे घोडो को लेकर भाग निकले । वह इतना डरा हुआ और बेतुका-सा लग रहा था कि उस पर विश्वास नही आया । मैं नही चाहता था कि और लोगो को जगाया जाए । फिर भी, यह हो सकता था कि यह बात सच हो और इस पर तुरन्त ध्यान देना पडे । इसलिए मैंने अपनी बन्दूक पकडी और उसे वह राह बताने को कहा, जिधर आदिवासी गए थे । नदी के किनारे, दो-तीन सौ गज तक, इधर-उधर चौकन्ने होकर ध्यान देते हुए हम आगे बढे । मुझे दाईं तरफ मैदान मे कुछ भी चौंका देने वाली चीज़ न दिखाई दी । नदी के धुंधले से तल पर एक भेडिया अवश्य उछल रहा था, पर इसे किसी आदिवासी की नकल नही कहा जा सकता ।

मैं डेरे की ओर लौट आया और देखा कि दल के सभी लोग जागे हुए है । खाँ ने मुझे पुकारा और बताया कि उसने सब घोडो को गिन लिया है । रूज़ से जब फिर से पूछा गया कि उसने क्या देखा, तो उसने फिर से पुरानी बात दोहरा डाली । इस पर जिमगुर्नी ने उसे पागल करार दिया । तब उन दोनो मे कुछ झगडा उठ खडा हुआ । अन्त मे हमने बीच-बचाव करने की बजाय रूज़ को डाँटकर सोने के लिए कह दिया और उसे यह भी कह दिया कि चाहे वह सारे आदिवासियो को इकट्ठा होकर आता हुआ देख ले, तब भी हमे बिल्कुल न जगाए ।

—:०:—

२४ : पीछा

हमारे सामने का इलाका भैंसो से भरा हुआ था। इसलिए उनके 'पीछे' या शिकार का तरीका बता देना उचित ही होगा। इस पीछे मे दो प्रकार के उपाय बरते जाते है। पहले को 'दौडाना' कहते है और दूसरे को 'पहुँचना'। दौडाने का दूसरा नाम 'पीछा करना' भी है। इसमें घोडे पर सवार होकर भैंसे का पीछा किया जाता है। यह पीछा, दोनो तरीको मे से, अधिक खतरनाक है। कभी-कभी भैंसा बहुत ही भयकर हालत मे होता है। साधारण दशा मे वह सीधा-सा बना रहता है। कई बार अच्छा शिकारी एक ही बार मे पांच या छः भैंसो को भी मार लेता है और घोडे पर चढ़ ही चढे बार-बार बन्दूक भर लेता है। भैंसे के एक छोटे-से समूह पर हमला करने, या किसी एक को औरो से अलग करके उस पर हमला करने मे खतरा कम होता है। सच यह है कि कभी-कभी यह पशु इतने सीधे-सादे और मूर्ख होते हैं कि इन्हें मारने में भी मजा नही आता। एक अच्छे साहसी घोडे के साथ ऐसे भैंसे के पास पहुँचकर शिकारी उसकी बगल मे दौड़ने लगता है। वह इतना समीप होता है कि उसे हाथ मे भी वह छू सकता है। तब तक कोई खास डर नही होता, जब तक भैंसे की ताकत और साँस चलता रहता है। जब वह थक जाता है, आराम से दौड नही पाता, उसकी जीभ बाहर लटकने लगती है और मुख से झाग निकलने लगती है, तब शिकारी को उससे कुछ दूरी पर हो जाना उचित है। परेशान भैंसा किसी भी क्षण उलटकर हमला कर सकता है, खासकर जब उस पर बंदूक दागी जाती है। तब घोड़ा एक ओर को उछल जाता है। उस समय शिकारी को बहुत मजबूती से जमकर बैठना चाहिए, क्योंकि अगर वह जमीन पर गिर गया, तो फिर उसकी जान बचने का कोई उपाय नही रह जाता। भैंसा अपने हमले को चूकता देखकर फिर से दौड़ पड़ता है। पर, अगर निशाना ठीक बैठा है तो वह फिर रुक जाता है, और, तब कुछ देर खड़ा रहने के बाद लड़खड़ाकर एक ओर को गिर पड़ता है।

भैंसे के इस प्रकार के पीछे में मुझे सबसे कठिन बात यह लगी कि पूरी तेज़ी से दौडते हुए बदूक या पिस्तौल आसानी से नही भरी जा सकती। बहुत से शिकारी तीन या चार गोलियाँ मुँह में भरकर चलते है। बारूद नली मे भरकर गोली उसमें डाल दी जाती है। ऐसी कुछ नालियाँ घोडे के कूल्हे पर पीछे की ओर लटका दी जाती हैं। ऐसे काम मे खतरा भी होता है, क्योंकि अगर कहीं भरी हुई नाली चल पडी, या उलटी चली तो दोनो ही दशाओं मे कुछ न कुछ नुकसान होकर रहेगा। इस असर को कम करने के लिए कुछ लोग अपने पास एक छड रखते हैं और उसे अपनी गर्दन से बाँधकर लटका लेते हैं। इससे बारूद और गोली भरने का काम और कठिन हो जाता है। इस लिहाज़ से आदिवासियो के धनुष और बाण ज्यादा अच्छे बैठते है।

इस पीछे मे घायल जानवर से उतना डर नहीं होता, जितना कि ऊबड-खाबड मैदान या ज़मीन मे होता है। मैदान सदा ही एक समान और समतल नही होता। बहुत बार टीलो, खड्डो और खाइयो आदि से भरा होता है। कभी जगली झाडियाँ या उनकी जडें रुकावट पैदा कर देती है। सबसे कठिन रुकावट भेडियो, बैजरो और मैदानी कुत्तो की माँदो के कारण आती है। ये गड्ढे मैदानी ज़मीन मे बहुत अधिक होते हैं। शिकार में अधा शिकारी इस खतरे की बिना परवाह किये ऐसी ज़मीन पर बढ़ चलता है। उसका घोडा, पूरी तेज़ी से दौडते हुए, ऐसी माँद मे अपना पाँव फँसा बैठता है। उसकी हड्डियाँ टूट जाती हैं और सवार नीचे गिर जाता या मर जाता है। फिर भी इस पीछे मे बहुत कम दुर्घटनाएँ होती हैं। इस पीछे मे कोई भी शिकारी उतना ही मस्त होता है, जितना कि कोई शराबी शराब पीकर। पर उसकी होश भी बनी रहती है और वह ढलानो और गड्ढो आदि से बचता हुआ बढता है। अगर वह हर बात का ख्याल रखना शुरू कर दे तो वह गिरकर अपनी गर्दन तुडा बैठेगा।

'पहुँचने' का तरीका इससे भिन्न है। उसमे पैदल चलना होता है और उसमे पहले तरीके की अपेक्षा कुछ लाभ अधिक है। पहले तरीके मे घोडे या शिकारी की जिन्दगी को खतरा है। उसे बहुत ही शात और सँभला हुआ होना चाहिये। उसे भैंसे, ज़मीन और हवा तक का पूरा ध्यान होना चाहिये। बदूक बरतने मे चतुर तो होना ही चाहिये। भैंसा बड़ा अजीब पशु है। वह

कभी-कभी इतना मूर्ख भी होता है कि उसके समूह तक पहुँचकर कोई भी आदमी उनमे से कुछ एक का इकट्ठा शिकार भी कर सकता है। पर कभी-कभी वे इतना छिपते फिरते है कि, उन तक पहुँचने में बहुत अधिक चतुरता, अनुभव और सूझ-बूझ की जरूरत पडती है। हेनरी पास पहुँचने मे प्रसिद्ध है और 'किटकासो' नाम का आदमी भैंसो का 'पीछा करने' मे चतुर माना जाता है।

रूज़ ने रात को जो गड़बड मचाई, उसके बाद से फिर सुबह तक कोई गड़बड़ न हुई। अरापाहो लोगो ने भी किसी प्रकार की गडबड़ न की और अगर की होगी तो हमारे दल के लोगो के चौकन्ना होने के कारण वे लोग अपने उद्देश्य मे सफल न हो सके होगे। अगले सारे दिन हलचल और उत्साह छाये रहे। आगे-आगे चलने वाला हेनरी दस बजे लगभग एकदम ही, "भैंसे! भैंसे!" कहकर चिल्लाया और सामने के खड्ड मे हमने भैंसो का एक समूह चरते हुए पाया। हम लोभ न रोक सके। मै और शॉ नीचे की ओर चल पडे। अपने सफर के घोडो पर हम ठीक से जमकर नही बैठे हुए थे, पर फिर भी पूरी तेजी के साथ घोड़ो को दौड़ाकर हम उन तक पहुँच ही गये। शॉ ने एक भैंसे की बगल मे पहुँचकर, दौड़ते हुए ही, अपनी दुनाली बदूक से दोनो गोलियाँ उसकी बगल में दाग़ दी। पास से गुजरते हुए मैंने उस भैंसे को बहुत गुस्से मे आकर, अपने दुश्मन के विरुद्ध बढते हुए देखा। शॉ का घोडा इधर-उधर उछल कर उसके हर वार को बचा रहा था। मेरा घोडा कुछ अधिक सरल या धीरे-धीरे बढ रहा था। बहुत देर बाद मै एक भैंसे के नजदीक पहुँच गया और उसे पिस्तौल की सहायता से मार डाला। अपने शिकारो की पूँछे निशानी के रूप में काटकर हम और लोगो से आ मिले। यह सब पन्द्रह मिनट मे ही हो गया। उस सारी सुबह बार-बार "भैंसा! भैंसा!" की पुकार सुनाई देती रही। हर कुछ मिनट बाद नदी किनारे की फैली हुई चरागाहो मे अपने भारी सिर उठाये, पास आने वाले घुडसवारो को मूर्खता से देखते हुए, भैंसे कभी अलग-अलग और कभी एक साथ ही उछलते हुए भाग निकलते और बाईं ओर की ऊँचाई की ओर बढ़ जाते। दोपहर के समय हमारे सामने का मैदान भैंसो, कट्टड़ो और मादा भैंसो आदि से, हजारो की सख्या मे भरा हुआ दिखाई दिया। हमारे पास

पहुँचते ही ये सब भाग निकलते और हमें दूर तक का मैदान काला ही काला दिखाई देता। हमारा दल बहुत प्रसन्न और खुश था। दोपहर बिताने के लिए हम नदी किनारे एक अमराई मे रुके।

देस्लारियर ने हमारे सामने हिरण के मास का जो खाना रखा उस पर शॉ नाराज हुआ। उसने पूछा, "क्या ताजा मास कभी और के लिए बचाया गया है ?" भोजन समाप्त करके हम वही लेट गये। हेनरी की तेज आवाज ने हमे जगाया। हमने देखा कि वह गाडी के एक पहिये पर खडा हुआ नदी के परे मैदान की ओर कुछ देख रहा है। उसकी नजरो की दिशा मे देखते हुए हमने एक बहुत बडी काली चीज देखी। लगता था जैसे काले बादलो पर कोई समूह सामने के टीलो पर से होकर गुजर रहा था। इसके पीछे एक और काली चीज, और भी तेजी से चलती हुई, दिखाई दी। यह कुछ छोटी थी और पहली चीज के पास आती जा रही थी। आगे का समूह भैंसो का था और पीछे की टुकडी अरापाहो शिकारियो की थी। मैंने और शॉ ने सबसे अच्छे घोडो पर काठियाँ कसी और दूसरे किनारे की ओर निकल चले। हम बहुत देर से पहुँचे। तब तक वे शिकारी भैंसो के जत्थे मे घुलमिल कर अपना काम समाप्त कर चुके थे। अधिक नजदीक पहुँचकर हमने वहाँ चारो ओर बहुत अधिक शव पडे देखे। बाकी सारे जानवर इधर-उधर बिखर कर भाग गये थे। बहुत से शिकारी पहले दिन के परिचित ही दिखाई दिये। इनमें उन लोगो का मुखिया भी था। कुछ लोग अब भी भैंसो का पीछा कर रहे थे। मुखिया एक भैंस के पास झुका था। इसे उसने पाँच या छ बाणो से घायल किया था। उसके पास खडी हुई उसकी औरत उसे पानी का प्याला दे रही थी। लौटकर फिर से नदी को पार कर हम अपने दल में जा मिले और साथ-साथ आगे बढने लगे।

अभी हम मील भर भी आगे न गये होगे कि हमे एक बहुत ही अजब नजारा दिखाई दिया। नदी के दायें किनारे पर बाईं ओर के टीलो तक और सामने निगाह की पहुँच मे चारो तरफ, भैसो का एक बडा समूह समुद्र के रूप मे फैला हुआ दिखाई दे रहा था। इनका कोई भी किनारा दो सौ गज से अधिक दूर था। कुछ जगह वे इतने घने दीख रहे थे कि उनकी पीठें एक काले समतल मैदान के रूप मे दीख रही थी। इर्द-गिर्द के हिस्सों मे वे कुछ

अधिक विखरे हुए थे। इन सबके बीच से धूल के बादल से उठ रहे थे। यहाँ कुछ भैंसे जमीन पर लोट रहे थे। कहीं-कहीं ये आपस मे भी लड़ रहे थे। हम उन्हें एक दूसरे की ओर दौडता हुआ देख सकते थे और उनके सींगो के टकराने और उनके चिल्लाने की आवाज हमें साफ सुनाई दे रही थी। शॉ और हेनरी हम से कुछ आगे चल रहे थे। मैंने देखा कि शा ने रुककर अपनी बदूक थैली से बाहर निकाल ली। ऐसे नजारे को देखकर एक ही अदाजा किया जा सकता था। उस दिन सुबह मैने अपनी पिस्तौलो का प्रयोग किया था। इस समय मेरा इरादा बदूक की परीक्षा करने का था। देस्लारियर की बदूक लेने के लिए मै उसकी गाडी पर गया। वह वहाँ चिलम पीता हुआ आराम से बैठा मुस्करा रहा था।

"देस्लारियर ! जरा मुझे अपनी बदूक तो दे दो !"

"जरूर, श्रीमान् !" कहकर देस्लारियर ने घोडे रोके और गाडी के अन्दर घुस गया। वह बदूक निकालने की कोशिश करने लगा।

मैंने पूछा, "क्या यह भरी हुई है ?"

"हाँ, बहुत अच्छी तरह भरी हुई है। आप इस से जरूर शिकार मारेंगे। यह बहुत नरल है।"

मैंने उसे अपनी बदूक थमा दी और उसकी बदूक लेकर शॉ के पीछे निकल चला।

शा ने पूछा, "क्या तुम तैयार हो ?"

"आ जाओ !" मैंने बढते हुए कहा।

हेनरी बोला, "उस खड्ड मे छिप जाओ ! वे तुम्हें नही देख पायेंगे और तुम उनके पास तक पहुँच जाओगे।"

ओर देखने लगे और कुछ गज़ आगे बढ आये। तब फिर से लौटकर ये तेज़ी से भागे। इस के बाद सारे रेवड मे ही खलबली मच गई और सब जानवर भाग निकले। सारा समूह हमसे दूसरी ओर जाकर जमा हो गया और एक ओर कुछ रास्ता खुल गया। हम इस बीच के रास्ते से आगे बढे। हमने अपने घोडो को काबू मे रखा। हर क्षण यह गडबड बढती गई। भैंसे हमसे कुछ दूरी पर हर तरफ जमा होने लगे। सामने और अगल-बगल मे, हम जिधर भी देखते, भैंसे ही भैंसे नज़र आ रहे थे। धूल के बादलो ने उन्हें कुछ कुछ छिपा लिया था। भागते हुए भैंसो के हज़ारो खुरो की ठाप साफ सुनाई दे रही थी। अपनी ताकत को बिना पहचाने हज़ारो की सख्या मे भी ये जानवर भागते चले जा रहे थे, हालाँकि हम घुडसवार कुल दो ही थे। ऐसे समय अधिक देर काबू रखना कठिन था।

शॉ बोला, "मैं सामने से बढता हूँ और तुम बाईं बगल से बढो।"

वह उछला और फिर दीखना बन्द हो गया। मेरी कलाई के साथ एक भारी चाबुक बँधा हुआ था। इसे फटकारकर मैंने घोडे को तेज़ी से एड लगाई। वह तेज़ी से दौड चला। मै-अपने सामने धूल के बादल के अलावा कुछ और नही देख पा रहा था। पर इतना ज़रूर जानता था कि सामने ही सैंकडो भैंसे इसमे छिपे हुए हैं। एक क्षण मे मै इस बादल के बीच मे छिप गया। धूल से मेरी साँस रुकने लगी। भागते हुए भैंसो की टपटपाहट ने मुझे जड बना दिया। पर मैं भी पीछा करने के नशे मे था। भैंसे के अलावा मुझे किसी और बात की चिन्ता न थी। बहुत जल्दी ही मुझे एक काला समूह सामने दिखाई देने लगा। थोडी देर बाद मैं हर पशु को अलग अलग पहचानने लगा और उनके उठते खुरो और खडी पूँछो को साफ देखने लगा। अगले ही क्षण मैं इतना पास पहुँच गया कि अपनी बदूक से उन्हें छू सकता था। उसी समय अचानक ही उन सबके खुर चमके और पूँछें हवा मे उठ गई। पर तभी ये भैंसे कही धरती मे समा गये। इस क्षण का नज़ारा अब भी मेरे दिमाग मे उसी तरह समाया हुआ है। मुझे याद है कि मै किस प्रकार उस धूल मे से उन पशुओ को खोजने के लिए आँखें गडाकर देख रहा था। हम अचानक ही एक खाई के किनारे पहुँच गये। उस समय मैं इसकी गहराई और चौडाई का ठीक से अनुमान न कर सका। पर, जब मै इसमे से गुज़रा तो मैने पाया कि

यह चार गज गहरी और लगभग दुगनी चौड़ी रही होगी। यहाँ रुकना नामुमकिन था। मै अगर रुक सकता तो अवश्य रुक जाता। इसलिए फिसलते, कूदते और लडखडाते हुए घोडी नीचे उतरने लगी। तले की रेत गीली थी। यहाँ अचानक ही उसके घुटने झुक गये और मै उछलकर उसकी गर्दन तक खिसक आया। शायद एक और झटके मे सामने की भैसो के बीच मे ही गिर जाता। परन्तु, वह घोडी एक ही क्षण में फिर से उठ खडी हुई और सामने के किनारे पर चढने लगी। अब वह मैदान पर आ निकली थी। मैंने पीछे मुडकर देखा कि एक भैसा बडी कठिनता से अपने अगले पाँव खाई के किनारे फँसाकर ऊपर तक उठने की कोशिश कर रहा था। आखिर मै भैंसो के करीब आ पहुँचा। अब वे पहले की अपेक्षा कम घने हो गये थे। पर, मै उन नर भैंसो के साथ ही था, जो हमेशा ही अपने समूह की रक्षा के लिए पीछे-पीछे चलते हैं। जब मै उन मे से गुजरा तो वे अपने सिर झुकाकर दौडने से पहले मेरी घोडी को चीर देने के लिए मुडकर भाग पडे। पर, क्योकि वे पहले से ही पूरी तेज़ी से दौड़ रहे थे, इसलिए उनके हमले में पूरी तेज़ी न थी। मेरी घोडी उनसे भी अधिक तेज थी। इसलिए वे हर बार बहुत पीछे पड जाते थे। मैंने इस सारे रेवड मे से तुरन्त ही मादा भैंसो को पहचानना शुरू कर दिया। एक तो मेरे बिलकुल सामने ही आ पडी। यह मेरे मनपसन्द थी। इसलिए मैंने इसका पीछा करना शुरू किया। लगाम छोडकर उसके कधे के पास अपनी बदूक ले जाकर मैने गोली दाग दी। वह भी बिजली की भांति घोडी पर लौट कर उछली। मेरी घोड़ी ने इस हमले को बचा लिया। परन्तु इस गडबडझाले मे वह आँखो से ओझल हो गई। तुरन्त ही मैंने एक दूसरी भैंस का पीछा करना शुरू किया और एक दूसरे के बाद दोनो पिस्तौलो से उस पर वार कर दिया। कुछ देर तक में उसे निगाह मे रखकर बढता रहा, पर अपनी बंदूक दुबारा भरते हुए मेरी निगाह उससे चूक गई। उसके बुरी तरह घायल होने का भरोसा करके मैंने अपनी घोडी को रोक लिया। रेवड के भाग जाने के बाद, और धूल के दब जाने पर, मैंने देखा कि एक अकेली भैंस बहुत भारी कदमो से दौड़ती हुई पीछे-पीछे चल रही है। कुछ ही देर मे मैं उसकी बगल मे पहुँच गया। मेरे दोनो हथियार गोलियो से खाली थे। मेरी थैली मे राईफल की गोलियाँ

जरूर थी। पर वे न तो बदूक मे आ सकती थी और न ही पिस्तौल मे। मैंने ये गोलियाँ ही बदूक मे भरकर चलाने की कोशिश की, पर ये नीचे सरक जाती थी। बदूक छूटने की आवाज़ एक हल्के पटाके जैसी होती थी। अब मै भैंस के सामने होकर उसे लौटाने लगा। उसकी आँख मे अचानक ही चमक दौड गई और उसकी गर्दन झुक गई। उसने अपना सिर झुकाकर मुझ पर पूरी तेज़ी के साथ हमला कर दिया। मै बार-बार उसके सामने पहुँचता और वह बार-बार उसी प्रकार हमला करती। पर आज मेरी घोड़ी भी अपने असली रूप मे आ चुकी थी। उसने अपने दुश्मन को हर कदम पर छकाया। अत मे भैंस थककर चुप खडी हो गई। वह अपनी कोशिशो में हार चुकी थी। उसकी जीभ मुख से बाहर लटकने लगी थी।

कुछ दूर तक चलने के बाद मै घोडी से उतरा, ताकि कुछ घास इकट्ठी करके अपनी बदूक मे भर कर एक रोक बना दूँ। अभी मैं उतरा ही था कि वह भैंस फिर से तेज़ी के साथ मेरी ओर आई। मैं फिर से उछलकर घोडी पर चढ गया। कुछ देर तक और इन्तज़ार करने के बाद मैंने उस पर अपनी छुरी से ही हमला करने की सोची। पर मेरी घोडी इतनी पास जाने को तैयार न थी। अन्त मे अपने पाजामो की झालरो मे से कुछ बालो को निकाल कर मैंने बदूक को फिर से भरा और उनसे गोली को जकड दिया। तब पास जाकर मैंने भैंस को बगल मे फिर से गोली मार दी। वह तुरन्त ही मुर्दे के रूप मे ज़मीन पर गिर पडी। मै यह देखकर हैरान रह गया कि जिसे मैंने मारा था वह भैंस न होकर एक मज़बूत भैंसा था। यह भैंसा बरस भर का रहा होगा। उसकी तेज़ी पर अधिक देर अचरज न करके, मैंने उसकी गर्दन चीरकर जीभ को बाहर निकाल लिया और अपनी काठी के पीछे लटका लिया। मेरी यह भूल ऐसी थी, जिसे कोई भी अनुभवी शिकारी इस पीछे मे कर बैठता।

अब पहली बार मैंने आराम से चारो ओर का नज़ारा देखा। सामने का मैदान लौटते हुए पशुओ के कारण काला दिखाई दे रहा था। दोनो ओर से भैंसें कतारें बाँधकर नीचे, नदी पर, उतर रही थी। अरकसास नदी यहाँ से तीन-चार मील दूर होगी। मैं उस ओर मुड चला। बहुत देर बाद सामने बहुत दूरी पर, मैंने सफेद चादर से ढकी छोटी-सी गाडी और घुडसवारों की

क्ति को पहचान लिया। पास आने पर मैने शॉ की सुन्दर और चमकदार ोशाक को भी पहचान लिया। मै भी दल में जा मिला। मैने शॉ से उसकी फलता के बारे मे पूछा। उसने एक गाय को दो गोलियों से घायल किया ा। दोपहर बाद हम दोनो मे से कोई भी शिकार के लिए तैयार न था। मारे पास फालतू गोलियाँ भी न बची थी। इसलिए उस घायल जानवर ो हेनरी के हाथो को छोडकर शॉ चला आया था। हेनरी ने एक ही निशाने उसे मारकर, उसका मास घोडे पर लाद दिया था। वह भी उसी समय ा पहुँचा।

हमने नदी के पास डेरा डाला। रात अँधेरी थी। सोते समय हमे चारो ोर से भेडियो और भैंसो की मिली-जुली आवाजें आ रही थी, मानो बहुत री पर समुद्र तट के साथ टकरा रहा हो।

—:o:—

२५ : भैंसों का डेरा

हमारे डेरे मे जिमगुर्नी से अधिक चुस्त और एलिस से अधिक सुस्त कोई और न था। ये दोनो ही बिल्कुल ही उलटी आदतो के थे। एलिस सुबह तब तक न जागता था, जब तक उसे मजबूर न किया जाय और जिम पौ फटने से बहुत पहले ही जाग जाता था। उस दिन भी हमे उसकी आवाज़ ने जगा दिया। वह एलिस को कह रहा था, "उठो, बेटा ! जल्दी उठ जाओ। तुम खाने और सोने को छोडकर और कुछ काम नही जानते। अब ज़रा जल्दी से उठकर बाहर आओ, नही तो मै तुम्हारी चादर खीच लूँगा।"

जिम के इन शब्दो मे कुछ और भी विशेषण मिले जुले थे। उनका असर तुरन्त हुआ। ऐलिस नाक से कुछ गुनगुनाता हुआ बाहर निकला और तुरन्त कपडे उतारकर बैठ गया। अपनी बाहो और टाँगो को फैलाकर जँभाई लेता हुआ यह सीधा खडा हो गया, मानो चारो दिशाओ मे देखभाल करना उसके लिये ज़रूरी था। तुरन्त ही देस्लारियर ने आग जला ली। घोडो और खच्चरों को खूँटो से खोल दिया गया, ताकि वे पास की चरागाह मे आराम से चर सकें। जब हम नाश्ते के लिए बैठे तो अभी सुबह का धुँधला खतम नहीं हुआ था। सूर्य की पहली किरणें दीखने से पहले ही हम फिर से घोडो पर चढकर आगे बढने लगे थे।

"वह सफेद भैंसा !" मुनरो चिल्ला पडा।

शॉ बोला, "अगर मुझे घोडे से भी हाथ धोना पडे, तब भी मैं उसके पीछे इसे दौडाकर, उसका शिकार अवश्य करूँगा।" उसने अपनी बन्दूक का खोल उतारा और तुरन्त उधर भाग निकला। हेनरी पीछे से चिल्लाया, "शॉ, रुक जाओ ! रुक जाओ ! तुम्हारा घोडा बेकार मे ही चोट खा जाएगा। अरे भाई ! यह तो सफेद बैल है, भैंसा नही।"

किन्तु शॉ पहले ही बहुत दूर निकल गया था। यह बैल किन्ही सरकारी गाड़ियो मे से पीछे छूट गया था और वही किसी नीची पहाडी की तलहटी में खडा हुआ चर रहा था। उससे कुछ ही दूरी पर भैंसे भी चर रहे थे। ये शॉ

को आता देखकर तितर-बितर हो कर भागने लगे और पहाडियो के ऊपर चढ़ने लगे। उनमें से एक भैंसा अपनी तेज़ी और डर के कारण बुरी आफत मे जा फँसा। तलहटी पर एक छोटा-सा दलदल वाला हिस्सा था। यह भैंसा उसी मे फँस कर खुद को निकालने की कोशिश करने लगा। हम सब इस जगह तक बढ आए। उसका बडा शरीर इस कीचड मे आधा धँसा हुआ था। कीचड़ इसकी ठोड़ी तक बढ आया था। भैंसे की गर्दन अब भी कीचड के बाहर थी। हमारे पास पहुँचते ही भैंसे ने पूरी ताकत से बाहर निकलने की कोशिश शुरू कर दी। वह इधर-से-उधर हिलता हुआ बहुत हताश होकर खुद को कीचड़ से निकालने लगा। परन्तु जितना ही वह बाहर निकलने की कोशिश करता, उतना ही वह और धँसता चला जाता। हमने उसकी पूँछ मरोडकर उसे उत्तेजित करना चाहा। पर, कुछ लाभ न हुआ। बहुत यत्न करने के बाद भी वह डूबता ही गया। अन्तिम बार उसने हमारी ओर बहुत ही क्रोध भरी आँखो से देखा। अन्त मे एलिस अपने घोडे से उतरा और येगर नाम का अपना हथियार लेकर उसने भैंसे के दिल पर दाग दिया। वह फिर से अपने घोडे पर जा चढा। अपने मन को तसल्ली देने के लिए वह भी एक भैंसे का शिकार कर चुका था। शायद सारे सफर मे पहली और आख़िरी बार उसका हथियार इसी समय वरता गया था।

सुवह बहुत ही सुहानी और हवा इतनी साफ थी कि सामने क्षितिज की ओर फैला हुआ पीला-पीला मैदान साफ दिखाई दे रहा था। शॉ का दिल शिकार पर आया हुआ था और वह हम से बहुत आगे चल रहा था। थोडी देर मे ही हमने सामने भैंसो की एक लम्बी कतार पूरी तेज़ी से हरे-भरे मैदान के एक टीले पर चढती हुई देखी। शॉ उसके पीछे उछलता हुआ पहुँच गया। उसकी लाल कमीज़ दूर से पहचानी जा सकती थी। वह जल्दी ही उनके बीच पहुँच गया। और आखिरी भैंसे के टीला पार करने से पहले हमने देखा कि उसने सबसे पिछले भैंसे पर हमला कर दिया। तुरन्त ही एक धुआँ उठा और बन्दूक की आवोज़ सुनाई दी। वह भैंसा उसकी ओर पलटा। पर, अब तक वे दोनो ही हमारी निगाह से छिप चुके थे।

दोपहर तक हम आगे बढते रहे। तब हमने अरकंसास नदी के किनारे कुछ देर आराम किया। उस समय शॉ हमे दूर की एक पहाड़ी —

मे धीरे-धीरे बढता हुआ नजर आया। उसका घोडा थक चुका था। उसने अपनी काठी जमीन पर रक्खी और लेटने लगा। मैने देखा कि उसके घोडे के पीछे दो भैंसो की पूछें लटक रही थी। अभी हमने चरने के लिए घोडे ढीले छोडे ही थे कि हेनरी मुनरो को साथ लेकर, बन्दूक हाथ मे लिए हुए, चुपचाप एक ओर को निकल गया। हाँ, मै और रूज़ देस्लारियर द्वारा परोसे गए खाने की चर्चा करते हुए गाडी के पास ही बैठे थे। अभी हमने खाना खत्म ही किया था कि मुनरो को लौटते देखा। उसने बताया कि हेनरी ने चार मोटी भैंसें मारी हैं और उसे मास ढोने के लिए घोडे लेने भेजा है। शॉ अपने और हेनरी के लिए एक-एक घोडा लेकर मुनरो के साथ चला गया। कुछ ही देरी बाद तीनो वापिस आए। उनके घोडे उन भैंसो के चुने हुए मास से लदे थे। हमने दो भैंसो का मास अपने लिए रखकर बाकी मुनरो और उसके साथियो को दे दिया। देस्लारियर मास के सामने जम गया और तुरन्त ही उसे लम्बे-लम्बे टुकडो मे काटकर सुखाने योग्य बनाने लगा। इस काम मे वह किसी आदिवासी स्त्री से कम चतुर न था। रात से बहुत पहले ही भैंसे की खाल की रस्सियाँ चारो ओर फैला दी गईं और उनपर मास लटका दिया गया, ताकि धूप और खुली हवा में वह सूख सके। हमारे दूसरे साथी अपने काम मे इतने चुस्त न थे। उन्होंने बहुत देर मे अपना काम निपटाया। पर, बहुत रात बीतने से पहले ही उनके यहाँ भी हमारे डेरे जैसा ही नजारा खड़ा हो गया था।

हमारा इरादा यहाँ कुछ दिन रहकर सीमात की यात्रा की पूरी तैयारी कर लेने का था, क्योकि यह सफर एक महीने से भी अधिक चलना था। अगर यह सफर इससे भी दुगना होता, तो भी हेनरी की अकेली बन्दूक ही हमारे लायक सामान दो दिन मे जुटा देती। फिर भी, हमे यहाँ इतने दिन रुकना जरूरी था, ताकि मास भली प्रकार सूख सके। इसलिए हमने तम्बू गाडकर पक्का डेरा बना लिया। हमारे नये साथियो के पास ऐसा कोई प्रबन्ध न था। इसलिए उन्होने अपने सामान को घास पर आग के चारो ओर ही जमा कर लिया। इस बीच हमारे पास हँसी, मजाक और आनन्द मनाने के अलावा और कोई काम न था। हमारा डेरा नदी से कुछ ही गज की दूरी पर था। यहाँ नदी रेत के फैलाव के अलावा और कुछ न थी। दोनों ओर

के चौडे समतल मैदान नदी तटो के बराबर ही फैले हुए थे और उनसे बहुत दूर छोटी-छोटी, एक जैसी, पहाडियाँ फैली हुई थी। चारो ओर घास ही पास फैली हुई दिखाई देती थी। कोई पेड तक निगाह मे न आता था। हाँ, नदी के बीचो-बीच के टापू मे कुछ पेड अवश्य उगे हुए थे। इस पर भी यह नज़ारा हमारे लिए कम आकर्षक न था। हर सुबह और शाम, दो बार, भैंसे कतारें बाँधकर पहाडियो मे से निकलते हुए, एक जलूस से रूप मे, नदी तक पानी पीने आते। हमारे सभी आनन्द उनके बल पर ही होते थे। बूढा भैंसा सबसे अधिक भद्दे किस्म का जानवर होता है। उसे देखते ही करुणा का भाव मिट जाता है। मादा भैंसें उनकी अपेक्षा बहुत छोटी और सभ्य दिखाई देती है। इस डेरे पर रहते हुए हमने मादा भैंसें मारने का काम हेनरी पर ही छोड दिया, क्योकि वह अकेले ही ज्यादा अच्छी तरह और ठीक ढग से हमारे योग्य सामान जुटा सकता था। हाँ, हमने बडे भैंसो का शिकार खुद ही करने का फैसला किया। उनमे से यदि हज़ारो भी मार दिए जाते तो भी उनकी नस्ल की कोई खास हानि न होती। मादा भैंसो की अपेक्षा नर भैंसो की सख्या बहुत अधिक थी। मादा भैंसो की खाले ही व्यापार और आदिवासियो के घर आदि के काम आती है। इस लिए लोग अक्सर उन मादाओ का ही शिकार अधिक करते है। तभी दोनो की सख्या मे यह गडबड है।

हमारे घोडे थक चुके थे। इसलिए अब हम पैदल ही शिकार करने लगे। दोपहर के भोजन के बाद हम लोग चिलम पीते हुए और हँसी मजाक करते हुए लेटे होते। कोई एक आदमी खडा होकर बहुत दूर नदी के पास मैदान की ओर देखता और बताता कि एक काली-सी कोई चीज़ धीरे-धीरे हमारी ओर आ रही है। वह उसी समय एक कश खीच कर सुस्ताता हुआ उठता और अपनी बन्दूक उठाकर और अपनी गोली-बारूद की थैलियाँ कधे पर लटकाकर निकल चलता। दूसरी ओर की रेत को पार करके वह कुछ दूर तक निकल जाता। यहाँ रेत बहुत फैली हुई थी और पानी बहुत कम था। दूसरा किनारा ऊँचा था और सीधा भी! इसके ऊँचे किनारो पर लम्बी घास उगी हुई थी। अपने हाथो से इसे हटाता हुआ वह व्यक्ति बीच मे से झाँकता हुआ और झूमता हुआ कोई भैंसा पा सकता था। पानी पीने आते समय उन भैंसो की चाल बहुत ही सुस्ती और मस्ती भरी हो जाती थी। इन भैंसो के नदी

तक आने के रास्ते निश्चित से बने हुए है। इन्हें नदी तक पहुँचता हुआ देख कर शिकारी किनारे पर कुछ दूरी पर छिपकर बैठ जाता है। यहाँ से भैंसे नदी पर उतरते हैं। रेत पर चुपचाप छिपकर बैठा हुआ शिकारी ध्यान लगाकर सुनता रहता है। तब उसे भैंसो की पास पहुँचती हुई चाल की भारी आवाज़ सुनाई देने लगती है। एक ही क्षण मे वह सामने की हरी और ऊँची घास मे कोई हिलती हुई चीज़ आती देखता है। सबसे पहले उसे बहुत बडा काला सा सिर निकलता हुआ दिखाई देता है। तब साथ ही सींग और गर्दन बाहर आती हुई दिखाई देती है। फिसलता और गिरता हुआ भैंसा नदी के किनारे आ निकलता है। पानी पीते हुए उसकी आवाज़ साफ पहचानी जा सकती है। अब वह अपना सिर उठाता है। इस समय उसके मुँह से पानी की बूँदें टपक रही होती है। वह जड-सा बनकर खतरे से बेखबर होकर वहीं खडा रहता है। इसी समय शिकारी अपनी बन्दूक को चुपचाप चला देता है। बैठे हुए शिकारी के घुटने खडे रहते है और उसकी कोहनी इन पर टिकी रहती है। वह बहुत ठीक तरह से निशाना बाँध सकता है। बन्दूक के हत्थे को वह कधे पर टिका लेता है और उसकी आँख बन्दूक की नाली पर टिक जाती है। अब भी वह गोली नही दागता। अब वह भैंसा दूसरी ओर के रेतीले किनारे पर पहुँच जाता है और अपनी अगली टाँगे फैलाकर एक खास जगह को नगा कर देता है। यहाँ पर बाल नही होते। यह जगह कधे के एक एक दम नज़दीक है। शिकारी यही पर गोली दागने की तैयारी करता है। बहुत निशाना साधकर वह आखिर बन्दूक का घोडा दबा देता है। तुरन्त ही गोली निशाने पर जा लगती है और उस नगी जगह पर एक काला लाल-सा निशान दिखाई देने लगता है। इधर एक तेज़ आवाज़ चारो ओर गूँज जाती है, उधर भैंसा काँप कर मौत के पजे मे जा फँसता है। वह नहीं जान पाता कि यह मौत कहाँ से आ रही है? वह अभी गिरता नही, धीरे-धीरे आगे भारी कदमो के साथ बढने लगता है। इससे पहले कि वह रेत पर बहुत आगे जा सके, वह रुकता है, लडखडाता है और उसके घुटने झुकने लगते है। अब उसका सिर नीचे को झुक जाता है। उसी समय वह सारा बोझ एक तरफ को गिर पडता है और बिना किसी सघर्ष के वह भैंसा एक किनारे गिरकर चुपचाप मर जाता है।

भैंसे का इस प्रकार का शिकार, और पानी पीने आते हुए उस पर निशाना साधना, शिकार का सबसे आसान तरीका है। इस तरह घाटियों और खाइयो मे, पहाडियो के पीछे और कही-कही मैदान में भी, उन तक सरकते हुए पहुँचा जा सकता है। यह शिकार बहुत आसान होता है परन्तु, कुछ अवसरो पर यहाँ भी बहुत सावधानी की जरूरत होती है। बहुत सधा हुआ शिकारी ही इस कठिन मौके पर सफल हो पाता है। इस लिहाज से हेनरी बहुत असाधारण रूप मे मजबूत और ताकतवर था। मैने कई बार उसे भी बहुत अधिक थके हुए और जख्म खाए हुए लौटते देखा था। बहुत बार झाडियों में सरकते हुए उसकी पोशाक काँटो से भर गई थी। कभी-कभी वह अपने चेहरे के बल जमीन पर उलटा लेट जाता था और इस हालत मे बहुत दूर तक घिसटता हुआ आगे बढता था।

इस जगह रुकने के अगले दिन हेनरी इसी प्रकार दोपहर के शिकार पर गया। शॉ और मै तब तक डेरे पर ही रुके रहे, जब तक हमे दूसरे किनारे पर पास पहुँचते हुए भैंसे न दिखाई दे गए। तब हम उन पर हमला करने के लिए नदी के पार पहुँच गए। वे बहुत नजदीक थे। इससे पहले कि हम किनारे पर पहुँच कर कही अपने को छिपा पाते, वे चौकन्ने हो गये और गोली की पहुँच से दूर रहते हुए ही भाग निकले और नदी के साथ-साथ दाहिनी ओर मुड गए। किनारा चढकर मैं भी उनके पीछे भागा। वे बहुत तेजी से चल रहे थे। इससे पहले कि मै गोली की पहुँच के अन्दर पहुँच पाता, वे एकदम मुड़ कर मेरे सामने अड गए। एक क्षण के लिए वे चौकन्ने होकर देखने लगे। उनके मुडने से पहले ही मै धरती पर मुँह के बल सीधा लेट गया। वे घास पर लेटे मुझे घूरते हुए कुछ देर खडे रहे और फिर मुडकर पहले जैसे ही चल पडे। अब तुरन्त उठकर मै तेजी से पीछा करने के लिए दौडा। एक बार फिर, वे मुडे और मैं उसी तरह फिर से लेट गया। इस प्रकार तीन-चार बार दोहराने के बाद मै उनसे सौ गज की दूरी के अन्दर ही पहुँच गया। इस बार जब मैंने उन्हें फिर से घूमते हुए देखा, बैठकर बन्दूक उनकी ओर साध दी। इनके बीचो-बीच एक बहुत बडा भैंसा था। इतना बडा भैंसा मैने कभी नही देखा था। मैंने उसके कधे के पीछे गोली चला दी। उसके दो साथी तुरन्त भाग निकले। वह भी उनके पीछे भागने लगा, पर थोड़ी ही देर में खडा हो गया

और कुछ देर बाद इस तरह आराम से लेट गया, मानो कोई बैल जुगाली करने के लिए बैठ गया हो। पास जाकर मैने उसे देखा। वह मर चुका था।

जब मैंने पीछा शुरू किया था, इस मैदान मे एक भी जानवर नही दिखाई दे रहा था। परन्तु इस समय तक हज़ारो भैंसे एक साथ दिखाई देने लगे थे। न जाने ये कहाँ से उमड आए थे ? अपने से पचास गज की दूरी पर मैने एक काला फैलाव दाएँ और बाएँ बहुत दूर तक फैला हुआ देखा। मै इनकी तरफ़ बढा। इनमे से किसी को भी मेरे पहुँचने से कोई परेशानी नही हुई। इस सारे समूह मे भैंसे और बछडे ही थे। पर, कुछ बूढे भैंसे इसे घेर कर पीछे-पीछे चल रहे थे। मै ज्यो ही नज़दीक पहुँचा, उन बूढे भैंसो ने मेरी ओर मुडकर इतनी भयकर नज़र से देखा कि मैने आगे जाने का निश्चय छोड दिया। मै जहाँ खडा था, वहाँ से भी निशाना साध सकता था। इसलिये मै ज़मीन पर बैठकर उनकी हरकते देखने लगा। कभी तो वे सब खडे हो जाते और उनके सिर एक ओर को उठ जाते। और, कभी वे सामने की ओर दौडने लगते, जैसे सभी को एक-सी ही बातें सूझ गई हो। उनके खुर और सीग टकराते हुए दीखने लगते। तुरन्त ही बहुत दूरी पर मैने बहुत-सी गोलियाँ चलने की आवाजें सुनी और ये आवाज़ें बार-बार दुहराई जाने लगीं। कुछ ही देर बाद कुछ और भारी तरीके की आवाजें आईं। मैने पहचान लिया कि ये भारी आवाज़ें हेनरी की दुनाली बन्दूक की थी। हेनरी जब भी अपनी बन्दूक से काम लेता, हमारे सारे डेरे के लिए मास जुट जाता और उसे लाद कर लाना पडता। इसलिए मैं तैरकर नदी के पार गया और शिकारियों के पास आ पहुँचा। भैंसे अब भी बहुत दूर मैदान पर दिखाई दे रहे थे। वे बहुत दूर लौट चुके थे। अब भी मैदान पर दस या बारह शव इधर-उधर बिखरे पडे थे। अपने हाथो मे छुरी लिए हुए हेनरी अपने काम मे जुटा हुआ था और एक खास भैंस मे से बहुत ही चुना हुआ मास निकाल रहा था।

शॉ मुझ से अलग होने के बाद कुछ दूर तक नदी के नीचे की ओर क़िनारे-किनारे किन्ही और भैंसो की टोह मे निकल गया था। बहुत देर बाद उसने मैदान पर एक बडे भारी भैंसो के समूह को फैले हुए देखा और तभी उसे हेनरी की गोलियो की आवाज़ सुनाई दी। किनारे पर चढकर, घास मे से सरकता हुआ, वह आगे बढा। अभी वह बहुत आगे न बढा था कि उसने

हेनरी को मैदान मे, भैंसो से घिरे होने पर भी, तना हुआ खडा पाया। हेनरी अपने पूरे जोश मे था। उसे यह पता न था कि कोई उसे देख रहा है। इस लिए वह पूरी तरह तन कर खडा हुआ था। उसका एक हाथ कमर पर और दूसरा बन्दूक के कुन्दे पर टिका हुआ था। उसकी आँखे चारो ओर के उस समूह को देखने मे लगी हुई थी। बीच-बीच में वह कोई एक भैंस अपने लिए चुन लेता और अपनी बन्दूक उठा कर उसे मार डालता। तब फिर चुपचाप बन्दूक धर कर पहले जैसे ही खडा हो जाता। भैंसें इस प्रकार निडर थी, जैसे वह उनमे से ही एक हो। नर भैंसे अब भी एक दूसरे के साथ टक्करें मारते हुए, शोर करते हुए और जमीन पर लोटते हुए खेल रहे थे। मरी हुई भैंस के चारो ओर कुछ और भैंसे जमा होकर उसके ज़ख्म को सूँघने लगते। तब वे बची हुई भैंसो के पीछे आकर उन्हें खदेडने की कोशिश करते। जब-तब कोई बूढा भैंसा हेनरी की ओर मुँह उठाकर अचरज के साथ देखने लगता। पर उनमे से न तो कोई भागने की कोशिश करता और न ही उस पर हमला करता। कुछ देर तक शॉ घास मे ही लेटा रहा और अचरज मे डूबकर इस अद्भुत दृश्य को देखता रहा। बहुत देर बाद धीमे-धीमे आगे बढकर उसने हेनरी को पुकारा। हेनरी ने उसे अपने पास बुला लिया। अब भी भैंसे डरे नहीं। अपने मरे हुए साथियो के पास वे उसी तरह जमे रहे। हेनरी अब तक उतनी भैंसे मार चुका था, जितनी हमारे लिए आवश्यक थी। शॉ ने एक मुर्दा भैंस के पीछे बैठकर पाँच नर भैंसो का निशाना साधा, पर तब तक और भैंसें वहाँ से गायब हो गई थी।

इस प्रकार की भैंसो की जडता और मूर्खता इस स्थिति से बिल्कुल भिन्न होती है, जबकि वे भयकर और खूँखार रूप मे सामने आते है। हेनरी इन सब बातो को समझता था। उसने इन सब बातो को एक विद्वान् के समान ही समझा था। इस प्रकार के शिकारो मे वह पूरा मजा लेता था। भैंसे उसके अपने ही साथियो जैसे थे और उनके बीच मे खडा होकर वह कभी अपने को अकेला अनुभव नही करता था। उसे उनके शिकार मे अपनी चतुरता पर सदा नाज़ रहता था। वह बहुत ही नम्र तबीयत का आदमी था। सीधा-साधा और सरल होने पर भी, उसे शिकार के मामले मे अपने बड़प्पन और महत्त्व का पूरा-पूरा ध्यान था। पर वह अपने विषय मे कितना ही ज्यादा बढा-चढाकर सोचता

हो, यह उस अनुमान से कम ही था, जो कोई और शिकारी या दर्शक उसके विषय मे कर सकता था। मैने केवल एक ही बार उसके चेहरे पर घृणा का भाव देखा था। वह भी तब, जब दो नौसिखियो ने पहले-पहल भैंसे का शिकार किया और हेनरी को उस शिकार के गुर समझाने लगे। वे बताने लगे कि 'पहुँच' किस प्रकार की जाती है ? हेनरी भैंसो और उनके शिकार को अपने अधिकार का विषय समझता था और उसके विषय मे हर बात की पूरी जानकारी रखता था। उसे सबसे अधिक बुरा तब लगता था, जब कोई बिना ही मतलब के मादा भैंसो को मारे। सबसे बढ़कर पाप उसकी नजर मे यह था कि बेबात के ही कटड़े मार दिए जाएँ।

हेनरी और रूज़ की आयु एक बराबर थी। वे दोनों लगभग तीस वर्ष के थे। पर हेनरी लगभग दुगने शरीर का था और ताकत मे उससे छ गुणा अधिक था। हेनरी का चेहरा आँधियो और तूफानो से पक चुका था, रूज़ का चेहरा शराबो आदि के कारण पीला पडा हुआ था। हेनरी हमेशा ही आदिवासियो या भैंसो के बारे मे बात करता था, रूज़ को हमेशा ही थियेटर आदि की बात सूझती थी। हेनरी का जीवन कठिनाइयो और सघर्षों मे बीता था, रूज़ को कभी भी उनका सामना न करना पडता था। वह ख्याली-पुलावो और वहमो मे पलने वाला जीव था। हेनरी कभी भी किसी स्वार्थ मे उलझना न जानता था, रूज़ अपने स्वार्थ के अलावा किसी और बात से मतलब न रखता था। पर, हम इस पर भी उसे खोना न चाहते थे, क्योकि वह हमारे यहाँ मज़ाकिए या विदूषक का काम देता था। अगर वह न होता तो शायद हमारे डेरे मे रौनक समाप्त हो जाती। पिछले हफ्ते के दौरान वह काफी मोटा हो गया था। यह बात अजब भी न थी, क्योकि उसकी भूख बहुत ज्यादा बढ़ी हुई थी। सुबह से रात तक वह खाता ही रहता था। आधे से अधिक समय तो वह अपने लिए कोई न कोई खास चीज बनाता रहता था। और कॉफी का बर्तन तो उसके हाथो आठ या दस बार बरता जाता था। उसका निराश और उतरा हुआ चेहरा खुद ही दूसरो के लिए मजाक का साधन बन जाता। उसकी आँखें उभरी हुई सी लगती और उसका दिल और हौसला अब खूब बढा हुआ लगता था। वह दिन भर हँसता जाता और कहानियाँ सुनाता रहता था। वह केवल ईजमगुर्नी से घबराता था और इसीलिए सदा हमारे डेरे के पास मँडराता

रहता था। उस बेचारे को हमेशा ही सरल जिन्दगी बिताने को मिली थी, और उसके पास मजाक का काफी भण्डार जमा था। इसलिए उसकी बात हँसाने वाली होती। दूसरो को हँसाने के लिए वह अपनी मजाक उड़वाने को भी तैयार रहता। इस पर भी वह हमारे लिए मुसीबत का कारण तो था ही। उसे सबसे बुरी आदत थी हमारे खाने-पीने के सामान को दिन भर टटोलते रहने की। वह किसी का भी कहना नही मानता था। चाहे उस पर हम कितना ही नाराज़ हो लें, वह अपनी चालाकियो से बाज न आता था। जब तब उस पर किसी न किसी का गुस्सा उतरता रहता। वह इन मौको पर चुप होकर सह लेता; परन्तु कुछ ही देर बाद फिर कोई न कोई चोरी करता हुआ पकडा जाता। खासकर भोजन के सामानो की चोरी उसकी विशेष आदत थी। उसे तम्बाकू पीने की लत थी, पर उसके अपने पास वह था नही। हम उसे उसकी ज़रूरत के मुताबिक दे दिया करते थे। पर हर मौके पर थोडा-थोडा करके ही देते थे। शुरू-शुरू मे हमने उसे आधा सेर तम्बाकू एक साथ ही दे दिया था। पर हमे यह परीक्षण महँगा पड़ा। क्योकि उसने कुछ ही देर मे तम्बाकू और चाकू दोनो ही गुम कर दिए और हमसे माफी माँगने लगा।

हम इस डेरे पर दो दिन रह चुके थे। और काफी सारा मास ले जाने के योग्य हो गया था। पर इसी समय एक भयकर आँधी आ टूटी। शाम के समय सारा आकाश स्याही के समान काला पड़ गया और नदी किनारे की लम्बी घास तूफान की पहली झपेट के साथ उठने और गिरने लगी। मुनरो और उनके साथी अपनी बन्दूकें लाकर हमारे तम्बू में ही रख गए। उन लोगो ने कोई बचाव न पाकर एक ऐसी आग जलाई, जिस पर वर्षा का भी असर न होता। वे खुद को भैसे की खालो के लबादो मे लपेट कर जमीन पर उसके चारो ओर बैठ गए, ताकि आने वाले तूफ़ान का मुकाबला किया जा सके। हमारा गाडीवान अपनी गाड़ी के नीचे छिप गया था। हमारे तम्बू में मै, शॉ, हेनरी और रूज़ जमा थे, पर इस सबसे पहले सारे सूखे हुए मास को एक ओर जमा करके, उसे भैसो की खालो से ढक दिया गया और ज़मीन पर जकड़ दिया गया। नौ बजे के करीब यह तूफान बुरी तरह टूट पडा। चारो ओर घुप अँधेरा छाया हुआ था। मैदान मे सब तरफ़ भयकर धाराएँ फूट निकली।

हमारा तम्बू भी कुहरे और फुहारो से भर गया। यह कुहरा अन्दर बैठे हर आदमी को गीला करने लगा। हम एक-दूसरे को बिजली की चमक मे ही देख पा रहे थे। इस चमक मे हमने देखा कि चारो ओर सब कुछ पानी-ही-पानी मे डूब गया था। हमे अपने तम्बू का डर था। पहले एक-दो घण्टे तक तो यह बिल्कुल ठीक खडा रहा। आखिर इसकी चोटी पर से कपडा फट गया और बाँस ऊपर निकल गया। अब तम्बू झुकने और चूने लगा। हमे घुटन-सी महसूस होने लगी। अपनी बन्दूकें पकड कर हमने उन्हें सीधा खडा कर लिया, ताकि अगर तम्बू गिरे ही तो हम उसके कपडे को खडा कर सकें। इस प्रकार इस हालत मे ही रात का बहुत-सा समय बीत गया। इस सारे समय तूफान की तेजी मे कोई कमी न आई। लगता था, जैसे यह बढता ही जा रहा था। कुछ ही देर मे हमारे नीचे भी पानी दो या तीन इँच गहरे जोहड के रूप मे जमा हो गया। इसलिए आधी से अधिक रात भर हम ठण्डे पानी का अनचाहे स्नान का मज़ा लेते रहे। इस सब के बावजूद रूज़ का हौसला न गिर पाया। वह आँधी और तूफान की परवाह न करके हँसता, गाता और सीटियाँ बजाता रहा। सच तो यह था कि उस रात उसने अपने बहुत से अपराधो का बदला चुका दिया था। हम सब लोग न जाने किन ख्यालो मे डूबे बहुत चुपचाप बैठे थे, पर वह अकेला ऐसे समय भी घण्टो तक हँसी और मज़ाक करता रहा। लगता था जैसे उसमे कोई जानवरो जैसी ताकत आ गई थी। सुबह लगभग तीन बजे हम लोग, इस घुटन की बजाय बाहर आना अच्छा समझकर, तम्बू से निकल आए। अब हवा चलनी बन्द हो गई थी। फिर भी वर्षा लगातार गिर रही थी। इस अँधेरे मे भी हमारे दूसरे साथियो की आग अब तक जल रही थी। हम भी उनके पास ही बैठ गए। हमने ताजगी के लिए कुछ कॉफी बनाई। जब सबने अपने प्याले दुबारा भरने चाहे, तब पता चला कि रूज़ अपना हिस्सा पीने के बाद, काफी बची-खुची सारी कॉफी को भी पीकर समाप्त कर चुका था।

सुबह सूर्य खुलकर निकला। हमे प्रसन्नता हुई। इस समय हमारी हालत हँसी के लायक थी। हमारे कपडे बुरी तरह गीले हो चुके थे, पर हल्की हवा और गर्म धूप ने तुरन्त उन्हें सुखा डाला। हमे बडी जकड सी लगने लगी। अपनी जकडाहट को दूर करने के लिए हम सारे दिन भर, मैदान मे, शिकार

के लिए घूमते रहे। हमने दो तीन भैंसे मार भी डाले।

हेनरी के अलावा मैं और शॉ भी शिकार में कुछ माहिर थे। इस दिन सुबह मुनरो ने भी एक भैंसे को भगाने की कोशिश की थी, किन्तु उसका घोड़ा कभी शिकार के पास न पहुँच सका। शॉ उसके साथ ही निकला था। अधिक अच्छे घोडे पर सवार होने के कारण वह तुरन्त ही भैंसो के रेवड में जा निकला। उसे चारो ओर केवल भैंसे और कटडे ही दिखाई दिए। उसने अपने घोडे को रोक लिया। एक बूढा भैंसा पीछे से भागता हुआ आ रहा था। उसकी ओर मुडने ही शॉ ने उसका रास्ता काटा और अपनी बन्दूक तानकर सामने से उसके गुजरने पर उसके कधे के नीचे, एक बगल मे, निशाना दाग दिया।

कुछ पास के पेडो पर गीधो का एक समूह घूम रहा था। यह स्थान हमारे डेरे के बिल्कुल पास ही एक टापू पर था। पिछले सारे दिन भर हमने उनके बीच मे एक चील को बैठे देखा था। वह अब भी वही बैठी थी। रूज़ ने यह घोषणा की कि आज वह उस पक्षी को मार डालेगा। यह कहकर उसने देस्लारियर की बन्दूक ली और उस पक्षी के शिकार के लिए निकल पडा। यह पक्षी अमरीका का राष्ट्रीय पक्षी है। इसलिए रूज़ का काम देश-द्रोह के समान था। हमे उम्मीद ही थी कि उस पक्षी का, इसके हाथो, कुछ भी बिगाड न होगा। वह जल्दी ही लौट आया और उसने बताया कि वह पक्षी को खोज नही पाया। पर, फिर भी, उसने एक गीध को मारने का दावा किया। जब हमने उससे सबूत माँगा, तो वह कहने लगा, "मुझे उसके मरने का पूरा यकीन नही है। वह घायल जरूर हुआ था, पर फिर भी वह उड गया।"

रूज़ फिर बोला, "फिर भी अगर आप चाहें तो मै उसका एक पख लाकर दिखा सकता हूँ। क्योंकि मेरे गोली चलाने के बाद उसके बहुत से पख वहाँ गिर गए थे।"

हमारे डेरे के बिल्कुल सामने एक और टापू झाडियो से ढका हुआ था। इसके परे पानी गहरा था। इसके सामने ही दो या तीन धाराएँ बह रही थी। यहाँ पर एक दोपहर को मै नहा रहा था कि उसी समय एक सफेद भेडिया, जो कि किसी बडे कुत्ते के समान ही था, टापू मे से निकलकर भागा और मेरे से कुछ ही दूरी पर रेत पर आकर उछलने लगा। मैंने उसकी लाल

आँखें और उसके मुख के चारो ओर की मूँछें साफ देख ली। यह बहुत ही भद्दी शक्ल का था। उसका सिर काफी बडा, पूँछ भरी हुई और चेहरा बहुत भद्दा था। मेरे पास न बन्दूक थी और न ही पत्थर थे। मै उस पर मारने के लिए किसी चीज़ को खोज ही रहा था कि अचानक डेरे की ओर से गोली चलने की आवाज़ आई और उसके सामने की कुछ रेत उड गई। इस पर वह हल्का-सा उछला और तेज़ी से रेतीले मैदानो पर एकदम भाग निकला। असल बात यह थी कि आसपास के मैदानो पर भैंसो के इतने शव जमा हो चुके थे कि हर तरफ से भेडिये यहाँ आकर इकट्ठे हो गए थे। हेनरी और शॉ के शिकार की जगह उनकी आरामगाह बन गई थी। मै अक्सर ही नदी के पार जाकर उन्हें भोजन के समय देखता। किनारे पर लेटकर उन्हें पूरी तरह देखा जा सकता था। इनमे तीन किस्म के भेडिये थे। सफेद और सलेटी रंग के भेडिये बहुत बडे थे। तीसरी किस्म के साधारण मैदानी भेडिये कुत्तो जैसे ही दिखाई देते थे। ये सब एक ही शव के चारो ओर जमा होकर चीखते और लडते, किन्तु इस पर भी इतने चौकन्ने रहते थे कि मैं कभी भी इतना नज़दीक न जा सका जिससे उन पर निशाना साध सकूँ। जब कभी भी मैंने कोशिश की वे तुरन्त ऊँची घास मे भाग कर छिप गए। इस जगह चारो ओर गीध मँडराते फिरते थे। भेडियो के किसी शव पर से अलग होते ही ये उस पर आ टूटते और उसे इस बुरी तरह से ढक लेते कि एक भी बन्दूक की गोली उनमे से दो या तीन की जान लेने के लिए काफी रहती। ये पक्षी बीसियो की सख्या मे हमारे डेरे के ऊपर भी मँडराते रहते और इस प्रकार एक हल्की छाया भी हमारे डेरे पर कर देते। हमारे चारो ओर भेडिये और गीध बढते ही जाते और कभी-कभी दो-तीन चील भी वहाँ दावत उडाने आ जाते। मैंने डेरे के पास ही एक भैंसे का शिकार किया था। उस रात उन भेडियो ने बहुत चीख-पुकार मचाई। सुबह तक वह शव खोखला हो चुका था।

यहाँ चार दिन रहने के बाद हमने यह डेरा छोडने की तैयारी की। अब हमारे पास छ मन के लगभग सूखा मास था। चार मन के लगभग मास हमारे दूसरे साथियो ने भी जमा कर लिया था। यह सारा मास आठ या नौ भैंसों के चुने हुए हिस्सो मे से ही था। सारे लादू जानवर लाद लिए गए। घोड़ो और खच्चरो पर भी काठियाँ और जुए कस लिए गए। अन्त मे रूज़ भी

तैयार हो गया और हम लोग सफर पर बढ चले । अभी हम मील भर ही बढे होगे कि शॉ को अपने चाकू छूट जाने का ध्यान आया । वह डेरे की ओर उसे खोजने के लिए लौटा । वहाँ दिन मे भी कुछ अँधकार-सा छाया हुआ था। अभी नदी किनारे की आगें बुझी नही थी । चारो ओर की घास भी घोडे और आदमियो के पाँवो से कुचली हुई दिखाई दे रही थी । साफ था कि अब भी हमारे डेरे की निशानियाँ मौजूद थी । हमारे यहाँ से चलते ही सैकडो जानवर और पक्षी वहाँ जमा हो गए थे । जलती आगो के चारों ओर बीसियो भेड़िये इधर-उधर घूम रहे थे । और भी अनेकों पास के मैदान में जमा हो रहे थे । शॉ को दुबारा पहुँचते देख वे सभी वहाँ से भाग निकले । कुछ सामने के रेतीले तट पर से होते हुए हरे मैदानो की ओर भाग गए । ऊपर आसमान मे बहुत अधिक गीध जमा होकर मँडरा रहे थे । डेरे के पास ही मेरे मारे हुए भैंसे पर सैकड़ो गीध जमा थे । शॉ के पहुँचने पर उन्होंने भी अपने पंख फड़फड़ाए और अपनी गर्दन उठाकर खतरे की ओर देखा । परन्तु, वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे । जब शॉ आग के पास चाकू खोज रहा था, उस समय उसने देखा कि कुछ दूरी पर सामने की पहाडियो पर सैकडो भेडिये वहाँ से उसके जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे । अपने चाकू की खोज मे असफल होने पर वह फिर से घोड़े पर सवार होकर गीधो और भेड़ियो को आनन्दपूर्वक खाते हुए छोड कर हमारी ओर चला आया ।

—: o :—

२६ : अरकंसास के किनारे पर

सन् १८४६ के सितम्बर महीने मे उत्तरी अरकसास नदी के इलाके ने पहली बार किसी गोरी सेना को गुजरते देखा। सान्ताफे की ओर बढ़ते हुए जनरल कीर्नी ने यही रास्ता चुना था। जब हम यहाँ पहुँचे तो सेनाओ की मुख्य टुकडियाँ पहले ही जा चुकी थी। प्राइस नाम के सेनापति की टुकडी अभी रास्ते मे ही थी, क्योकि उन्होने सीमात वहुत दिन वाद छोडा था। इस समय हमे प्रतिदिन ही एक या दो टुकडियाँ रास्ते मे मिल जाती थी। इन लोगो से वढ कर कभी कोई और सेना अपने काम के प्रति इतना प्यार लेकर नही बढी होगी। अगर सेना की अच्छाई हुक्म और नियन्त्रण मानने मे है, तो ये लोग सबसे निकम्मे थे। परन्तु इन लोगो ने सारे ही अमरीका की चढाइयो में हिस्सा लिया था इसलिए इन्हें अच्छे सैनिक न मानना उचित न होगा। इन्होने युद्ध की हर कठिनाई मे से विजय पाई थी। यह काम उनकी सैनिक योग्यता से ही हो सका था। डोनिफन की सेनाओ ने 'न्यू मैक्सिको' के इलाके मे से साधारण यात्रियो की भाँति रास्ता तय किया था। वे आजकल के सैनिक न लगते थे। जब जनरल टेलर ने डोनिफन को उसकी सफलता पर बधाई दी, तो उसके उत्तर से साफ पता चलता है कि यह सेना कितने गुणो वाली थी और इसके सैनिको और अधिकारियो मे कितना प्यार था।

"मैं कोई तौर-तरीके और चालें नही जानता था। यह लडके मेरे पास आते और हुक्म माँगते। जब मै अच्छा मौका देखता इन्हे हमला करने की आज्ञा दे देता। ये लोग तुरन्त ही तीर की भाँति निकल जाते। बस, मै इतना ही जानता हूँ।"

यह वकील किन्ही भले मानसो मे समझौता कराने लायक अधिक था, बजाय अपने सैनिको को हुक्म देने के। उसके नीचे काम करने वाले इस प्रकार के चरित्र और शिक्षा वाले अनेक लोग थे, जो उससे अधिक योग्यता से सेना का नेतृत्व कर लेते।

साक्रामेन्तो की लडाई मे उसके सैनिक हर दृष्टि से घाटे मे थे। मैक्सिको-

वासियो ने अपने ठिकाने ठीक से चुन लिये थे। वे एक ऐसी घाटी के पास खडे हो गये थे, जो उनके अपने आदिवासी शहर की ओर बढती थी। वहाँ सारा इलाका खाइयो और तोपखानो से भरा हुआ था। वे लोग सख्या मे भी पाँच गुने थे। उसी समय अमरीकावासियो के ऊपर एक चील मँडराने लगी। उनमे चारों ओर एक प्रसन्नता छा गई। शत्रु का तोपखाना वरसना शुरू हुआ। पहले तो ये लोग रुके रहे। पर, तब हुक्म मिलते ही चिल्लाते हुए आगे की ओर भाग निकले। आगे रास्ते मे ही एक शरावी अफसर ने रुकने का हुक्म दिया। सैनिको ने इस हुक्म को मानने मे आना-कानी दिखाई। तभी पीछे से एक साधारण सैनिक चिल्ला उठा, 'आगे वढो!' अब सारी सेना शेरो की भाँति दुश्मन पर टूट पडी। चार सौ शत्रु वही पर मार डाले गये और वाकी भाग निकले। उनकी सभी चीजें हथिया ली गई। उन चीजो मे रस्सियो से भरी एक गाडी भी थी, जो कि अमरीकन कैदियो को वाँधने के लिए लाई गई थी।

ये सैनिक और दूसरी सेनाओ के मुकाबले के थे। प्राइस के जिन सैनिको से हम अभी मिले थे, वे सव भी उसी तरह के सैनिक थे। एक दिन सुवह, जव हम एक चौडे चरागाह मे उतर रहे थे, हमने घुडसवारो का एक दल कुछ दूरी पर देखा। हम यहाँ आराम करना चाहते थे। पानी खोजने के लिए हमे नदी के किनारे की ओर मुडना पडा। वह जगह पगडण्डी से आधा मील दूर थी। यहाँ हमने कपडे फैलाये और जमीन पर ही वैठ कर तम्बाकू पीने लगे। शॉ वोला, 'अव जरूर गड़वड होगी। देखो, ये लोग यहाँ फिर आ गये। हमें चैन नही मिलेगी।" सव ही आवे से अधिक सैनिक अपनी वडी टुकडी से अलग होकर आ गये थे। पहले ने आते ही हम से हाल-चाल पूछा और घोडे से उतर कर जमीन पर वैठ गया। वाकी लोग भी उसके पीछे-पीछे आ गये और उसके समान ही जमीन पर वैठ गये। वाद में आने वाले कुछ सैनिक घोडो पर ही वैठे रहे। ये सव सेंट लुई मे भरती किये गये थे। इनमें से कुछ लोग वहुत ही असभ्य और कुछ कपटी दिखाई देते थे। पर अधिक लोग अच्छे और सभ्य दिखाई दे रहे थे। ये लोग सारे सैनिको की अपेक्षा अधिक सभ्य थे। उनके जूते अवश्य घुटनो तक लम्बे थे। उन्होने पोशाकें फौजी और सादी—दोनों प्रकार की—पहनी हुई थी। इनके अलावा

उनकी काठियो से तलवारें और पिस्तौलें भी लटक रही थी, उन्होने हमारे दल का उद्देश्य पूछा और हमसे भैंसे पाने की बात भी जाननी चाही। वे यह भी जानना चाहते थे कि उनके घोडे सान्ताफे की यात्रा कर भी सकेंगे या नही ?

इसके तुरन्त बाद ही प्रश्नो की एक नई बौछार हम पर होने लगी। दर्शक ने हमसे हमारे आने की जगह, जाने की जगह और खुद हमारे बारे में बहुत से सवाल करने शुरू कर दिये। उसने बहुत मोटे करघे की पोशाक पहनी हुई थी। उसका चेहरा बुखार के कारण उतरा हुआ था और सका ऊँचा और मजबूत चेहरा बडी तिरछी निगाह से युक्त था। घोडे की भद्दी काठी पर बैठे हुए वह और भी भद्दा लग रहा था। उसके पीछे भी उसी तरह के बहुत-से लोग खडे थे। इन्हें भी सीमान्त के आसपास के इलाके से भरती किया गया था। हमे कुछ देर बाद इनकी असभ्यता का पूरा अन्दाज़ा हो गया। ये हमारे चारो ओर भीड के रूप मे जमा हो गये और हमारे दूसरे अतिथियो को हटा कर आगे बढने लगे।

उनमे से एक ने मुझ से पूछा, "क्या आप कप्तान है ?"

दूसरे ने पूछा, "आप यहाँ किस मतलब से आये हैं ?"

तीसरा आदमी पूछ बैठा, "तुम घर लौट कर कहाँ बसोगे ?"

चौथा जवाब देता सा बोल पडा, "मेरे अन्दाज मे तुम व्यापारी हो" इन सब के साथ ही एक और आदमी ने मेरे पास बढकर बहुत धीमी आवाज़ में सवाल किया, "तुम्हारे साथी का क्या नाम है ?"

हर नये आने वाले ने ये ही सवाल पूछने शुरू कर दिये। अन्त मे हम लोग तग आ गये। हमारे उत्तर बडे उलटे-सीधे निकलने लगे। इससे वे सैनिक भी घबरा गये। हमने सुना कि वे हमे गालियाँ दे रहे थे। हम बैठे चिलम पीते रहे। रूज़ अपनी ज़बान बिना रुके चलाता रहा। वह अपनी सैनिक विशेषता को भूला नही था, इसलिए वह इन सैनिको में घुल-मिल कर बातें करने लगा। बहुत देर बाद हमने उसे अपने सामने जमीन पर बैठा कर बताया कि उसे शायद दुभाषिये, या हमारी बात समझाने वाले, का रूप धारण करना पडेगा। वह यह सुन कर बहुत खुश हुआ। हमने उसे देखा, वह इतनी तेज़ी से बात बनाने लगा कि वह बौछार हमारी ओर से बहुत

हद तक उस पर पडने लगी। कुछ ही देर बाद इस भीड के पीछे चार घोड़ों से खीची जाती हुई एक तोप भी आ गई। उसका लाने वाला घोड़ो पर ही बैठा हुआ, गर्दन सीधी करता हुआ बोला, "तुम लोग कहाँ से आये हो और तुम्हारा यहाँ क्या मतलब है ?"

एक टुकड़ी का कप्तान भी इन लोगो के साथ ही हमारी ओर आ गया था। उससे घबरा कर कुछ लोगो ने तुरन्त ही उसे जगह दे दी। एक ज़मीन से उठता हुआ, सुस्ता कर बोला, "अच्छा भई, अब तो बहुत देर हो रही है। हमें भी आगे बढना उचित होगा।"

उनमें से एक आदमी कुछ दूरी पर सुस्ता रहा था। वह वही से बोला, "मैं तो अभी नही चलूँगा।"

उसने फिर कहा, "कप्तान ! बहुत जल्दी मत मचाओ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "अच्छा तुम्हारी ही सही। हम कुछ देर और प्रतीक्षा कर लेंगे।"

बहुत देर बाद वे लोग जिस तरह आये थे, उसी तरह लौटने शुरू हो गये। हमने भी चैन की साँस ली। सबसे अधिक सुख देस्लारियर को मिला, क्योंकि भोजन ठंडा पडता जा रहा था। उसने तुरन्त ही सफेद गलीचा बिछा कर भोजन परोस दिया और कॉफी के लिए रकाबियाँ और प्याले सामने फैला दिए। रूज़ तो ऐसे मौको के लिए तैयार ही रहता था। वह सबसे पहले जगह हथिया कर बैठ गया। अपनी पुरानी आदत के कारण वह हर एक के नाम के आगे 'श्री' जोड़ना अधिक उचित समझता था। परन्तु इस प्रकार देस्लारियर को जिन्दगी में पहली बार, 'श्री देस्लारियर' के नाम से बुलाया गया। परन्तु, इतने पर भी रूज़ के लिए उसकी नफ़रत कम न हुई। रूज़ सदा ही रसोई के कामो में उल्टे-सीधे सुझाव दिया करता था। देस्लारियर को या तो हँसना आता था या गुस्से में बरसना। वह बीच की बात नही जानता था। वह रूज़ से कुछ कहता तो नही था, पर दिल ही दिल मे वह बुरा अवश्य मानता था। भोजन पर बैठ कर रूज़ बहुत खुश हो जाता था। इस समय वह भैंसे की खाल के लबादे मे ही बैठा हुआ था। उसने अपनी बाँहें ऊपर चढा ली और अपने सामने की घास पर ही चौकडी मार कर बैठ गया। उसने अपने पास

कॉफ़ी का प्याला रखा और अपना चाकू तैयार कर लिया। ज्यो ही उसने भैसे के मास को सामने रखा देखा, उसकी आँखें फटी सी रह गई। देस्लारियर भी सामने ही आ बैठा। हमने भोजन देख कर पूछा, "आज रोटियाँ काफी क्यो नही है?"

देस्लारियर के चेहरे के भाव पलटने लगे। उसने गुस्से मे रूज की ओर, बहुत कुछ कहते हुए, इशारा किया। रूज को बहुत अचरज हुआ। उसकी टूटी-फूटी अग्रेजी से हम पहचान गये कि रूज ने हमारे खाने के लिए रखी गई सारी रोटियाँ पहले ही साफ कर दी थी। रूज भौचक्का सा होकर देखने लगा। बहुत देर बाद उसने कहा कि यह सब झूठ है और यह भी वह नही समझ पाया कि देस्लारियर के क्रोध का कारण क्या है? बातो ही बातों मे हगामा-सा मच गया। रूज की अग्रेजी के सामने देस्लारियर कुछ बोल न पाया। वह गुस्से मे वहाँ से उठकर चला गया। वह जाते-जाते खच्चरो को दी जाने वाली एक गाली भी देता गया।

अगली सुबह हमने एक भैस और दो कटडो के साथ एक बूढे भैंसे को मैदान पर बढ़ते हुए देखा। उसके पीछे चार-पाँच भेडिये चरागाह की लम्बी घास मे से निकलते हुए आये। वे इस टोह मे थे कि कब कोई कटडा बिछुड कर पीछे रह जाए। भैंसा पूरी निगरानी रखता हुआ बढ रहा था और रुक रुक कर पीछा करने वालो को घूरता जाता था।

ज्योही हम दोपहर के आराम के स्थान पर पहुँचे, हमने पाँच या छ भैंसे एक ऊँचे टीले पर खडे हुए देखे। तेज़ी से घोडे दौडा कर हम उस जगह तक आ गये, जहाँ हमने रुकना था। यहाँ अपनी काठी जमीन पर गिरा कर मैंने घोडा चरने को छोड दिया। यहाँ से मैं उस टीले तक चुपके-चुपके छिपता हुआ पहुँचा और इसकी ढाल की ओर से बढने लगा। इसी ढलान पर मैं छिपकर लेट गया। मैं अपने से पाँच गज दूर के एक भैंसे पर निशाना साधने की कोशिश करने लगा। चमकती हुई बन्दूक की नाली उन पशुओ की निगाह मे पड गई और वे भाग निकले। वे इतने नजदीक थे कि उन पर ऐसी हालत मे गोली चलाना अच्छा न होता। इसलिए चोटी पर पहुँच कर मैने सामने की उजाड और ऊबड-खाबड धरती पर उनका पीछा शुरू किया। यहाँ बहुत गहरी एक खाई, बीचो-बीच, पडती थी। इसके दो ओर से छोटी-छोटी दो खाइयाँ

इसमे उतरती थी। वे भैसे इधर-उधर बिखर गये और मै उनमे से बहुतो को न देख पाया। मेरी निगाह मे केवल एक ही भैसा और एक ही भैस रह गये थे। कुछ देर वे किनारे के साथ-साथ दौडते रहे। कभी-कभी वे किसी गढे में छिप जाते और फिर सामने आ जाते। अन्त मे वे खुले मैदान मे निकल आये। यहाँ हरियाली न थी। यहाँ तक कि घास भी धूप मे झुलस कर सूख गई थी। जब-तब वह भैसा मेरी ओर मुड कर देख लेता। मै भी उसी क्षण ज़मीन पर गिर कर जड बन जाता। इस तरह मैने उनका पीछा लगभग दो मील तक किया। तब मुझे अपने सामने ही गुर्राने की भयकर आवाज़ सुनाई दी। मैने देखा कि सौ से भी अधिक भैसे एक टीले मे छिपे खडे थे। ये भी उधर ही भाग गये। ये उनसे न मिल कर बीच मे से सीधे निकलते गये। यह देख कर मैंने इनका पीछा छोड दिया और उन भैसो के समूह की ओर सरकता हुआ बढने लगा। बहुत पास पहुँच कर मै उन्हें देखने के लिए ज़मीन पर बैठ गया। उन्हें किसी प्रकार घबराया हुआ न पा कर मेरा हौसला बढ गया। ये सब वहाँ चर नही रहे थे। वहाँ घास भी नही थी। इन्होने इस जगह को खेल के मैदान के रूप मे चुना था। उनमे से कुछ ज़मीन पर लोट रहे थे और कुछ आवाज करते हुए एक दूसरे के साथ सिर टकरा रहे थे। कुछ और मुर्दो से बन कर चुपचाप खडे थे। उनके शरीर पर सिर्फ गर्दन की पीठ पर ही बाल थे। उनके पुराने बाल बसत मे झड गये थे और नये अभी निकले नही थे। कभी कोई भैसा अचानक ही मेरी तरफ आ कर मुझ पर देखने लगता और तब वह अपने साथी को मुड़कर टक्कर मारने लगता। फिर वह धरती पर लेट कर लोटने लगता और अपने खुर आसमान की ओर उछालने लगता। पूरी तरह सन्तुष्ट होकर वह आधा खड़ा होकर मेरी ओर देखने लगता। इस तरह देखते हुए उसका चेहरा धूल मे छिप जाता। कभी वह अचानक अपने चारो पाँवो पर धूल झाडता हुआ उठ खडा होता और अपनी पुरानी हरकतो पर सोचने जैसी शक्ल बना कर अपनी गर्दन नीचे झुकाये खडा रहता। मैंने मन-ही-मन कहा, "तुम सबमे अधिक भद्दे हो। तुम्हारा मर जाना ही अधिक अच्छा है।" ऐसा कहते हुए मैने उनमें से सबसे भद्दे भैसे को चुन कर उस पर गोली चला दी। एक-दूसरे के बाद मैने तीन भैसे, इसी तरह, मार डाले। दूसरे भैसे इससे बिलकुल भी न घबराये और पहले जैसे ही आनन्द मनाते

रहे। हेनरी ने हमे बताया था कि भैंसे के गुस्सा होने पर भी अगर आदमी बिलकुल शात बन कर पडा रहे, तब उसे अधिक खतरा नही रहता। इसलिए मैं भी बिना हिले-डुले जमीन पर बैठे-बैठे बदूक भरने लगा। जब मै इस तरह काम मे लगा हुआ था, तभी एक हिरण अचानक ही दौडता हुआ मुझ से पचास गज की दूरी पर आ गया। पतली गर्दन पीछे की ओर मुडे हुए छोटे-छोटे सींग और मेरी ओर ताकती हुई उसकी बडी-बडी काली आँखें, उसकी सुन्दरता का अदाजा दे रही थी। वह सामने खडा रहा। उन भद्दे भैंसो के पास खडा हुआ वह ऐसे दीख रहा था, जैसे कोई सुन्दर लडकी लुटेरो या दढ़ियल डाकुओ के बीच आ फँसी हो। उसके सामने भैंसे पहले से भी अधिक बुरे दीखने लगे। मैंने एक और भैंसे पर निशाना साधना चाहा, पर देखा कि मेरे पास एक भी गोली नही बची थी। अब मेरी यह बदूक लोहे की किसी भी छड़ के बराबर कीमत की ही हो गई थी। घायल भैंसो मे से अब तक एक-एक भैंसा गिरने से बच रहा था। मै उसकी ताकत समाप्त होने और गिरने की इन्तजार करता रहा। वह मेरी ओर देखता हुआ, अब भी वैसे ही खडा था। हेनरी की सलाह की उपेक्षा करके मै उसकी ओर बढा। बहुत सारे भैंसे मुड कर मेरी ओर देखने लगे। पर अब भी उस घायल भैंसे ने मुझ पर कोई हमला न किया। मै एक गहरी घाटी के किनारे पहुँच गया, ताकि हमले की हालत में वहाँ छिप सकूँ। यहाँ से मैने घूमकर एक पत्थर भैंसो की ओर फैंका, ताकि उन में कुछ हलचल मचे। वे टस से मस न हुए। उनके न डरने पर मै तग आ गया। तब अपनी टोपी को उछालता और चिल्लाता हुआ मै उनकी ओर तेज़ी से भागा। इस पर वे इकट्ठे हो कर भाग निकले। मरे हुए और घायल भैंसे पीछे ही रह गये। जब मैं डेरे की ओर मुडने लगा, घायल भैंसा भी लड़खडा कर गिर पडा और मर गया। लौटते हुए मेरी चाल कुछ तेज़ हो गई। मुझे यह ख्याल आ गया कि पौनी लोग भी इधर ही होगे और कहीं वे मुझ पर हमला न कर बैठे। मैने रास्ते मे दो-तीन कमजोर भैंसो के अलावा और कोई जीवित चीज़ न देखी। जब मैं डेरे मे पहुँचा तो साथियो को आगे के कूच के लिए तैयार पाया।

शाम के समय हम नदी के तट से कुछ ही दूरी पर रुके। आधी रात के समय जब हम सब सो रहे थे, मेरे सबसे पास के साथी ने अपने हाथ से छूकर

मुझे जगाया। पर, साथ ही चिल्लाने से मना कर दिया। तारे चमक रहे थे। मैंने अपनी आँखें खोली और दूसरी ओर जलती हुई आग के पास एक बड़े भारी भेडिए को घूमते और कुछ सूँघते हुए देखा। अपने कम्बल से हाथ निकाल कर मैंने अपनी बदूक का खोल निकाला। मेरी इस हरकत से वह भेडिया भाग निकला। मैंने भी उछल कर पीछे से गोली चला दी। वह मुझ से तीस गज की दूरी पर रहा होगा। उस चुप्पी मे गोली की इस गूँज ने सबको जगा दिया। उनमें से एक बोल पडा, "तुम ने उसे मार लिया है।"

मैंने कहा, "नही, मैने नही मारा। वह तो उधर दौडता जा रहा है। वह देखो, नदी के साथ-साथ।"

"तब वे दो रहे होगे! क्या तुम नही देख रहे कि वहाँ एक मरा पड़ा है?"

हम वहाँ तक गये और हमने देखा कि वह भैंसे की एक सफेद खोपडी पडी थी। मै निशाना चूक गया था। बुरी बात तो यह हुई थी कि मैने इन मैदानो के सफर का एक नियम तोड डाला। रात के समय गोली की आवाज दुश्मन को खीच लाने के लिए बहुत काफी होता है।

सुबह घोडो को कस कर सब लोग तम्बाकू पीने से निबट कर चलने के लिए तैयार हो गये। सुबह की सुन्दरता ने सब मे उत्साह भर दिया था। एलिस भी उत्साह से भर गया था। जिमगुर्नी अनेक कहानियाँ सुनाने में लगा हुआ था। भैंसे रास्ते में भरे हुए थे। कुछ देर बाद इन का एक बड़ा समूह बाईं ओर के पहाडो की ओर भागता दिखाई दिया।

शॉ बोला, "यह मौका चूकने लायक नही है।" हमने अपने घोडो को एड लगाई और पूरी तेज़ी के साथ उनके पीछे भाग निकले। शॉ ने दोनो गोलियो से दो भैंसे मार गिराये। मैने सारे रेवड़ में से एक भैंसे को अलग कर लिया और उस पर गोली चला दी। इस पिस्तौल की छोटी-सी गोली ने बहुत गहरा वार किया, पर उसका असर तुरन्त न हुआ। भैंसा बहुत दूर तक भागता चला गया। मैने बार-बार उस पर बची हुई पिस्तौल तानी। तीन या चार बार चलाने पर भी, यह ठीक से न चली। इसे थैले मे रखकर खाली पिस्तौल को भरना शुरू किया। मै अब भी भैंसे की बगल मे चल रहा था। उसके जबड़ो से झाग निकल रही थी। उसकी जीभ बाहर निकल आई थी।

पिस्तौल भरने से पहले ही वह मुझ पर उछला और तेज़ी से पीछा करने लगा। मेरे लिए दो ही रास्ते रह गये थे, या तो मै भाग निकलूँ या मारा जाऊँ। मैंने भागना शुरू किया और भैंसा मेरा पीछा करने लगा। इसी बीच मैं पिस्तौल भर चुका था। मैंने मुड कर देखा कि भैंसा मेरे घोडे की पूँछ से अब पाँच-छ गज की दूरी पर ही था। ऐसे समय गोली चलाना बेकार रहता, क्योकि खोपडी पर चलाई गई गोली टकरा कर चपटी पड जाती है। बाईं ओर को झुक कर मैंने अपनी घोडी को पूरी तेजी के साथ उधर ही मोड लिया। भैंसा अन्धा हो कर बढ रहा था, इसलिए वह न मुड सका। मैंने पीछे मुड कर देखा, उसकी गर्दन और कंधे सामने आ गये थे। इसलिए कोठी पर बैठे-बैठे ही मुड कर मैंने एक गोली तिरछी दिशा मे, उसके शरीर मे से होती हुई, चला दी। मेरा पीछा छोड कर वह तुरन्त ही ज़मीन पर गिर पडा। कोई अग्रेज यात्री ऐसी हालत को खतरे की हालत मान बैठता है। पर यह उसकी गलती है। भैंसा ऐसी दशा मे कभी भी बहुत देर तक पीछा नहीं कर सकता। यह भी केवल दो-तीन मिनट ही और पीछा कर पाता।

अब हम एक ऐसे इलाके मे आ गये थे, जहाँ हमे चारो ओर से चौकन्ना रहना जरूरी हो गया था। हम रात में पहरा बारी-बारी से देने लगे और सभी साथी अपनी बदूक भर कर और उसे बगल मे रख कर सोने लगे। एक दिन सुबह हम लोग चौंक गये, जब हमने एक बडे आदिवासी डेरे के निशान देखे। सौभाग्य से यह हम से एक सप्ताह पहले ही उजाड हो गया था। अगली शाम हमने कुछ अधिक ताजा आगे देखी। इससे हमे कुछ बेचैनी हुई। अन्त मे हम 'कैंचेज' पहुँचे। यह बहुत खतरनाक जगह है। यहाँ रेतीली पहाडियाँ, खाइयाँ और फ़टाव जगह-जगह मिलते हैं। यहाँ हमने 'स्वान' नाम के उस गोरे की कब्र देखी, जिसे यहाँ पर पौनी लोगो ने मारा था। इस समय उसकी कुछ हड्डियाँ ही यहाँ पडी रह गई थी, क्योकि आदिवासियो और भेडियों ने इन्हें कई बार छेडा था।

अगले कुछ दिन तक हमे प्राइस की सेनाओ की कुछ टुकडियाँ मिलती रहीं। उनके घोड़े अक्सर छूट कर हमारी तरफ आ जाते। एक दोपहर हमें उनके तीन छूटे हुए घोडे नदी के किनारे चरते हुए मिल गये। शाम को जब हम डेरा डालने के लिए रुके, तो जिम ने बताया कि आस-पास और भी घोडे

दिखाई दे रहे है। इस समय काफी अँधेरा और ठंड हो गई थी। हलकी-हलकी बरसात भी होनी शुरू हो गई थी। हम बाहर निकल आये और घटा भर पीछा करने के बाद नौ घोडो को पकड लाये। उनमे से एक पर काठी और लगाम सजी हुई थी। उस पर पिस्तौलें और कम्बल आदि भी टँगे हुए थे। सुबह जब हमने यात्रा शुरू की, तो हमारा यह कारवाँ पहले से अधिक अच्छा लगने लगा। हम चलते रहे। तभी दोपहर बाद पीछे से तीन घुडसवार दौडते हुए आये और उन्होने अपने दल के सभी घोडे वापिस माँगे। हमने उन सब को ही लौटा दिया, हालांकि एलिस और जिम इस बात के विरुद्ध थे।

हमारे घोडे इस समय तक थक चुके थे। हमने उन्हें शेष दिन-भर आराम देना तय कर लिया। दोपहर के समय हम नदी के किनारे एक घास के मैदान मे उतरे। खाना खाने के बाद शॉ और हेनरी शिकार पर निकल गये। हमारे और साथी डेरे के आस-पास ही सो रहे। मै लेट कर गाडी की छाया में कुछ पढता रहा। ऊपर देखते ही मैंने पाया कि मुझ से लगभग एक मील दूर मैदान मे एक अकेला भैसा चर रहा है। मैं चुपचाप अपनी बदूक लेकर उस ओर चल पडा। ज्यो ही मे उसके पास तक आया, मे जमीन पर सरकने लगा और उसमे सौ गज के दूरी तक पहुँच गया। मै यहाँ घास पर बैठ कर तब तक इन्तजार करने लगा, जब तक वह घूम कर मौत का वार सहने के लिए तैयार न हो जाए। वह काफी बूढा और सधा हुआ था। उस मौसम के प्यार और लडाइयो को वह पूरा कर चुका था। इस समय वह थका हारा, सारे समूह से अलग होकर, अपनी खोई ताकत को दुबारा हासिल करने के लिए चर रहा था। वह बहुत ही पतला पड़ चुका था। उसकी गर्दन भी झुर्रियो से भरी पटी थी। उसकी खाल हाथी की खाल से भी अधिक मोटी और खुरदरी हो चुकी थी। उस पर जगह-जगह कीचड़ लिपटा हुआ था। घूमते हुए उसकी एक-एक पसली साफ दिखाई दे रही थी। वह एक उदास और प्यारहीन असम्य की भाँति भटकता हुआ नजर आ रहा था। मुझे पहले-पहल पहुँचता देख कर उसने बहुत भयकर नज़र से ताका। पर, वह फिर मे चरने लगा, जैसे उसे मेरी परवाह ही न थी। कुछ ही देर बाद अपनी होश सँभालते ही उसने फिर से सिर उठाया और एकदम बहुत तेज़ी से मेरी ओर बढा। मुझे तुरन्त ही भागने की सूझी। परन्तु इससे बहुत बुरा परिणाम निकलता।

इसलिए मैने वैसे ही चुपचाप बैठे हुए उसकी नाक के ऊपर निशाना साधा। वह लगभग तीन चौथाई रास्ता पार कर चुका था। मैं गोली दागने ही वाला था कि वह तुरन्त रुक गया। अब मैं चैन से उसे देखने लगा। उसके अगले हिस्से पर काफी अधिक बाल उगे हुए थे। केवल उसके पाँव ही साफ दिखाई दे रहे थे। उसके सीग नीचे तक चीरे गये थे। उसके माथे पर भी लडाई के दो-तीन निशान थे। मुझे लगा कि वह लगभग पन्द्रह मिनट तक मुझे घूरता वहाँ खडा रहा। अपनी ओर से मैं भी चुप रहा। मैंने उससे समझौता करना चाहा। मैंने मन-ही-मन कहा, "मित्र! अगर तुम मुझ पर हमला नही करोगे, मै भी तुम्हें कुछ नही कहूँगा।" बहुत देर बाद लगा कि उसने अपना खूनी इरादा बदल लिया है। बहुत धीरे-धीरे उसने घूमना शुरू किया। धीरे-धीरे उसकी बगल सामने आने लगी। सब ओर कीचड लिपटा हुआ था। मैं अपना इरादा भूल गया और लोभ न रोक सकने के कारण मैंने गोली दाग दी। यह काम पिस्तौल से भी चल सकता था। वह वूढ भैंसा उछला, घूमा और दूर मैदान पर भाग निकला। वह कुछ दूर तक भागा। पहाडी पर भी कुछ दूर तक चढ गया। पर, अन्त मे वही गिर कर मर भी गया। उन पहाडियो मे ही एक और भैंसे को मार कर मैं डेरे पर लौट आया।

दोपहर के समय व्यापारी गाडियो का एक बहुत बडा समूह दिखाई दिया। इस दिन चौदह दिसम्बर थी। सारा मैदान उन सफेद गाडियो से ही छाया हुआ दिखाई दे रहा था। कुछ लाग घोडो पर और कुछ पैदल ही चल रहे थे। वे सब हमारे पास की चरागाह पर रुक गये। उनके मुकाबले मे हम और हमारी गाडी बहुत ही छोटे लगने लगे। रूज उनकी तरफ चला गया और सान्ताफे के उन व्यापारियो से कुछ बिस्कुट और कुछ शराब ले आया। मैंने उससे पूछा कि वह यह सब कहाँ से लाया है। उसने बताया कि वह बहुत से व्यापारियो को जानता है। फिर डाक्टर डाब्स भी वही थे। मैंने उस डाक्टर के बारे मे पूछा। उसने बताया कि वह सेंट लुई का प्रसिद्ध डाक्टर था। पिछले दो दिनो से मेरी पुरानी बीमारी फिर से हरी हो गई थी। इस बार मुझे दर्द और कमजोरी बहुत अधिक हो गई थी। मेरे पूछने पर रूज ने बताया कि वह डाक्टर बहुत ही अच्छा इलाज करता है। उस पर विश्वास न करके भी

मैंने सोचा कि मै उस डाक्टर से सलाह कर ही लूँ। डेरे की ओर जाकर मैंने डाक्टर को गाडियो की छाया मे सोते पाया। उसे देखकर मुझे बहुत ही अजीब-सा लगा। मैने बहुत महीनो बाद इस प्रकार की भद्दी शक्ल का कोई आदमी देखा था। उसका टोप गिर गया था और पीले बाल उलझे हुए-से दिखाई दे रहे थे। उसने अपनी एक बाँह को तकिया बनाया हुआ था। उसके पाजामे घुटनो पर सलवटो से युक्त थे। उसके शरीर पर घास के छोटे-छोटे टुकड़े लगे हुए थे। वह उसी घास मे काफी देर से लोट-पोट होकर सुस्ता रहा था। उसके पास ही एक मैक्सिकोवासी खडा था। मैने उसे इशारा करके डाक्टर को जगाने के लिए कहा। डाक्टर तुरन्त ही उछलकर सीधा बैठ गया और अपनी आँखें मलता हुआ चौंककर हँसने लगा। मुझे उसे परेशान करने पर अफसोस हुआ। मैंने उसे अपने आने का कारण बताया। उसने कुछ देर देखने के बाद बहुत गम्भीरता से बताया कि मेरा अन्दर का सारा ढाँचा ही गड़बड हो गया है। मैने उसके किसी खास गडबड के बारे में जानना चाहा। इस प्रश्न के उत्तर में उसने मुझे बताया कि मेरा जिगर खराब है। इसके लिए उसने मुझे दवाई देने को कहा। फिर पीछे की ओर ढकी हुई गाड़ियों में से एक मे जाकर वह एक डिब्बा ले आया और उसे खोलकर मुझे उसने एक पुडिया दी। मेरे पूछने पर उसने बताया कि वह 'कैलोमल' था।

इन हालतो मे मै कोई भी दवाई लेने को तैयार था। यह मुझे शायद कुछ लाभ ही करती। उस रात डेरे पर पहुँचकर मैंने रोटी के बदले वह जहरीली दवाई खानी ही मुनासिब समझी।

यात्रियो का वह डेरा ध्यान देने लायक था। उन्होने हमें नदी के किनारे खास सड़क से सफर करने को मना किया, क्योकि उसमे जान का बहुत अधिक खतरा था। इस जगह नदी मुड गई थी। यहाँ से एक छोटी पगडंडी निकल गई थी। यह पहाडी राह सीधी, मैदानो को पार करती हुई, साठ या सत्तर मील तक चली गई थी। इस पर सात या आठ मील चलने के बाद हम एक छोटी-सी धारा के किनारे पहुँचे। हमने यही पर डेरा डाल दिया।

हमने जगह बहुत सावधानी के साथ नहीं चुनी थी। पानी यहाँ बहुत गहराई में था और इसके किनारे बहुत अधिक ढलवाँ और ऊँचे थे। गहराई मे कुछ घास भी उगी हुई थी। हमने वही पर अपने घोड़ो को बाँध दिया।

खुद ऊपर मैदान मे ही अपना डेरा डाला। हमारे घोडो को भगा ले जाने या हम पर हमला करने का यहाँ सबसे अच्छा मौका था। अँधेरा होने के बाद हमनें देखा कि खाना खाते-खाते रूज़ ने हेनरी के कधे से परे की ओर बहुत ही ध्यान के साथ कुछ देखा। दूर अँधेरे मे हमनें कोई एक काली-सी चीज़ झूमती-सी अपनी ओर आती देखी। हेनरी बाँहें फैलाकर हँसता हुआ उछला और चिल्ला पडा। यह हमलावर एक बूढा भैंसा था, जो अपनी मूर्खता के कारण सीधा हमारे डेरे मे ही घँसा चला आ रहा था। हमे उसे रोकनें और भगा देने के लिए कुछ देर चिल्लाना और टोपो को उछालना पडा।

उस रात पूरनमासी का चाँद अपने पूरे उभार पर था। तुरन्त ही काले बादल इसे घेरने लगे। इसलिए कभी अँधेरा और कभी रोशनी हो जाती। रात आने तक चारो ओर से एक बहुत ज़ोर का तूफान आया। हमारा डेरा उखड कर उड जाता, अगर हमनें एक गाडी डेरे के साथ ही इस तेज़ी को कम करनें के लिए न खडी कर दी होती। बहुत देर बाद तूफान रुका, पर वर्षा होती रही। मै लगभग सारी रात ही जागता हुआ। तम्बू पर पडने वाली वर्षा की बूँदो की आवाज़ सुनता रहा। हमारे डेरे मे सिलाव भर गई थी। इससे कुछ और परेशानी हुई। बारह बजे के लगभग शॉ बाहर घुप अँधेरे मे पहरा देने के लिए गया। मुनरो भी चौकन्ना था। लगभग दो घण्टे बाद शॉ चुपचाप अन्दर आया और हेनरी को छूकर उसनें कुछ तेज़ आवाज मे जल्दी ही बाहर आने को कहा। मेरे पूछने पर उसने बताया कि शायद आदिवासी उधर से निकल रहे है। पर, उसने मुझे लेटा रहने को कहा, जब तक वही ज़रूरत समझकर मुझे बुला न ले।

वह और हेनरी साथ-साथ ही बाहर निकल गये। मैंने भी अपनी बदूक थैले मे से निकाल ली और उसे पूरी तरह भर लिया। अधिक दर्द होने के कारण मै फिर उसी तरह लेट गया। शॉ ने लौटकर बताया कि सब कुछ ठीक ठाक था। वह आ कर अपनी जगह लेट गया। हेनरी पहरे पर खडा था। सुबह उसने मुझे शाम के खतरे की बातें बताईं। मुनरो की सावधान आँखो ने बहुत दूर से ही कोई काली सी चीज खड्ड मे घूमती हुई पहचान ली थी। घोडो के बीच चलने वाली यह चीज चारो हाथो-पाँवो के बल पर

चलने वाले आदमी जैसी दिखाई दे रही थी। शॉ और वह लेटे ही लेटे किनारे तक गये और अँधेरे मे ही समझ लिया कि यह चीज आदिवासी ही हो सकते थे। शॉ ने लौट कर हेनरी को बुलाया। तीनो ही जगहें चुनकर लेट गये। हेनरी की आँखें ऐसे मौक़ो पर चौकन्नी रहती थी। कुछ देर बाद उसने पहचान लिया कि वह चीज कुछ और नही, भेड़िये थे।

यह बहुत अजीब बात थी कि डेरे के इतना पास बँधे होने पर भी घोडे ऐसी चीज के घुस आने पर कभी नही भड़के। लगता है भेडियो का उद्देश्य उनकी खोजी रस्सियो को चबाना ही रहा होगा। इस यात्रा मे अनेक बार मेरे घोडे की खोजी रस्सी रात के इन हमलावरो ने काट डाली थी।

—:o:—

२७ : बस्तियों की ओर

अगली सुवह गर्मी वहुत अधिक थी । हम सुबह से शाम तक विना एक भी पेड, झाडी और पानी को देखे बढते रहे । हमारे घोडे और खच्चरें हम से भी अधिक परेशान थे । परन्तु शाम होते ही उनकी चाल ठीक हो गई और उनके कान खडे हो गये । पानी अब अधिक दूर नही था । जव हम एक चौडी और उथली घाटी के किनारे तक पहुँचे, तो अचानक ही एक मनचाहा नजारा सामने दिखाई दिया । घाटी के तले पर एक धारा चमकती हुई वह रही थी, परन्तु उसके किनारे अनेको तम्बू गडे हुए थे और सैकडो पशु चरागाहो मे चर रहे थे । इन सेनाओ के अलावा वहुत सी गाडियो की कतारें भी सामने की ढलानो पर चलती हुई दिखाई दी, जिनमे औरत, मर्द और वच्चे बैठे थे । इस सैनिक और घरेलू ढग के, मिले-जुले, जलूस मे बढने वाले ये लोग मोर्मन जाति के थे । ये लोग कैलिफोर्निया की ओर जा रहे थे । इन्हें अपने सामने पाकर खुश होने की वजाय, हम अचरज मे ही डूब गये । इनसे बच कर अपनी जगह ढूँढने के लिए हम लोग दो फर्लांग आगे निकल गये । परन्तु, यहाँ पर भी मोर्मन और मिसूरी निवासियो ने हमे घेर लिया । इन लोगो का बडा अफसर हमे देखने आया और कुछ देर हमारे साथ ही खेमे पर रुका रहा ।

सुवह सारा इलाका धुध से भर गया । हम लोग सदा ही जल्दी उठ जाते थे । उस दिन तैयार होने से पहले ही कुछ आदमियो की आवाजें हमे चारो ओर सुनाई देने लगी । गुजरते हुए हमने देखा कि चारो ओर के तम्बू गिराये जा रहे थे और सेनाओ की कतारें खडी होनी शुरू हो गई थी । इसी बीच औरतो और वच्चो की चीखें और मोर्मन लोगो के ढोलो और वाजो के स्वर भी इस सब मे मिल-जुल गये थे ।

इस समय से लेकर यात्रा के अन्त तक प्राय हर रोज ही हमे किसी न किसी सैनिक टुकडी और सरकारी गाडियो के दर्शन हो जाते । ये सब सान्ताफे की ओर जाने वाली सेनाओ के लिए सामान लेकर जा रहे थे ।

रूज को खतरे से हमेशा घवराहट होती थी । एक दिन वह शाम के समय

एक ऐसे भयंकर साहस में जा फँसा, जो हमारे दल के किसी और आदमी ने कभी नही किया था। पहाडी राह को छोडने के अगले रोज़ हमने नदी किनारे डेरा डाला। शाम के समय हमने बहुत-सी गाड़ियो को, लगभग तीन मील दूर, उसी राह पर डेरा डाले देखा। हालाँकि हमने उन्हें साफ़-साफ देख लिया था, पर हमारी छोटी गाडी उनकी निगाह से बच गई थी। यह बात बाद में साबित भी हो गई। रूज़ को कुछ शराब की इच्छा जग पडी थी। इसलिए वह अपने नये बदले हुए घोडे पर चढकर उन लोगो की ओर निकल गया। कुछ घटे बीत जाने पर भी वह न लौटा। हमने समझ लिया कि वह भटक गया है या किसी आदिवासी ने उसे पहचान लिया होगा। सबके सो जाने पर मै पहरे पर जागता रहा। बहुत रात वीतने पर बहुत दूर मे मुझे एक आवाज़ प्रणाम करती सुनाई दी। रूज़ और उसका घोडा जल्दी ही निकल आये। वह बहुत जल्दी-जल्दी आया और उतर कर गाडी के पास ही बैठते हुए उसने यह कहानी सुनाई।

डेरा छोडते समय उसे समय का कुछ ध्यान न रहा था। जब वह उन लोगों के पास पहुँचा, तब अँधेरा पूरी तरह घिर आया था। वे लोग गाडियो के घेरे के बीच बैठे हुए आग सेंक रहे थे। उनकी बन्दूकें भी उनकी बगल में रखी थी। उसने सोचा कि कोई खतरा न आने देने के लिए अधिक अच्छा होगा, वह दूर से ही चिल्लाकर अपना परिचय दे दे। इसलिए उसने बहुत ऊँची आवाज़ लगा कर उन्हे चौंका दिया। उसके इस चीखने का असर बिल-कुल उलटा ही हुआ। इस प्रकार की भयकर और भद्दी आवाज़ को सुनकर उन लोगों ने समझा कि सारे पौनी लोग एक साथ उन पर टूट पडे हैं। घबरा कर वे उछले और बन्दूके लिए हुए सँभल कर गाडियो के पीछे, या ज़मीन पर, लेट कर सावधान हो गये। एक ही क्षण में बीस बन्दूकें उस डरे हुए साथी की ओर तान दी गई। अब वह उन्हें दिखाई देने लगा था।

एक मुखिया ने कहा, "वे आ रहे है! जल्दी ही उस आदमी पर गोली चला दो।"

रूज़ एक दम डर कर चिल्ला उठा, "नहीं, नही! गोली मत चलाओ! मै तुम्हारा मित्र अमरीकी ही हूँ।"

"क्या तुम सचमुच दोस्त हो? तब तुम इस तरह आदिवासियो जैसे क्यो

चिल्ला रहे हो ? अगर तुम आदमी हो तो सीधे से चले आओ ।"—एक आवाज़ ने चिल्ला कर कहा ।

उनके नेता ने कहा, "अपनी बन्दूकें उधर ही ताने रखो ! हो सकता है यह धोखेबाज़ हो ।"

रूज़ वहाँ पहुँचते हुए बहुत ही घबरा गया । उसकी आँखो के आगे अब भी चमकती हुई बन्दूको के कुन्दे दिखाई दे रहे थे । अन्त मे वह अपना सही रूप समझाने मे सफल हो गया और उन लोगो ने उसे अपने बीच आने की छूट दे दी । उसे शराब तो न मिली, पर क्योकि उसने स्वय को असमर्थ और बेसहारा बताया था, इसलिए उन लोगो ने उसे चावल, बिस्कुट और मीठा आदि दे दिये ।

सुबह नाश्ते के समय उसने यह कहानी एक बार फिर से दोहरा दी । हम इस पर पूरा विश्वास करने को तैयार न थे, पर बहुत पूछने पर इसमे कोई गलती भी न निकाल सके । उनके डेरो को पार करते समय हमे इस बात की सच्चाई मे पूरा विश्वास हो गया ।

एक दो दिन बाद हमे उसी प्रकार की गाडियो का एक और दल दिखाई दिया । हेनरी और मैं शिकार के लिए कुछ आगे निकल चले । उस दिन के बाद हमे किसी और भैंसे के टकराने की उम्मीद न थी । इसलिए हमने उस दिन के अन्तिम बार शिकार मारने की सोची, ताकि कुछ ताजा मास मिल सके । ये भैंसे इतने बिगडे हुए थे कि हम सारी सुबह शिकार करके भी कुछ न पा सके । दोपहर के समय जब हम 'काऊ क्रीक' के पास पहुँचे, हमने भैंसो का एक बडा भारी जत्था चरते हुए देखा । यहाँ नदी दोनो तरफ घने पेडो से घिरी हुई है । इसलिए पार का दृश्य नही दिखाई दे सकता था । जब हम इसके बहुत नज़दीक पहुँचे, तो देखा कि वह एक बहुत गहरी खाई मे से होकर बह रही है । हम नीचे उतर कर बढने लगे । मैंने घोडो को पकड लिया और हेनरी सरकता हुआ भैंसो की ओर बढा । मैंने देखा कि वह निशाने की पहुँच मे जाकर बैठ गया और बन्दूक भर कर शिकार चुनने लगा । एक मोटी भैंस पर गोली चलने ही वाली थी कि अचानक ही नदी किनारे से एक दम ही बहुत-सी गोलियो की बौछार उठ पडी । बीस के लगभग लम्बी-लम्बी टाँगो वाले मिसूरी-निवासी उधर उछले और भैंसो के पीछे दौडते हुए गायब हो गये ।

ये लोग धारा पार करके भैंसो के सौ गज़ के अन्दर ही पहुँच गये थे। शिकार का इससे अच्छा मौका कभी न मिला था। वे सभी अच्छे निशानेबाज़ थे। उन्होने एक साथ ही गोलियाँ भी दागी। किन्तु एक भी शिकार नही गिरा। सच यह है, कि जानवर मारना आसान नही है। उन्हें मारने के लिए उनके शरीर की बनावट को समझना बहुत जरूरी है। नया शिकारी, इसी लिए, बहुत कम सफल हो पाता है। ये सैनिक भी एक दम घबरा गये। खास कर तब जब हेनरी ने उन्हे बताया कि अगर वे लोग दस मिनट भी और चुप रहते तो वह उनके सारे दल के लिए काफी मास जुटा देता। हमारे साथियो ने इस बौछार को सुनकर यह समझा कि कुछ आदिवासियो ने हम पर हमला बोल दिया है। शॉ तेजी से यह पता करने आया कि हम अब तक जिन्दा है या नही?

इस नदी के पास हमें पके हुए अगूर और अलूचे बहुत अधिकता से उगे मिले। यहाँ से कुछ दूरी पर 'लिटिल अरकंसास' के पास हमने एक अन्तिम भैंसा देखा। यह अकेला ही घूम रहा था। यहाँ से आगे सारे इलाके का ढाँचा रोज ही बदलता हुआ नजर आने लगा। हम अपने पीछे एक बडा उजाड और ऊबड़-खाबड मैदान छोड आये थे। वहाँ घास तक कम उगी हुई मिलती थी। हमारे सामने के मैदान यहाँ पर बहुत अधिक वनस्पतियो और फूलो से लदे हुए थे। भैंसो के स्थान पर हमे मैदानी मुर्गियाँ बहुतायत से मिलने लगी। हमने अपनी राह बिना छोडे ही उनमे से अनेको मार ली। तीन या चार दिन मे हमे 'कौंसिल ग्रोव' के जगल और चरागाह दिखाई देने लगे। इन जगहो से गुजरते हुए हमे नीबू, सनोबर, अलूचा, अखरोट आदि अनेको किस्म के फलो के पौधे मिलने लगे, जिन्हें देखकर हमे बहुत आनन्द मिला। अंगूर तो इस इलाके मे बहुत अधिक होते थे। हम लोगो की आवाज और हमारी बन्दूको की आवाज चारो ओर के शात जगल में जब-तब गूँज जाती थी। हम बहुत दुःख के साथ एक बार फिर से मैदान पर निकल आये। अब वस्तियाँ यहाँ से कुल सौ मील की दूरी पर रह गई थी। यह सारा मैदान हरियाली से भरा हुआ था। जगह-जगह टीले और ऊँचे उठे हुए पेड दिखाई दे जाते थे। ये पेड किसी चश्मे या धारा के आस-पास होते थे। यह वही मैदान है, जहाँ किसी कवि या उपन्यासकार की कल्पना को बल मिलता है। हमारे रास्ते का खतरा समाप्त हो चुका था। अब हमे उस इलाके के आदिवासियों से भी कोई डर न था।

ये सभी लोग सुधार की ओर बढ रहे है। हमारा बहुत ही अच्छा भाग्य था कि हमें इस इलाके से बच कर चले आये थे, जहाँ पशु, सामान या अपनी जान का खतरा हमेशा ही बना रहता है। सारे रास्ते भर हमे किसी प्रकार की कोई हानि न हुई। हमारी एकमात्र हानि एक खच्चर की हुई थी, जो एक प्रेरियर साँप के काटे जाने से मर गया था। हमारे सीमान्त पर पहुँचने के तीन हफ्ते बाद ही अरकसास के रास्ते पर पौनी और कमाचे लोगो ने लगातार अपने उपद्रव शुरू कर दिए थे। अगले छ महीने तक हर आने-जाने वाले को उनके हमलों का सामना करना पडा।

अब डायमण्ड स्प्रिंग, रॉक क्रीक, एल्डर ग्रोव और दूसरे स्थान आसानी से जल्दी-जल्दी बीतने लगे। हमे 'रॉक क्रीक' पर पहुँच कर कुछ सरकारी गाड़ियाँ मिलीं, जो एक बहुत ही बूढे आदमी के अधिकार मे चल रही थी। उसे इस आयु में अपने घर पर आराम करना चाहिए था, परन्तु न जाने उसकी मौत उसे ऐसी विपदा मे क्यो घसीट लाई? मुझे लगता है वह फिर कभी वापिस न लौट सका होगा, क्योंकि वह उसी रात एक बीमारी की शिकायत कर रहा था। वह रोज ही कमजोर होता जा रहा था। इससे कुछ दिन पहले ही भूखे भेडियो ने एक और बूढे आदमी के शरीर की दुर्गत बना दी थी।

इसके कुछ ही समय बाद हम लीवनवर्थ के किले की ओर जाने वाली एक छोटी पगडंडी पर आये। यहाँ से कुल एक दिन का ही रास्ता उस किले तक का बचता था। रूज ने यहाँ ही हमसे छुट्टी ली और वह तेजी से उस ओर निकल चला। उसकी इच्छा थी कि वह हम से पहले ही वहाँ पहुँच कर अपनी 'कमाल की सैनिक सेवा' के लिए तनखाह ले सके। इसलिए वह बहुत प्यार भरी बिदाई के बाद तुरन्त ही निकल चला। उस उदासी भरी बरसाती साँझ को हमने अपना अन्तिम डेरा डाला।

सुबह हम फिर सवार होकर आगे चले। पहली रात की तेज वर्षा के बाद भी यह सुबह बहुत सुहानी थी। शायद हमारे बस्ती मे पहुँचने के समय की यह सुबह सर्दियों की सब से अधिक सुहानी सुबह रही होगी। रास्ते भर म कुछ-कुछ सभ्यता को अपनाने वाले शावानू लोगो के इलाके में से गुजरे। यह इलाका उपजाऊ मैदानो और अमराइयो से भरा पडा था। पेडो के नीचे

आदिवासियो के लकड़ियो के घर बने हुए थे। हर खेत और चरागाह जमीन के उपजाऊ होने का सबूत दे रही थी। मक्की हवा में लहराती हुई, पकी और सूखी खडी थी। इसके पीले भुट्टे दूर से ही चमक रहे थे। पत्ते पीले और भूरे पड़ चुके थे। चारो ओर कोयलें और मैनाएँ झाडियो में उड रही थी। हर चीज बता रही थी कि हम अपने ही सभ्य इलाको मे आ गये हैं। मिसूरी के किनारे के जगल हमारे सामने आने लगे और हम उनके बाहर से होते हुए झाडियो मे बनी एक राह से गुजरे। जाते हुए भी हम इसी राह से गुजरे थे। पर तब बसन्त थी और नज़ारा बिलकुल उलटा था। उस समय जगली सेवो के पेड खूब खिले हुए थे और उन पर मोटे और लाल फल लगे हुए थे। उस समय चारो ओर ऊँची-ऊँची घास भी उगी हुई थी। बेलें गुलाबी अगूरो से लदी हुई थी। चारो ओर अनेक किस्म के फूल खिले-हुए थे। परन्तु अब सभी कुछ उलटा था। अब चारो ओर पतझड़ का-सा नजारा था। अब हम जगल मे से होकर बढने लगे। इसमें कही धूप और कही छाया, शाखाओ मे से छनती हुई, पड़ रही थी। दोनो तरफ घने पत्तो के कारण किरणे धरती पर नही पहुँच पाती थी, परन्तु पत्तो से छन-छन कर हरी-सी चमक अवश्य धरती पर पहुँच रही थी। पेड़ों पर से ही गिलहरियाँ हमारी ओर देखकर शोर करने लगी। कोयलो के छोटे-छोटे बच्चे नीचे गिरे पत्तो पर सरसराते हुए चलने लगे। लाल पक्षी भी सुनहरी और नीली चिड़ियो के साथ शाखाओ पर उछलते, फिर रहे थे। सुन्दरता के ये नजारे और ये आवाजें बहुत ही प्यारी और आनन्द देने वाली लग रही थी। बस्तियो के ये आनन्द कितने ही लुभावने और अधिक रहे हो, हमे पीछे छूटे हुए दृश्य भी भूल नही पा रहे थे।

बहुत देर बाद हमने एक गोरे आदमी का निवास स्थान पेड़ो मे से झांकता-सा देखा। कुछ ही मिनट बाद हम लकडी के उस पुल पर से गुज़रे, जिससे होकर वैस्टपोर्ट पहुँचा जाता है। यहाँ हमें बहुत से अजीब नज़ारे देखने को मिले। पर, शायद सबसे अजीब नजारा तो हम लोग खुद थे, जो हर तरह से फटे-हाल और टूटे-फूटे-से लग रहे थे। शायद इन लोगो ने कभी ऐसा यात्री-दल न देखा होगा। हम अपने पुराने परिचित बूने की दूकान और फौजेल के शराबखाने के पास से होते हुए गुज़रे और दूर की एक चरा-

आइद्दुपाई पहुँचे। यहाँ बहुत-से लोग हमारे पास आये। उन्होंने हमारे घोड़े और दूसरी चीजों को खरीदने की बात-चीत की। यह काम निपटा कर हमने एक गाडी किराए पर ली और अरकसास के घाट पर चले आये। यहाँ हमे अपने पुराने मित्र कर्नल चिक के दर्शन हुए। उसने बहुत प्रेम से हमारा स्वागत किया। उसके मकान की ड्योढी मे हमने मिसूरी नदी की ओर निगाह डाली।

सुबह देस्लारियर हम तक आया। उसका रूप-रग बिल्कुल ही पलटा हुआ था। उसने सारी ही पोशाक पलट ली थी। यही पास के जगलो मे उसका लकडी का घर था। लगता है वह हमे हमारे सम्मान मे एक दावत और नाच पर बुलाना चाहता था। हेनरी ने अपना विश्वास प्रगट किया कि हम लोग इसे कम आकर्षक नही पायेंगे। यह निमन्त्रण ठीक तरह से आया था, क्योकि उसने हेनरी से हमे बुलाने के बारे मे पूरी सलाह कर ली थी। एक खास आकर्षण इसमे यह रख दिया गया था कि एक विशेष वीणा बजाने वाला वहाँ बुलाया गया था। हमने उसे बताया कि अगर शाम से पहले ही लीवनवर्थ से कोई स्टीमर न आ पहुँचा तो हम अवश्य आयेंगे। पर नाव शाम से पहले ही आ पहुँची और हमे उन उत्सवो मे शामिल होना नसीब न हुआ। जब हमारी नाव नदी मे बढ रही थी उस समय देस्लारियर घाट के पास की ही एक चट्टान पर खडा हुआ हमसे विदा लेने की प्रतीक्षा कर रहा था।

वह हमारी नाव को देखते ही चिल्लाया, "विदा ! मेरे मालिको, विदा ! जब कभी आप फिर से राकी पर्वतो की ओर आएँ, मै भी आप के साथ चलूँगा; जरूर चलूँगा।"

यह कहने के साथ ही वह कूदा और अपना टोप उछालते हुए खिलखिला कर हँसने लगा। जब हमारी नाव एक मोड से मुडी, तो जो अन्तिम चीज हमारी निगाहो मे आई, वह थी कि देस्लारियर जो अब भी अपना टोप उठाए चट्टान पर ही खडा था। हमने मुनरो और जिम से भी वैस्टपोर्ट मे ही विदाई ले ली थी। हेनरी अब भी हमारे साथ था।

सेंट लुई तक की यात्रा ने आठ दिन ले लिए। इसमे से लगभग एक तिहाई समय हमारी नाव किनारे की रेत मे फँसती रही। हमने आमेलिया नाम के एक स्टीमर को भी पार किया। इसमे बहुत से स्वयसेवक छुट्टी पाकर नाचते, गाते, जुआ खेलते और लडते हुए घरो की ओर लौट रहे थे।

आखिर एक दिन शाम के समय हमारी नाव सेंट लुई के घाट पर आ लगी। हम वहाँ पहुँच कर अपने सदूक आदि को खोजने के लिए प्लांटर के मकान की ओर गये। हमने बहुत देर मे जाना कि हमारा सामान एक कोने में ढकेल दिया गया था। सुबह दर्जी की कारीगरी के नये नमूने पहन कर जब हम एक-दूसरे से मिले तो एक-दूसरे को पहचानना भी कठिन हो गया।

अपनी विदाई से पहली शाम हम प्लाटर के मकान पर हेनरी से मिले। वह यहाँ हमसे विदाई लेने आया था। इस मौके पर वह इस प्रकार से सजा हुआ था, जिससे शहर की गलियो मे मिलने वाला कोई भी आदमी उसे पहचान नही सकता था कि वह राकी पर्वत माला से अभी हाल मे ही लौटा हुआ कोई शिकारी है। वह गहरे रग की एक बहुत ही सुन्दर पोशाक पहने हुए था। सोलह वर्ष की आयु से ही वह घर से बाहर इन शिकारो पर जाया करता था। इसलिए उसे घर पर रहने का मौका कम ही मिल पाता था। पर, इस पर भी उसे सभ्य लोगो की तरह स्वय को सजाने और ठीक रखने की आदत थी। उसका ऊँचा और गठीला शरीर और उसकी चाल-ढाल इस पोशाक के ही लायक थी। उसका सुन्दर चेहरा भले ही तूफानो और आँधियो से कुछ बिगड गया हो, पर तो भी इस पोशाक मे वह भद्दा नही लग रहा था। हमने बहुत ही दुख के साथ उससे विदाई ली। हमने हाथ हिलाते हुए देखा कि इस समय उसके हृदय के भाव भी हमसे कम गहरे नही थे। शॉ ने उसे वैस्टपोर्ट मे ही एक अच्छा घोडा दे दिया था। यहाँ मैने अपनी बहुत ही उम्दा राइफल उसे दे दी। उसे यह हमेशा ही पसन्द रही थी और वह इसे बरतता भी रहता था। अब भी यह उसी के हाथो में है। और, शायद इस क्षण उसकी गूँज राकी पर्वत माला की चोटियो मे ही कही समा रही होगी। अगली सुबह हमने नगर छोड दिया और तब पूरे पन्द्रह दिन तक रेलगाडी, घोडागाड़ी और स्टीमरो की सवारी करते हुए अपने परिचित घरो मे एक बार फिर से आ पहुँचे।

—:०:—